बेग़म हज़रत महल

(ऐतिहासिक उपन्यास)

सुरेन्द्रकांत

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

ISBN 81-7056-053-5

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर—302003

प्रथम संस्करण : 1989
मूल्य : 75/- (पचहत्तर रुपये)
मुद्रक : जिनेन्द्र प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली—32

BEGUM HAZRAT MAHAL (Novel)
By Surender Kant

Rs. 75.00

प्राक्कथन

प्रस्तुत उपन्यास का कथानक 1857 से स्वतन्त्रता-संग्राम पर आधारित है। इसकी प्रमुख भूमिका में है अदम्य साहस, अनुपम वीरता, अद्‌भुत संगठन-शक्ति तथा अनुकरणीय देशभक्ति से ओत-प्रोत एक महान वीरांगना, अवध की बेगम हज़रत महल। इस विलक्षण नारी ने अवध में स्वतन्त्रता-संग्राम का अलख जगाया और उसे एक राष्ट्र-स्तरीय अभियान मे परिणित कर दिया। उसके आह्वान पर अवध, बिहार, रुहेलखण्ड और मध्य भारत आदि के विस्तृत-क्षेत्र में अनेक स्वतन्त्रता सेनानी सक्रिय हो गये और वहाँ लम्बे समय तक संग्राम की ज्वाला प्रज्वलित रही जिसने वर्षों ब्रिटिश अधिकारियों की नींद हराम किये रखी।

प्रस्तुत कृति के माध्यम से मेरा प्रयास रहा है कि मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने वाले उन स्वातन्त्र्य-चेताओं के भागीरथी प्रयासों को दिवा-प्रकाश में लाया जाये।

उपन्यास से आत्मसात होने के लिये इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी वाछनीय होगी।

अंग्रेजों ने भारत मे सौदागर कम्पनी के रूप में पदार्पण किया और शनैः-शनैः सम्पूर्ण देश पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। लगभग एक शताब्दी तक भारतीय यह नहीं समझ पाये कि ये सौदागर देश को एक विकराल अजगर की भाँति निगलते चले जा रहे हैं। वे मुगल-सम्राट तथा देश के सभी नवाबों और राजाओ आदि से परम्परागत शिष्टाचार व यथेष्ट सम्मान के साथ पेश आते रहे किन्तु कालान्तर में भारत-भूमि पर उनकी उत्तरोत्तर बढ़ती पद-चाप ने अनेक राजा-महाराजाओं को ही नहीं, जन-साधारण को भी चौकन्ना कर दिया।

पूना, सतारा, नागपुर, तंजौर व झाँसी आदि के राज्यों को डलहौजी की साम्राज्य-विस्तार-नीति ने अन्यायपूर्वक हड़प लिया तथा अवध का राज्य उसकी आँखों की किरकिरी बना हुआ था। 1764 मे बक्सर के युद्ध के बाद से ही धीरे-धीरे किन्तु अत्यन्त दृढ़ता से ब्रिटिश अधिकारियों ने अवध पर अपना फ़ौलादी पंजा कसना प्रारम्भ किया। वहाँ के शासकों को वे शासन-प्रबन्ध तथा

सैनिक गतिविधियों से विरत कर विलासपूर्ण जीवन की ओर धकेलते रहे। अवध का अन्तिम शासक वाजिद अली शाह मूलतः असीम स्फूर्ति, साहस और शौर्य का धनी था। अपने शासन के प्रारम्भकाल में उसने सैनिक व शासन व्यवस्था की ओर बहुत तन्मयता से ध्यान दिया किन्तु कम्पनी के अधिकारियों ने उसे बारम्बार हतोत्साहित व प्रताडित कर नितान्त अकर्मण्य बनने पर विवश कर दिया। ऐसे शासक के पास विलास और रंगरेलियों में जीवन व्यतीत करने के सिवा और बचा ही क्या था करने को! अवध मे कुशासन व अराजकता का आरोप लगा, उसे पदच्युत कर कलकत्ते मे नजरबन्द कर दिया गया तथा अवध को ब्रिटिश राज्य में विलय कर लिया गया यह सब देखकर बेगम हजरत महल के हृदय में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी तथा उसकी धमनियों में एक वीरांगना का शौर्य प्रवाहित होने लगा।

बेगम ने स्वतन्त्रता का नारा दिया। उसकी विलक्षण संगठन-क्षमता के कारण असंख्य स्वतन्त्रता सेनानी मातृभूमि पर प्राणोत्सर्ग करने उसके ध्वज-तले एकत्रित होने लगे। उसने अवध के बाहर अन्य प्रदेशों में भी कतिपय गणमान्य राजाओं, नवाबों एवं नेताओ से सम्पर्क स्थापित किया तथा अंग्रेजों के विरुद्ध कभी न समाप्त होने वाला संग्राम छेड़ दिया। मौलवी अहमदुल्ला शाह, शंकरपुर का राव वेणी माधव, सुनन्दा उर्फ गगाबाई, शाहजादा फ़ीरोजशाह, जगदीशपुर (बिहार) का बाबू कुँवरसिंह उसका भाई अमरसिंह और मित्र निशानसिंह आदि अनेक देशभक्त योद्धा इस पुनीत स्वातन्त्र्य-अनुष्ठान में सम्मिलित हुए तथा उन्होंने गोरे शासको के विरुद्ध अनवरत संग्राम जारी रखा।

यद्यपि मेरठ, दिल्ली, कानपुर तथा झाँसी पर अंग्रेजों ने स्वतन्त्रता का गला घोट शीघ्र ही पुनः अधिकार कर लिया था, उन्हें रुहेलखण्ड, अवध और बिहार में लगभग दो वर्ष तक और आजादी के दीवानों से लोहा लेना पड़ा। दिल्ली, मेरठ, कानपुर आदि में पराजित असंख्य सेनानियों के लिये एकमात्र शरण-स्थल बन गया था अवध! कानपुर की पराजय के बाद नाना साहब पेशवा) भी इसी क्षेत्र मे क्रियाशील रहे। भारतीय योद्धाओं ने अंग्रेजों की अत्यन्त शक्तिशाली तथा अत्याधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित सेनाओं को बहुत से स्थानों पर करारी मात दी। असंख्य कर्मठ भारतीय सिर पर कफन बाँधे, चप्पे-चप्पे भूमि के लिए अंग्रेजों से लोहा लेकर उनके दिल दहलाते रहे। कई अंग्रेज अधिकारी उनकी वीरता पर आश्चर्यचकित रह गए तथा अपने पत्रों तथा आलेखों में उनकी प्रशंसा करने का लोभ संवरण नहीं कर सके।

भारतीय-नेताओं ने संघर्ष-काल मे भी कतिपय स्थानो पर विपदा-ग्रस्त अंग्रेज पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों को अपनी सांस्कृतिक परम्परानुसार शरण दी तथा उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया। इसके विपरीत अंग्रेजी-विजेताओं

ने असख्य भारतीय पुरुषो, स्त्रियों व बच्चो को अमानवीय यातनाएँ दी और अपराधी तथा निरपराध लोगों के बीच बिना भेद किये ही उन्हें नृशंसता-पूर्वक मौत के घाट उतार दिया। नील, हाडसन आदि के काले कारनामों की अंग्रेज लेखको तथा इतिहासकारों तक ने कड़े शब्दों में भर्त्सना की है। अंग्रेज इतिहासज्ञ जे० डबल्यू० के ने लिखा है, "हमारे सैनिक अफसर हर तरह के अपराधियों का *ऐसे शिकार कर रहे थे और उन्हें ऐसी क्रूरता से फांसी दे रहे थे जैसे वे नीच कुत्ते, या गीदड़ या घटिया क़िस्म के जानवर हों* "एक बार कुछ कम उम्र के लड़कों *को भी अपराधी ठहराकर फांसी की सज़ा दे दी गई।"*

यद्यपि अन्त में विजयश्री अंग्रेजों के हाथ ही लगी तथापि उन आजादी के दीवाने भारतीयों के बलिदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता जिन्होंने भारत मे ब्रिटिश-साम्राज्य की स्थापना के साथ ही उसकी नींव मे विस्फोटक समाविष्ट कर दिये।

बेगम तथा उसके सहयोगियो ने पराजय के बाद भी नेपाल पहुँचकर भारत में क्रान्तिकारियों को सहायता पहुँचाकर स्वातन्त्र्य-संग्राम को निरन्तरता प्रदान की। उसके प्रोत्साहन से अनगिनत नारियाँ रण-क्षेत्र में शत्रुओं का मान-मर्दन करती रही।

लण्डन टाइम्स के भारत मे तत्कालीन संवाददाता सर डबल्यू० रसेल ने *बेगम के बारे में लिखा है, "वह महान शक्ति और योग्यता वाली स्त्री थी।* उसने सम्पूर्ण अवध को अपने पुत्र का साथ देने के लिये उत्तेजित कर दिया है और सरदारों ने उसके प्रति वफ़ादार रहने की शपथ ली है। बेगम ने हमारे *विरुद्ध कभी न खत्म होने वाले युद्ध की घोषणा की है।"*

इस सबके बावजूद बेगम तथा उसके अनुगामियो के क्रियाकलापों को इतिहास में अथवा अन्यत्र किन्हीं कारणों से समुचित प्रचार नहीं मिला और न उन्हें यथेष्ट प्रसिद्धि ही।

उपर्युक्त कतिपय तथ्यों से प्रेरित उपन्यास के रूप में मेरा यह प्रयास प्रबुद्ध पाठकों को समर्पित है।

पुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरावलोकन एवं परिमार्जन मे मेरे पुत्र चि० *अरविन्दकान्त का उपयोगी परामर्श तथा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है जिसकी मैं* सराहना करता हूँ।

सी-209 मनुमार्ग
तिलक नगर, जयपुर

—सुरेन्द्रकान्त

बेगम हज़रत महल

छतर मंजिल के एक विशाल कक्ष में नूपुरों की छमछमाहट, संगीत की स्वर-लहरी, सारंगी की तरंग और तबलों की थाप ने रात्रि के वातावरण को सुरा-स्नात कर दिया। अनेक अर्द्धनग्न रूप-यौवनाएं अपनी चपल थिरकन और मौन-निमन्त्रण से हर तरफ सम्मोहन बिखेर रही थीं। वाजिद अली शाह नशे में झूम रहा था तथा सेविकाएं उसका प्याला खाली होते ही मदिरा से पुनः भर देतीं। मदिरा के साथ ही वह एक-एक के सौन्दर्य-मधु को भी जैसे पी जाना चाहता हो! रजनीगंधा, मोगरा और हरसिंगार से आत्मसात हो शीतल, सुगन्धित पवन के झोंके हृदय को गुदगुदा रहे थे और सारंगी की संगत में नारी-कंठ कलेजे को छू छू जाता था।

वाजिद अली शाह स्वयं भी उठा और नाचने लगा। उसे नाचता देख सुन्दरियों मे और भी गर्मजोशी आ गई। शाह ने अभी कुछ ठुमकियां ही लगाई थीं कि वह लड़खड़ा कर गिरने लगा। इससे पूर्व कि वह पूरी तरह धराशायी हो कई कई किशोरियों ने उसे थाम लिया तथा वह उनके उन्नत उरोजों का सहारा ले धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। सुन्दरियां उससे वल्लरी की तरह लिपटी मंथर गति से उसे शयन-कक्ष की ओर ले गईं और पलंग पर लिटा दिया। वह एक की तरफ़ देखकर मुस्कराया और पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

हुजूर इस नाचीज को जोहरा कहते हैं।" उत्तर मिला "और तुम्हारा?"

"रसिका, जाने आलम, कनीज़ को रसिका कहते है।"

"वाह खूब, वाक़ई तुम रस से लबरेज सुराही हो!" वाजिद अली ने उसके वक्ष पर हाथ फेरते हुए कहा। उसने सबको बैठने का इशारा किया तो वे पलंग पर चारो ओर बैठ गईं जैसे मदमाते सरोवर में चारों किनारों पर अरुण-कमल-कलिकाएं फूट-फूट पड़ना चाहती हों। बादशाह वाजिद अली शाह एक-एक से कुछ न कुछ पूछता गया और सुन्दरियां शोखी से उत्तर देती गईं। बादशाह किसी को छू भर देता, किसी को अंक मे समेट लेता, और हास परिहास चलता रहा कि तभी एक सेविका ने मोहसिना के आने की सूचना दी।

उत्सुकता से बादशाह ने कहा, "ओहो, मोहसिना ! फ़ौरन अन्दर भेजो।" किशोरियाँ एक-एक करके खिसक ली और मोहसिना ने हुजूर में पेश होकर आदाब बजाया।

"कहो मोहसिना क्या ख़बर है ?" वाजिद अली ने पूछा।

जाने आलम, हुजूर के दोस्त काश्मीर के महाराज ने जो हसीना खिदमत में भेजी है वह हुजूर की कदम बोसी की मुन्तज़िर है।"

"वाह खूब, क्या जुवेदा ने उसे सजा-संवार कर तैय्यार कर दिया है ?"

"जी आलीजाह उन्होंने ही मुझे हुजूर में इत्तिला करने को कहा है।"

"ठीक है, उसे फ़ौरन भेजा जाये।" बादशाह ने कहा और सोचने लगा वैसे हुस्न को सजाने संवारने की भी क्या जरूरत है लेकिन जुवेदा भी तो अपना फर्ज़ अदा करने में कसर नहीं छोड़ती। रात्रि की निस्तब्धता में चूड़ियों की खनखनाहट ने बादशाह को चौकन्ना कर दिया। वह पलंग पर उठकर बैठ गया नवागंतुका का स्वागत करने। सहज पद-चाप के साथ पायल की छम-छम ने बादशाह के अंग-अंग में जादू भर दिया। यही ध्वनियाँ थीं जो मदहोश बादशाह को एक-बारगी होश में लाकर पुनः दीन दुनिया से बेखबर कर देती थीं। सभी दूसरी आवाजों को जैसे उसने पहिचानना ही बन्द कर दिया हो ! इतने दिनों की आतुर प्रतीक्षा के बाद आखिर यह समय आ ही गया। कितने दिनों से वह अनुरोध कर रहा था और महाराजा गुलाबसिंह ने कितने दिनों से वायदा कर रखा था, आज पूरा हुआ।

नीली जरदोज़ी की पोशाक में लिपटी षोडशी के मुख से जब पर्दा हटा तो मानो आकाश में छाई बदली की ओट से पूर्णिमा का चाँद झाँकने लगा हो। वाजिद अली का रोम-रोम सिहर उठा। "उफ़ यह हुस्न, यह शबाब ! आज तक अनगिनत हसीनाएँ देखी लेकिन···!" यह सूरज, चाँद, तारों और चपल विद्युत का सम्मिश्रण तो आज पहिली बार देख रहा था ! "आदाब बजा लाती हूँ जहाँपनाह !" जब किशोरी ने झुक कर कहा तो लगा जैसे सतरंगी इन्द्रधनुष में से मधुमास के बोल फूट पड़े हों। "तसलीमात" कहते हुए वाजिद अली पलंग से उतर कर खड़ा हो गया और रोमांचित हो उसने षोडशी को आलिंगनबद्ध कर लिया। सुन्दरी जैसे-जैसे इस रमणीय बन्धन से मुक्त होने का उपक्रम करती वैसे ही वैसे बादशाह उसे अंक में कसता गया। "क्या नाम है इस नाज़नीन का ?" बादशाह ने पूछा।

"जी कनीज़ को नर्गिस···" कोकिल कंठ से तरंगित सी आवाज़ निकली ही थी कि वाजिद अली ने सरस अधरों पर अपने अधर टिका कर उन्हें बन्द कर दिया और लगा चूमने गोया नर्गिस नहीं बल्कि मदिरा की मादक सुराही उसमें आत्मसात हो गई हो !

"तो महाराजा गुलाबसिंह ने तुम्ही को भेजा है ?"

"जी आलीजाह इस नाचीज को ही···"

"वैसे हमने तो एक काश्मीरी हसीना के लिये इल्तजा की थी महाराजा से लेकिन उन्होंने तो बहिश्त की हूर भेज दी। वाह मेरे दोस्त गुलाबसिंह तुम्हारा मैं किस तरह शुक्रिया अदा करूं !"

"आली मुकाम, इतनी तारीफ न करें इस बन्दी की वर्ना मैं धरती पर रहने के बजाय आसमान में उडान भरने लगूंगी।"

"नर्गिस तुम वाक़ई धरती पर रहने काबिल नहीं हो, आसमान मे भी उड़ान भरोगी तो ऊँचाइयाँ कम पड जायेंगी ।

"आली जाह !"

"हसीना !" और अब वे दोनों शैय्या पर थे। रात्रि की तरलता में बादशाह और नर्गिस के बीच संकोच का आवरण धीरे-धीरे अन्तर्ध्यान होता जा रहा था। और वे दोनों एक दूसरे के समक्ष सागोपांग प्रकट होते जा रहे थे। प्रश्न फुसफुसाहट मे और उत्तर सिसकारियों में परिणित होने लगे। वाजिद अली शाह और नर्गिस मधुर-मधु मे सराबोर मदहोश थे और उन्हें पता ही नही चला कि कब सवेरा हुआ, कब धूप चढ़ी और दोपहर हो गया। तभी कक्ष के पार्श्व द्वार पर हलकी सी दस्तक हुई।

अस्तव्यस्त वसन सम्हाल कर बादशाह ने कहा, "कौन है ? अन्दर चले आओ !" अन्दर आकर सेविका ने सूचना दी कि रैजीडेन्ट स्लीमैन साहब काफ़ी देर से जहाँपनाह की प्रतीक्षा कर रहे हैं। "स्लीमैन, स्लीमैन ! समझ में नहीं आता कि इन लोगों को हमारे आराम मे दखल देने के सिवा और भी कोई काम है या नही ! लिया और सुबह-सुबह आ धमके !"

"गुस्ताखी मुआफ़ हो, हुजूर, दोपहर के बारह बज चुके हैं।" सेविका ने कहा। 'ओह, दोपहर हो गया ! जाओ स्लीमैन से कह दो कि चार बजे मिले।" सेविका चली गई। नर्गिस जो अब तक जागती रही थी सपनों के संसार मे पहुँच चुकी थी। बादशाह उसके निर्वसन उठते गिरते वक्ष को निहार रहा था। उसने एक बार फिर नर्गिस की संगमरमरी देह को अपने बाहुपाश में बाँध लिया, थोड़ी देर विभिन्न अगों पर हाथ फेरता रहा और शीघ्र ही निद्रा देवी की गोद में समा गया। अवध के बादशाह को और कोई काम भी तो नहीं बचा था करने को ! प्रत्येक दिन, प्रत्येक रात इसी तरह गुजरती थी।

उनको गरूरे हुस्न है मुझको सरूरे इश्क।
वो भी नशे में चूर है मैं भी पिये हुए॥

2

वज़ीर अली नकी खाँ बादशाह का बहुत स्वामिभक्त और नेक-चलन अधिकारी था। राज्य में उत्तरोत्तर बढ़ता अंग्रेजो का हस्तक्षेप उसे बहुत चिन्तित कर रहा था। वह चाहता था कि किसी तरह बादशाह का प्रशासन के सम्बन्ध में उपेक्षा भाव समाप्त हो और वह सतर्कता से अंग्रेज कम्पनी की गतिविधियों पर नज़र रखें। अवसर पाकर राजाओं, ताल्लुकेदारों और जमींदारों को अपने पक्ष में संगठित क रें ताकि उचित समय पर कम्पनी की फौजों से लोहा ले सकें और फिरंगियों को सदा के लिये देश से बाहर खदेड़ दें। उसने बादशाह से इस विषय मे चर्चा करने के कई बार प्रयत्न किये किन्तु सफल न हो सके। एक तो बादशाह मे सिवा नृत्य-सगीत की महफ़िलों के मिल पाना ही बहुत कठिन था, दूसरे जब कभी एकाध बार ऐसा अवसर मिला भी तो बादशाह ने कोई रुचि नहीं ली। सिर्फ यह कह कर टाल दिया कि हम तुम्हारी वफ़ादारी और जज़्बात की कद्र करते हैं लेकिन कम्पनी सरकार से खिलाफ़त करना अहमकपन है। वज़ीर अपना सा मुँह लिये चला आता।

विवश होकर वज़ीर ने कोई दूसरा रास्ता ढूंढना चाहा और बेगम हज़रत महल से सम्पर्क बनाया। बेगम को सल्तनत के काम में बहुत दिलचस्पी थी और वह भी कम्पनी सरकार के हथकंडों से काफी चिन्तित थी। अवसर वज़ीर और दो-चार दूसरे अमीर उससे सल्तनत की हालात के विषय में सलाह-मशवरा करते रहते थे। आज भी वज़ीर बेगम के हुज़ूर में पेश हुआ और कहने लगा, "मलका-ए-आलिया! हर तरफ से बहुत खौफ़नाक खबरें मिल रही हैं। इंग्रेज अपनी चालों मे बाज नही आ रहे और रिआया को हैरान व परेशान कर रहे हैं।

"उफ वज़ीर, हमारे जासूस भी जगह-जगह से ऐसी ही खबरें ला रहे हैं।" बेगम ने कहा।

"सबसे बड़ा ख़तरा तो यह है, हुज़ूर, कि गोरे छुप-छुप कर देहात मे लूट मार कर रहे हैं, औरतों की इज्जत महफूज नहीं और कम्पनी के अफ़सरान हमारे तालुकेदारान, जमींदारान और हुक्काम को इसके लिये जिम्मेदार ठहराते है।" वज़ीर ने कहा।

"हमें तो इसमें फिरंगियों की बहुत संगीन चालबाजी मालूम होती है। खुद बदअमनी फैला कर हमारे सर बदइन्तज़ामी का इल्ज़ाम मढ़ना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि कुछ मामलो मे पूरी तहकीकात की जाये और असलियत का पता लगाया जाये।"

"आलीक़द्र, मैंने कई मामलो में बज़ात खुद तफतीश की है और हर एक मे

यही साबित हुआ है कि वारदातों में गोरों का हाथ था। कुछ इंग्रेज़ अफ़सर तो हमारे ताल्लुकेदारान, राजाओं और ज़मीदारान को गुमराह कर रहे हैं ताकि वे हमारे खिलाफ़ हो जायें।" वज़ीर ने कहा।

"क्या उन्हें कामयाबी भी हासिल हुई है, इस सिलसिले में ?"

"जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है सभी राजा, ज़मीदारान वग़ैरह हमारे तहे दिल से वफ़ादार हैं, लेकिन आगे क्या सूरत बने कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"फिर भी, वज़ीर, इन लोगों पर नज़र रखना ज़रूरी है। इंग्रेज़ों के कारनामों से तो यही लगता है कि सूरते हाल बहुत नाज़ुक है। अगर जाने आलम थोड़ी दिलचस्पी लें तो इन क़मीनों को मज़ा चखाऊँ लेकिन उन्हें तो दीनो दुनिया की खबर ही नहीं—शेरोशायरी और नाच-गानों में ही दिन रात लगे रहते हैं। क्या किया जाये कुछ समझ में नहीं आता!" बेगम ने कहा।

अली नकी खाँ ने आग्रह किया, "हुज़ूर गुस्ताखी मुआफ़ हो, आप आलम-पनाह से इस मुतल्लिक तज्किरा तो करें, शायद वे वक़्त की नज़ाकत देखते हुए वक़्त रहते इस मामले में दिलचस्पी लेने लगें।"

"वज़ीर, हम कोशिश करेंगे, लेकिन उम्मीद बहुत कम है। आपको तो इल्म है कि गद्दी-नशीनी के बाद जाने आलम कितनी दिलचस्पी से फ़ौज की देखभाल करते थे। अलससुबह छावनी में पहुँच कर क़वायद वग़ैरह का बज़ात खास जायज़ा लेते थे। सारे दिन और देर रात तक सल्तनत के इन्तज़ाम में मसरूफ़ रहते थे। लेकिन उनकी कारगुज़ारियाँ फ़िरंगियों को रास नहीं आईं। बड़े लाट ने खरीता भेजा कि फ़ौज और सल्तनत के काम में आलम-पनाह बेकार ज़हमत उठाते हैं उन्हें तो ऐशो आराम में ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये। मुल्क की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा तो इंगरेज़ी फ़ौज का है और आपके हुक्काम हमारे रेज़ीडेन्ट की मदद से मुल्क का इन्तज़ाम देखते रहेंगे। फिर भी जाने आलम ने अपना रवैया नहीं बदला तो रेज़ीडेन्ट ने लाट साहब के खत के बारे में कई बार याद दिलाई। आलम-पनाह ने फिर भी परवा नहीं की और आखिर में लाट साहब का एक और खत आन पहुँचा। बहुत पसोपेश के बाद जाने आलम को सब कामों से सुबकदोश होकर इस तरह की ज़िन्दगी इख्तियार करने पर मजबूर होना पड़ा। फ़िरंगियों को डर था कि अगर जहाँपनाह अपनी फ़ौज और मुल्क पर इतनी मेहनत व मशक्कत से निगरानी रखेंगे तो एक न एक दिन हमारा मुक़ाबिला करके हमें सल्तनत से खदेड़ देंगे। इसी खयाल से अवध की पल्टन में भी कमी कर दी गई और इंग्रेज़ी फ़ौज में इज़ाफ़ा।"

"जी मलका-ए-मुअज्ज़मा", वज़ीर ने कहा, "इस नाचीज़ को सब इल्म है मगर अब तो ऐसा नाकिस वक़्त आ गया है कि हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। मैं तो महज़ नाम का वज़ीर रह गया हूँ। रेज़ीडेन्ट के हुक्म के बग़ैर पत्ता भी

नहीं हिलता और जाने आलम से भी वह जिस काग़ज़ पर चाहे दस्तख़त कराता रहता है। फिर भी मैं कोशिश करूँगा कि हालात बद से बदतर न हों और किसी क़दर इन फिरंगियों के शिकंजे से अवध को निजात मिले।"

बेगम ने वज़ीर को इस मामले में कामयाबी के लिए शुभ-कामनाएँ दीं और सलाह दी कि वह महबूब खाँ तथा दूसरे वफ़ादार मुसाहिबों से भी परामर्श करे और उनकी इमदाद ले।

आज्ञापालन का आश्वासन देकर वज़ीर ने झुक कर अभिवादन किया और चला गया।

3

साढ़े चार बज चुके थे। स्लीमैन बादशाह के महल ख़ास के बाहर बेचैनी से चहलक़दमी कर रहा था। बार-बार जेब घड़ी निकाल कर देखता और उसकी भवें अधीरता से तन जातीं, क्रोध से चेहरा तमतमा जाता। "पता नहीं इन राजा-रईसों को वक़्त की अहमियत कब समझ में आएगी।" वह बुदबुदा रहा था। अब की बार महलख़ास की दीवार घड़ी ने पाँच तरंगित टनकारों से समय का उद्घोष किया। उसी समय नक़ीब ने ऐलान किया "बाअदब, बा मुलाहिज़ा, होशियार! जाने आलम बादशाह सलामत सल्तनत अवध, हुज़ूर-पुर नूर वाजिद अली शाह बहादुर तशरीफ़ ला रहे हैं!" बादशाह के साथ वज़ीर अली नक़ी खाँ भी था।

स्लीमैन तुरन्त कक्ष में दाख़िल हो एक तरफ़ बैठ गया। जैसे ही बादशाह ने प्रवेश किया वह खड़ा होकर झुका और अभिवादन किया। उसके साथ आए अन्य अफ़सरों ने भी झुककर सलाम किया।

अभिवादन स्वीकार करते हुए बादशाह ने कहा, "कहिए जनाब स्लीमैन साहिब, क्या माजरा है? क्यों कर आना हुआ?"

"योर मैजेस्टी, मुआफ़ी का ख़्वाहाँ हूँ कि हुज़ूर के आराम में·।" स्लीमैन ने कहा।

"नहीं नहीं स्लीमैन साहब, बल्कि हमें अफ़सोस है कि जनाब को इन्तज़ार करना पड़ा।"

"ओह नो, नईं, कोई बात नईं।" स्लीमैन ने कहा, "मैं तो बस एक ज़रूरी काम से हाज़िर हुआ हूँ।"

"जी कहिये," ताली बजाते हुए वाजिद अली ने कहा। एक सेविका के आने पर बादशाह ने उसे मदिरा लाने का आदेश दिया और स्लीमैन की तरफ प्रश्न-वाचक मुद्रा में देखने लगा।

स्लीमैन ने कहा, "हिज़ एक्सीलेंसी गवर्नर-जनरल ने मुझे पटना के मुकाम पर बुलाया था और अवध के बारे में बातचीत के दौरान बहुत नाराजगी ज़ाहिर की···।"

"समझ में नहीं आता कि अवध के बारे जनाब डलहौजी साहब और कंपनी बहादुर इतने परेशान क्यों हैं !" स्लीमैन को बीच में ही टोकते हुए बादशाह ने कहा, "आबदौलत हमेशा और हर तरह उनकी मर्ज़ी के मुताबिक काम करते हैं फिर भी उन्हें हर बार कुछ-न-कुछ शिकायत रहती है।"

"योर मैजेस्टी ठीक फरमाते हैं। मैंने भी उन्हें यहाँ के बारे में तसल्लीबख्श रिपोर्ट्स भेजी है मगर कुछ मुद्दे ऐसे हैं जिन्हें······।"

स्लीमैन भूमिका बना ही रहा था कि बादशाह ने सेविका की तरफ उसे शराब का प्याला पेश करने का इशारा किया।

"ओह नईं, योर मैजेस्टी, गुस्ताखी मुआफ हो, इस वक्त मैं पीना नईं माँगता !" स्लीमैन ने इनकार किया।

"रेज़ीडेन्ट बहादुर यह क्या ! हमारा साथ तो दीजिये।" एक प्याला हाथ में लेते हुए बादशाह ने कहा।

"हुजूर की हुक्म उदूली भी नहीं कर सकता," प्याला थामते हुए स्लीमैन ने कहा, "शुक्रिया, आलमपनाह का बहुत शुक्रिया ! हाँ, तो हुजूर मैं कह रहा था कि कुछ मुद्दे ऐसे हैं जिन्हें हुजूर के इल्म में लाना जरूरी है। अवध में रिआया की हालत बहुत ही अफ़सोसनाक है। दिन-दहाड़े औरतों की इस्मत लूटी जाती है। आपके जागीरदार, राजा व ज़मीदार बग़ैरह हुजूर के भेजे हुए फ़रमानों की क़तई परवा नहीं करते और रैय्यत पर जुल्म पर जुल्म ढाये जा रहे हैं। आये दिन चोरी और डकैतियों की वारदातें होती हैं। सल्तनत के हुक्काम मनमानी कर रहे हैं और रिश्वत का बाज़ार गर्म है। किसी का कोई काम बग़ैर मोटी रकम दिये नहीं होता···।"

"बिलकुल दुरुस्त, बिलकुल दुरुस्त, रेज़ीडेन्ट बहादुर" बादशाह अधीर होकर बीच में ही बोल पड़ा, "हम भरसक कोशिश करेंगे कि मुल्क़ में अमनो-अमान क़ायम हो और क़सूरवारों को सख्त से सख्त सजायें दी जायें। इसके लिए हमें कई कदम उठाने पड़ेंगे और सबसे पेश्तर हमें अपनी फ़ौज में इज़ाफा करना लाज़िम होगा क्योंकि उसके बग़ैर दूर-दराज़ इलाकों में निगरानी रखना मुश्किल मुहाल है। हम जल्द ही फ़ौज में नई भर्ती का ऐलान कराये देते हैं।"

"नहीं, योर मैजेस्टी, नहीं।" स्लीमैन को जैसे बिजली का नंगा तार छू गया हो, "फ़ौज में नई भर्ती की जरूरत नहीं। यह कंपनी बहादुर की मर्जी के खिलाफ़ होगा। वैसे हुजूर को अंग्रेजी फ़ौजें हर तरह की इमदाद देंगी। फिर गवर्नर-जनरल बहादुर का खयाल है कि देसी सिपह काबिले इतमीनान नहीं है। इस मामले में मेरी भी यही राय है, लिहाज़ा अंग्रेजी फौज में ही नई भर्ती करना मौजूं होगा। हुजूर को जहाँ कहीं जरूरत पड़े कम्पनी बहादुर के सिपाही भेज दिये जायेंगे।" स्लीमैन एक सांस में ही बोलता गया। बादशाह ने आगे कुछ भी कहने के बजाय चुप रहना ही उचित समझा और वह खून का घूंट पीकर रह गया।

रैजीडेन्ट ने इजाजत ली और चलते-चलते कह गया, "मुझे उम्मीद है कि हुजूर सारे मामले पर गौर फरमायेंगे और इनसे पेश्तर कि बहुत देर हो जाये, कुछ सख्त कदम उठायेंगे।"

बादशाह ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया। वह काफी देर तक दीवार की तरफ ताकता रहा। उसके दिमाग़ में खयालों की बारात चहल कदमी कर रही थी, ग्लानि से चेहरा तमतमा रहा था। आखिर इन फिरंगियों का मंसूबा क्या है! फ़ौज में बढ़ोतरी करने नहीं देते, क़दम-कदम पर हमारे इन्तजाम में दखलंदाज़ी करते हैं, और चाहते हैं कि बद-अमनी मिट जाये। क्या खूब! देसी सिपह काबिले इतमीनान नहीं, जबकि इंग्रेजी जवान ही तरह-तरह की बदमाशियां कर रहे हैं!

वाजिद अली बहुत देर तक सोचता रहा कि वज़ीर अली नकी खां ने उचित अवसर जानकर मौन तोड़ा, "जाने आलम, अब तो पानी सर से गुजर गया है! अजीब बेकसी का आलम है। हुजूर अब तो हमें कुछ करना ही चाहिए। अगर आली जाह कुछ दिलचस्पी लें तो अब भी बहुत कुछ हो सकता है। अगर हुक्म हो तो मैं फ़ैजाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह से इमदाद लेकर वहीं एक नई पल्टन की पोशीदा तौर पर भर्ती शुरू कर दूं। दूसरे इलाकों में भी हुजूर के बहुत से खैर ख्वाह हैं और उनकी मदद से भी कई नई पल्टनें खड़ी की जा सकती हैं। कुछ दालिया-मुल्क राजाओं और नवाबों से भी हमें इमदाद मिल सकती है। पूरी तैयारी हो जाने के बाद इन फिरंगियों पर धावा बोल दिया जाये और उन्हें मुल्क से निकाल बाहर किया जाये।"

बादशाह एकदम चौकन्ना हो गया। नहीं वज़ीर, नहीं। हमें इस सब की कामयाबी में शक है। रैज़ीडेंसी के अफ़सरान की नजरों से बचे रहकर फ़ौजी तैयारी चल पाना नामुमकिन है और अगर वक़्त से पहले भंडाफोड़ हो गया तो ये भेड़िये अवध को फाड़ खायेंगे। फिलहाल जैसे चल रहा है चलने दो। मावदौलत इस मामले पर ग़ौर करेंगे और जल्द ही कोई रास्ता ढूंढ निकालने की कोशिश करेंगे। अभी तो तुम हमारे खैर ख्वाह राजा-रईसों और ताल्लुकेदारों को खुफ़िया फरमान

भिजवा दो कि वे मुस्तैदी से अपनी सिपह तैयार रखें और वक़्त ज़रूरत हमारी मदद करें।"

"जी अच्छा, हुज़ूरेवाला" वज़ीर ने कहा और तभी बादशाह उठ खड़ा हुआ। बात आई गई हो गई।

वास्तव में वज़ीर का प्रस्ताव बिलकुल समयोचित था। फ़ैज़ाबाद का मौलवी अहमदुल्ला शाह बहुत प्रभावशाली और लोकप्रिय व्यक्ति था। यदि उसका सहारा लिया जाता तो काफी सफलता मिल सकती थी। इसके अलावा अवध में स्वतंत्रता प्रेमियों और बादशाह के स्वामिभक्त जागीरदारों-राजाओं का अभाव नहीं था। यदि वाजिद अली शाह स्वयं कुछ उत्साह एवं क्रियाशीलता का प्रदर्शन करता तो ऐसे लोग अंग्रेज़ों से लोहा लेने में पीछे नहीं हटते और जान पर खेलकर अवध को फिरंगियों से मुक्ति दिला सकते थे। शक्तिहीन शासक को चाणक्य नीति से काम लेकर ही सफलता प्राप्त करने की सभावना हो सकती है, किन्तु बादशाह इतना निष्क्रिय हो चुका था कि कोई भी साहसिक क़दम उठाना उसके लिए असम्भव था।

4

नित्य की भांति बादशाह आज नृत्य-संगीत की महफ़िल में नहीं गया। सुरा और सुन्दरी की संगत मे ही वह गम गलत कर लेना चाहता था। अपने शयनकक्ष में वह विचारो मे तल्लीन था। एक रूपसी उसके पैर दबा रही थी। शासन के प्रारम्भिक काल मे उसने सल्तनत के पुराने दस्तावेज़ों का अध्ययन किया था। साथ ही बुज़ुर्ग बेगमो और मुसाहिबो के द्वारा भी उसे काफ़ी जानकारी मिल चुकी थी। अत: आज प्रारम्भ से अन्त तक का इतिहास उसके मानस-पटल पर चलचित्र की तरह अवतरित होने लगा। पहले अवध मुगल साम्राज्य का एक सूबा था। किन्तु साम्राज्य की अवसान-वेला में यहां का नवाब एक स्वतन्त्र शासक बन गया फिर भी सार्वभौमिक सत्ता का केन्द्र वह शक्तिहीन मुगल-सम्राट् को ही मानता रहा। बक्सर की पराजय के बाद नवाब शुजाउद्दौला ने अंग्रेज़ कम्पनी से सुलह कर ली। काश यह सन्धि कभी पारित नहीं हुई होती! अंग्रेज़ों को भारी रकम देकर इलाहाबाद और कोड़ा के इलाकों से भी हाथ धोने पड़े और तभी से अवध

पर एक ऐसी प्रेतछाया का अवतरण हुआ कि जो शनैः-शनैः विराट रूप धारण करती गई। अवध में कंपनी का एक प्रतिनिधि मय अपने अमले के रहने लगा। यह प्रतिनिधि या रेजीडेन्ट आये दिन सल्तनत के काम में हस्तक्षेप करने लगा और उसका हस्तक्षेप दिनो दिन बढ़ता ही गया। अवध की देशी फ़ौजें बराबर कम की जाती रहीं और अंग्रेजी फौजों में लगातार बढ़ोतरी होती गई। वाजिद अली शाह व्यग्रता से अतीत के पन्नों में उलझ रहा था। किस प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ती ब्रिटिश सेनाओं का पूरा ख़र्चा अवध के राज्य-कोष को ही वहन करना आवश्यक हो गया। यही नहीं वरन् समय-समय पर नवाबों को अंग्रेज-कंपनी के अधिकारियों की धन-दौलत की फरमाइशें भी पूरी करनी पड़ती। वाजिद अली के स्मृति-पटल पर नवाब आसफुद्दौला के साथ अंग्रेजों के दुर्व्यवहार का चित्र उभर आया। लाखों रुपया दे चुकने के बाद भी गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज़ की माँगें बढ़ती ही गईं। जब नवाब ने धन देने में असमर्थता प्रकट की तो बुज़ुर्ग बेगमों से रुपया ऐंठा जाने लगा, यहाँ तक कि अन्त में उनसे रुपया वसूल करने के लिए अंग्रेजी सेना भेज दी गई। सेना ने फैजाबाद में बेगमों के महलों को घेर लिया, उनके सेवकों को कैद कर लिया और उनके सम्पूर्ण कोष पर अधिकार कर लिया। सेना ने बेगमों के साथ काफ़ी बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया।

सोचते-सोचते बादशाह की भृकुटियाँ तन गईं और वह दाँत पीसने लगा। अंग्रेजों के इसी रवैये से कुपित होकर नवाब वाजिद अली शाह ने तो रेजीडेन्ट चेरी और उसके अंग्रेज साथियों की हत्या कर दी थी। "इसी क़ाबिल तो थे ये बदजात" सोचकर बादशाह ने राहत की साँस ली। वह पुनः अतीत को कुरेदने लगा। नवाब गाजीउद्दीन हैदर ने नेपाल की लड़ाई में अंग्रेजों की सेना व धन से भारी सहायता की। इसीसे प्रसन्न होकर कंपनी-सरकार ने नवाब को 'बादशाह' का ओहदा देकर उसका रुतबा बढ़ाया। रुतबा बढ़ा तो जरूर लेकिन राज्य में अंग्रेजों का वर्चस्व भी बढ़ता ही गया। बादशाह अंग्रेजों के हाथ में कठपुतली मात्र रह गया। वाजिद अली को सोचते-सोचते थकान होने लगी और वह किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा छत की तरफ ताकने लगा। अवध का वह पाँचवाँ 'बादशाह' विवशता की शृंखलाओं में बँधा स्वयं को बहुत अशक्त महसूस कर रहा था। रेजीडेन्ट द्वारा दी गई चेतावनी का ध्यान आते ही वह कुण्ठा और अवसाद से भर गया।

प्रारम्भ में वाजिदअली शाह स्फूर्ति, साहस और शौर्य से परिपूर्ण था। उसने गद्दी पर बैठते ही सेना व शासन की सतर्कता से देखभाल आरम्भ की किन्तु कंपनी सरकार ने उसे हतोत्साहित कर अकर्मण्य बना दिया। शक्ति और स्फूर्ति से संतृप्त बादशाह के ये गुण रंगरेलियों की ओर प्रवाहित हो चले और सुरा-सुन्दरी के प्रति उसकी आसक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। अब वह ऐसी स्थिति में पहुँच चुका था कि जहाँ से लौट पाना असम्भव था।

बादशाह को चिन्तित देख रूपसी ने कई बार उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टाएँ की। कभी चूड़ियों की खनक से कभी पायल की छम-छम से और कभी गहरा निश्वास लेकर। रात्रि की निस्तब्धता में ऐसी ध्वनियाँ प्रायः बादशाह को कामोत्तेजित करने से नहीं चूकती थी, किन्तु आज तो वह रंगीन स्वप्नों की दुनिया से दूर, बहुत दूर काले अक्षरों से अंकित इतिहास के यथार्थ में उलझ रहा था। सुन्दरी की उपस्थिति का शायद उसे भान तक नहीं था। अधीर होकर सुन्दरी ने अन्तिम प्रयास किया, "गुस्ताखी मुआफ हो जाने आलम, लगता है हुजूर के दुश्मनों की तबियत नासाज़ है!" वाजिद अली शाह की तन्द्रा टूटी और यौवन-भार से मदमाती इस अप्सरा को अंक में खींचते हुए बोला, "नहीं रसिका, हम बिलकुल ठीक हैं, सिर्फ इन इँगरेज़ों की मक्कारी व चालबाजी के बारे में सोच रहे थे। आज फिर रेज़ीडेन्ट हमारे हुजूर में पेश हुआ और शिकायतें कर रहा था हमारी सल्तनत में बदअमनी की।" "इन कमीनों की ये जुर्रत, हुजूर भला इन सिरफिरों को क्या पड़ी कि जहाँपनाह की सल्तनत के मामलों में अपनी टाँग अड़ायें! आलम पनाह! छोड़िये इन बदवख्त नाशुक्रों को" रसिका ने संगीतमय वाणी में कहा, "हुजूर तो मुल्क के बादशाह हैं, ये क्या बिगाड़ सकते है हुजूर का! अगर अपनी-पी पर आ जायें तो जहाँपनाह तो इनको आनन फानन में मटियामेट कर सकते हैं!" वाजिद अली शाह की धमनियों में शौर्य प्रवाहित होने लगा, जैसे रसिका ने जो कुछ कहा शत प्रतिशत सत्य हो। "हाँ, हम अगर कमर कस लें तो एक क्या ऐसी कई इंगरेज कंपनियों को नेस्तनाबूद कर सकते है। हम मुल्क के बादशाह जो हैं।" आशावाद ने उसे पुनः उत्साह से भर दिया। फिर सारे विचार गड्डमड्ड हो गये। रेज़ीडेन्ट, कंपनी सरकार, इंग्रेज़—सब कुछ एक दुःस्वप्न की भाँति अन्तर्ध्यान हो गये और आलिंगनबद्ध कामिनी के साकार यथार्थ ने उसे रंग में सराबोर कर दिया। रसिका ने भी उसे छकाने में कसर नहीं छोड़ी। प्यास के बाद तृप्ति और तृप्ति के बाद प्यास और फिर प्यास और फिर प्यास। इसी प्रकार क्रम चलता रहा और न जाने कब दोनों नींद के आगोश में पहुँच गये। एक रसिका ही नहीं, अनेक रसिकाएँ थी जो बादशाह को राज्य के झमेलों से मुक्ति दिलाकर रमणीयता के स्वर्ग में पहुँचा आल्हादित करती रहती थी। वे बादशाह की प्रवृत्तियों से भली भाँति परिचित थी, यही कारण था कि जब कभी वह गंभीरता से राज्य की समस्याओं पर मनन करना चाहता तो नृत्य-संगीत और सुरा-सुन्दरी का विचित्र सम्मोहन उसे भुलावे में डाले रखता। परिस्थिति-जन्य कारणों से वह ऐसे जीवन का आदी हो गया था। निम्नस्तर के गवैयों और नर्त्तक-नर्त्तकियों की सगत ने उसे अन्य सभी कार्यों के प्रति उदासीन बना दिया। रंगरेलियों के लिये दिन और रात का अन्तर भी भुला दिया था उसने और उधर अवध पर प्रेत-छाया अपनी मनहूस कालिमा का व्यापक विस्तार किये जा

रही थी।

चोट पर चोट दिल पे खाये हुए
होंठ फिर भी हैं मुस्कराये हुए
मौत की वादियों में बैठा हूँ
जिन्दगी की शमा जलाये हुए

5

राजमहल के बाहर भारी हंगामा था। चार ग्रामीणों को दो गोरे घुड़सवार पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। ग्रामीण गिड़गिड़ा कर दया की भीख माँग रहे थे। रक्त से लथपथ फटे कपड़े उनकी निर्धनता और दयनीय स्थिति की कहानी कह रहे थे। कभी वे उन गोरों के हाथ जोड़ते और पैर पकड़ लेते, कभी जोर जोर से चिल्लाते, "दुहाई जाने आलम की, दुहाई अवध के मालिक की। मार डालेंगे हमें, हाय दुहाई है ••।" रतन नाम की सेविका जो अभी बाजार से लौट रही थी तुरन्त हजरत महल बेगम के पास गई, और इस घटना का विवरण दिया। बेगम ने फौरन मुसाहिब महबूब खाँ को तलब किया और आज्ञा दी कि गोरे सवारों को गिरफ्तार करके उन गाँव वालों को यहाँ लाया जाये और जाने आलम के हुजूर में पेश किया जाये।

"जो हुक्म आली मुकाम," महबूब ने कहा, "मगर जाने आलम तो ••"

"अच्छा अच्छा, कोई बात नहीं, अगर वे नहीं मिल सकते तो उन्हें हमारे हुजूर में पेश किया जाये" बेगम ने आदेश दिया। महबूब खाँ तुरन्त आठ-दस घुड़सवारों को लेकर वहाँ पहुँचा और देखा अब तक काफी भीड़ इकट्ठी हो चुकी है और गोरों से दया की याचना कर रही है। हुजूर इन गरीबों को छोड़ दीजिए, सरकार!" चारों ओर से आवाजें आ रही थी। "नो, नो हम इनको नहीं छोडेगा, ये बदमाश लोग हैं! इनको मजा देना होगा! टुम लोग भाग जाओ!" गोरे चिल्ला रहे थे। जब भीड़ नहीं हटी तो उन्होंने हंटर निकाल लिये और लगे भीड़ पर फटकारने। जैसे ही भी पीछे हटी तो गोरों ने उन गरीबों पर हन्टर बरसाना शुरू किया। जब वे चारों जमीन पर गिर गये तो गोरे सवारों ने उनके हाथ रस्सी से बाँधना शुरू किया। शायद वे चारों को अपने घोड़ों के पीछे भागते या घिसटते हुए ले जाना चाहते थे। तब तक महबूब खाँ भीड़ को चीरता हुआ उनके पास

पहुँचा और कड़क कर पूछने लगा, "इन्हें क्यों कर, किसके हुक्म से गिरफ्तार किया गया है ?" देशी घुड़सवारों को एक अमीर सरदार के साथ देख कर पहिले तो गोरे सकपकाये और बगलें झाँकने लगे लेकिन तुरन्त तेवर बदल कर बोले, "इन लोग ने हमारे साहब कमांडर का हुक्म नहीं माना है उसी का ऑर्डर से गिरफ्टार करना माँगटा।" टूटी फूटी हिन्दुस्तानी में गोरो ने जवाब दिया। महबूब खाँ के सवारों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। अब उसने आदेश दिया, "इन्हें फ़ौरन छोड़ दो और अवध के बादशाह के हुज़ूर में पेश होकर इन्हें गिरफ्तार करने की इजाजत लो! यहाँ उनकी हुकूमत है, तुम्हारे कमाण्डर की नहीं।" गोरों ने विरोध करना चाहा, लेकिन महबूब खाँ के सिपाहियो ने उनकी मुश्कें बाँध ली और ग्रामीणों के बन्धन खोल दिये। महबूब खाँ ने महल में पहुँच कर पता किया तो मालूम हुआ कि बादशाह अभी तक शयन कक्ष में ही हैं और किसी को भी उनसे मिलने की मुमानियत है। अतः सबको बेगम के समक्ष पेश किया गया। ग्रामीणों ने जमीन पर लेट कर बेगम का अभिवादन किया और सिसकते हुए कहा, "हुज़ूर दुहाई है, मार डाला हुज़ूर···।" बेगम ने कड़क कर आज्ञा दी, "क्या हुआ, ठीक ठीक बयान करो!" "सरकार कल शाम हम खेतों मे काम कर रहे थे कि गोरे हमें जबरन पकड़ कर छावनी में ले गये और कहा कि कुछ बैल कम पड़ रहे है, तुम लोग इन तोपगाड़ियो को खीच कर ले चलो। हमने खीचना शुरू किया लेकिन थोड़ी ही देर में थकान और गर्मी के मारे हाँफने लगे। फिर भी हम धीरे धीरे तोपें खीचते ही रहे। गोरे हमें कोड़े मार मार कर जल्दी करने को कहते रहे और कानपुर की तरफ चलन लगे। बहुत थक जाने पर हमने गाड़ियाँ छोड़ दी और कहा कि अब हमसे ये तोपें नही खिचती। इस पर इन्होंने हमे और भी मारना शुरू किया। खून बहने लगा लेकिन फिर भी हमें तोप गाड़ियों में जोत दिया। जब काफी अंधेरा हो गया तो हम मौका देख कर भाग निकले और जंगल में एक पेड़ के पीछे छुप गये और फिर पेड़ पर चढ कर ही रात काट दी। ये लोग हमें रात भर ढूँढते रहे। पौ फटने से पहिले हम लोग चुपचाप पेड़ों से उतरकर छुपते छुपाते शहर की तरफ पहुँचे और एक खण्डहर में काफी देर तक छुपे रहे। जब हमें लगा कि इन्होने हमें तलाश करना बन्द कर दिया है तो हम खण्डहर से निकल कर हुज़ूर के महलों की तरफ आये ताकि हुज़ूर से इस मामले की फरियाद करें। जब महलों के पास पहुँचे तो इन गोरों ने हमें देख लिया और हमें पकड़ कर बाँधने लगे। उसी दम आपके सिपाही पहुँच गये, सरकार, और छुड़ा कर हमें यहाँ ले आये। हुज़ूर बहुत मारा है इन्होंने!" चारों ने खून से सने कुर्तों को उठा कर अपनी लोहू लुहान पीठ दिखलाई और कराहने लगे। बेगम उनकी पीठ देख कर सन्न से रह गई, "ओफ, बहुत ही बेरहमी से मारा है इनको!" उसने कहा, "अच्छा इन गोरों को क्या कहना है ?" उनमें से एक गोरा

सिपाही वोला "इन लोग ने हमारा कमाण्डर का हुक्म नही माना इसलिये इनको सजा डेना है इन्हें हमारे हवाले करें, मैडेम," वेगम ने अट्टहास कर मुँह चिढ़ाते हुए कहा "जी हाँ, तुम्हारे हवाले करें, सजा जो देनी है! जैसे यह जो सजा दी है वह बहुत कम हो। हमारी भोली भाली वेकसूर रिआया पर तुम लोग जुल्म ढाते हो और मुल्क में बदअमनी फैलाते हो! महवूब खाँ, इन बदजात फिरंगियों के पाँच पाँच कोड़े लगाये जायें ताकि इन्हें मालूम हो कि सजा क्या होती है! इसके वाद इन्हें काल-कोठरी मे बन्द कर दिया जाये।" सुनते ही गोरे सिपाही कहने लगे हम कंपनी सरकार का आदमी है हमें आप सजा नइं दे सकता।" "शैतानों यह तो तुम्हें अभी मालूम हो जायेगा कि हम सजा दे सकते हैं या नही।" वेगम की आंखो मे खून उतर आया था, "गनीमत समझो कि आज तुम्हारा कमाण्डर तुम्हारे साथ नही है वर्ना उसे भी हम सबक़ सिखाते है कि वादशाह की रिआया का लहू वहाने का क्या हश्र होता है! महवूव खाँ, हुक्म की तामील हो, और देखना इन किसानों की मरहम पट्टी का माकूल इन्तजाम किया जाये और जब तक ये बिलकुल ठीक न हो जायें इन्हें यही रखा जाये।"

"जी मलका-ए आलिया!" और महवूब खाँ ने सवारों को इशारा किया कि गोरों को कैदखाने की तरफ ले जायें। तभी गोरे घुटनों के वल वैठ कर चिल्लाने लगे, "रहम, हुजूर रहम।" लेकिन तब तक हजरत महल जा चुकी थी।

इस तरह की घटनाएं प्रायः होती रहती थी। कर्नल स्लीमैन चला गया था और उसकी जगह ऑटरम नया रेंज़ीडेन्ट वन कर आ गया। ऑटरम के आने के बाद ऐसी घटनाओं मे और भी वृद्धि हो गई। गोरो को ऐसे मामलों मे सजाएं देकर बेगम को वहुत संतोष होता। साथ ही वह अपने स्वामिभक्त सरदारो की सलाह से ऐसी योजनाएं बनाती रहती जिनसे अवध फिरंगियों के हस्तक्षेप से सदा के लिये मुक्त हो जाये। फिर भी भविष्य के अन्धकार से अवतरित अनिष्टकारी प्रेतछाया का अवध पर प्रसार दिनों दिन बढता ही जा रहा था।

6

आज हजरत महल के शयनागार मे बहुत चहल-पहल थी। वाजिद अली की एक सेविका ने बेगम को सूचित किया था कि आज बादशाह यहीं रात्रि-विश्राम

करेंगे। गुलाब, जुही और नागचंपा के फूलों और मालाओं से पूरे कक्ष को सजा दिया गया था। झाड़-फानूस और कंदील इस तरह जगमगा रहे थे जैसे आकाश के सितारे उतर आये हों। इत्रों ने पूरे वातावरण को मादक बना दिया था। हज़रत महल ने भी नई दुलहिन की तरह श्रृंगार किया था। मणि-माणिक्य हीरे-पन्ने और नीलम से जड़े आभूषण, मखमली ज़री के वस्त्र सभी ने मिलकर उसके सौंदर्य में चार चाँद लगा दिये। कक्ष में प्रत्येक वस्तु को सुव्यवस्थित कर दिया था। बेगम अपनी दासियों से चुहलबाज़ी करती हुई अधीरता से बादशाह की प्रतीक्षा कर रही थी कि नक़ीब ने उद्घोष किया, "बाअदब, बामुलाहिज़ा ···" एकदम चौकन्ना हो, बेगम ने कक्ष के बाहर जा बादशाह का झुककर अभिवादन किया, "ज़हे किस्मत ! आलीजाह, खुशामदीद !" बेगम को देखकर बादशाह ठगा सा देखता ही रह गया। "वाह बेगम, आज तो लगता है कि ज़मीन पर स्वर्ग उतर आया हो !" बादशाह ने कक्ष में प्रवेश करते हुए कहा। "हुज़ूर की ज़र्रानिवाज़ी है, वरना यह कनीज़। किस क़ाबिल है, जाने आलम !" तभी सब सेविकाएं झुककर अभिवादन करती हुई बाहर चली गईं।

वाजिद अली शाह ने बेगम को अंक में भर लिया और बेगम सिमटकर उसमें समा गई। आज जानेआलम को रस में सराबोर कर देना चाहती थी वह ! जब भी बादशाह इस कक्ष में आता उसे महसूस होता कि जो आकर्षण, नवीनता और चुम्बकीय आत्मीयता बेगम में है वह किसी अन्य सुन्दरी में देखने को भी नहीं मिलती किन्तु आदत से मजबूर होने के कारण दूसरे ही दिन से वही दिनचर्या चलती—नाच गाना और नित नई नवयौवनाओं से संसर्ग।

कक्ष से जुड़े स्नानागार में इत्र-मिश्रित जल से स्नान कुंड लबालब भर दिया गया था। बेगम को ज्ञात था कि बादशाह को जल-क्रीड़ा से विशेष लगाव है। वह बोली, "आइये आलीमुक़ाम आज हमाम में···"

"वाह मलका वाह ! आज पानी में ही अठखेलियों का लुत्फ़ उठाया जाये।"

बेगम विद्युत गति से स्नान कुण्ड की ओर गई और पानी में उतरने लगी कि बादशाह ने पकड़कर कहा, "ओहो बेगम, पहिले ये कपड़े तो उतार लो, ये ज़री ये ज़ेवरात सब भीगकर···।" बेगम हाथ छुड़ाकर पानी में उतर गई और बोली, "हुज़ूर, ये तमाम सल्तनत पूरा का पूरा अवध का राज भी तो पानी में भीगकर बर्बाद हो रहा है फिर इस पोशाक और इन ज़ेवरात की क्या औक़ात !"

"उफ़ बेगम !" कहते हुए बादशाह भी अपने कपड़ों समेत कुंड में उतर गया। गर्मी का मौसम था। भीगे हुए कपड़ों में बेगम और भी हसीन लग रही थी। ऐसा नहीं कि बेगम के कटाक्ष ने वाजिद अली शाह को कचोटा न हो। एक क्षण के लिए वह सल्तनत के ख़याल में डूबा ज़रूर लेकिन दूसरे ही क्षण मूर्त कमनीय वर्त्तमान ने उसे फिर भुलावे में डाल दिया और वह बेगम के एक-एक

11416

वस्त्र को उतार कर किनारे पर फेंकने लगा। समस्त आभूषण भी किनारे पर रख दिये। कुण्ड के किनारे पर आभूषणों के ढेर लग गये थे जैसे किसी सर्राफ का प्रदर्शन गृह हो। बेगम ने बादशाह की पोशाक उतारी और बहुत देर तक पानी में अठखेलियाँ करते रहे।

"इस तरह तुम कितनी खूबसूरत लगती हो बेगम !" बादशाह ने कहा और बेगम ने लज्जा से आँखें झुकाकर एक डुबकी लगाई। बादशाह ने इधर उधर हाथ फैलाकर बेगम को पकड़ लिया और बाहुपाश में कस लिया। काफी देर हो जाने के बाद दोनों बाहर आये, एक-दूसरे के अंगों को तौलिये से पोंछा और शैय्या में समा गये। दोनों ही एक-दूसरे में आत्मसात हो जाना चाहते थे जैसे समस्त सृष्टि का आदि और अन्त उन्हीं तक सीमित हो। अविराम रति क्रीडा चलती रही और अन्त में दोनों निढाल होकर सो गये .आज दोनों को अतुलनीय आनन्द का अनुभव हुआ था। वाजिद अली की नींद खुली तो अंगड़ाई लेते हुए उसने एक बार फिर बेगम को अंक में भर लिया। बेगम पहिले से ही जाग गई थी, कहने लगी, "आलीजाह आज की यह मुलाकात हमेशा याद रहेगी।"

"क्यों मलका क्यों, आज की ही क्यों ! अभी तो···।"

"हुज़ूर मुझे तो डर लग रहा है। ऐसा महसूस होता है कि ये दिन फिर नहीं लौटेंगे।" सिसकते हुए बेगम ने कहा।

"ऐसी भी क्या वजह है मलका ! तुम क्यों कर इतनी परेशान हो ?" बादशाह उठकर बैठ गया और बेगम को अपनी गोदी में लिटा लिया।

"आली मुकाम, महज़ परेशान ही नहीं। मुझे हर वक़्त यही अंदेशा रहता है कि ये फिरंगी अवध पर अपना मनहूस साया बढ़ाते जा रहे हैं और हम बिलकुल बेख़बर बैठे हैं।"

"लेकिन बेगम इसमें अंदेशा किस बात का है ! और तुम इनके साये को मनहूस क्यों कर कहती हो ? आखिर ये फिरंगी ही तो हमें फिजूल की मारकाट व जंगो जिहाद से महफ़ूज़ किये हुए हैं। हमें ये सारी सहूलियात और ऐशो-आराम इन्हीं फिरंगियों की बदौलत तो मिले हैं। ? इसमें अवध की सल्तनत को क्या खतरा हो सकता है ?" बादशाह ने बेगम को समझाने की गरज से कहा, लेकिन उनके दिल में एक तूफान चालू हो गया। जिसे वह हठात् शान्त करने का प्रयत्न कर रहा था। अनिष्ट की आशंका ने उसे दहला दिया था किन्तु प्रकट में वह निश्चिन्तता का उपक्रम कर रहा था।

लेकिन बेगम निश्चिन्त नहीं थी, "जाने-आलम हर आने वाला दिन अवध को फिरंगियों के शिकंजे में कसता जा रहा है। ये लोग खुद ब खुद मुल्क में बदअमनी फैला रहे हैं और कहते हैं कि बादशाह का इन्तिज़ाम ठीक नहीं। रिआया पर खुद जुल्म ढाते हैं और हमारे वफ़ादार ताल्लुकेदारों का नाम लगाते हैं।"

"हाँ बेगम हमारे सुनने में भी यही आया है मगर कोई पुख्ता सुबूत भी तो नहीं मिलता।" बात टालने के विचार से वाजिद अली ने सहमति प्रकट की।

"आली मुकाम मुझे इसके बहुत से सुबूत मिल चुके हैं। कभी ये किसानों से बेगार लेकर उन्हें तंग करते हैं, कभी औरतों की आबरू लूटते हैं या उन्हें फरार कर ले जाते हैं। हमारे वज़ीर व हुक्काम के हर काम में दखल देते हैं। अभी तीन-चार रोज पहिले का ही वाकया है। कुछ इंगरेज़ बुधायन से तीन लड़कियों को जबरन अपने घोड़ों की पीठ पर बाँध कर भगाये जा रहे थे, मगर हमारे जागीरदार के आदमियों ने उनका पीछा किया और पकड़ लिया। सब को हमारे सामने पेश किया गया तो हमने यही समझा कि ये अवध के ही सिपाही हैं क्योंकि उन्होंने उन्हीं की जैसी पोशाक पहिन रखी थी और उनका रंग भी गोरा नहीं था। हमें मुगालते में पड़ा देख जागीरदार के सिपाहियों ने उनका मुँह पानी से धुलवाया तब कहीं तहकीक हुआ कि ये गोरे सिपाही है क्योंकि उन्होंने अपने हाथ-पैर और मुँह पर कालिख लपेट रखी थी। फिलहाल मैंने उन्हें कैदखाने में डाल रखा है मगर लगता है जल्द ही जनाब आँटरम साहब की तरफ से शिकायत आयेगी।"

सिर्फ़ कहने के लिए बादशाह ने कहा, "ओफ़ ओह, ये तो बहुत अजीब बात है।

"हैरतअंगेज, हुजूर, हैरतअंगेज! मगर फिर भी सल्तनत में ऐसे हादसे आम हो गये हैं। सोचते थे कि नये रेजीडेन्ट के आ जाने पर शायद हालात सुधरेंगे मगर आज एक साल से ऊपर हो जाने पर भी बिगड़ते ही जा रहे हैं।" बेगम ने उत्तेजित होकर कहा, "आलम पनाह, हमें वक्त रहते कुछ करना चाहिये।"

"मलका हम कर भी क्या सकते हैं! हमारे पर कैंच कर रखे हैं इन्होंने, हमारी हर कार्रवाई पर रेजीडेन्ट नज़र रखता है, हमारी सिपह बढ़ने नहीं देता, इग्रेज़ी फ़ौजों में इज़ाफा किया जा रहा है और उसका सर्फा भी हमारे ऊपर डाला जा रहा है।"

"हुजूर की इजाज़त हो तो मैं कुछ खैरख्वाह जागीरदारों को खत भेज-कर…।"

"मलका, हमें कोई ऐतराज नहीं, लेकिन कामयाबी में शक़ है। हमारे वज़ीर ने भी इस तरह के खुतूत भिजवाये हैं, नतीजे का इन्तज़ार है। इस जिल्लत में पड़ने के बजाय तो हमारे लिये यही मौजू होगा कि खामोशी इख्तियार किये रहें और फिरंगियों को अपनी वफ़ादारी पर शुबहा नहीं होने दें। अगर हम ऐसा करते हैं तो हमारी सल्तनत बरकरार रहेगी और हम अमन चैन से अपनी

जिंदगी गुज़ार सकेंगे।"

"आलीजाह, इनकी हरकतों से तो मुझे नहीं लगता कि ये हमें चैन से रहने देंगे।" इनके मंसूबे बहुत पोशीदा रहते हुए भी साफ़ ज़ाहिर हैं, फिर नागपुर, सतारा और पूना वगैरह की मिसालें भी हमारे सामने हैं। जब ये देख लेंगे कि हम बिल्कुल कमज़ोर और लाचार हो गये हैं तो अवध को हड़पने में ज़रा भी देर नहीं लगाएंगे। मैंने हाल ही में सुना है कि इनके फ़ौजी दस्ते आजकल मुस्तैदी से शहर के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे हैं।" बेगम एक सांस में बोल गई।

"फौजी दस्ते शहर के आस-पास क्यों कर चक्कर लगा रहे हैं, कुछ समझ में नहीं आता!" बादशाह सर से पैर तक सिहर गया था।

"जाने आलम, इंगरेज़ी फ़ौजों की सरगर्मियां बढ़ती ही जा रही हैं। मुझे हर वक्त यही लगता है कि कोई अजीब हादसा होने वाला है। अगर, जाने आलम अब भी दिलचस्पी लेना शुरू करें तो मुझे पूरा यकीन है कि अपने ताल्लुकेदारों और वफादार हुक्काम की इमदाद से हम लोग बहुत कुछ कर सकते है और इन फिरंगियों के नापाक इरादों को कामयाब होने से रोक सकते हैं।

बादशाह पस्त-हौसला हो चुका था। वह किसी तरह का जोखिम उठाने को तैयार नहीं था। वर्तमान के रंगीन सपनों में खोये रहने के साथ ही वह अवध पर मंडराती प्रेत छाया को देखते हुए भी अनदेखी कर देना चाहता था। उसने अपना फैसला सुनाया, "मलका, हमारी समझ में तो कुछ भी नहीं आता! हम लोग इन फिरंगियों की चालबाज़ियों से किसी भी तरह पेश नहीं पा सकेंगे। यही बेहतर होगा कि सारे मामले को अल्लाह-त्ताला के रहमोकरम पर छोड़ दिया जाये।" और वह अपनी पोशाक व्यवस्थित करने लगा। आशंकाओं ने उसे झक-झोर कर और भी निरुत्साहित कर दिया।

बेगम कुछ कहना ही चाहती थी कि वह कक्ष से बाहर चला गया। हज़रत महल अब भी कुछ करने के लिये दृढ़-संकल्प थी। बादशाह की उपेक्षा-भावना का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। हतोत्साहित होने के बजाय वह दुगुने उत्साह से अपनी योजना में जुट गई। उसने ताली बजाई। सेविका के आने पर उसने आदेश दिया कि शाम को चार बजे महबूब खां, अली नकी खां, राजा जैलालसिंह और शराफ़ुद्दौला को हमारे हुज़ूर में पेश किया जाये।

7

सर जेम्स ऑटरम को अवध में आये एक वर्ष से अधिक हो चुका था। वह सुलझा हुआ अनुभवी अधिकारी था और चाहता था कि अवध में यथासंभव शान्ति और व्यवस्था बनी रहे, हालांकि निम्न स्तर के गोरे अधिकारी तथा सैनिक प्रदेश में लूटमार करने और अव्यवस्था फैलाने के आदी हो चुके थे। ऑटरम समय समय पर घटनाओं का सही आंकलन करने का प्रयत्न करता तो छोटे अधिकारी उसे गुमराह करने से नहीं चूकते और हर बार स्थिति का ऐसा चित्रण करते कि बादशाह के ताल्लुकेदारों, कर्मचारियों या सैनिकों का ही अपराध प्रकट होता। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ ताल्लुकेदार, जागीरदार और राज्य के अधिकारी भी अवसर पा कर कुव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर लाभ उठाने से नहीं चूकते थे किन्तु ऐसे लोगों की संख्या नगण्य थी।

रेज़ीडेन्ट ऑटरम ने बादशाह, वज़ीर और राज्य के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से तथा अंग्रेज़ अधिकारियों से कई बार मंत्रणा कर ऐसा मार्ग ढूंढ़ना चाहा जिससे प्रशासन सुचारू रूप से चल सके किन्तु कुछ आधारभूत दोष थे जिनके कारण यह सम्भव नहीं हो सका। विगत समय में कई बार बादशाह को चेतावनी दी गई थी किन्तु इन मौलिक दोषों के उपचार के लिए किसी ने कुछ नहीं किया। यह राज्य ईस्ट इण्डिया कंपनी के साथ शुजाउद्दौला की सन्धि के समय से ही ब्रिटिश नियन्त्रण में आ चुका था। बाद में लॉर्ड वैलेज़ली की सहायक-सन्धि ने अवध के शासकों को अंग्रेज़ी संरक्षण का ऐसा विश्वास दिलाया कि वे राज्य के हितों से बेखबर होकर केवल विलासिता का जीवन जीने के आदी हो गए। कालान्तर में वे पूर्णतः अकर्मण्य बन कर रह गये। फलस्वरूप अवध के आन्तरिक मामलों में भी ब्रिटिश-हस्तक्षेप दिनोंदिन बढ़ता गया और कंपनी के अधिकारियों को राज्य में मनमानी करने का अवसर सुलभ होता गया। स्थिति इतनी शोचनीय हो चुकी थी कि इसे सुधार पाना रेज़ीडेन्ट, बादशाह या अन्य किसी व्यक्ति या शक्ति के वश की बात नहीं रही थी।

एक दिन जब ऑटरम अपने दफ्तर में इसी मामले पर गंभीर विचारों में तल्लीन था, एक सहायक ने गवर्नर जनरल डलहौज़ी का उसके नाम भेजा गोपनीय पत्र उसकी मेज़ पर लाकर रख दिया। पत्र देखते ही ऑटरम की तन्द्रा टूटी और वह तुरन्त लिफ़ाफ़ा खोल कर उसे पढ़ने लगा। पत्र पढ़ते हुए उसके चेहरे की रंगत बदलती रही। गवर्नर जनरल ने लिखा था कि अवध के बादशाह, ताल्लुकेदारों और अधिकारियों पर कड़ी नज़र रखी जाये और वहां व्याप्त भ्रष्टाचार तथा अराजकता पर हमें हर सप्ताह एक रिपोर्ट भेजी जाये। यदि बादशाह हालत

सुधारने में नाकामयाब रहे (जैसी कि हमें उम्मीद भी है) तो हमारा इरादा है कि इस समस्या का समाधान अवध का प्रशासन अपने हाथों में लेकर तथा बादशाह को सिर्फ अपना महल, पद एवं उपाधियाँ आदि देकर किया जाये। ऑटरम को यह आदेश भी दिया गया था कि इस मामले में काफ़ी सख्ती से काम लिया जाये और किसी के प्रति कोई हमदर्दी या रिआयत नहीं बरती जाये।

पत्र पढ़कर ऑटरम असमंजस में पड़ गया। कई बार पारस्परिक विचार-विमर्श में भी लार्ड डलहौज़ी ने ऑटरम से कहा था कि ब्रिटिश-साम्राज्य तेज़ी से उत्तर की ओर बढ़ रहा है अतः अवध जैसे कुशासित प्रदेश का साम्राज्य के केन्द्र में होना एक विसंगति है।

ऑटरम सोचने लगा कि कहीं यह अवध को अंग्रेज़ी राज्य में मिलाने के लिये पेशबन्दी तो नहीं है! ऑटरम राज्य की समाप्ति के बिल्कुल विरुद्ध था अतः उसने अपने प्रतिवेदनों में अवध की शोचनीय स्थिति का तो स्पष्ट रूप से उल्लेख किया किन्तु अपनी यही सम्मति प्रकट की कि कुछ दिनों के लिये यहाँ का शासन कंपनी सरकार अपने हाथों में ले ले और जब स्थिति सुधर जाये तो पुनः बादशाह को लौटा दे। उसने प्रारम्भ से अब तक अवध के शासकों के ब्रिटिश कम्पनी के प्रति मधुर तथा मित्रतापूर्ण संबंधों तथा कई सन्धियों का हवाला देते हुए लिखा कि अवध का शासन सदैव के लिये अपने हाथों में ले लेना ऐसे स्वामि-भक्त और विनीत शासक के प्रति घोर विश्वासघात और अन्याय होगा।

लॉर्ड डलहौज़ी को प्रतिवेदन भेजते रहने के साथ ही ऑटरम ने समय-समय पर सम्बन्धित व्यक्तियों से इस मामले में चर्चा भी की किन्तु कोई प्रभावी एवं औचित्यपूर्ण हल खोज पाने में असफल रहा। ऑटरम के अलावा भी कई अंग्रेज अधिकारी अवध राज्य के प्रति उदारता की भावना रखते थे किन्तु वे विगत समय में अवध की भाग्य-पट्टिका पर गहराई तक उकेरे हुए अक्षरों को मिटा पाने में नितान्त असमर्थ थे।

उधर लॉर्ड डलहौज़ी अपनी कुत्सित योजना के कार्यान्वयन के लिये अनुकूल अवसर की खोज में था। उसकी दृष्टि में चतुर्दिक् बढ़ते हुए ब्रिटिश-साम्राज्य के बीचोबीच अवध एक काला धब्बा ही तो था! इस धब्बे को धो डालने के लिये कुशासन का आरोप और सुशासन की आशा से अधिक सुविधाजनक और उपयुक्त बहाना हो भी क्या सकता था! इसीलिये वह चाहता था कि रेज़ीडेण्ट से जल्दी-जल्दी प्रतिवेदन मँगवाये जायें ताकि वह अपने अन्यायपूर्ण रवैये का औचित्य सिद्ध कर सके। डलहौज़ी के पक्ष में सबसे महत्वपूर्ण दलील थी अवध की पचास लाख प्रजा को उत्पीड़न और अत्याचार से मुक्ति दिलाना। अतः जन-कल्याण रूपी भेड़ के आवरण में डलहौज़ी का राज्य हड़प लेने वाला भेड़िया अत्यन्त कुशलता से छुपा दिया जा सकता था। अनीति और विश्वासघात पर चढ़ाया हुआ सदाशयता

ा मुलम्मा डलहौज़ी की क्रूर साम्राज्य विस्तार-नीति का सरलता से पर्दाफाश ही होने दे सकता था ।

गवर्नर-जनरल तथा उसकी परिषद के सदस्यों का खूनी पजा खामोशी से वध की ओर बढ़ रहा था और अवध पर मनहूस प्रेत-छाया गहराती जा रही ी ।

काफी समय से कोई प्रत्युत्तर प्राप्त न होने के कारण आँटरम को चिन्ता हुई ौर अवध को बचाने के लिए उसने एक और प्रयास करना उचित समझा । राज्य की शोचनीय स्थिति के कारणों का विश्लेषण करते हुए उसने पुन: सिफा-रिश की कि राज्य का शासन प्रबन्ध कंपनी-सरकार कुछ दिनों के लिये सम्भाल ले और सर्वोच्च सत्ता बादशाह अपने हाथ में ही रखे । जब हालात मे सुधार आ जाये तो शासन प्रबन्ध पुन: शासक को हस्तान्तरित कर दिया जाये । इसके बाद *वह लॉर्ड डलहौज़ी के अन्तिम निर्णय की आतुरता से प्रतीक्षा करने लगा ।*

8

बेगम हज़रत महल की आज्ञानुसा[illegible] कक्ष में उपस्थित हो विचार-विमर्श में व्यस्त थे । इस बैठक में सदारत करने का निवेदन करते हुए बेगम ने बादशाह को अत्यन्त अनुरोधपूर्ण सदेश भेजा था, किन्तु बादशाह अपने प्रिय ढोलची के घर नाच-रंग मे इतना व्यस्त था कि सन्देशवाहक को अपने पास तक नही फटकने दिया और बैठक मे सम्मिलित होने से साफ़ इनकार कर दिया ।

बेगम ने ही सदारत की तथा चर्चा का शुभारम्भ करते हुए अवध में फैली अराजकता और अंग्रेज़ कंपनी के इरादों और उनकी हाल की सैनिक गतिविधियों के सम्बन्ध मे बताया ।

"मलका-ए-आलिया, हम लोग जान पर खेलकर भी सल्तनत फ़िरंगियों को नही हथियाने देंगे ।" महबूब खाँ ने कहा ।

"महबूब खाँ हमे तुम्हारी वफ़ादारी व बहादुरी में कोई शुबहा नही मगर सिर्फ़ चन्द सरदारों व उनकी सिपह का इन फ़िरंगियों से लोहा लेना नामुमकिन होगा !" बेगम ने कहा ।

"आली मुक़ाम ! हुजूर का इशारा है कि सल्तनत के दीगर ताल्लुकेदारों, राजाओं और जागीरदारों से मदद ली जाये।" यह अली नक़ी ख़ाँ था।

"जी हाँ, वज़ीर, हम चाहते हैं कि उन्हें ख़त भेजे जायें कि हमारी मदद को तैयार रहें।"

"हुजूर ऐसे चन्द ख़त तो मैं जाने आलम की इजाज़त से भिजवा चुका हूँ।" अली नक़ी ख़ाँ ने बताया।

"बहुत ख़ूब," बेगम ने कहा, "अन्दाज़न कितने लोगों को ऐसे ख़त भिजवा चुके होंगे ?"

"तक़रीबन छः ताल्लुकेदारों को......।"

"ठीक है मगर हमें क़रीब-क़रीब सभी वफ़ादार ताल्लुकेदारों व ज़मींदारों को ख़त भेजने चाहिये।" बेगम ने कहा।

राजा जैलाल सिंह जो अब तक चुप बैठा था, बोला, "आलीक़द्र, अगर इस तरह के ख़त किसी क़दर रेज़ीडेन्ट की नज़र में आ गए तो बहुत परेशानी हो जायेगी। फिर कुछ ताल्लुकेदारान ऐसे भी हैं जो इंग्रेज़ों से खानगी तौर पर हमदर्दी रखते हैं।"

"बिलकुल बजा ! वाक़ई हमें इस काम में बहुत एहतियात बरतना होगा। सबसे पहले हमें उन राजाओं और ताल्लुकेदारों की फ़ेहरिस्त तैय्यार करनी है जिनकी वफ़ादारी पर किसी शक़ व शुबहा की गुंजाइश नहीं हो। उसके बाद बहुत ज़िम्मेदार व ख़ैरख़्वाह आदमियों के ज़रिये उन्हें हमारे ख़त भिजवाये जायें।" बेगम ने कहा।

"मलका-ए-मुअज़्ज़मा, मैंने यह फ़ेहरिस्त तैयार कर ली है आप मुलाहिज़ा फ़रमा लें और जहाँ-जहाँ इसमें तरमीम की गुंजाइश हो, करा ली जाये।" शराफ़ुद्दौला ने एक फ़ेहरिस्त पेश करते हुए कहा।

"वाह, बहुत अच्छा!" कहते हुए बेगम ने फ़ेहरिस्त उसके हाथ से ले ली और काफी देर तक ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर पन्ने पलट-पलट कर एक-एक नाम को देखती रही। "यह तो बहुत दुरुस्त मालूम होती है ! हाँ इसमें अतरौली के बेनी माधव का नाम नहीं है, वह और दर्ज कर लिया जाये।" कहते हुए उसने काग़ज़ दूसरे सरदारों की तरफ बढ़ा दिये। सभी सरदारों ने नामों पर गौर किया और कुछ दूसरे नाम जोड़ने और तीन नाम हटा देने का सुझाव दिया। तदनन्तर एक-एक नाम पर सबने मिलकर गौर किया और सन्देहास्पद नामों को हटा दिया गया तथा नये नामों के विषय में सुझाव दिये गए। अन्त में इस सूची को अन्तिम रूप दे दिया गया।

राजा जैलाल सिंह ने कहा, "आलीक़द्र, मेरी राय में कुछ ख़ास राजाओं और ताल्लुकेदारों को ख़त भेजने के बजाय लखनऊ बुला भेजा जाये ताकि हुजूर के

रूबरू बात-चीत हो सके।" दूसरे लोगों ने भी राजा की बात का समर्थन किया और बेगम द्वारा अनुमोदन के बाद व्यक्तिगत रूप से बुलाये जाने वाले सरदारों के नाम एक विशेष सूची में लिख कर बड़ी सूची में से हटा दिये गए। इन्हें लिखा गया कि सल्तनत के एक बहुत जरूरी और अहम काम के सिलसिले में आप फौरन से पेश्तर लखनऊ तशरीफ़ लायें और दरबार मे पेश होने की ज़ेहमत उठायें। शेष रईसों को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप भी तैयार कर लिया गया जिसमे लिखा गया कि अवध पर मुसीबतों के बादल छाये हुए हैं। फिरंगियो की दखलंदाज़ी और तानाशाही हद से गुजर गई है और हमारी रिआया पर इंग्रेज़ी जुल्म व सितम की कोई इन्तिहा नही। इंग्रेज़ों के कारनामों से ऐसा जान पड़ता है कि ये लोग जल्द ही अवध को नागपुर, सतारा और झाँसी की तरह हड़प कर इंग्रेजी राज का सूबा बना लेना चाहते हैं। लिहाज़ा हमें वक्त रहते इनसे मुक़ाबिले की तैयारियां शुरू कर देना जरूरी होगा। आप अपने इलाके में पोशीदा तौर पर पल्टन में बढ़ोतरी शुरू कर दें ताकि वक्त आने पर सल्तनत की हिफ़ाज़त के लिए हमारी इमदाद को तैयार रहे। सौदागर इग्रेज कंपनी की नाकिस हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेंकने और मुल्क की आजादी कायम रखने के लिये यह लाज़िम है कि हम सब मिलकर एक जुट हो जायें और अपनी जान व माल की कुर्बानी देने को कमर कस कर तैयार रहें।

तत्पश्चात् पत्र-वाहकों के नामों पर विचार-विमर्श हुआ और अत्यन्त विश्वसनीय व्यक्तियों की एक सूची भी तैयार कर ली गई। यह भी तय हुआ कि अगले तीन दिन के अन्दर सारे पत्र रवाना कर दिये जायें।

दूसरे मुद्दों पर भी चर्चा हुई। शहर के इर्दगिर्द अंग्रेज़ी फ़ौजों की सरगर्मी के बारे में सभी को जानकारी थी। अत: सबकी राय यही थी कि कुछ न कुछ दाल में काला जरूर है। अली नक़ी खाँ ने वायदा किया कि वह गुप्त रूप से इसके बारे में पता लगा कर विवरण प्रस्तुत करेगा।

राजा जैलाल सिंह ने कहा कि वह अवध के सैनिक अधिकारियो से इस मामले की चर्चा करेगा और उन्हें मुस्तैदी से तैयार रहने के लिये हिदायत देगा।

शराफ़ुद्दौला ने अपने ऊपर अंग्रेज़ी सेना के देशी अफ़सरों और सिपाहियों में अपने गुप्तचर भेजकर अंग्रेज़ों के प्रति नफरत और देश के प्रति हमदर्दी पैदा करने की जिम्मेदारी ली। महबूब खाँ भी पीछे रहने वाला नही था। उसने राज्य के असैनिक अधिकारियों को राज्य के प्रति जागरूक रहने और कंपनी सरकार के विरुद्ध संगठित करने का उत्तरदायित्व लिया।

यह भी निश्चय किया गया कि प्रत्येक महत्वपूर्ण सरदार अवध के विभिन्न भागों का दौरा करता रहेगा और स्थानीय रईसों को मार्गदर्शन दे प्रोत्साहित

करेगा और इग्रेजो के विरुद्ध संगठित करेगा।

बेगम ने सब की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन सभी कामों में भारी जोखिम का अंदेशा है, लिहाजा इन्हें बहुत होशियारी से अंजाम देना होगा। सभी अमीरों ने सहमति में सिर हिलाया।

"अगर दो-तीन माह का वक्त भी मिल गया तो हमारी कामयाबी में कोई शकोशुबहा नहीं रहेगा!" बेगम ने विचार प्रकट किया।

चारों अमीर तहेदिल से दुआ मांगने लगे कि किसी तरह दो-तीन माह का वक्त मिल जाये। जनवरी का मध्य गुजर चुका था। जल्दी अंधेरा हो गया था, फिर भी बैठक देर रात तक चलती रही। अन्त में बेगम ने सबका शुक्रिया अदा किया और बैठक के समापन की घोषणा की। तभी किसी भारी चीज़ के टूटने की खनखनाहट हुई। जांच के बाद पता चला कि कोई घायल चील सदर दरवाज़े पर लगे काँच के फ़ानूस से टकरा गई थी और भारी भरकम फ़ानूस खील-खील हो जमीन पर बिखरा पड़ा था।

9

बहुत दिन के बाद क़ासिद आज लाया है जवाब,
फ़ैसला किस्मत का ज़ाहिर है खते तहरीर से।

लॉर्ड डलहौज़ी अपनी क्रूर साम्राज्य-विस्तार-नीति के लिये भारत में काफ़ी कुख्यात हुआ। उसके क्रियाकलापों से आभास होता है कि वह एक बलिष्ट एवं भव्य व्यक्तित्व का स्वामी होगा किन्तु यह एक विरोधाभास ही है कि वह अत्यन्त निर्बल तथा चिर-रुग्ण व्यक्ति था। दाईं टांग की हड्डी में कभी न ठीक होने वाले फोड़े के कारण वह लंगड़ा कर चलता था। उसके सर में बार-बार दर्द के भयंकर दौरे उठते थे। जब तक वह भारत में रहा उसकी शारीरिक शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती गई। भारत की जलवायु और परिस्थितिजन्य तनावों से उसकी कमजोरी इतनी बढ़ गई कि बोलने की शक्ति भी क्षीण होने लगी। कमज़ोर व्यक्ति स्वभावतः तुनुक मिजाज व क्रोधी हो जाता है। अतः डलहौज़ी ज़रा-ज़रा सी बातों पर झल्ला उठता था। किसी मुद्दे पर उसे अपने दृष्टिकोण के विपक्ष में कोई तर्क संगत बात भी सहन नहीं होती थी। अनेक राजघरानों को उजाड़ कर उनसे सम्बन्धित असंख्य लोगों को दर दर भटकने पर विवश करने

वाला व्यक्ति स्वयं भी सुख-चैन की रोटी कैसे खा पाता ! यह दैवी न्याय ही तो था !

आज जब वह कुछ आवश्यक पत्र देख रहा था तो उसके सचिव ने ऑटरम का भेजा हुआ पत्र उसके समक्ष प्रस्तुत किया। पत्र पढ़ते-पढ़ते वह लाल-पीला होने लगा। सचिव से पूछा, "यह पत्र आज कितने बजे प्राप्त हुआ ?"
सचिव ने कहा, "प्रातः ग्यारह बजे।"

"मगर अब तीन बज रहे हैं, हमें इतनी देर से क्यों पेश किया गया ?"

"योर एक्सीलेन्सी मैं ....।"

"नॉनसेन्स निकल जाओ ! लापरवाई की कोई हद ही नहीं !

गे ....ट........आ.........उ..........ट ! " एक एक शब्द पर ज़ोर देते हुए वह मुँह से झाग डालने लगा। सचिव नीचा सिर किये कमरे से बाहर चला गया।

डलहौज़ी ने खत को कई बार ऊपर से नीचे तक पढ़ा और बुदबुदाने लगा, "ये ब्रिटिश आफ़ीसर्स भी ग़ज़ब करते हैं ! खाते हैं कम्पनी का नमक और बजाते है इन नाकारा राजाओं की ! न जाने इन्हें गये गुज़रे जमाने की इन अजायबघर के योग्य चीज़ों की तरफ इतनी कशिश क्यों है ! ज़रूर ऑटरम का सिर फिर गया होगा ! " वह लंगड़ाता हुआ आवेश मे अपने कमरे में इधर से उधर, उधर से इधर चिड़ियाघर मे आये नये शेर की तरह चक्कर लगाने लगा। जितना ही वह तनाव दूर करने का प्रयत्न करता उतना ही बढ़ता जाता। फिर भी वह अपने निश्चय पर अटल था। अजगर अपने मुँह में आये अधनिगले शिकार को छोड़ भी कैसे सकता है ! उसने बहुत दिन पहले कंपनी के निदेशक मण्डल को अवध की स्थिति का विवरण देते हुए प्रस्ताव भेज दिया था कि अवध का शासन अपने हाथों मे ले लिया जाये और बादशाह को पेन्शन देकर अपदस्थ कर दिया जाये। यद्यपि उसे आशा थी कि निदेशक मण्डल उसके प्रस्ताव का अनुमोदन ही करेगा, तथापि जब तक उसका निर्णय प्राप्त नही होता सारा मामला अधर-झूल में लटका था और वह उसकी आतुर प्रतीक्षा में था।

ऑटरम के पत्र की उपेक्षा कर उसने तुरन्त उस पर टिप्पणी लगा दी, "किसी कार्रवाई की ज़रूरत नही।" इस पर भी वह कुण्ठा-मुक्त नहीं हो सका। निर्मम तथा क्रूर से क्रूर व्यक्ति भी जब कोई अन्याय पूर्ण कार्य करता है तो उसकी अन्तरात्मा उसे धिक्कारती रहती है, विशेष रूप से तब, जब कोई उसके कार्य के अनौचित्य की ओर इंगित करता है। आज ऑटरम के पत्र ने यही किया था। यों तो डलहौज़ी अपने कुत्सित संकल्प पर डटा रहा किन्तु उसका अन्तर अनवरत पीड़ा के कारण कई दिनों तक आहत पक्षी की तरह छटपटाता रहा। इसी तरह कई दिन निकल गये और अन्त में निदेशक मण्डल का निर्णय भी आ पहुँचा।

निदेशक-मंडल ने, जो पहिले से ही अवध पर दाँत गड़ाये उसे निगल जाने की प्रतीक्षा में था, स्पष्ट रूप से अवध को ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लेने का आदेश दे दिया था। इस निर्णय ने उन्नीस वर्ष पूर्व बादशाह के साथ हुई सन्धि की सरासर अवहेलना की थी। उस सन्धि के अनुसार बादशाह को या तो शासन में सुधार लाना था या सर्वोच्च सत्ता स्वयं रखते हुए शासन कंपनी सरकार को सौंप देना था ताकि स्थिति ठीक हो जाने पर उसे बादशाह को लौटाया जा सके।

डलहौज़ी की दुविधा दूर हुई और वह अपनी योजना के सुचारू रूप से कार्यान्वयन में लग गया। इस कुटिल योजना को न्यायोचित रूप देने के लिये उसने यह तय किया कि अवध के शासक के समक्ष एक नई सन्धि का प्रस्ताव रखा जाये जिसके अनुसार वह सदा के लिये अवध का शासन स्वयं अंग्रेजों को सौंप दे। उसे उम्मीद थी कि शासक ऐसी सन्धि पर हस्ताक्षर कर के स्वेच्छा से पूर्णतः गद्दी से उतार दिया जाना नहीं चाहेगा। तदनुसार उसने रेज़ीडेन्ट को लिखा कि यदि बादशाह नई सन्धि पर हस्ताक्षर करने से इनकार करे तो अवध पर आवश्यक बल प्रयोग द्वारा कब्जा कर लिया जाये और अपदस्थ बादशाह को नज़रबन्द कर कलकत्ते भेज दिया जाये क्योंकि उसके अवध में रहने से निरन्तर जोखिम की सम्भावना बनी रहेगी। डलहौज़ी अपने जोश तथा अदूरदर्शिता के कारण यह कल्पना तक नहीं कर सका कि बादशाह को अवध से निष्कासित कर वह कंपनी सरकार के लिये अत्यन्त भयंकर त्रासदी एवं विनाश का बीजारोपण कर रहा था।

इस अप्रिय एवं अनौचित्यपूर्ण कार्य के संपादन का उत्तरदायित्व ऑटरम पर पड़ा। ऑटरम गवर्नर जनरल का पत्र पाकर एक अजीब उलझन में पड़ गया। उसे आशंका तो पहिले से ही थी किन्तु अपनी अनुशंसा और बादशाह की अविचलित तथा अनवरत स्वामिभक्ति के कारण उसे आशा थी कि कंपनी सरकार ऐसा क्रूर निर्णय लेने के बजाय अधिक उदारता पूर्ण रवैया अपनायेगी। वह बहुत देर तक सोचता रहा और अन्त में अपने अधीनस्थ अधिकारियों की एक बैठक बुलाई ताकि गवर्नर-जनरल के आदेश की सुगमता तथा सुचारू रूप से अनुपालना की जा सके। उसने सैनिक अधिकारियों को आज्ञा दी कि नागरिकों की सुरक्षा के लिये जो फ़ौजी दस्ते शहर के आस पास गश्त लगा रहे हैं उनमें बढ़ोतरी की जाये और निकटवर्ती छावनियों से कुछ और पल्टनें बुला ली जायें। तोपख़ाने को सतर्क रखा जाये। कुछ पल्टनें आवश्यकतानुसार शाही महलों पर घेरा डालने को तैयार रहें। सब कुछ तय हो जाने के बाद ऑटरम गवर्नर जनरल द्वारा भेजे गये पत्र और सन्धि-पत्र को पढ़ कर उन पर मनन करता रहा। "इस अप्रत्याशित एवं निरंकुश निर्णय के लिये इतिहास अंग्रेज़-जाति को कभी क्षमा नहीं करेगा!" वह सोच रहा था।

10

फ़ैज़ाबाद में मौलवी अहमदुल्ला शाह को जब से वाजिद अली शाह का फ़रमान मिला तभी से वह अपने इलाके के ज़मींदारों और दूसरे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से परामर्श करके योजनाएँ बनाता रहा था। वह एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी था तथा उसकी शिष्य-मंडली समस्त भारत में फैली हुई थी। उसे ख़लीफ़ात-उल्ला कहा जाता था और यह पदवी उसकी मोहर में भी उसके नाम के साथ अंकित होती थी। अतः वह लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के अधिकारों का स्वामी था। लोकप्रिय होने के साथ ही वह देश-प्रेम से ओत प्रोत परम साहसी व्यक्ति था। अवध के राजघराने में भी उसे बहुत सम्मान प्राप्त था। उसे फिरंगियों की अवध में हर कारगुज़ारी सन्देहास्पद लगती थी। इसी-लिये जब उसे फरमान मिला तो वह अच्छी तरह समझ गया कि फिरंगी कोई नया गुल खिलाने पर आमादा हैं। उसने तुरन्त फ़ैज़ाबाद में अपनी तथा दूसरे वफ़ादार रईसों की पल्टनों को तैयार रहने के लिये सावधान कर दिया। वह पूरी लगन से यह सब तैयारियां कर रहा था कि उसे लखनऊ बुलावे का एक और फरमान मिल गया। अपने सहयोगी आसफ़ खां को कुछ महत्त्वपूर्ण काम सौंप कर वह सुबह पाँच बजे पच्चीस-तीस सवारों के साथ लखनऊ की तरफ़ रवाना हो गया। उसका इरादा था कि दिन निकलते ही वह रुदौली पहुँच कर फ़ज़र की नमाज़ अदा करे और फिर आगे के लिये रवाना हो जाये। रुदौली पहुँचने वाला था कि उसे दस-पन्द्रह हथियारबन्द सवार सामने से आते हुए दिखाई दिये। पास आते ही सब ने मौलवी का अभिवादन किया तो उसने उनसे पूछा कि इतने हथियारबन्द सवार कहां और क्यों कर जा रहे हैं। उनमें से एक ने बताया कि रुदौली के ज़मींदार के लड़के और लड़की तथा ठाकुर अचल सिंह की लड़की को कुछ लोग उठा ले गये हैं। उन्हीं की तलाश में चारों तरफ आदमी भेजे गये हैं इसलिये हम लोग इस तरफ़ उन्हें खोजने जा रहे हैं। "उफ़ ओह ! तो हबीब खां और अचलसिंह के बेटे-बेटियों को वे लोग फरार कर ले गये हैं। तुम फ़िक्र मत करो, हम उनका पता लगा कर ही आगे बढ़ेंगे।" मौलवी के आश्वासन से सब को ढाढ़स बँधा। वे उसे साधारण मानव नहीं, बल्कि अद्भुत शक्ति से परिपूर्ण चमत्कारी पुरुष मानते थे।

मौलवी पूरे इलाके के चप्पे-चप्पे से परिचित था। उसने पूछा, "कितनी देर हुई उन्हें भगाये हुए ?"

"हुज़ूर मुश्किल से एक घड़ी गुज़री होगी।" लोगों ने बताया।

"अच्छा, उनका पीछा करना कितनी देर बाद शुरू किया थ ? "

"बस वे मुश्किल से चौथाई कोस निकल पाये होंगे कि सवार पीछे लगा दिये गये।"

कुशाग्र-बुद्धि मौलवी को यह समझते देर न लगी कि अगर इतनी जल्दी पीछा करना शुरू कर दिया गया तो वे भाग कर, दूर नहीं गये होंगे, ज़रूर कहीं आस-पास ही छुप गये होंगे। उसने विचार किया और अपने सवारों को आज्ञा दी कि हमें जल्द से जल्द बमरौली गाँव के पास खण्डहरों में उनकी तलाश करनी चाहिये क्योंकि इस मैदानी इलाके मे उसके अलावा कही भी दूर-दूर तक छुपने की जगह नही है। सवार तुरन्त उधर चल पड़े और दम मारते बमरौली के पास जा पहुँचे। गाँव से लगभग एक मील आगे किसी उजड़े हुए गाँव के भग्नावशेष थे, अतः उन्होंने तुरन्त उस स्थान को चारो ओर से घेर लिया। एक पक्की हवेली के खडहरों से लगा बहुत विशाल पक्का कुआँ था जिससे आज भी पास के बगीचे की सिंचाई की जाती थी। कुआँ किसी बड़े रईस के ऐश्वर्य का अवशेष था तथा उसके ऊपर और अगल बगल मे लुभावनी महराबदार कोठरियाँ बनी थीं। मौलवी ने कुएँ के इर्द-गिर्द जाँच करने का आदेश दिया तथा कुछ लोगों को खण्डहरों की तलाशी के लिये कहा। वह शेष सवारों के साथ आम रास्ते पर नज़र रख रहा था। कुछ क्षणों में ही कुएँ की तरफ़ से दो सवार एक 18-20 साल के लडके को लगभग घसीटते हुए लिये आ रहे थे। "हुज़ूर और तो कोई न मिला यह लडका कुएँ के ऊपर वाले खाने में ठंड से सिकुडा हुआ सोता मिला।" एक सिपाही ने कहा। हवेली व गाँव के खण्डहरों से भी लौट कर सिपाहियों ने बताया कि कुछ नही मिला।

घबराये हुए लड़के से मौलवी ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ? "

"अहमद हुज़ूर, अहमद ! "

"यहाँ क्या कर रहे थे ? "

"सो रहा था।" काँपते हुए लड़के ने कहा और मौलवी के कदमो मे पड़कर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "सरकार मैंने कुछ नही किया—कुछ नही किया, मै तो सो रहा था, मुझे छोड़ दीजिये।

"किस गाँव मे रहते हो ? "

"जी बमरौली मे !" लगभग रोते हुए लड़के ने कहा।

"ओ हो ! बमरौली मे रहने वाले को इस कुएँ पर सोने की क्या ज़रूरत पैदा आई, फ़ीरोज़ ! ये झूठ बोल रहा है, इसके कोड़े लगाओ !" मौलवी ने कड़क कर कहा। फ़ीरोज़ ने कोड़ा लहराना शुरू किया।

कोड़े का नाम सुनते ही अहमद के होश फ़ाख़्ता हो गये, "हुज़ूर सच सच बताता हूँ, मेरा गाँव रूदौली है।" उसने जल्दी से कहा।

"हाँ ये हुई न बात ! देखो अहमद अच्छी तरह समझ लो, जब तक तुम सच-सच बताते रहोगे तुम्हें कोई नही मारेगा, लेकिन झूठ बोले कि फ़ौरन कोड़े पड़े ! क्या काम करते हो तुम ?"

"हुज़ूर बग़ीचे की देखभाल करता हूँ !"

"हुँ, किसके बग़ीचे की ?"

"अहमद पहिले अचकचाया, फिर फीरोज के कोड़े की तरफ देखता हुआ बोला, "ज़मीदार के।"

"यानी हबीब खाँ के बग़ीचे की, है न ?"

"जी हुज़ूर।"

"तो ज़मीदार की लड़की और लडका कहाँ हैं, कुछ बता सकते हो ?"

"वो तो घर पर ही होगे मालिक।" आशंकित स्वर में वह बोला।

"घर पर नही हैं इसीलिये तो हम पूछ रहे हैं।"

"मालिक, मुझे कुछ नही मालूम, खुदा कसम कुछ नही मालूम !" लडका पैरो में गिर कर रोने लगा।

"उफ फिर झूठ बोले ! फीरोज !" मौलवी ने इशारा किया।

फीरोज ने लड़के की पीठ पर एक कोड़ा हलके-से फटकारा। लड़का फिर चीख पड़ा।

"देखो अहमद , वह बरगद का पेड़ देख रहे हो ?" मौलवी ने कहा।

"जी हाँ, हुजूर"

"अगर तुम सही सही नही बताओगे तो तुम्हें इस पर उल्टा लटका कर कोड़े लगाये जायेंगे।"

फीरोज ने एक बार फिर हवा मे कोड़ा लहराया। लड़का फिर वही रट लगाये रहा , "हुज़ूर, ईमान से मुझे कुछ नहीं मालूम !"

आखिर मौलवी ने आज्ञा दी, "इस लड़के को बरगद के पेड़ पर उल्टा लटका दो।" लड़का जोर जोर से रोते हुए हाथ जोड़ता रहा और जब सिपाहियों ने उसके पैर बाँध दिये तो उसने अधीर होकर कहा, "अच्छा, अभी बताता हूँ, अभी···।"

"मौलवी के इशारे पर उसके पैर खोल दिये गये। प्यार से मौलवी ने कहा "अच्छा बेटे, जल्दी से बताओ तो वो लड़कियाँ और लड़का कहाँ हैं !"

"आइये मेरे साथ," लड़के ने कहा और आगे आगे वह पीछे मौलवी व उसके पाँच-छः सवार चलने लगे। लड़का उन्हें हवेली के खण्डहरों में ले गया। वहाँ एक खण्डहर था जो शायद कभी बडा कमरा रहा होगा। उसके एक कोने में कुछ ईंटें और मलवा पड़ा था। लड़के और सवारों ने मलवा साफ़ किया तो एक बड़ा ढक्कन नज़र आया जिसे हटाते ही कुछ सीढ़ियाँ दिखाई दीं। सीढ़ियों से सब लोग

नीचे जाने लगे तो तहखाने से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। घुप्प अँधेरे के कारण एक सवार ने मशाल जलाई। जलाते ही देखा कि सर्दी में सिकुड़ी हुई दोनों लड़कियाँ एक कोने में रस्सी से बँधी पड़ी हैं। उन्हें खोल कर सवार बाहर लाये। सूखी पत्तियाँ व टहनियाँ इकट्ठी कर अलाव जलाया गया और लड़कियों को तपाया तब कहीं उनके दम में दम आया। मौलवी ने ज़मीदार के लड़के के बारे में पूछा तो अहमद फिर टालमटोल करने लगा। लड़कियों को तलाश करना बहुत ज़रूरी था और वे मिल गई थी। अत: लड़के के बारे में पूछताछ करके मौलवी ने वक्त गँवाया ठीक नहीं समझा क्योंकि वह लखनऊ पहुँचने की उतावली में था। फिर ज़मीदार पूछताछ करके खुद अहमद से पता लगा लेगा यह सोचकर अहमद और दोनों लड़कियों को साथ लेकर मौलवी वापिस रूदौली आया और ज़मीदार की हवेली पर पहुँच कर हबीब खाँ के सिपुर्द कर दिया। साथ ही मामला तफ़सील से बयान कर दिया। अपने बेटे का पता लगाने के लिये हबीब खाँ ने अहमद को थानेदार के पास भिजवा दिया और मौलवी का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया। उसने मौलवी से रुकने का आग्रह भी किया लेकिन मौलवी ने मुआफ़ी चाही और लखनऊ की तरफ रवाना हो गया। जाते जाते मौलवी हबीब खाँ को अवध के हालात के बारे में बताते हुए उसे कुछ तैयारियाँ रखने के लिये भी कहता गया।

11

गुल से लिपटी हुई तितली को गिरा कर देखो।
आँधियो तुमने दरख्तों को गिराया होगा।।

अवध तुम कितनी बार लुट चुकी हो इन फिरंगियों के हाथ! आज पत्थर का कलेजा कर लो। गोरी चमड़ी में बन्द अशुभ कालिमा तुम्हारे सूर्य पर ग्रहण बन कर छा जायेगी और तुम्हें घोर अंधकार के गर्त में डाल देगी! डलहौज़ी की प्रेत-छाया इतिहास के पृष्ठों से तुम्हारी स्वतन्त्रता पर अपनी कालिख का कलम फेर देना चाहती है।

फरवरी का महीना था। विकराल शीत-लहर से लखनऊ ठिठुर रहा था। वाजिद अली शाह नृत्यगृह में तबले की थाप पर अनेक नव यौवनाओं के साथ ठुमकियाँ लगा रहा था। इस शीत में भी वह पसीने से तर था। नाच-गाना चल

ही रहा था कि सेविका ने आकर रंग में भंग कर दिया। "गुस्ताखी मुआफ हो हुजूर, जनाब रेज़ीडेन्ट बहादुर एक बहुत जरूरी काम के सिलसिले में जाने आलम से बारयाबी (भेंट) की इजाजत चाहते हैं।" वाजिद अली का हृदय किसी अनिष्ट की आशंका से सिहर गया। सेविका से कहा, "हम थोड़ी देर में आते हैं।" थोड़ी देर प्रतीक्षा के बाद ही ऑटरम से बादशाह की मुलाक़ात हुई। प्रारम्भिक शिष्टाचार के बाद ऑटरम ने भूमिका बनाई और बड़ी चतुराई से सारे मामले पर प्रकाश डाला। बादशाह के कुछ मुसाहिब भी साथ थे। रेज़ीडेन्ट ने सब कुछ बताने के बाद नये सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने को बादशाह से आग्रह किया।

"नया सन्धिपत्र ?" चिन्ता और आश्चर्य से भृकुटी टेढ़ी कर बादशाह ने पूछा, "उसकी क्या जरूरत आन पड़ी ऑटरम साहब ?"

"हुजूर, हिज एक्सीलेन्सी डलहौज़ी साहब और कंपनी बहादर......।"

"जरा दिखाइये तो कैसे सुलहनामे पर दस्तखत चाहते हैं आप।"

ऑटरम ने सुलहनामा पेश किया। वाजिद अली ने एक-दो बार पढ़ा, पढ़ते ही पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। नशा काफ़ूर हो गया। उसने अली नक़ी खाँ और शराफुद्दौला की तरफ़ सुलहनामा बढ़ा दिया। काफ़ी देर तक सन्नाटा रहा, फिर रेज़ीडेण्ट ने ही मौन तोड़ा, "योर मैजेस्टी दस्तखत करना चाहते हैं या नहीं ?"

"जनाब रेज़ीडेण्ट बहादुर कुछ वक्त तो हमे दीजिये मामले पर ग़ौर करने के वास्ते !" बादशाह ने कहा।

"तो योर मैजेस्टी, आज दस तारीख हुई है, मैं बारह को फिर हाजिर होऊँगा। आप तब तक मामले पर ग़ौर फ़रमाकर फ़ैसला कर लें।"

"जी हाँ, रेज़ीडेण्ट बहादुर।" बादशाह ने कहा और ऑटरम इजाज़त लेकर चला गया।

"आलीक़द्र यह सुलहनामा तो बहुत खतरनाक है। इस पर दस्तखत करने का तो मतलब होगा खुद ब खुद गद्दी छोड़ देना !" शराफुद्दौला ने कहा।

"जी हाँ हुजूर ये तो अवध सल्तनत को खत्म ही कर देना चाहते हैं ! नहीं हुजूर नहीं, आलीमुक़ाम, इस पर दस्तखत करना तो अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारना है।" यह अली नक़ी खाँ था।

"हाँ, और फिर इसमें हमारे तमाम पुराने सुलहनामे भी रद्द हो जाते हैं।" बादशाह ने कहा।

"हुजूर, मलका-ए-आलिया और बुजुर्ग बेगमों से भी मशवरा फरमा लें तो ठीक रहेगा।" शराफुद्दौला ने कहा।

"बिल्कुल दुरुस्त" बादशाह ने कहा और बेचैनी से उठ खड़ा हुआ। चारों अमीर भी उठ खड़े हुए और जमीबोस करते हुए बाहर चले गये। बादशाह हरम

की तरफ़ गये और बेगमों से तज़्किरा किया। बुजुर्ग बेगमात और हज़रत महल ने सुलहनामे को बार-बार पढ़ा और कहा कि यह तो बहुत मनहूस सुलहनामा है। इसका मतलब तो साफ सल्तनत से हाथ धो बैठना है।

"नहीं इस पर हर्गिज दस्तखत न करें जाने आलम !" सबकी यही राय थी। बुजुर्ग बेगमो ने सुझाया कि ऑटरम साहब खुद बहुत हमदर्द व संजीदा हाकिम हैं। उन्ही से इल्तजा की जाये कि लाट साहब को समझायें कि इस तरह का सुलहनामा हमारे ऊपर नही थोपा जाये। बादशाह शून्य में ताकता रहा। उसके मस्तिष्क को भविष्य की कल्पना के झंझावात ने झकझोर कर रख दिया और वह कुछ भी सोच पाने में स्वयं को असमर्थ महसूस करने लगा।

बेगम हज़रत महल का हृदय भी एक बार रो पड़ा। उसकी आशंका मूर्तिमान हो उसके समक्ष अपना अनिष्टकारी हाथ बढा रही थी। अल्लाह तआला ने उसकी एक अदना सी दुआ भी. क़बूल नही की। सिर्फ दो-तीन माह की मोहलत ! खैर मोहलत नही मिल सकी तो न सही ! वह अपने संकल्प पर अडिग थी। इन फिरंगियो को हिन्द से निकाल बाहर करने के लिये वह ज़मीन व आसमान के कुलाबे मिला देगी। हिन्द की जमीन जर्रे-जर्रे में, वह ऐसे अनगिनत सूरज पैदा कर देगी जो फिरंगियों को अपनी तपिश में जलाकर खाक में मिला देंगे। वह आवेश मे दाँत पीसने लगी। बेगम ने भी बादशाह को वही उत्तर दिया, "नही आलम पनाह नही ! इस दस्तावेज़ पर हुज़ूर हरगिज़ दस्तखत न करें, जितना वक़्त टल सके टल जाने दें।"

दो दिन दो वर्ष की तरह निकले फिर आखिर वह मनहूस बारह तारीख भी आ गई। ऑटरम ने सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये बादशाह से बार-बार आग्रह किया। उसे यह भी चेतावनी दी कि अगर दस्तखत करने से इनकार करेंगे तो गवर्नर-जनरल के हुक्म के मुताबिक अवध को कम्पनी का सूबा बना दिया जायेगा। वाजिद अली शाह को आशा थी कि शायद कम्पनी बहादुर पिछले दिनों की तरह अब भी उदारता बरतेगी इसलिए उसने अपनी पगड़ी रेजीडेण्ट को सौंप कर उससे अनुरोध किया कि वह गवर्नर जनरल से उसके पक्ष में सिफ़ारिश करें। इसके साथ ही उसने सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।

गवर्नर जनरल की आज्ञानुसार ऑटरम ने पूरी तैयारियाँ कर ली थी। अतः दूसरे ही दिन अंगरेजी फौजों ने चारो तरफ से शाही महलो को घेर लिया। बेगम ने चाहा था कि अपनी फ़ौज के सिपहसालारों को सम्पर्क करके अंग्रेज़ों का प्रतिरोध करे, लेकिन सेना अभी तैयारी की स्थिति मे नही थी। अतः केवल महल मे मौजूद अंगरक्षक सिपाहियों ने मामूली प्रतिरोध के बाद अंग्रेजी फ़ौजों को समर्पण कर दिया। बादशाह वाजिद अली शाह को नजरबंद कर लिया गया और उसे

कलकत्ते जाने के लिये तैयार रहने को कहा गया। शाही महलों में लूट-मार होने लगी और भारी कोहराम मच गया।

कलकत्ते के लिये रवाना होते समय बुजुर्ग बेगमों ने वाजिद अली शाह को रो-रो कर विदाई दी लेकिन हज़रत महल की आँखें शून्य में ताक रही थीं। किसी दैवीशक्ति की ऊष्मा ने उसके आँसू भी सुखा दिये थे।

"अलविदा, जाने आलम अलविदा!" उसने कहा था, "आपको इत्मीनान दिलाती हूँ हुजूर कि ये बन्दी आपकी ग़ैर मौजूदगी में चुप नहीं बैठी रहेगी। इन फिरंगियों से वतन को आज़ाद कराने के लिये अपने लहू का क़तरा-क़तरा कुर्बान कर देगी। हिन्द की मिट्टी के ज़र्रे-ज़र्रे से हज़ार-हज़ार आफ़ताब पैदा करेगी और जल्द इन फिरंगियों को नेस्तनाबूद कर उनका मुल्क से नामोनिशान मिटा देगी।"

वाजिद अली शाह की आँखों में आँसू छलछला आये, "अल्लाह-तअला तुम्हें कामयाबी बख़्शें बेगम! मगर जो कुछ भी किया जाये बहुत एहतियात से। अच्छा अलविदा।"

हज़ारों की विवश भीड़ ने बादशाह को अश्रुपूरित नेत्रों से विदाई दी। बादशाह वाजिद अली शाह को अवध से निष्कासित कर कलकत्ता भेज दिया गया। एक ही दिन में अवध का सुहाग लुट गया। उसे अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया गया। शीत-लहर का एक ही झोंका लखनऊ के कलेजे को कँपा गया।

12

'ठक-ठक-ठक—ठका ठक' यही संकेत तय हुआ था।

लुत्फ़ुन्निसा और कनक सुन्दरी दोनों दो शरीर एक प्राण थीं। लुत्फ़ुन्निसा थी बड़े ज़मींदार की पुत्री और कनक के पिता अवध की शाही सेना में चकलदार थे। दोनों के पिता भी अभिन्न मित्र थे। उनके परिवारों में भारी मेलजोल था। दोनों की हवेलियाँ भी पास-पास थीं और उनसे ही जुड़ा हुआ पिछवाड़े में एक सुन्दर बगीचा था जिसे परिवारों की स्त्रियाँ विशेष रूप से काम में लेती थीं। अनीस अहमद और प्रताप सिंह अपने-अपने परिवार के इकलौते बेटे थे और दोनों में प्रगाढ़ प्रेम था। दोनों सम-वयस्क भी थे। मैत्री के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दो परिवारों का उदाहरण दिया जाता था। दोनों लड़कियाँ अभी पन्द्रह पार कर के सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी थीं और उनके भाई उनसे दो-दो साल बड़े थे।

यद्यपि लुत्फुन्निसा ने बुर्का ले लिया था तथापि वह घनिष्टता के कारण ठाकुर परिवार के किसी व्यक्ति से पर्दा नहीं करती थी। इसीलिए अनीस और प्रताप दोनों से रोक-टोक बगीचे में आते-जाते रहते थे। दोनों लड़कियों की मँगनी के लिए भी बात-चीत चल रही थी।

माघ का महीना निकट था। बहुत-सी लड़कियाँ व औरतें इस मास में सूर्योदय से पहिले स्नान कर पूजा-पाठ करती हैं या भजन गाती हैं। इस बार कनक सुन्दरी की भी इच्छा हुई कि वह भी माघ-स्नान का लाभ उठाये किन्तु परिवार की कोई अन्य स्त्री किसी न किसी कारण से उसका साथ देने को तैयार न हो सकी। एक दिन कनक सुन्दरी लुत्फुन्निसा के घर गई और उसके सम्मुख अपना मंतव्य प्रकट किया, "बहिन लुत्फो मेरी बड़ी ख्वाहिश है कि इस बार माघ-स्नान करूँ लेकिन भाभियों में कोई साथ देने को तैयार नहीं हो सकी, बुआजी नागोर जा रही हैं, माँ, चाची, ताई कोई भी तो तैयार नहीं है।"

"अख्ख ! तो हुजूर को भी अपनी मँगनी की फ़िक्र पड़ गई यानी बढ़िया-सा दूल्हा मिल जाए इसलिए माघ नहाना चाहती हैं!"

"धत्त ! लुत्फ़ो तुझे तो हमेशा मजाक ही सूझता है। भला किस्मत का लिखा आज तक किसीने मिटाया भी है !"

"नहीं, नहीं कनकी हम तुमसे क्या, मजाक तो जीजा जी से करेंगे अभी अपने मजाक का खज़ाना कैसे लुटा दें ?"

"जा हम नहीं बोलते, तू तो......।"

"बोलेगी कैसे नहीं मेरी सरकार ! बाँहों में गिरफ्तार जो कर ली जायेगी।" कहते हुए लुत्फुन्निसा ने उसे बाँहों में भर लिया। कनक छुड़ाने का उपक्रम करती लेकिन लुत्फ उसे और भी जकड़े जाती।

"देखो भाईजान ये नहीं मानती !" उसी समय कमरे में आये हुए अनीस को देख कर कनक ने शिकायत की।

"अरी लुत्फो, तुझे तो हर वक्त शैतानी सूझती रहती है, छोड़ दे न उसे।" अनीस ने प्यार से कहा।

"भाईजान ये कहती हैं हम नहीं बोलते तुमसे......।"

"ह ! हा! ह !" अनीस ठहाका लगा कर हँसा, "तुम दोनों तो ऐसे ही आपस में झगड़ती रहती हो, मुझे ख्वाम-ख्वाह अपने बीच में घसीटती हो" कह कर अनीस कुछ जरूरी कागजात निकाल कर चलता बना।

"बोलिये जनाब ! अब बोलेंगे या नहीं ? लुत्फ़ ने कहा।

"नहीं बोलेंगे, नहीं, नहीं, नहीं !"

"अच्छा ! ये जुरअत !" कह कर लुत्फो ने कनक को और भी जोर से कस लिया।

"अरे बाबा, क्या हड्डियों का सुरमा ही बना देगी, ले बोल तो गई।"

"हां अब आई न राह पर !" कनक को छोड़ते हुए लुत्फ़ो ने कहा "तो ये तो बता कि माघ नहाने से क्या फ़ायदा होगा ?"

"फ़ायदा क्या, ये भी एक पुण्य यानी सबाब का काम होता है।"

"अच्छा अगर मैं भी नहाऊँ तो मुझे भी सबाब मिलेगा ?"

"हां, हां, जनाब को भी अच्छा सा दूल्हा मिलेगा। हमारा प्यारा प्यारा-सा दूलह भाई !"

"देख री कनकी, बोली तो ज्यादा ही बोलने लगी !"

"नही री तुझ से कौन बोलता है, अब तो दूलह भाई से ही होगी मजेदार गप-शप, तेरी खूब शिकायतें करूंगी।"

"अरी चुप भी हो जा···।"

"अरी लुत्फ़ो कभी कहती है बोल और कभी कहती है चुप हो जा। आख़िर मैं क्या करूं ? दूलह भाई से भी ऐसी दुरंगी बात करेगी तो बेचारे परेशान हो जाया करेंगे !"

"हां बेचारे परेशान हो जाया करेंगे !" मुँह चिढ़ाते हुए लुत्फो ने कहा।

इसी तरह चुहलबाजी चलती रही और अन्त में लुत्फ़ो ने कहा, "मेरी सरकार, मैं दूँगी तुम्हारा साथ—मैं भी माघ नहाया करूँगी।"

"वाह हुज़ूर वाह, बड़ी देर में फ़ैसला सुनाया, लेकिन मजा आ गया। तो वायदा रहा।" हाथ बढ़ाते हुए कनक ने कहा।

"वायदा, वायदा, वायदा ! लुत्फ़ो ने तीन बार हथेली पर हथेली मार कर वायदा किया। "वन्वाजान से भी इजाज़त ले लेना अच्छा रहेगा।" कनक ने कहा।

"अरी अब्बा हुज़ूर तो कभी मना नही करेंगे, वैसे उनके कान में डाल दूंगी। तो कब से शुरू करना है ?"

"अरी बस परसों से ही तो लग रहा है माघ का महीना।"

"अच्छा परसों मुझे बगीचे में कुँए के पास ठीक पाँच बजे सुबह चुस्त दुरुस्त तैयार पाओगी।"

"देख कही भूल तो नही जायेगी !"

"अरी तू क्या मुझे बुद्धू समझती है ! और अगर भूल भी जाऊँगी तो क्या तू याद नही दिला सकती !"

उल्लास से भरी कनक सुन्दरी अपनी हवेली की ओर भागी-भागी आई और अपनी माँ को यह शुभ-समाचार सुना कर उछलने कूदने लगी। उसकी माँ को भी बहुत प्रसन्नता हुई कि लुत्फुन्निसा भी इस धार्मिक कार्य में कनक का साथ दे रही है।

कई दिनों तक स्नान का क्रम चलता रहा। दोनो सहेलियाँ नहाती, खूब

चुहलबाजी करती और धार्मिक गीत गातीं। उस दिन भी इसी तरह उनके मधुर कंठ की स्वर-लहरी भोर के स्निग्ध वातावरण मे रस घोल रही थी। दोनों सहेलियों ने नहा कर कपड़े पहिन लिये थे और बड़ी तन्मयता से गा रही थी कबीर का दोहा :—

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी बैठ।
मैं बैरी खोजन गई, रही किनारे बैठ—कबीरा रही किनारे बैठ।

उसी समय यकायक कन्दील की रोशनी बुझी और दोनों किशोरियों के हाथ किसी ने पीछे से पकड़ कर मुंह मे कपड़ा ठूंस दिया। चीख भी नही निकल पाई और लड़कियाँ छटपटाती रही। उसी समय अनीस भी बगीचे में आकर पुकारने लगा, "अरी लुत्फो, ओ कनकी?" अचानक उसके भी हाथ किसी ने पीछे से पकड़ कर मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। बहुत कोशिश की मुक्त होने की लेकिन सफल नही हुआ। बगीचे के दूसरे छोर पर एक सेवक झाड़ू लगा रहा था, उसका भी यही हाल हुआ। चारों को उठा कर वे लोग उन्हें बगीचे से बाहर ले गये जहाँ घोड़े तैयार खड़े थे। उन्हें अच्छी तरह कस कर घोड़ों पर बांध दिया और घोड़े सरपट दौड़ने लगे।

इधर घोड़ों के टापो की आवाज़ सुनकर हवेली का दरबान कान लगाये आहट लेता रहा। टापों की आवाज काफी देर संगीत में गुम हो गई और थोड़ी देर बाद पुनः बगीचे के पास से शुरू हुई तथा संगीत भी अचानक बन्द हो गया। अतः दरबान कौतूहल वश बाग में आ कर आवाज़ें लगाने लगा। "छोटी बी, साहबज़ादे!···" लेकिन चारो तरफ़ अंधकार और सन्नाटा छाया हुआ था। उसने बगीचे में उन्हें खोजना शुरू किया कि तभी उसकी नजर पिछले दरवाज़े पर पडी जो चौपट खुला पड़ा था। वहाँ किसी को न पा कर उसे विश्वास हो गया कि ज़रूर कोई अप्रत्याशित घटना घटी है। उसने तुरन्त ज़मीदार साहब को जगाया और उनकी आज्ञा से खतरे का घंटा बजाया। दोनों हवेलियों में कुहराम मच गया। घंटे की आवाज सुन कर 30-40 सवार तुरन्त हाज़िर हुए और उन्हें भगोड़ों का पीछा करने का आदेश दिया गया। वे तुरन्त चारों ओर दौड़ पड़े।

भगोड़े घुड़सवारों ने गाँव से निकल कर नौकर के मुंह से कपड़ा निकाला ही था कि उसने बताया कि खतरे का घंटा बज गया है और अब ज़मीदार के आदमी हमारा पीछा करेंगे। उनके घोड़े इतने तेज़ हैं कि बच कर भाग पाना किसी भी तरह मुमकिन नहीं है। सुनते ही सवारो के होश उड़ गए और उन्होने बमरौली की तरफ रुख किया। उन्होंने जल्दी-जल्दी खण्डहरों में जा कर लड़कियो के हाथ-पैर बांध तहखाने में डाल दिया और ढक्कन के ऊपर ईंट व मलवा बिछा दिया। नौकर को निगरानी रखने के लिए वहीं छोड़ दिया और उसे धमकी

देकर यह वायदा करा लिया कि पकड़े जाने पर भी किसी का नाम नहीं बतायेगा। लालू मल्लाह ने अपनी लाल-लाल आँखें निकाल कर कहा कि अगर किसी को भेद बताया तो जान से मार दिया जायेगा। नौकर खण्डहरों में पड़ा-पड़ा बेचैनी महसूस कर रहा था, फिर ठंड भी बहुत थी, अतः वह इधर-उधर घूमने लगा और अन्त में कुएँ के ऊपर बन्द कोठरी में पड़ कर सो गया। सवारों ने उससे शाम तक आने का वायदा किया था। अनीस को वहाँ छोड़ने में उन्हें खतरा था कि कहीं यह कोशिश करके बन्धन-मुक्त न हो जाये। अगर ऐसा हो जाता तो वह लड़कियों को भी आज़ाद करा लेता और सारी योजना ही विफल हो जाती। साथ ही भेद भी खुल जाता। अतः हड़बड़ी मे उन्हें कुछ नही सूझा और वे अनीस को साथ लेकर सिर पर पैर रख कर भाग छूटे। अनीस आजाद होने के लिए व्यर्थ हाथ-पैर मारता रहा और इधर मौलवी मय सवारों के खण्डहरों तक पहुँच गया और लड़कियों का पता लगा उन्हें मुक्त कर ज़मीदार के सिपुर्द कर दिया।

13

दोनों हवेलियों में अनीस के नही मिलने के कारण हड़कम्प-सा मच गया। सभी लोग ज़मीदार की हवेली में एकत्रित हो सलाह-मशविरा करने लगे लेकिन औरतें ज़ोर से रोने लगीं। प्रताप सिंह ने सुझाव दिया कि वह जाकर अनीस भाई की तलाश करेगा मगर सब की राय यह हुई कि पहिले थानेदार द्वारा अहमद से पूछताछ का नतीजा मालूम हो जाये उसी के बाद कुछ किया जाये।

जब अहमद को थानेदार के पास भेजा गया तो थानेदार सोकर भी नही उठा था। ज़मीदार की खबर मिलते ही वह उठा और ग़ुस्से में अहमद के तीन-चार हथौड़ा-छाप थप्पड़ जड़ दिए। अहमद कांप गया। अगर शुरूआत ही यह है तो आगे न जाने क्या होगा! दरबान ने सारा हाल सुना दिया था। फिर क्या था। थानेदार ने अहमद को डाँटा, "अबे मुर्गी के बच्चे तेरी यह मजाल! बोल सही सही बताता है कि तेरी चमड़ी उधेड़ूँ?"

"हुज़ूर मैंने सही-सही बता दिया है, साहबज़ादे का मुझे कुछ नही मालूम कहाँ हैं—वे ही अपने साथ ले गए थे।"

"वे ही! यानी कौन! कौन थे वे? जल्दी बता वर्ना···।"

"हुज़ूर मैं नहीं जानता, अल्लाह क़सम मुझे नहीं मालूम !"

"हाँ तुझे नहीं मालूम ! अभी मालूम कराता हूँ। माखन लाल, इसके मुँह पर तोबरा बाँध दे, अभी इसके बाप को भी मालूम हो जायेगा।" थानेदार गरजा और माखन लाल ने पिसी लाल मिर्चों से भरा तोबरा (घोड़े को दाना खिलाने का थैला) अहमद के मुँह से बाँध दिया। बाँधते ही अहमद की आँखों और मुँह पर झल्लाहट मचने लगी तथा बुरा हाल हो गया। उसने छींक-छींक कर "आक छी ! आक छी ! आक छी" के ढेर लगा दिए। आँखों से पानी टपकता और मिर्चें उसके मुँह और आँखों पर चिपकती जातीं। थोड़ी देर बाद ही थानेदार डपट कर बोला, "बोल अब बतायेगा या नहीं ?" घुटी हुई आवाज़ में अहमद ने कहा, "अभी बताता हूँ हुज़ूर अभी—आक छी !" थानेदार ने तोबरा खुलवा दिया। अहमद का चेहरा लाल हो कर झल्लाहट से जल रहा था और छींकें रुकने का नाम ही नहीं लेती थीं। बड़ी मुश्किल से उसने कहा, "सरकार मैंने उनसे करार कर लिया है कि पकड़े जाने पर किसी का नाम नहीं बताऊँगा !"

"अरे हाँ रे शहंशाह ! तू करार कैसे तोड़ सकता है ! हरामी के पिल्ले ! बतलाता है कि तुझे फिर ये हार पहनाऊँ ?" तोबरे की ओर इशारा करके थानेदार ने कहा। तोबड़ा देखते ही अहमद की जान निकल गई, "हुज़ूर, एक तो था वो क्रिस्टान जौसफ़।"

"कौन-सा जौसफ, वही तो नहीं जो यहाँ रेशमी कपडे बेचता फिरता है ?"

"हाँ वही हुज़ूर, वही जौसफ, और दूसरा था सरकार···।"

"अबे चुप क्यों हो गया ? जल्दी बताये न।"

"हुज़ूर वह बहुत खतरनाक है, उसका नाम नहीं बताऊँगा।"

तीन-चार लुहार शाही थप्पड़ जड़ दिए थानेदार ने और कहा, "हूँ तो वह मुझसे भी ज्यादह खतरनाक है ? माखन बाँध तो फिर से तोबरा ! अहमद को तोबरा देखते ही फिर से छींकें आने लगीं। अभी तक आँखें और सारा चेहरा झल्ला रहा था। वह ज़मीन पर लेट कर गिड़गिड़ाने लगा, "माई बाप, नहीं··· न···हीं···!"

"अच्छा तो बता और कौन था ? कौन-कौन थे ?" थानेदार ने पूछा।

"हुज़ूर दूसरा था लीलू मल्लाह। वह बहुत खतरनाक है मालिक, कहता था कि खड़े-खड़े तुझे ज़मीन में गाड़ दूंगा, अगर तूने मुझ से कोई चालबाजी की। हुज़ूर वो मुझे मार डालेगा—मार डालेगा मालिक।" अहमद काँपते हुए बोला।

"अबे डरता क्यों है, लीलू को तेरे सामने ही कुत्तों से नहीं नुचवाया तो बात ही क्या ! अब बेफिक्र होकर बता कि और कौन-कौन था।"

"सरकार और तो चार गोरे थे, उनको मैं नहीं जानता, लेकिन शकल से

पहचानता हूँ।"

"ओ हो! चार फिरंगी भी थे। अच्छा बगीचे का पिछला दरवाज़ा कैसे खुल गया, वहाँ तो ताला बन्द रहता है न?"

"हाँ हुजूर ताला बन्द रहता है मगर पता नहीं कैसे खुल गया।"

"हूँ, तो शायद अपने आप खुल गया किसी जादू वादू से, है न?" व्यंग्य में थानेदार ने कहा। "हाँ, माई बाप कुछ ऐसी ही मालूम पडता है।" सरलता से जान छूटती देख अहमद ने कहा। "अबे कुत्ते की औलाद, ठंड में तेरा दिमाग खराब हो गया है, भेजे की कुलफ़ी बन गई है। ज़रा इसे आग पर उलटा तो लटका दे मुनीर!" एक सिपाही से थानेदार ने कहा। सिपाही ने अहमद के पैर बाँध दिये और पैरों की तरफ से पकड़ कर दीवार के सहारे जलती हुई एक भट्ठी की तरफ ले जाने लगा। अहमद घबरा गया। "इतनी तेज़ आँच पर उलटा लटका दिया तो ज़िन्दा ही कबाब बन जाऊँगा!" उसने सोचा और ज़ोर से चिल्लाया, "हुजूर अभी सच-सच बताऊँगा, मालिक भट्ठी पर मत लटकाइये।" "अच्छा इसे यहाँ ले आओ" थानेदार ने आज्ञा दी, "और इसके पैर खोल दो।" सीधा खड़ा हो जाने पर अहमद से पूछा, "हाँ तो बताओ, दरवाज़ा किसने खोला?"

"हुज़ूर मैंने ही खोला था।"

"हूँ ऊँऊँ! तो जादू से नही खुला!" चिढ़ाते हुए थानेदार ने कहा, "जनाब ने दरवाज़ा क्यों कर खोला, सब सही-सही बयान करो वर्ना भट्टी पर उलटे टाँग दिये जाओगे। अगर अब कुछ भी छुपाया या झूठ बोले तो तुम्हारी खैर नही, समझे!"

"नही हुज़ूर, अब कुछ भी नही छुपाऊँगा। सच-सच बताऊँगा। वो जो जोसफ है न वह कहता था इंग्रेज साहब के लिए एक ठो लडकी चाहिये, खूबसूरत लड़की अगर तू बता दे और हमारी कुछ मदद करे तो तुझे इनाम दूँगा। इसके बाद लीलू मल्लाह जो एक दिन उसके ही साथ आया मेरे पीछे पड़ गया और इनाम के अलावा मुझे नौकरी दिलाने का भी लालच दिया। कहने लगा, "अबे बेवकूफ यहाँ बागवानी मे क्या धरा है, हमारा कहना मान ले तो साहब लोग तुझे बढ़िया सी नौकरी दिला देंगे। उसमें शानदार कपड़े, जूते, टोप वगैरह पहिन कर नवाबो की तरह रहेगा। उन लोगों ने मुझे पन्द्रह रुपये नक़द इनाम के बतौर देने को भी कहा। पहिले मैंने कहार और धोबियों की दो लड़कियाँ दिखाईं लेकिन वे उन्हें पसन्द नही आईं। फिर मैंने ये लड़कियाँ..." कहकर अहमद फूट-फूट कर रोने लगा। "हाँ हाँ बोले जा, अबे छोकरियों की तरह रो क्यों रहा है?"

"हुज़ूर, बहुत बुरा किया मैंने! लालच मे आकर बहुत बड़ा गुनाह! हुज़ूर

फिर उन्होंने कहा कि हम जब सुबह साढ़े पाँच बजे बगीचे के पिछले दरवाज़े पर 'ठक-ठक-ठका-ठक' दस्तक दें तो तुम दरवाज़ा खोल देना, हम आकर दोनों लड़कियों को राज़ी करके ले जायेंगे और तुम्हें भी साथ ले जायेंगे। उसी वक़्त मैंने दरवाज़ा खोल दिया और वे हम सब को मुँह में कपड़ा ठूँस कर जबरन उठा ले गये। साहबज़ादे बगीचे में आये तो उन्हें भी उठा ले गये।"

"हूँ फिर क्या हुआ ?"

"हुज़ूर फिर गाँव से बाहर निकल कर उन्होंने मेरे मुँह से कपड़ा निकाल दिया लेकिन मैं डर के मारे रास्ते में भी कुछ नहीं कह सका। वापिस आने में भी खतरा और उनके साथ जाने में खतरा। सरकार मैं बहुत घबराया। हुज़ूर मुझे नहीं मालूम था कि वे जबरदस्ती सब को उठा ले जायेंगे। तभी हवेली में खतरे का घंटा बजा। मुझे पकड़े जाने का डर लगा तो मैंने उनसे कहा कि वे लोग बहुत तेज़ घोड़ों पर हमारा पीछा करेंगे। बस फिर क्या था। वे सीधे बमरौली की तरफ भागे और हमें खण्डहरों में छोड़कर साहबज़ादे को साथ भगा ले गये।"

'वे लोग किधर की तरफ भागे ?'

"वे लोग तो खण्डहरों की बगल से खेतों की तरफ सड़क से बहुत दूर पड़ गये। पता नहीं, सरकार, कहाँ गये होंगे। इधर सुबह होते ही मुझे मौलवी साहब ने पकड़वा लिया।"

"क्या बता सकते हो कि जौसफ़ और लोलू मल्लाह अब कहाँ मिलेंगे।"

"नहीं सरकार नहीं, लेकिन हाँ हाँ, अब याद आया हुज़ूर वे लोग शाम को खण्डहरों में ज़रूर आयेंगे। वे कह कर गये थे। गोरे भी उनके साथ आ सकते हैं।"

"बहुत ठीक अहमद, अभी तुम्हें कुछ दिनों थाने में ही रखा जायेगा। हमें वक़्त ज़रूरत तुम्हारी मदद बहुत काम देगी।" कहकर थानेदार आगे की कारवाई में व्यस्त हो गया। सिपाहियों को हिदायत दी कि अहमद को हवालात में बन्द रखा जाये।

इसके बाद वह ज़मीदार की हवेली पर पहुँचा और अब तक की कारगुज़ारी के बारे में उसे सूचना दी। साहबज़ादे अनीस अहमद के नहीं मिल पाने से दोनों परिवारों की महिलाएँ निराश होकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं।

हबीब खाँ ने थानेदार को आदेश दिया कि मामले की मुस्तैदी से तफतीश की जाये, साहबज़ादे का जल्द अज़ जल्द पता लगाया जाये तथा अपराधियों को किसी भी क़ीमत पर जल्द गिरफ्तार किया जाये।

लुत्फुन्निसा और कनक सुन्दरी का बुरा हाल था। वे घंटों सिसक-सिसक कर रोती रहीं और फिरंगियों को बुरा भला कहती रहीं। अनीस भाई के नहीं मिल पाने से भी वे अत्यंत दुखी थीं। साथ ही इंग्रेज़ों के विरुद्ध उनके दिल में

एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ था। कभी वे क्रोध से दांत पीसती तो कभी नफ़रत से आँखें बन्द कर कुछ सोचने लगती।

14

हमने माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जायेंगे हम तुमको खबर होने तक।

रुदौली से चलकर मौलवी मय अपने फ़ौजी दस्ते के दरियाबाद पहुँचा तो उसे खबर मिली कि अवध पर अंग्रेज कम्पनी ने अधिकार कर लिया है और बादशाह को निष्कासित कर कलकत्ता भेज दिया गया है। सुनकर उसे अत्यन्त दुख हुआ और पश्चाताप भी। "काश 10-15 दिन पहिले मुझे खबर मिल गई होती! मैं इतनी आसानी से अवध पर कब्जा नही होने देता, इंग्रेजों को छठी का दूध याद दिला देता।" वह सोचने लगा। "लेकिन फिर भी इतनी जल्दी बाकायदा जंग की तैयारी नही हो सकती थी। अगर जंग भी होती तो आखिरकार इंगरेज ही जीतते। खैर, अब भी कोई बात नही, शायद अल्लाह तअला ने हमें सारे मुल्क में आज़ादी का इनकिलाब जगाने का मौका अता किया है। ऐसा इनक़िलाब जो इंग्रेजी अज़दाह के जबाड़ों से पूरे हिन्द को निजात दिलायेगा।" खयालो मे डूबा वह तरह तरह के मंसूबे बनाता रहता। जब वह इन विचारों से मुक्ति पाता तो हज़रत महल बेगम से मुलाक़ात की युक्ति के बारे मे सोचता। उसके जासूसो ने सूचना दी थी कि महलो पर गोरी पल्टन की सख्त निगरानी है और चिड़िया का बच्चा भी बिना कड़ी जाँच के महलों मे दाखिल नही हो सकता। इसलिये उसने 3-4 महीने दरियाबाद के जागीरदार बलवंतसिंह की हवेली में ही अपना मुकाम रखा। साथ ही वह उससे कई मामलों में सलाह-मशविरा भी करता रहा। इन दिनों वह फैजाबाद, रुदौली और आस-पास के कई महत्वपूर्ण गाँवो और कस्बो मे भी जाता रहा।

इधर बेगम हजरत महल बिलकुल अकेली पड गई थी। सारे दरबारियों के महल मे जाने-आने का निषेध था और उनकी गतिविधियों पर भी कड़ी निगरानी रखी जाती थी। बेगम अपने कक्ष में बन्द कई तरह की योजनाएँ बनाती रहती थी। अकेला चना भाड़ नही फोड सकता, लेकिन वह तो अद्‌भुत शक्ति की देवी थी, अनवरत ऊर्जा का स्रोत! विवशताएँ उसका साहस और भी बढ़ा देती और

वह फिर अदम्य उत्साह से अपना ताना-बाना बुनने में व्यस्त हो जाती।

उस दिन जब वह दोपहर का भोजन करके उठी ही थी, एक ख़ादिम ने (नौकर ने) प्रवेश कर आदाब बजाते हुए सन्तरे के रस का गिलास उसे पेश किया। गिलास हाथ में ले वह इस नये ख़ादिम को देखते ही आश्चर्य-चकित रह गई। ख़ादिम को उसने बड़े अदब से झुककर सलाम किया और हँसकर कहने लगी, "सुहानल्ला मौलवी साहब, मुझे उम्मीद थी कि आप ज़रूर तशरीफ लायेंगे। वाह कमाल कर दिया जनाब ने! लेकिन लाल गुदड़ी मे नही छुप सकता।"

मौलवी ने कहा, "लाल की शनाख़्त सच्चा जौहरी ही कर सकता है मलका, वर्ना फिरंगी-गारद की आँखों में धूल झोंककर मैं आपकी खिदमत में किस तरह हाज़िर हो पाता!"

बेगम खुशी के मारे फूली नही समाई, "ज़हे किस्मत मौलाना, आज मैं अगर खुदा से कुछ और भी माँगती तो ज़रूर मिल जाता! कब से आपके बारे मे सोच रही थी मगर मजबूरियों ने जकड रखा था।" तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई, धीरे से दरवाज़ा खुला और एक बुर्के वाली ने प्रवेश किया। "कौन हो तुम और तुमने यहाँ तक आने की जुरअत कैसे की?" बेगम और मौलवी ने बातचीत बन्द कर एक साथ सवाल किया। तभी तीन बार ज़मीबोस करके बुर्के का नकाब उठा और राजा जैलालसिंह ने दोनों का अभिवादन किया। बेगम का दिल बल्लियों उछलने लगा और वह कहने लगी, "लगता है अल्लाह-पाक ने हमारी दुआ क़बूल कर ली है। इन गर्दिश के दिनों में भी हमारे वफादार अमीर खामोश नही बैठे हैं बल्कि ज़िल्लतें सहकर भी अपने इरादों पर क़ायम हैं। तो राजा जी तुमने किस तरह महलों मे दाखिला पाया? क्या गोरों ने नकाब उठाकर नही देखा?"

"देखा क्यों नही मलका-ए-आलिया, मगर हमारे आदमियों ने भी नहीं दिखाने के लिए काफ़ी हुज्जत की और कहा कि यह हमारी बेगम साहिबा की तौहीन होगी। इसकी शिकायत हम बड़े लाट तक करेंगे और तुम बर्बाद हो जाओगे। आखिर बहुत देर के बाद यह तय हुआ कि करीब 20 गज के फासले से बेगम पर्दे में से अपने चेहरे की एक झलक दिखायेंगी ताकि तहक़ीक़ हो जाये कि कोई मर्द नही है। मैंने बहुत दूर से नक़ाब बिजली की तरह हटाया और फिर डाल लिया और उन्हें तसल्ली हो गई।" बेगम हँसते हुए बोली, "लेकिन उन सिरफिरों ने क्या अफीम खा रखी थी कि इतनी लम्बी-लम्बी मूँछें भी उन्हें नज़र न आ सकीं?" राजा जैलालसिंह ने बगल मे से मुखौटा निकाल फिर से चेहरे पर लगाकर दिखाया तो हँसी के फ़व्वारे छूटने लगे। इस आपत्तिकाल में भी सब का जी थोड़ी देर के लिये हल्का हो गया और बेगम ने मान लिया कि वाकई मुखौटा भी किसी ग़ज़ब के फनकार ने बनाया है। शक़ व शुबहा की कोई

गुंजाइश ही नही। 'आली मुकाम, यह तो आपके गुलाम कमरुद्दीन ने बनाया है, बहुत ही गुणी आदमी है !" "अच्छा, अच्छा कमरुद्दीन मशालची ! वह इतना होशियार है क्या ?" बेगम ने कहा ! "जी हाँ हुजूर वही, वक्त जरूरत उसका यह फन हमे काम देगा !" कुछ देर और हँसी मजाक चलता रहा फिर शुरू हुई काम की बातें।

राजा जैलालसिंह ने बताया कि बादशाह के कलकत्ते भेजे जाने के बाद से रिआया में काफी असन्तोष व्याप्त है। उसने अवध के फ़ौजी अफ़सरों से भी बात-चीत की थी। वे सब इंग्रेजों ने हटा दिये हैं और अपने-अपने इलाको में जाने की तैयारी कर रहे हैं। जिनसे भी वह मिला, उन्होने वायदा किया है कि वे गुप्त रूप से अपनी सेनायें संगठित करते रहेगे और वक्त आने पर अँग्रेजों से लोहा लेने के लिये अपनी जान की बाजी लगा देंगे। यह सब सुनकर बेगम को बहुत प्रसन्नता हुई और उसका उत्साह दुगुना हो गया !

राजा ने यह भी बताया कि महबूब खाँ, शराफ़ुद्दौला, अली नकी खाँ, और जसंसिंह वगैरह के अलावा कई अमीर उससे मिलते रहते हैं और सब की खुफिया बैठक करीब हर हफ्ते होती रहती है। "मलका-ए-आलिया ! सख्त निगरानी की वजह से अलबत्ता हम लोग आपसे तो जल्दी-जल्दी मुलाकातें नही कर पाते मगर आप इतमीनान रखें कि हम अपनी तैयारी में जी-जान से जुटे हैं। सारी रिआया बेसब्री से हमें मदद देने के लिये इन्तजार कर रही है।" उसने कहा।

"वाह, यह तो वाक़ई अहम खुशखबरी है !"

"जी मलका !" यह मौलवी था, "इंग्रेज कंपनी ने अवध के सूबे का ऑटरम को चीफ़ कमीशनर बनाया था लेकिन वह छुट्टी चला गया और अब कावरले जैक्सन उसकी जगह काम कर रहा है। यह बहुत बदमिजाज शख्स है और आए दिन नई खुराफ़ातें करता रहता है। पेन्शन पाने वालों को पेन्शनें नही दी जा रही, तकरीबन पचास-साठ हज़ार आदमियों को नौकरी से निकाल दिया गया है और महसूल पर महसूल बढ़ाये जा रहे हैं।" "उफ्फ ओह ये तो हिन्द को निचोड़ कर रख देंगे, सुना है अफीम पर बहुत बेजा महसूल लगा दिया है।" बेगम ने गहरा निश्वास लेकर कहा।

"हुजूर ये ही नही, ये बदजात छत्तर मंजिल में रहने की जुरअत कर रहा है ! कहाँ शाही खानदान और कहाँ यह अदना-सा कम्पनी का अफ़सर।" राजा जैलालसिंह ने कहा।

"मलका," यह मौलवी था, 'इसके अलावा इसने कदम-रसूल की इमारत को भी सिलहखाना बना दिया है। जहाँ हज़रत रसूलुल्लाह् के कदमो के नक्श

हैं वहाँ फिरंगी सिपाही जूते पहिने आज़ादी से घूमते हैं।"

बेगम का चेहरा तमतमा गया और बोली, "राजा जी, इसके खिलाफ तो एक खरीता लाट साहब को फ़ौरन भिजवा दिया जाये।"

"हुक्म की तामील होगी बेगम आलिया," राजा ने कहा और एक कागज़ पर याद दहानी के लिये नोट कर लिया।

बेगम ने कहा, "मौलवी साहब हमें देहातों तक आम अवाम में जागरूकता लाना जरूरी होगा। इसके लिये क्या-क्या करना मौजू होगा ? राजा जी तुम भी इस मुद्दे पर गौर करना ताकि पुर असर क़दम उठाये जा सकें।"

मौलवी और राजा दोनों ने अपनी सहमति प्रकट की और वायदा किया कि इस मामले में जल्दी ही कुछ निर्णय लेकर उन पर अमल किया जायेगा। तभी राजा ने कहा, "मलका-ए-आलिया, हमें अवध को इंग्रेज़ी हुकूमत में मिला लेने के खिलाफ लार्ड डलहोज़ी को एक खरीता भिजवाना चाहिए और उसमें यह भी इसरार करना चाहिए कि अपना फैसला बदलकर हमारे बादशाह को वापिस लखनऊ भेज दें।"

"जी हाँ राजा जी, यह तो सबसे पहिले काबिले गौर मामला है।" कहते हुए बेगम ने ताली बजाई और मुख्य सेविका के आने पर आज्ञा दी कि वह तहखाने का गुप्त दरवाज़ा खोले। सेविका ने कक्ष की दीवार से एक बड़े चौकोर शिला-खण्ड को दाईं ओर बड़ी कठिनाई से थोड़ा सा सरकाया तो थोड़ी जगह बन गई अब इसमें हाथ डालकर पूरा का पूरा चौकोर पत्थर दाईं ओर सरलता से सरक गया और एक चौकोर खाली जगह दिखाई देने लगी। इसके निचले किनारे पर हाथ रखकर मुख्य सेविका ने अपनी ओर खींचा तो दूसरा चौकोर शिला खण्ड भी नीचे फर्श तक झुक गया। अब नीचे जाने के लिए एक आदमक़द रास्ता बन गया था। बेगम ने सेविका को आज्ञा दी कि नीचे से एक हरे रंग की मिसल (पत्रावली) जो बाँई तरफ की अलमारी में रखी है। ऊपर ले आये। सेविका तुरन्त नीचे गई और कुछ ही क्षणों मे मिसल लाकर बेगम को पेश कर दी। इसमें अवध-सल्तनत के कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों के अलावा एक पत्र का प्रारूप भी था जो बेगम ने गवर्नर जनरल को भेजने के लिए तैयार किया था और यही इन्तजार कर रही थी कि कुछ मुसाहिबों को इसे दिखाकर उनकी राय के बाद कलकत्ता भेजा जाये। पहिले मौलवी ने तथा फिर राजा ने यह मसौदा पढा और मामूली तरमीम के बाद उसे अन्तिम रूप दे दिया। मौलवी ने बहुत सुन्दर लेख मे पत्र तैयार किया और बेगम की तरफ देखने लगा।

"राजा जी यह खरीता किसके हाथ भेजा जाए तो ठीक रहेगा ?" बेगम ने पूछा।

"आलीक़द्र, इसे लेकर किसी बहुत ज़िम्मेदार शख्स को ही भेजना चाहिए।"

"तो आप ही चले जायें तो कैसा रहेगा।"

"जी बेगम आलिया, मैं ही चला जाऊँगा।" लेकिन बीच में मौलवी बोल पड़ा और कहने लगा, "मलका-ए-आलिया मेरी समझ में राजा साहब को भेजना मौज़ू नहीं रहेगा क्योंकि हमें इनकी यहाँ सख्त ज़रूरत होगी। इन्होंने यहाँ इतने काम छेड़ रखे हैं कि इनकी ग़ैरहाज़िरी में किसी दूसरे उमराव को उन्हें पूरा करना नामुमकिन होगा।"

"मगर आपको भी भेजना मुनासिब नहीं होगा, अगर महबूब खाँ को भेजा जाए तो कैसा रहेगा?"

"जी मलका-ए-आलिया, बहुत मौज़ू होगा उन्हें भेजना। वे बहुत बुर्द्बारी व ज़िम्मेदारी से इस काम को अंजाम दे सकेंगे। उनका यहाँ का काम हम लोग सम्भाल सकते हैं।" मौलवी और राजा लगभग एक साथ बोले।

"तो ठीक है, आप लोग महबूब खाँ को यह खरीता दे दें और हमारी तरफ से ज़रूरी हिदायत देकर उन्हें कल ही कलकत्ते के लिए रवाना करा दें।" बेगम ने कहा।

"बहुत अच्छा, बेगम साहिबा", मौलवी ने कहा, "आप इस पर दस्तख़त फ़रमा कर मुहरबन्द करा दें और मुझे दे दें।"

बेगम ने दस्तख़त किये तथा अपनी मुख्य सेविका को आदेश दिया। थोड़ी ही देर में सील बन्द लिफ़ाफ़ा तैयार हो गया और मौलवी को दे दिया गया।

राजा और मौलवी ने कहा, "हुजूर को हमारी कारगुज़ारियों की इत्तिला वक्तन-फवक्तन मिलती रहेगी।" "वाह, बहुत खूब। हम भी कोशिश करेंगे कि आप लोगों से किसी-न-किसी तरह मुलाकात होती रहे। वैसे यह निगरानी ज्यादह दिनों नहीं चलेगी—ज्यादह से ज्यादह एक-दो माह। उसके बाद इतनी पाबन्दियाँ नहीं रहेंगी।" यह बेगम थी।

"जी हाँ मलका, मेरा भी यही ख़याल है, फिर भी हमें होशियार तो हमेशा ही रहना पड़ेगा। इसी वजह से हम लोगों ने तय किया है कि बजाय लखनऊ के अमीर-उमरावों की बैठक भी आइन्दा दरियाबाद ही रखा करेंगे।" राजा ने कहा।

"जी हाँ मलका-ए-मुअज्ज़मा, वहीं यानी राव बलवंत सिंह की हवेली पर। वह आपका बहुत ही खैरख्वाह जागीरदार है। फिलहाल मैं भी वहीं ठहरा हुआ हूँ।" मौलवी ने कहा।

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा! बैठकें वहीं रखना मुनासिब होगा। अच्छा राव बलवन्त सिंह कुछ कर भी रहा है या यों ही वफ़ादारी का दम भरता है?"

"मलका-ए-आलिया, आप सुनकर हैरत में पड़ जायेंगी। वह अपने चारों

बेटों और दोनों बेटियोंको फ़ौजी कवायद सिखा रहा है। अपनी सिपह को बढ़ाकर उसे भी इग्रेजी तरीके पर तैयार कर रहा है। जब से आपका खत पहुँचा है, आप से मिलने के लिए बेताब है। लखनऊ मे जो कुछ हुआ है उसकी बार-बार याद करके उसका खून खौलने लगता है। फौजी तालीम के लिए उसने एक फ्रान्सीसी कर्नेल भी रख लिया है। उसका कहना है कि जब तक इंग्रेजी निगरानी का मरकज (केन्द्र) लखनऊ है तब तक यहाँ तैयारी पूरी कर ली जाये—हो सकता है बाद मे वे दरियाबाद की तरफ गौर करें और हमारा राज वक़्त से पहिले ही खुल जाये।"

बेगम सब कुछ सुनकर वाकई हैरत में पड़ गई। कृतज्ञता और प्रसन्नता से उसकी आँखो में आँसू छलक उठे। "अभी भी हमारे मुल्क में आज़ादी के दीवानों की कमी नही।" वह सोचने लगी, और मौलवी से कहा, "मौलवी साहब आप हमारी तरफ से राव का शुक्रिया अदा करें और हौसला अफ़ज़ाई भी।"

"जी अच्छा बेगम साहिबा!' मौलवी ने कहा। इसके बाद दोनों उमरावों ने इजाज़त चाही। इजाज़त देने के लिये बेगम उठ खड़ी हुई, कक्ष के द्वार तक गई और कहा, "खुदा हाफिज!" और अमीरों ने झुककर अभिवादन किया और "खुदा हाफिज़" कहते हुए चले गए।

15

थानेदार तहव्वर खाँ उसी दिन शाम को अपने पन्द्रह सिपाहियों और अहमद के साथ बमरौली जाने के लिए तैयार हुआ तो कनक सुन्दरी का भाई प्रतापसिंह भी घोड़े पर सवार हो उसके साथ चल दिया। "वाह कुमार साहब आपके आने से तो हमारा हौसला और भी बढ़ गया।" तहव्वर ने कहा। "अजी दरोगा जी अब तो हमे मिल-जुल कर ही काम करना होगा। जब से अनीस भाई के न मिल पाने की खबर मिली है और यह मालूम हुआ है कि इसमे इन बदज़ात फिरंगियों का हाथ है, मेरा खून खौल रहा है। जी तो चाहता है इनके एक-एक आदमी को मौत के घाट उतार दूँ।"

"वाकई—कुमार साहब हर हिन्दुस्तानी इनके खिलाफ है, लेकिन ये स्साले इतने शातिर हैं कि हम लोगों मे ही आपसी फूट डालकर अपना उल्लू सीधा कर

लेते हैं और हिन्द में पंजा जमाते जा रहे हैं। कहाँ ये कमीने सौदागर और कहाँ सल्तनतों का इन्तज़ाम! हमारी बदकिस्मती ही है वर्ना इन बदजातों की यहाँ तक आने की हिम्मत ही कैसे होती? इन्होंने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के खिलाफ़ मीर जाफर को गद्दारी पर आमादा कर दिया, फिर मीर कासिम को मिलाकर मीर ज़ाफ़र को धता बता दी। आखिर में सबको खत्म करके बंगाल और बिहार को हड़प लिया। शहंशाह को कठपुतली बना रखा है। समझ में नहीं आता कि मुल्क कहाँ जा रहा है।" तहव्वर खाँ तैश में बोले जा रहा था।

"यही तो दरोग़ा जी समझ में नहीं आता क्या किया जाए! अरे बमरौली आ गई।" प्रताप सिंह ने कहा।

"हाँ जी, हमें अब चारों तरफ से होशियार रहना चाहिए। मुन्ने खाँ, रामसरूप, माधो! ज़रा ख्याल रखना कोई इधर-उधर भाग नहीं पाये।"

"जी हुज़ूर आप बेफिक्र रहें, एक चिड़िया का बच्चा भी हमारी निगाहों से नहीं बच पायेगा!" सब सिपाहियों ने एक साथ कहा। धीरे-धीरे लेकिन बहुत सावधानी से सब खण्डहरों की तरफ बढ़े, और कुछ सवारों को चौकसी के लिए छोड़कर अहमद के बताये हुए स्थान पर तहखाने तक पहुँचे तो देखा कि ढक्कन खुला पड़ा है तथा ईंटें व मलबा हटा हुआ है।

देखते ही अहमद ने कहा हुज़ूर मौलवी साहब ने तो ढक्कन लगवा कर फिर से उस पर ईंटें व मलबा जमा करवा दिया था। लगता है वे लोग पहिले ही इस जगह आकर चले गये हैं। दरोग़ा ने एक मशालची को तहखाने में भेजा, खण्डहरों की तलाश कराई और कुँए के ऊपर-नीचे बनी कोठरियों की तलाशी ली। प्रताप सिंह तुरन्त इधर-उधर घूमकर घोड़ों के टापों की निशानी ढूँढने लगा। पीछे वाले सरसों के खेतों में काफी दूर तक सरसों के पेड़ ज़मीन तक झुके-बिछे पड़े थे। प्रताप ने दरोग़ा को बताया कि हो न हो वे लोग इसी रास्ते से गये हैं। कई जगह निशानों से पता लगा कि दो घोड़े बराबर-बराबर निकले हैं और बाकी एक या दो उनके पीछे।

दरोग़ा ने अन्दाज़ा लगाया कि उनको गये ज्यादा देर नहीं हुई है। जब तहखाने में उन्हें कुछ भी नहीं मिला होगा तो उन्हें खतरा हुआ होगा कि वे किसी भी समय पकड़े जा सकते हैं लिहाज़ा वे कहीं आस-पास ही छिपे होंगे। दरोग़ा ने अपने आदमियों को खेतों वाले रास्ते से चलने का आदेश दिया और खुद प्रताप सिंह के साथ आगे-आगे चलने लगा। कुल आधा मील चले होंगे कि एक नहर सामने दिखाई दी जिसमें लबालब पानी भरा था। प्रताप सिंह ने नीचे उतरकर देखा तो बाँई ओर नहर के किनारे-किनारे घोड़ों के जाने के निशान नज़र आये। जब उसने दरोग़ा को बताया तो उसने कहा हमें ज्यादह-से-ज्यादह रफ्तार से इसी रास्ते पर बढ़ना चाहिए। घोड़े बहुत तेज दौड़ रहे थे लेकिन प्रताप सिंह बार-बार

ऐंड़ लगाकर और भी तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। तभी उसे क़रीब सौ गज़ के फासले पर धूल उड़ती नजर आई। वह बिजली की चाल से सरपट आगे बढ़ा तो दो-तीन घोड़े और सवार धुंधले से दिखाई दिये। किसी गाँव के कुछ मकान भी नज़र आने लगे और थोड़ी ही देर में प्रतापसिंह गाँव की सीमा तक जा पहुँचा। यहाँ पहुँचते-पहुँचते आगे वाले घुड़सवार अचानक आँखों से ओझल हो गए। जैसे ही प्रताप के पास दरोगा पहुँचा प्रताप ने कहा कि हो न हो वे इसी गाँव में कहीं जा छुपे होंगे। नगला खुर्द बहुत छोटा-सा गाँव था—मुश्किल से पचास घरों की बस्ती। गाँव के एक तरफ़ नहर थी अतः सवारों को आदेश हुआ कि गाँव को तीनों तरफ से घेर लिया जाये। सात सवार बाहर छोड़ कर वे गांव में प्रविष्ट हुए। चार-पांच मकान ऐसे थे जिनके बाहर एक या दो घोड़े बंधे थे। कुछ बच्चे भी रास्ते में खेल रहे थे। उनसे पूछा कि यहाँ अभी कोई घुड़सवार आया है तो बच्चों ने एक घर की तरफ इशारा करके कहा, "हाँ आये हैं न साब, दो-तीन आदमी, वो रहे घोड़े वो जो जौसफ का मकान है वहाँ!" जौसफ का नाम सुनते ही दरोगा और प्रताप सिंह के कान खड़े हुए। उन्होंने पूछा, "अच्छा वह यहाँ रहता है?"

"हाँ साब उसका मकान है, वैसे आता तो कभी-कभी है।"

"कपड़े बेचता है?" दरोगा ने पूछा।

"नई साब वो फौज में हाकिम है।" एक बड़े बच्चे ने बताया।

थानेदार के सवारों ने तुरन्त उस मकान को घेर लिया। मकान क्या था, एक बहुत ऊँचा कमरा जैसा लगता था, कोई खिड़की नहीं। एक सदर दरवाज़ा दूसरा पीछे एक छोटा-सा निकास जिसमें आदमी झुककर ही निकल सके। दरवाज़े के बाहर बंधे घोड़े अब भी हाँफ रहे थे और पसीने में लथपथ थे। प्रताप ने सदर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक बूढ़े दाढ़ी वाले ने दरवाज़ा खोला और माथे पर बल डालकर बड़े गौर से आगन्तुकों की ओर प्रश्नवाचक मुद्रा में देखने लगा। जैसे ही दरोगा और प्रताप सिंह अन्दर दाखिल हुए वह पीछे की ओर हटकर खड़ा हो गया। वहीं छोटी-सी खटिया पर दो युवक गहरी नींद में खर्राटे भर रहे थे। कटोरे, कटोरी और एक थाली बिखरी पड़ी थी। दरोगा ने अहमद को इशारे से युवकों को पहिचानने के लिए कहा। अहमद ने 'नहीं' में सिर हिला दिया। फिर उसने बूढ़े से पूछा, "यहाँ कोई आया है?" बूढ़े ने आश्चर्य से कहा, "कौन! नहीं तो!" "नहीं तो!" थानेदार ने कड़ककर मुँह चिढ़ाते हुए कहा, "अभी-अभी इस मकान में दो-तीन जने घुसे हैं और तुम हमें ही झाँसा-पट्टी दे रहे हो।" "हुजूर देख लीजिए।" बूढ़े ने ज़रा चौड़ी आँखें करके देखते हुए कहा, "हाथ कंगन को आरसी क्या।" कमरे में अंधेरा पूर्ण था। मशाल जलाकर पूरे कमरे की तलाशी ली गई। कोना-कोना देख डाला मगर कोई नहीं मिला। कोई ताक़ या अल्मारी भी नहीं थी—सिर्फ सीधी सपाट बहुत ऊँची दीवारें। सभी निराश होकर बाहर

जाने लगे, तो दरोग़ा ने बूढ़े से पूछा, "तो फिर ये बाहर किसके घोड़े बँधे हैं ?" "घोड़े बँधे हैं क्या हुज़ूर ?" बूढ़े ने बड़ी शान्ति से कहा, "पता नहीं ये कम्बख्त जिन्नात इन्हें यहीं क्यों बाँध जाते हैं, हाँफ रहे होंगे हुज़ूर ?" "हाँ हाँ, हाँफ रहे हैं !" दरोग़ा बोला, "वन हुज़ूर दो-दो दिन खड़े रहें तो भी इसी क़दर हाँफ़ते रहते हैं, या ख़ुदा। ख़ैर कर।" बूढ़े ने दुआ माँगते हुए हाथ ऊँचे किए। तभी प्रताप सिंह ने थानेदार को पीछे से छूकर अन्दर फिर से चलने को कहा। वह तुरन्त अन्दर गया। मशालची भी जो पीछे ही खड़ा था पुनः अन्दर गया और जब प्रताप ने दरोग़ा को ऊपर देखने को कहा तो छत से दो बिस्तर लटकते नज़र आये। प्रताप ने मशाल ऊँची करने को कहा तो दिखाई दिया कि छत के दो कड़ों से दो आदमी लटके हुए हैं। उनके पास से एक दोहरी रस्सी दाईं ओर और दूसरी बाईं ओर की खूंटियों से बँधी हुई थी। बस फिर क्या था दरोग़ा ने अपना कोड़ा निकाला और दरवाज़े की तरफ गया। चारपाई पर सोये हुए दोनों युवकों पर उसने कोड़ा बरसाया और ज़ोर से चिल्लाया, "हरामी के पिल्ले, हम से ही मक्कारी !" दोनों जवान लपक कर उठे और भागने को हुए कि सिपाहियों ने उन्हें दबोच लिया। दरोग़ा के इशारे पर दोनों को अन्दर ले जाया गया। दरोग़ा गरजा, "अबे उल्लू के पट्ठो ! अगर अपनी खाल नहीं फुड़वानी है तो उतारो इनको नीचे !" दोनों आदमियों ने चुपचाप खूंटी पर से रस्सी खोली। दोहरी रस्सियों को एक तरफ से ढील देते गये और दूसरी तरफ खींचते गए तो दोनों लटके हुए आदमी धीरे-धीरे नीचे उतर आए। वे जैसे ही फ़र्श पर टिके, दरोग़ा ने पाँच-सात कोड़े बरसाए और अहमद की तरफ पहिचानने के लिए देखा। अहमद ने 'हाँ' में सिर हिलाकर बताया कि यही वे आदमी हैं। उसने फुसफुसाकर कहा, "हुज़ूर ये लीलू मल्लाह है और ये फिरंगी भी उनके साथ आया था।" सिपाहियों को तहव्वर खाँ ने हुक्म दिया कि इन्हें रस्सियों से कस लो। इन दोनों छोकरों को और बुड्ढेमियाँ को भी गिरफ्तार करके बाँध लो। फिर वह बूढ़े की ओर आग उगलती नज़रों से देखता हुआ बोला, "क्यों बे हरामखोर ये ही जिन्नात हैं कि कोई और ?" उसने बूढ़े की दाढ़ी पकड़कर खींची तो हाथ में आ गई, बाल पकड़कर हिलाये तो बाल हाथ में रह गए और वह भागने लगा कि प्रताप ने कमर पर एक लात जमाई। तुरन्त वह धराशायी हो गया, वह भी 25-30 साल का एक युवक ही था। पाँचों को सिपाहियों ने कसकर घोड़ों पर बाँध लिया और रुदौली की तरफ चल दिये। पहुँचते-पहुँचते अँधेरा होने लगा था। बदमाशों के दोनों घोड़ों को रुदौली ले आए। रास्ते में दरोग़ा ने कहा, "वाह कुमार सा'ब दाद देता हूँ आपकी सूझ को। अगर आप नहीं होते तो, ईमान से, इन हरामियों को पकड़ पाना मुमकिन नहीं था। देखिए तो, स्साले इतनी ऊँची छत से चमगादड़ों की तरह लटके हुए हैं।"

"और लटकने में भी क्या फ़ुर्ती दिखाई, शायद ये रस्सियाँ मय फंदों के हमेशा तैयार रखी जाती हैं।"

"जरूर, जरूर वर्ना आनन-फानन में ये ऊपर कैसे लटकाए जा सकते थे?"

"जी हाँ, फन्दे भी खूब बनाये हैं, कोई सोच भी नही सकता था कि साली दो-दो लाशें इतनी ऊँचाई पर टंगी होंगी!"

"जी हाँ कुमर साहब, वर्ना पच्चीस साल में ये तहव्वर खाँ धोखा कैसे खा सकता था! यकीन मानिए कुमर साहब यह पहिली बार धोखा खाया है मैंने।"

रुदौली पहुँचकर दरोगा ने पहिले उस अंग्रेज को बुलवाया और उसके बयान लेना शुरू किया।

"तुम्हारा नाम?"

"विलियम अल्यूशियस क्रिश्चियन।"

"बाप का नाम?"

"टी० ए० क्रिश्चियन।"

"क्या काम करते हो।"

"फ़ौज में सिपाही हूँ।"

"कौन-सी फ़ौज में?"

"अंग्रेजी फौज में।"

"साहबजादा अनीस अहमद कहाँ है।"

"हमको कुछ पटा नईं।"

"टुमको कुछ पटा अभी चलाटा है!" थानेदार ने उसे चिढ़ाते हुए कहा और अपना कोडा लहराया, "बोलो पता है या नही?"

"नईं, नईं हमकू कुछ पटा नईं!"

"शड़ाक! शड़ाक!" दो कोड़े जमाते हुए दरोगा ने फिर कहा, "बोलो पता है या नही!"

"नईं-नईं—टुम इण्डियन हमको नही मार सकटा! हम कम्पनी बहाडर का आडमी है!" गोरे ने कहा।

"अबे कम्पनी बहादर के बच्चे, अभी ले! फ़ीरोज़ इस गधे के पड़पोते की मूँछें तो उखाड़!" एक सिपाही ने उसके हाथ पीछे से पकड़ लिए और दूसरे ने उसकी मूँछें खींचना शुरू किया तो गोरा चीख पडा। "टुम हिण्डुस्टानी ओह-ह-नेटिव (देशी) टुमको इसका सजा मिलेगा!"

मूँछें छोड़ दी गई और दरोगा ने कहा, "अबे उल्लू के पट्ठे, सजा तो अभी हम तुझे देंगे।" और दो कोडे मारते हुए उससे पूछा, "पहिले बता अनीस कहाँ है?"

"हमकूँ नईं पटा !"

"अच्छा इस मुर्गी के बच्चे की मूँछें उखाड़ लो—बिल्कुल जड़ से खींच लो !" फ़ीरोज़ खाँ ने फिर ज़ोर से मूँछें खींची तो गोरा दर्द के मारे फिर चीख उठा, "ठहरो अभी बटाटा है।" दरोगा ने उसके हाथ छुड़वा दिए और कहा, "अच्छा अब बताओ, साहबजादा अनीस कहाँ है ?" गोरा कहने लगा, "लखनऊ शहर के पास चार बाग की टरफ़ तीन भोंपरा है—खाली फूँस का छोटा-छोटा'''।" कहते कहते फ़ुर्ती से उछला, सबकी आँखों में धूल झोंककर दरवाज़े की तरफ भागा और वहाँ खड़े अपने घोड़े पर सवार होकर सड़क पर सरपट दौड़ाने लगा। प्रताप सिंह भी चीते की तरह उछला और बाहर खड़े घोड़े पर सवार हो उसके पीछे दौड़ा। इस अप्रत्याशित घटना से दरोग़ा और सिपाही एक क्षण को किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए लेकिन फिर तुरन्त प्रताप सिंह के पीछे-पीछे भागे। कुछ सिपाही थाने की निगरानी के लिए रह गए। गोरा मुश्किल से आधी मील निकला होगा कि एक बहुत ही सँकरे रास्ते से जाते हुए प्रताप सिंह ने उसके भाला फेंककर मारा, गोरा तुरन्त नीचे गिर गया और उसका घोड़ा आगे भाग गया। प्रताप का घोड़ा तेज़ रफ्तार मे होने के कारण एकदम रुकने के बजाय, गोरे के ऊपर होकर सँकरा रास्ता पार करते हुए आगे दौड़ा, और तहव्वर खाँ व उसके सिपाही भी गोरे को कुचलते हुए आगे बढ़ने लगे। तभी प्रताप ने अपने घोड़े की लगाम एकदम खींची, उसे मोड़ा और चिल्लाकर तहव्वर खाँ और सिपाहियों से रुकने के लिए कहा और गोरे के गिरने के बारे में बताया। सभी लौट पड़े और अँधेरा हो जाने के कारण तुरन्त मशाल जलाई गई। मशाल जलते ही सबको दिखाई दिया कि गोरे की लाश के चिथड़े-चिथड़े बिखरे पड़े थे। "इस क़मीने के लिए ऐसी ही मौत ठीक है" दरोग़ा ने कहा, "चलो लौट चलें।" लाश को जैसी की तैसी छोड़ सब थाने लौट आए और अब लीलू की बारी थी।

"नाम ?"

"जी लीलू मल्लाह।"

"बाप का नाम ?"

"धकड़ू मल्लाह।"

"हाँ तो साहबजादा अनीस कहाँ हैं ?"

"हज़ूर, बिल्कुल मालूम नहीं।"

"अच्छा, अच्छा, अभी मालूम होता है !"

"राम जीवन, इस उल्लू के पट्ठे को बिलकुल नंगा करके तिखटी से बाँध दो, औंधा। अभी इस हरामी का दिमाग़ गरम है, हाँ, हाँ बिलकुल ठीक, अब पानी डाल दे इसके ऊपर, बिलकुल ठीक, और अब इसको सूचैन कोड़े का मज़ा चखा !"

"ग़ड़ाक ! ग़ड़ाक !" एक कोडा बरसा और चमड़ी खुरचता हुआ हवा में लहराया। लीलू चीखने लगा, "हज़ूर धरम से मुझे नहीं मालूम, हज़ूर नहीं नईं मालूम !" दरोगा ने इशारा किया और दो बार कोड़ा उसकी खाल खींचता हुआ हवा में लहराया। लीलू फिर ज़ोर से चीख़ पड़ा और उसकी कमर के नीचे खून रिसने लगा।

"बोल अब बतायेगा या कुत्तों से नुचवाऊँ ?"

"मालिक मुझे नहीं मालूम, मालूम होता तो कभी का बता देता।"

"अच्छा, फ़ीरोज इसके ऊपर ज़रा नमक मिर्च तो डाल दे।"

उघड़ी चमड़ी की जगह पर नमक और मिर्च छिड़का तो लीलू दर्द से तड़प उठा और बोला, "हज़ूर अभी बताता हूँ, अभी इस पर पानी डलवाइए।" पानी डलवा कर नमक मिर्च हट तो गया लेकिन भारी झल्लाहट के कारण लीलू व्याकुलता से कराहने लगा, फिर बोला, "हज़ूर, साहबज़ादे मुदकीपुर की फ़ौजी छावनी में हैं। शायद वे उन्हें जल्दी ही छोड़ देंगे।"

"हूँ, इस गोरे का क्या नाम है ?"

"साब बिली या बिल्ली साब बोलते हैं, मुदकीपुर छावनी का है।"

"लड़की किसके लिए ले जाते थे ?"

"हज़ूर कप्तान फ्लैचर साब के लिए।"

"हूँ, इनके साथ और कौन था ?"

"हज़ूर कोई नहीं था।"

"फ़ीरोज, कुत्ते छुड़वा दो।" तीन बड़े शिकारी कुत्ते तिखटी के चारों ओर चक्कर लगाते, लीलू के रिसते खून को ललचाई नज़रों से देखते हुए ग़ुर्रा रहे थे। इन भयंकर कुत्तों द्वारा काटे जाने की कल्पना मात्र से ही लीलू छटपटा गया। "हाँ तो बताओ और कौन-कौन था तुम्हारे साथ।" "हज़ूर बिली साब, माइक साब और जौजफ।"

"अभी माइक भी साथ आया था तुम्हारे ?"

"नहीं मालिक सिरफ बिली साब था।"

"अच्छा, जौसफ कौन है ? क्या करता है ?"

"हज़ूर रेसमी कपडे बेचता है।"

"फ़ौज में भी कुछ काम करता है।"

"नहीं, बस कभी-कभी लड़कियाँ ला देता है सा'ब लोग को।"

"उस गाँव का मकान किस काम आता है ?"

"सरकार, यहीं छुपने-छुपाने के—जौजफ़ ने बनवाया है, सा'ब लोगों ने चन्दा करके उसे बनवाने के लिये पैसे दिये थे।"

"जौजफ़ अभी तुम्हारे साथ था, वह कहाँ भाग गया ?"

"हुज़ूर, वहाँ दो ही लटकने की जगह थी इसलिये वह आगे कहीं छुपने के लिये भाग गया।"

"हूँ, तो तुम कब से उसे जानते हो, सही-सही बताओ, वर्ना ये कुत्ते सिर्फ एक इशारे का इन्तज़ार कर रहे हैं। समझे!"

"समझ गया सरकार! करीब तीन साल से जोज़फ़ ने मुझे इस धंधे में फँसाया है तभी से जानने लगा हूँ उसे।"

"कौन-सा धंधा?"

"यही हुज़ूर, लड़कियों का।"

"अच्छा, तीन साल में कितनी लड़कियाँ फँसाई हैं तुम लोगों ने?"

"हुज़ूर 25-30, लेकिन चार तो हाथ में आई हुई निकल गईं सरकार—और इन दो के चक्कर में तो मैं बुरी तरह बर्बाद हो गया हुज़ूर।"

"अभी और भी कहीं लड़कियाँ छुपा रखी हैं?"

"मुझे नहीं मालूम हुज़ूर!"

"सही-सही बता वर्ना···।" थानेदार ने आँखें निकल कर कुत्तों की तरफ इशारा किया।

"माई-बाप तीन और छुपा रखी हैं।"

"हाँ, अब आये न रास्ते पर, कहाँ छुपा रखी हैं?"

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम सरकार!"

इशारा पाते ही फीरोज़ ने दो खुरचन कोड़े और जड़ दिये, लीलू चीख पड़ा। दरोगा दहाड़ा, "छोड़ कुत्ते, मादर···या ठीक-ठीक बताता है!"

"हुज़ूर उसी कमरे मे छुपी हैं। सोचा था पाँचों को ले जाकर सा'ब लोगों को पेश करेंगे तो तकदीर बन जायेगी। मगर हुज़ूर···।"

"चुप उल्लू के पट्ठे, तक़दीर बन जायेगी, साला हरामी का बच्चा, जितना पूछें उतना ही जवाब दे!" दरोगा गरजा। "लेकिन चमगादड़ की औलाद! उस कमरे में तो कोई और था ही नहीं!"

"नईं मालिक वो जो पीछे का दरवाज़ा है, उसकी चौखट हटाकर एक हौदी है। उसी मे छुपी हैं लड़कियाँ, लेकिन चाबी जोजफ के पास है।"

"झूठ तो नहीं बोल रहा! अगर झूठ बोला तो ये तेरे बाप कच्चा चबा जायेंगे तुझे!" कुत्तों की तरह इशारा कर दरोगा ने कहा।

"नईं सिरकार अब झूठ से कोई फायदा नहीं, झूठ बोलूं तो सरकार फाँसी पर लटका देना। मगर कहीं जोज़फ़ उनको पहिले ही नहीं ले उड़े हुज़ूर, वह वहाँ ज़रूर आयेगा।"

बस इतना काफी था। प्रताप और थानेदार दस सिपाहियों लेकर तुरन्त नगला छ्रुद गये और घोड़ों को पीछे ही छोड़ कर दबे पाँव कमरे के पीछे वाले

दरवाज़े की ओर बढ़े। अंधेरे में एक छाया सी दिखाई दी। घेरा डालकर मशाल जलाई तो जौजफ़ भागने के लिये दाँए-बाँए देखने लगा। प्रताप सिंह ने अपना भाला उसकी पीठ पर टिका कर कहा, "इस हौदी को खोलो!"

"कौन-सी हौदी ?" कांपते हुए जौजफ बोला।

दरोगा ने हंटर निकाल कर एक दाड़ाका किया तो कान, आँख और गले पर लहू झलकने लगा, "अबे गधे की औलाद जो इस चौखट के नीचे है, खोलता है या तुझे यहीं दफनाऊँ ?"

जौजफ़ अच्छी तरह समझ गया था कि अब उड़ने से कोई फ़ायदा नहीं, सारा भेद खुल चुका है। वह बिना कुछ बोले बैठ गया और चौखट को सरकाने लगा। पूरा-पूरा दहलीज़ का पत्थर ढक्कन की तरह हट गया और एक हौदी नज़र आई जिसमे चारों तरफ चलनी के से सूराख थे। आगे एक ताला लटक रहा था। जौजफ़ ने बिना कहे ही ताला खोल दिया और चुपचाप एक तरफ खड़ा हो गया। प्रताप बेताब हो रहा था। उसने हौदी का ढक्कन खोला तो तीन लड़कियाँ बेहोश पड़ी दिखाई दीं। सिपाहियों ने तीनों को सावधानी से निकाला और जौजफ को बाँध लिया। लड़कियों को भी घोड़ों पर बाँध कर रुदौली की तरफ रवाना हो गये।

अनीस का पता नहीं लग पाने से दोनों हवेलियों में एक बार फिर कोहराम मच गया। प्रताप सिंह, लुत्फ़ो और कनक भी बहुत निराश और दुखी हुए और मन-ही-मन मुदकीपुर छावनी जाकर अनीस अहमद को छुड़ा लाने के मंसूबे बनाने लगे।

16

रहमत का तेरी मेरे गुनाहों को नाज़ है।
बन्दा हूं जानता हूँ तू बन्दानवाज़ है।

नवाब गंज के ताल्लुकेदार मुहम्मद अली शाह के किले में अर्द्धरात्रि को महफिल जमी हुई थी। चार सुन्दरियाँ केवल कटि वस्त्र पहिने, अंग-प्रत्यंगों का संचालन कर अपनी नृत्य-कला का प्रदर्शन कर रही थी। चारों अपनी भाव-भंगिमा से बारम्बार शाह का ध्यानाकर्षण करना चाहती थी। मुहम्मद अली शाह

मदिरा का सेवन तो नही करता था किन्तु नवयौवनाओं के चंचल नेत्र, नग्न उन्नत उरोज और इठलाते नितम्ब उसे मदहोश करने के लिये पर्याप्त थे। काफ़ी देर तक नृत्य चलते रहने के बाद मुहम्मद अली ने अपने गले से मोतियों का कंठा उतार कर एक रूपसी की ओर इशारा किया। रूपसी उसके समीप आ घुटनों के बल बैठ गई और मुहम्मद अली ने कंठा उसके गले में पहिना कर ताली बजाई तो नृत्य संगीत एकदम बन्द हो गया और तीनों अन्य नर्त्तकियाँ व सभी साजिन्दे कक्ष से बाहर खिसक गये।

"तो तुम्ही आई हो जैसलमेर से लताफत जान के?" शाह ने उसे ऊपर खींचते हुए पूछा। "जी आलीजाह, वो मेरी फूफी हैं।" हसीना के एक एक शब्द से मोती झड रहे थे। "क्या नाम है तुम्हारा?" "मुझे गुलाबो जान कहते हैं, हजूर!"

मोहम्मद अली ने उसे अपने पार्श्व में बिठाया तो गुलाबो चैती गुलाब सी खिल गई। उसे गोदी में भरकर मुहम्मद अली शैय्या की ओर ले चला तो गुलाबो ने भी निढाल होकर पूर्ण आत्म-समर्पण कर दिया। उसके मदमाते यौवन ने शाह का अंग-अंग मादकता से भर दिया और उसने गुलाबो की कोमल गुलाबी देह पर जहाँ तहाँ बीसियों चुम्बन जड दिये। गुलाबो भी लता की भाँति शाह से लिपट-लिपट गई और शेष रात्रि में दोनों मधुर-मधु में सराबोर ही दीन दुनिया से बेखबर हो गये मानो विधाता की सम्पूर्ण सृष्टि उनके भुज बन्धन में समा गई हो!

पौ फटने को ही थी कि शाह ने गुलाबो को एक बार और आलिंगन बद्ध कर उसके गुलाबी अधरों पर अधर रख दिये और याचना की मुद्रा में उसकी आँखों में आँखें डाल दीं। "नहीं आली मुकाम, आप थक गये होंगे, आपको दिन भर अपने इलाके का काम भी तो देखना होगा!"

"गुलाबो, तुम्हारे पहलू में थकान तो कोसों दूर भाग जाती है, अभी ज्यादा देर भी तो नही हुई!"

"यह नाचीज तो हुजूर की मर्जी की गुलाम है, आलीजाह!"

और मुहम्मद अली ने उसको और भी कस कर अंक में भर लिया। तभी किले में हड़कंप सा मच गया। वह तुरन्त शैया से उठा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहन कर खंजर हाथ मे लिये कक्ष से निकला ही था कि एक दासी ने झुककर अभिवादन किया और सूचना दी, "हुजूर गुस्ताखी मुआफ हो, गजब हो गया!"

"क्या हुआ नन्नो, जल्द बता क्या बात है?" अधीर होकर शाह ने पूछा।

"अलीजाह साहबजादी जेबुन्निसा और रईसा किले से गायब हैं!" एक सांस में बोल गई नन्नो।

"क्या बकती है, किले से गायब है? यह नहीं हो सकता। अरे यहीं कहीं होंगी।" शाह ने कहा।

"नही सरकार, हर जगह तलाश कर लिया गया है, कही पता नही लगा उनका !"

"अरे अपने कमरे में सो रही होंगी ।" मुहम्मद अली ने स्वयं को तसल्ली देने के लिये कहा, हालांकि उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई थी ।

"नही आलीमुकाम, वे दोनों मेरे मामने हिना मंज़िल में अपने कमरे से मुँह अँधेरे निकली थी और हस्ब दस्तूर बग़ीचे मे टहलने के लिये उतरी थी ।"

"तो बगीचे मे ही कही होंगी ।"

"नही हुज़ूर, बगीचे का चप्पा-चप्पा देख डाला है। उनका वहाँ नामोनिशान भी नही है । बगीचे की दीवार पर कोई कमंद लगाकर चढ़ा है ।"

"कमंद लगाकर चढ़ा है ! अरे क्या बहकी-बहकी बातें कर रही है नन्नो ! तुझे क्या पता कि कोई कमंद लगाकर चढ़ा है ।"

"हाँ आलीजाह, इलाहीबख़्श ने दीवार पर चढ़कर देखा है कि एक गोह वहाँ जमी हुई है और रस्सी बगीचे के अन्दर की तरफ़ लटक रही है। रस्सी तो हुज़ूर मैंने खुद भी देखी है। फिर बगीचे का पिछवाड़े का दरवाज़ा भी चौपट खुला पड़ा है ।"

मुहम्मद अलीशाह एक बारगी तो घबरा गया, फिर नन्नो से कहा। "चल हम खुद देखते हैं ।" नन्नो अदब से शाह के पीछे-पीछे उतर कर बगीचे मे पहुँची । वहाँ बेगम के साथ क़िले के अधिकांश कर्मचारी उपस्थित थे । मुहम्मद अली ने रस्सी देखी फिर चौपट खुला दरवाज़ा भी···। सभी औरतें रो रही थी और बेगम तो अर्द्ध विक्षिप्त की तरह रो-रोकर कभी रस्सी को खीचती, कभी भागकर दरवाज़े की ओर देखती। सेविकाएँ उसे पकड़े-पकड़े इधर से उधर फिर रही थी। मुहम्मद अली को देखते ही बेगम और भी फूट-फूटकर रोने लगी। "हाय आलीजाह, यह दिन देखने को मैं ज़िन्दा ही क्यों रही ! कितना बुख़ार चढ़ा फिर भी मैं बच गई, ख़ुदा-तअला मुझे क्यों बचा लिया···!" फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। मुहम्मद अली ने तसल्ली दी, "बेगम ज़रा सब्र करो, हिम्मत रखो। हम अभी उन्हें तलाश कराते हैं। रोने से क्या वो मिल सकती हैं ?"

तुरन्त शाह ने अपने घुड़सवारों को पीछा करने का आदेश दिया। करीब 30 घुड़सवार भिन्न-भिन्न दिशाओं मे रवाना हो गये। इफ्तिकार अली को उसने आदेश दिया कि कुछ हरकारे आसपास के ताल्लुकेदार और ज़मींदारों के पास भेज कर उनमे भी लड़कियों को तलाश करने मे मदद देने के लिये कहा जाये।

यह सब इन्तज़ाम करने के बाद भी मुहम्मद अली बहुत चिन्तित था। उसके इतने बड़े और इज़्ज़तदार ख़ानदान को बट्टा लग जायेगा। एक उसी की बेटी थी और दूसरी सगी बहिन। दोनों लड़कियाँ समवयस्क और अत्यन्त रूपवती थी। कभी यह ज़रा सी आहट पाकर शुभ समाचार सुनने के लिये उठ खड़ा होता और

कभी स्वयं घोड़े पर सवार हो लड़कियों को ढूँढ़ने के लिये जाना चाहता। किन्तु अन्त में उसने क़िले में रहकर ही उनकी प्रतीक्षा करना उचित समझा।

17

"हजूर मेरा बेटा लीलू बहुत ग़रीब है, बिलकुल बेकसूर है, उसे छोड़ दीजिये, सिरकार—वो गाय का बच्चा है, उसको कोई बदमास फँसा रहा होगा।"

"अरी अम्मा, वो बदमाश है, गुण्डा है, उसे हम नहीं छोड़ सकते।"

"अरे हजूर तुम माई-बाप होकर झूठ बोलते हो—मेरा बेटा बहुत भोला है···।"

"ए अम्मा ! दरोग़ा जी से कैसे बात कर रही है जा बाहर निकल।" एक सिपाही ने कहा।

"नईं हजूर दरोग़ा जी तुम को भगवान बड़ा लाट बना दे, मेरे बच्चे को छोड़ दो। तुम्हारे पैरों पड़ूँ, छोड़ दो—मेरा लीलू बहुत भोला है सिरकार। उसने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। हजूर लीलू को छोड़ दो, फिर देखो कल परसों तक बड़े लाट बनते हो या नहीं—ग़रीब बुढ़िया की दुआ जरूर फलेगी—जरूर!" बुढ़िया हाथ फैलाकर दुआ करने लगी। दरोग़ा और सिपाही मुस्कराने लगे, बुढ़िया काफ़ी देर तक गिडगिड़ाती रही लेकिन जैसे तैसे करके सिपाहियों ने उसे बाहर कर दिया। वह बाहर बैठी भी घंटों बड़बड़ाती रही और अन्त में विवश हो रोती-बिलखती चली गई। यह लीलू मल्लाह की माँ थी। लीलू की गिरफ़्तारी की ख़बर सुनते ही बुढ़िया यहाँ आई और उसे छोड़ने के लिये गिड़गिडाती रही थी।

दरोग़ा तहव्वर ख़ाँ ने नगला ख़ुर्द से लाई गईं तीनों बेहोश लड़कियों को ज़मींदार की हवेली में भेज दिया और जौसफ़ की ख़बर लेने लगा। अन्य अपराधियों की तरह जौसफ ने भी प्रारम्भ मे कुछ भी बताने से इनकार किया। दरोग़ा ने उसको भी तोबरा बांधकर, कोड़े लगा कर तथा, अन्य कई प्रकार की यातनाएँ दे सच-सच बातें उगलने पर विवश कर दिया। उसने कई महत्वपूर्ण सूचनाएँ दीं। हर अंग्रेज़ी छावनी में कहीं-न-कहीं से 1-2 लड़कियाँ प्रतिदिन लाई जाती हैं। वह स्वयं छः साल से यह काम कर रहा है। 4-5 और भी गिरोह हैं,

उनकी जानकारी में, जो यह काम काफ़ी तत्परता से करते हैं। एक लड़की के लिए उन्हें 200 रुपये से 400 रुपये तक मिलते हैं। तीन बेहोश लड़कियों में से दो नवाबगंज के किले से लाई गई हैं तथा एक फ़रीदपुर के धोबी की लड़की है।

उससे शाहबजादा अनीस के बारे में भी पूछताछ की गई तो उसने सिर्फ़ यही बताया कि वह मुदकीपुर की छावनी में सुरक्षित है और उसे वहाँ अधिक समय रोके रखने का कोई इरादा नहीं है। शायद दो-चार दिन में उसे छोड़ दिया जायेगा।

जौसफ़ के मकान में सोते हुए युवकों तथा बूढ़े की भूमिका अदा करने वाले से भी कई जानकारियाँ प्राप्त हुईं। वह मकान जौसफ ने तीन साल पहिले बनवाया है। वहाँ 12-14 लड़कियाँ एक-दो दिन के लिए छुपाई गई थीं। कई बार जौसफ़ वगैरह भी पकड़े से लटकाए जाकर छुपाये गए थे लेकिन पीछा करने वालों को कभी मालूम नहीं हो सका। इस बार प्रताप सिंह ने ही पहिले-पहिल इस रहस्य से पर्दा हटाया है आदि।

जाँच पड़ताल पूरी होने के बाद दरोगा ने सभी छः अपराधियों को हबीब खाँ की हवेली पर ले जाकर उसके सिपुर्द कर दिया। हबीब खाँ ने अहमद को नौकरी से निकाल कर छोड़ दिया लेकिन शेष पाँच अपराधियों के लिए अपने सिपाहियों को आज्ञा दी, "फिलहाल इन कमीनों को घुप्पी (अँधेरे तहखाने) में डाल दिया जाए और दिन में सिर्फ़ एक बार थोड़ा-सा खाना दिया जाए।" तहव्वर खाँ दरोगा की कारगुज़ारी के लिए हबीब खाँ ने दस अशर्फ़ियाँ इनाम के रूप में दीं और दरोगा शुक्रिया अदा करके चला गया।

बेहोश लड़कियों की नाड़ी-परीक्षा करके हकीम साहब ने एक शर्बत और दवा देकर कहा, "हर घंटे शर्बत के साथ इन्हें यह दवा पिलाते रहो तो उम्मीद है आठ से दस घंटे में इन्हें होश आ जाएगा। बेहोशी की वजह सदमा और साँस घुटना है—शायद इन्हें कोई बेहोशी की दवा सूँघाई गई है।"

लुत्फ़ो, कनक और कई सेविकाएँ लड़कियों की बहुत निष्ठा से सुश्रुषा में लगी थीं। ठीक समय पर दवा पिलाई जाने का पूरा ध्यान रखती थीं। हबीब खाँ बार-बार उनके बारे में पूछताछ करता रहा और प्रताप सिंह भी कई बार आतुरता से उनके विषय में जानकारी लेता रहा।

शाम को लगभग पाँच बजे ज़ेबुन्निसा ने करवट लिया और बड़बड़ाई, "नहीं-नहीं!" फिर आँखें खोलीं और बन्द कीं, फिर एक बार खोलकर उनींदी-सी हालत में बोली, "मैं कहाँ हूँ?" लुत्फ़ो और कनक की बाँछें खिल गईं। वे बड़े प्यार से कहने लगीं, "बहिन, तुम अपनी बहिनों के पास ही हो, बिलकुल फ़िक्र न करो।" वह चारों ओर अर्द्ध-चेतन अवस्था में टुकुर-टुकुर देखती रही। थोड़ी देर

बाद रईसा और शैल बाला भी होश में आ गईं। लुत्फ़ुन्निसा और कनक सुन्दरी ने तीनों को संतरे का रस पिलाया। कुछ देर बाद गरम दूध दिया गया। तीनों लड़कियाँ जब अच्छी तरह होश में आ गईं तो कनक भागी-भागी हबीब खाँ के पास गई और कहा, "चच्चाजान उन लड़कियों को होश आ गया है— हकीम जी की दवा बहुत कारगर रही।" हबीब खाँ खुशखबरी सुनते ही कनक के पीछे-पीछे लड़कियों के पास आया तो प्रताप सिंह भी वहाँ पहुँच गया था। सभी बहुत उल्लास में थे। पाँचों लड़कियों में थोड़ी ही देर में काफ़ी घनिष्टता हो गई। सभी अंग्रेज़ों को कोस रही थीं और योजना बना रही थी कि किस प्रकार इनकी तानाशाही का अन्त हो।

जब हबीब खाँ ने कहा कि इन्हें जल्दी से जल्दी अपने-अपने घरों को पहुँचा देना चाहिए तो कनक और लुत्फ़ो मचल गईं। "नहीं चच्चा जान, इन्हें कम से कम दो-चार रोज़ तो हमारे साथ रहने दीजिए।" "हाँ अब्बा हुज़ूर ऐसी भी क्या जल्दी है? दो-चार दिन बाद भेज दीजिए तो···।" "अच्छा-अच्छा, तुम दोनों तो हमेशा एक ज़ुबान बोलती हो। मैं इनके वालदैन को इत्तिला कराए देता हूँ ताकि वे यह जानकर बेफ़िक्र हो जायें कि लड़कियाँ यहाँ हैं।"

हबीब खाँ ने तुरन्त एक खत मुहम्मद अली शाह को लिखवाया जिसमें दोनों लड़कियों के बारे में पूरा विवरण दे दिया और यह भी लिखा कि हमारी बेटियाँ उनसे एक ही दिन में इतनी हिलमिल गई हैं कि उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं हैं। इसके अलावा आपकी बच्चियों की सेहत के लिए भी 1-2 दिन आराम करना अच्छा रहेगा।

घुड़सवार को यह भी हिदायत दी गई कि वह जल्दी से जल्दी नवाबगंज पहुँच कर मुहम्मद अली शाह को यह खत सौंपे। इसके बाद उसे तीसरी लड़की के बारे में भी फ़िक्र हुई। लड़की धोबी की है यह तो दरोग़ा ने पता करा लिया था लेकिन फ़रीदपुर में कोई 1-2 धोबी तो हैं नहीं, वहाँ तो करीब 50-60 घर हैं उनके। अतः लड़की से ही उसके पिता के बारे में पूछना ठीक रहेगा। पूछने पर मालूम हुआ कि वह धोबी की नहीं बल्कि फ़रीदपुर के ही ठाकुर अनिरुद्ध सिंह की छोटी बहिन है, नाम है शैलबाला। उसे फ़रार करने वालों को वास्तव में यह गलतफ़हमी रही थी कि वह धोबी की लड़की है और ठाकुर के घर कपड़े धोने का काम करती है। हबीब खाँ को जब यह मालूम हुआ तो वह बहुत खुश हुआ और ठाकुर अनिरुद्ध सिंह को भी तुरन्त एक खत लिखकर भिजवा दिया।

हबीब खाँ का पत्र मिलते ही नवाबगंज किले में जो मातम छाया था, अब उत्सव में बदल गया। जहाँ-तहाँ नए फानूस और कदील सजाये जाने लगे, शहनाई बजने लगी। सुबह होते ही मुहम्मद अली शाह खुद रुदोली के लिए रवाना हो गया और कुछ ही घंटों में वहाँ जा पहुँचा। हबीब खाँ ने उसका खूब स्वागत-सत्कार

किया। जब उसे अपनी लड़की जैबुन्निसा और बहिन रईसा से मिलाया तो उसे बहुत तसल्ली हुई तथा वहाँ उनके रुदौली के परिवारों की बच्चियों के साथ घुल-मिल जाने से उसे और भी अधिक खुशी हुई। उसने प्रताप सिंह का भी बहुत शुक्रिया अदा किया और कहा, "वाकई, बरखुरदार (बेटे) अगर तुम नहीं होते तो आज हम बर्बाद हो गये होते। न जाने ये बदजात फिरंगी इन लड़कियों की क्या हालत बनाते—तुम्हारी सूझबूझ और मेहनत कामयाब हुई। अल्लाह का शुक्र है कि इज्जत बच गई, उसने तुम जैसा फरिश्ता इस काम में लगा दिया।" "नहीं, चच्चा जान! आप फिजूल मुझे इतनी इज्जत बख्श रहे हैं मैंने तो महज़ अपना फर्ज अदा किया है। यह तो किस्मत की बात है कि मुझे कामयाबी हासिल हुई।" बड़े अदब से प्रताप सिंह ने कहा।

हबीब खाँ ने मुहम्मद अली को शुरू से आखिर तक का पूरा विवरण सुनाया, लेकिन अनीस अहमद के अभी तक नहीं मिलने से मुहम्मद अली को भी बहुत फ़िक्र हुई और दुख भी। वह मन ही मन मुदकीपुर छावनी से किसी तरह अनीस को निकालकर लाने की योजना बनाने लगा।

दूसरे दिन प्रातः जब लड़कियों को साथ ले जाने की बात आई तो कनक और लुत्फो ने कहला दिया, "चच्चाजान वैसे तो हम उन्हें कल-परसों तक भेज देते, मगर अब खुद तशरीफ ले आए हैं तो कम से कम हफ्ते-दस दिन इन्हें अपने यहाँ रखेंगे। बराय मेहरबानी इन्हें आठ-दस दिन यहीं रहने की इजाजत…।" "अरे भई वाह! हमें क्या ऐतराज़ हो सकता है और हम इजाज़त देने वाले कौन? इन्हें नई ज़िंदगी तो रुदौली वालों ने ही बख्शी है—मर्ज़ी आए तब तक इन्हें यहाँ रखें और जब मिज़ाज चाहे नवाबगंज भेज दें।" मुहम्मद अली ने बहुत प्यार से कहा। सभी लोग बहुत खुश हुए। हबीब खाँ ने मुहम्मद अली शाह से रुकने के लिए बहुत आग्रह किया लेकिन कुछ जरूरी काम-काज की वजह से वह विवश था अतः नवाबगंज के लिए रवाना होने लगा। हबीब खाँ सदर दरवाज़े तक उसे बिदाई देने के लिए आया। उसी समय देखता क्या है कि सामने से बढ़े हुए बाल और दाढ़ी में अनीस अहमद धीरे-धीरे चला आ रहा है। दौड़कर हबीब खाँ ने उसे गोदी मे उठा लिया। दोनों की आँखों में आँसू छलक आए। मोहम्मद अली को जब मालूम हुआ उसने हबीब खाँ को मुबारकबाद दिया और साहबज़ादे ने जब उसे सलाम अर्ज़ किया तो उसने आशीर्वादों के ढेर लगा दिए। रुकने की इच्छा होते हुए भी मुहम्मद अली विवश हो नवाबगंज के लिए रवाना हो गया।

दोनों हवेलियों मे भारी उत्सव मनाया जाने लगा जैसे दिवाली साल में दूसरी बार लौट आई हो। गरीब-अनाथों, साधुओं और फकीरों को खाना और कपड़े कई दिनों तक बाँटे जाते रहे। मज़ारों पर चादरें और मंदिरों में प्रसाद चढ़ाया गया। हवेलियों के नौकरों को इनाम और मिठाइयाँ बाँटी गईं। प्रताप और अनीस बातों

में इतने व्यस्त थे कि दूसरों को कुछ पूछने का अवसर ही मिलना कठिन हो गया।

अनीस को गोरे सिपाही आँखों पर पट्टी बाँध कर लाए थे और गाँव के पास छोड़ गए थे। उसने थोड़े से समय में अंग्रेज छावनी में बहुत कुछ देख लिया था। प्रताप और अनीस ने अँग्रेजों के विरुद्ध जंग में शामिल होने का पक्का इरादा कर लिया था। पाँचों लड़कियाँ भी उनका साथ देना चाहती थीं। अनीस और प्रताप ने कप्तान फ्लेचर को अपने हाथों मारने का दृढ़ संकल्प कर लिया था।

18

हवाये तुन्द में मेरा चिराग़ जलता है।
वो अज़्म रखता हूँ जो हादसों में पलता है॥

दरियाबाद के क़िले व हवेली में आज भारी चहल-पहल थी। क़िले के मैदान फ़्रान्सीसी सार्जेंट देमैले सिपाह को क़वायद सिखा रहा था। वहीं एक बड़े कक्ष में मेजर दयूपों जिसे राव बलवंत सिंह ने कर्नल का दर्जा दे दिया था, सेनानायकों को सैनिक प्रशिक्षण दे रहा था। इसमें सबसे आगे की पंक्ति में राव के चार पुत्र और दो पुत्रियाँ बड़ी तन्मयता से रण-नीति के विषय में अध्ययन-रत थे। कर्नल दयूपों भी बड़ी निष्ठा से उन्हें भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में शत्रु से मुकाबिला कर उसे छकाने की युक्तियाँ सिखा रहा था। ये सेनानायक परेड का पूरा प्रशिक्षण ले चुके थे और अब भी या तो रोजाना स्वयं परेड करते थे या सिपाहियों को सिखाते थे।

उधर हवेली में दास-दासियाँ फुर्ती से इधर से उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। सभा-कक्ष को सजा-सँवार कर उसका रूप निखार दिया गया था। राव बलवन्त सिंह ने भी सारे प्रबन्ध का स्वयं निरीक्षण कर लिया था। आज 10-12 उमराव उसके अतिथि थे और सभा-कक्ष में राव से मन्त्रणा कर रहे थे। मौलवी ने कहा, "राव साहब, वाक़ई आपका हौसला क़ाबिले तारीफ़ है कि इतने जोखिमों के बावजूद आपने पूरे जोश से तैयारियाँ कर ली हैं। आम अवाम में भी आपने जागरूकता पैदा करने में कोई कसर नहीं रखी है।"

"मौलवी साहब यह बात आपकी राहबरी और दुआओं का नतीजा है वर्ना

यह नाचीज किस क़ाबिल है।"

"नहीं राव साहब, यह सब आपकी हिम्मत, जोश और वतन-परस्ती की वजह से है। अगर आप जैसे हिन्द में 100-50 उमराव भी पैदा हो जायें तो इन फिरंगियों की तो मजाल ही क्या कोई दुनिया की ताक़त हमारे ऊपर हुकूमत नहीं कर सकती।"

राजा जैलाल सिंह, शराफ़ुद्दौला, सम्मू खाँ, अली नक़ी खाँ, महाराज बाल किशन आदि सभी उपस्थित सामन्तों ने भी मौलवी की बात का समर्थन किया और राव की भूरि-भूरि प्रशंसा की तभी किसी ने कक्ष का पार्श्व-द्वार धीरे-से खटखटाया।

"अन्दर चले आओ!" राव ने आज्ञा दी।

एक सेवक ने आकर कहा, "हु ूर एक बूढ़े-बुजुर्ग राजा आपसे मुलाक़ात की आज्ञा चाहते हैं। वे अपने दो सरदारों के साथ सिंह-द्वार पर रोक दिए गए हैं। वे कहते हैं कि हम चुल्हावली के राजा हैं, और राव साहब से जरूरी काम से मिलना चाहते हैं।

"चुल्हावली के राजा! बिना किसी इत्तिला के! तुमने उन्हें खुद देखा है? कहीं कोई फिरंगी तो नहीं आ धमका वेश बदल कर?"

"नहीं अन्नदाता, मैंने खुद देखा है, उनका रंग जरूर बहुत गोरा है, मगर फिरंगी नहीं हैं। वे खुद बहुत कम बोलते हैं, लेकिन सरदारों ने ही बताया है कि राव साहब से बहुत जरूरी काम है।"

राव पेशोपेश में थे, तभी मौलवी ने कहा, "कोई मुज़ाइका नहीं, चुल्हावली का राजा हमारा बहुत खैरख्वाह है। अगर सचमुच राजा पृथ्वी सिंह है तो ठीक, लेकिन अगर कोई धोखा है तो तीनों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।" फिर सेवक से कहा, "उन्हें बाइज्ज़त यहाँ ले आओ, सिर्फ़ तीन लोगों को।"

"जी हुज़ूर, उनके बाकी सिपाहियों को तो गणेश-द्वार पर ही रोक दिया गया है।"

सभी उमराव राजा पृथ्वी सिंह का बेसब्री से इन्तज़ार करने लगे और राव उसके स्वागत के लिए कक्ष से बाहर दालान को पार कर सहन के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। पद-चाप उत्तरोत्तर पास आती जा रही थी जैसे ही राजा पृथ्वी सिंह करीब आया, राव ने उसका झुक कर अभिवादन किया। राजा ने भी झुककर ही उत्तर दिया। बलवन्त सिंह ने बड़े स्नेह से कहा, "अहो भाग्य राजा साहब, लेकिन बिना सूचना के ही···।" बीच में ही एक सामन्त ने कहा, "हुज़ूर राजा साहब ने सोचा आप उनकी आवभगत में फ़िज़ूल परेशान होंगे, इसलिए बे-तकल्लुफ़ी से चले आए।"

"वाह खूब!" राव ने कहा, "आपकी आमद से यह ग़रीबखाना पाक हो

गया। आइए आपकी मुलाक़ात कुछ दूसरे उमरावों से भी करा दूँ। यह एक इत्तिफ़ाक़ ही है कि आप बहुत ही अच्छे मौक़े पर तशरीफ़ लाए हैं।" और वह राजा को सभाकक्ष में ले गया। पृथ्वी सिंह ने झुक कर सबका अभिवादन किया और सभी सामन्तों ने खड़े होकर उत्तर दिया। राजा पृथ्वी सिंह के आने से सब बहुत प्रसन्न थे। मौलवी ने संक्षिप्त में यहाँ सबके एकत्रित होने का कारण बताया और कहा, "आपसे भी मैं दो माह पहिले मिला था और कुछ तैयारियाँ करने की गुज़ारिश की थी।"

"जी हाँ", राजा ने कहा, "वही तो बताने हाज़िर हुआ हूँ।"

"उफ़!" राजा बलवन्त सिंह ने कहा, "जनाब का गला बहुत ख़राब हो रहा है, इसीलिए शायद बहुत कम बोल रहे थे।"

"जी हाँ, जी हाँ!" कह कर राजा पृथ्वी सिंह ने अपनी डाढ़ी खींच कर एक तरफ़ रखी ही थी कि सभी सामन्तों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं और राजा व उसके साथियों को चारों तरफ़ से घेर कर खड़े हो गए। "कौन हो तुम?" मौलवी ने कड़क कर पूछा। राजा पृथ्वी सिंह ने अपनी मूँछें भी खींच कर अलग रख दीं तो सभी उमराव दंग रह गए। उन्होंने अपनी तलवारें तुरन्त म्यान में रख कर आगन्तुक के क़दमों में रख दीं तथा आँखें झुकाकर बड़े अदब से सब एक साथ बोले, "आली मुकाम, ग़ुस्ताख़ी मुआफ़ फरमायें। महज़ ग़लतफ़हमी की वजह से यह क़सूर बन पड़ा है, हम लोग बहुत शर्मिन्दा हैं।"

बेगम मन्द-मन्द मुस्कराते हुए बोलीं, "वाह वाह! हमें यक़ीन हो गया कि हमारे उमराव अपने फ़र्ज़ को किस मुस्तैदी से अंजाम देते हैं। इसमें शर्मिन्दा होने की तो कोई बात ही नहीं, दरअसल ग़लतफ़हमी तो हमने ही पैदा की थी।"

राजा जैलाल सिंह ने कहा, "मलका-ए-आलिया, आज ये बूढ़ी तजुर्बेकार आँखें भी धोखा खा गईं कि अपने मालिक को भी नहीं पहिचान सकीं, हुज़ूर कमाल···।"

"अजी राजा जी, आपने ही तो बताया था न, वही कमरुद्दीन, यह उसी का कमाल है।" बेगम ने कहा।

"वाक़ई ग़ज़ब हो गया मलका, मैं तो समझा था कि आज कोई फिरंगी आ धमका है!" यह मौलवी था।

इसी तरह कुछ देर मज़ाक चलता रहा, उसके बाद सब गंभीरता से विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करने लगे।

बेगम ने कहा, "जैसा कि आप सबको मालूम है हमारे पहिले ख़त के जवाब में चीफ़ कमिश्नर जैक्सन को फ़टकार आई और छत्तर मंजिल और कदम रसूल ख़ाली करा लिया गया था, लेकिन दूसरे ख़त का जवाब अब आया है और क़तई

इन्कारिया है। वे बादशाह सलामत को लखनऊ भेजने को तयार नहीं हैं और न ही वे अवध की सल्तनत वापिस देना चाहते हैं। वैसे उम्मीद तो पहिले से ही नहीं थी। अब तो एक ही रास्ता बचा है। मलका विक्टोरिया को एक खरीता ईंगलिस्तान भेजकर इल्तजा की जाए।"

शराफ़ुद्दौला ने कहा, "जी मलका-ए-आलिया, उम्मीद तो बहुत कम है लेकिन कोशिश जरूर करनी चाहिए। अगर हुक्म हो तो खत का मजमून बना लिया जाए।"

बेगम ने अपने साथ आए एक सामन्त की तरफ़ देखा तो बरकत अहमद ने एक खत का मजमून पढ़कर सुनाया, जिसकी सभी ने सम्पुष्टि की और तय हुआ कि बरकत अहमद ही बुजुर्ग बेगम शाहबानो के साथ यह खत लन्दन ले जाकर मलका के हुजूर में पेश करें और उनसे इल्तिजा करें कि अवध के साथ बेइन्साफ़ी को जल्द दूर किया जाए।

"यह खत तो महज खाना-पूरी के लिए भेजा जा रहा है। मुझे कामयाबी की कतई उम्मीद नहीं। मगर अब वक़्त आन पहुँचा है कि हम पूरे मुल्क में आज़ादी के लिए जिहाद छेड़ें क्योंकि जब तक एक भी रियासत या इलाक़े में फिरंगियों का बोलबाला रहेगा, हिन्द की आज़ादी को हमेशा खतरा बना रहेगा। अब ये अवध के लिए नहीं, बल्कि पूरे हिन्द के लिए जंग होगी।"

"जी मलका-ए-आलिया", शराफ़ुद्दौला ने कहा, "अब तो वाक़ई पूरे हिन्द के लिए जंग छेड़नी है।"

"आली मुकाम, मेरे ख्याल से एक एक खत नाना साहब और रानी झाँसी को भी इरसाल फरमाया जाए तो बेहतर होगा।" यह सम्मू खाँ था।

"हाँ सम्मू खाँ, बिलकुल दुरुस्त !" बेगम ने कहा, "इन्हीं को नहीं बल्कि पूरे हिन्दोस्तान के वालिया-मुल्क रईसों (स्वतन्त्र शासकों) को भी खत भेजे जाएँ और शाहंशाह हिन्दुस्तान को भी। महाराजा बाल किशन तुम एक फेहरिस्त तैयार करो, जिसमें उन रईसों के नाम हों जो आज़ादी के दीवाने हैं और इंग्रेजों से नफरत करते हैं।"

"जी अच्छा मलका-ए-मुअज्ज़मा, मैं आज ही सबके मशविरे से वह फ़ेहरिस्त बना लेता हूँ।"

"शराफुद्दौला, तुम खत का मजमून तैयार करो जो इन रईसों को भेजा जाएगा। आज यहीं रुक कर राव साहब की मेज़बानी का भी तो फ़ायदा उठाया जाए।" बेगम ने कहा, "कई अहम मामलों पर भी गौर करना है।"

"जहेक़िस्मत, मलका-ए-आलिया," राव ने कहा, "इस गरीबखाने पर तशरीफ़ लाकर हुजूर ने जो इस नाचीज को इज्जत बख्शी है वह हमेशा याद रहेगी। आली मुकाम, अगर मर्जी हो तो कुछ देर फ़ौजी कारगुज़ारियों का भी मुलाहिज़ा

फरमा लें।"

"जरूर जरूर राव," बेगम ने कहा, "मौलवी साहब, आप जरा अपनी रहनुमाई में ये फ़ेहरिस्त तैयार कराएँ और दूसरे अमीरों से भी मदद लें, हम तब तक किले में हवा ख़ोरी कर लें।"

"जी अच्छा, बेगम आलिया" मौलवी ने कहा और बेगम राव बलवन्त सिंह के साथ क़िले की तरफ़ रवाना हो गई। वहाँ पहुँचकर वह आश्चर्य-चकित हो गई। परेड करते चुस्त, हृष्ट-पुष्ट नौजवान और नव युवतियाँ ! "वाह वाह राव साहब, आपने पूरे जोशो खरोश से काम शुरू कर दिया है।" उसने कहा। जब वह प्रशिक्षण-कक्ष में गई तो कर्नल ने उसे और राजा को सलामी दी। सभी प्रशिक्षार्थी उठ खड़े हुए। राजा ने बेगम का परिचय दिया तो सबको बहुत प्रसन्नता हुई। बेगम ने देखा कि कक्षा में 25 पुरुष और 8 स्त्रियाँ सेनानायकों का प्रशिक्षण ले रही हैं। उसने सबकी खूब प्रशंसा की और विशेष रूप से उन किशोरियों और तरुणियों को सराहा जो देश-प्रेम की उमंग में सब-कुछ न्यौछावर करने को तैयार थी। बेगम ने दोनों जगह संक्षिप्त-सा जोशीला भाषण दिया, जिसके कारण सभी को भारी प्रोत्साहन मिला। उनकी कारगुजारियों के बारे में भी उसने काफी दिलचस्पी से जानकारी ली। उसके बाद वह सभा-कक्ष में लौट आई।

फ़ेहरिस्त तैयार थी, उस पर सबने मिलकर गौर किया और अन्तिम रूप दे डाला। भेजे जाने वाले पत्र के प्रारूप का भी काफ़ी विचार-विमर्श के बाद सबने अनुमोदन कर दिया। बरकत अहमद को सभी पत्र तैयार कराने का ज़िम्मा सौंपा गया और फिर दूसरे मुद्दों पर विचार-विमर्श शुरू हुआ।

"हुज़ूर यह तो अच्छा हुआ कि पुराना चीफ कमिश्नर बदल कर नया आ गया है। इंग्रेज़ी हुकूमत को अवध में तक़रीबन एक साल का अर्सा गुज़रा है लेकिन इस अर्से में जैक्सन ने तो सारा मटियामेट कर दिया। पेन्शनें रोक दी गईं, वज़ीफ़े बन्द कर दिए, ताल्लुकेदारों की क़दम-कदम पर तौहीन। अब हालाँकि सर हैनरी लारेन्स कोशिश कर रहा है कि सबको उनकी हैसियत के मुआफ़िक इज्जत मिले, रोकी हुई पेन्शनों व वजीफो का भी भुगतान किया जा रहा है मगर इतनी देर हो चुकी है कि आम अवाम मे बहुत बेचैनी फैल गई है। सभी बगावत पर उतारू हैं। इंग्रेज़ों के लिए आम लोगों के दिल में भी नफरत पैदा हो गई है।" अली नकी खाँ ने बताया।

"यह तो बहुत अच्छा है ! हमें इस माहौल से फायदा उठाकर वतन की आज़ादी के लिए उन लोगो में जज्बा पैदा करना चाहिए।" बेगम ने कहा।

"जी मलका, मैं समझता हूँ इसके लिए हमारा पहला क़दम इश्तिहार बँटवाना मौज़ू रहेगा।" मौलवी ने कहा।

"हाँ, इश्तिहार बँटवाना मौज़ू रहेगा, लेकिन ये महज पढ़े-लिखे लोगों तक ही

पहुँचेंगे। हमें कुछ नौटंकी, कठपुतली वग़ैरह के खेल या दूसरे क़िस्म के तमाशे वाले भी तैयार करने चाहिए जो गाँव-गाँव में पहुँच कर हमारा पैग़ाम ले जाएँ। यह पैग़ाम सीधे-सपाट ढंग से नहीं, बल्कि बहुत चतुराई से उन खेलों में आना चाहिए, मसलन फिरंगियों के जुल्म व सितम दिखाते हुए लोगों का उन पर गुस्सा, या कहीं इंग्रेज़ों की शिकस्त, किसी खेल में वतन से इंग्रेज़ों का निकाला जाना या डर के मारे भाग जाना। हिन्द की आज़ादी के बारे में कुछ नये गीत जो आल्हा की तरह जोशीले हों, बना कर अच्छे गवैयों को गाने के लिए दिए जाएँ। इन सब तरीकों से हम आम जनता में जोश पैदा कर सकते हैं।"

"जी आली मकाम," यह सम्मू खाँ था, "मौलवी साहब से मशविरा लेकर मैंने कुछ ऐसे खेल तैयार कराए हैं। हामिद अली और सोहन लाल दो बड़े अच्छे फ़नकार हैं। वे खुद ही लिखते हैं और नौटंकी या कठपुतली के तमाशों में बखूबी बदल लेते हैं।"

"वाह यह तो अहम खुश-खबरी है। ऐसे ही दस-बीस फ़नकार और भी होने चाहिए ताकि पूरे जोशो-खरोश से देहातों और दूर-दराज़ के क़स्बों में ये तमाशे मुतवातिर दिखाए जाएँ। फिरंगियों के जासूस तो सिर्फ़ शहरों तक ही महदूद रहते हैं, इसलिए देहातों में ज्यादह खतरा तो नहीं है, फिर भी एहतियात तो बरतना ही होगा। इन तमाशों के ज़रिए लोगों के दिल में यह बिठाना है कि अब इंग्रेज़ी हुकूमत जल्द खत्म होने वाली है, वतन का आज़ाद होना निहायत ज़रूरी है और इस आज़ादी के लिए हर हिन्दुस्तानी को कुछ न कुछ क़ुर्बानी करनी होगी।" बेगम ने कहा।

"जी, मलका-ए-आलिया," महाराज बालकिशन ने कहा, "ये तमाशे सभी वफ़ादार और अमीर-उमरा के इलाकों में तैयार कराए जा कर दिखाए जाने चाहिए। मेरे पास कई एक ताल्लुकेदार व ज़मींदारों ने पैसा व ज़ेवरात भी भिजवाए हैं। कुल दस लाख रुपयों की रकम बनती है। इसमें से इन तमाशों पर सर्फ़ के लिए कुछ रकम की मंज़ूरी फरमा दें तो बेहतर होगा।"

"वाह वाह !" बेगम खुशी से उछल पड़ी, "तो हमारे ताल्लुकेदार वग़ैरह काफ़ी जोश से मुल्क की आज़ादी के लिए अपना ज़र-व-ज़ेवर कुर्बान कर रहे हैं! हमारा वतन कभी ग़ुलाम नहीं रह सकता! अच्छा फिलहाल इस रकम में से एक लाख रुपया इस काम के लिए मंज़ूर किया जाता है।"

"हुज़ूर, यह तो बहुत ज्यादा हो जाएगा।" शराफ़ुद्दौला ने कहा, "मेरे खयाल में कुल 25-30 हज़ार रुपये काफ़ी होंगे।"

मौलवी और अन्य अमीरों ने भी शराफ़ुद्दौला का समर्थन किया अतः हर सामन्त के लिए दो-दो हज़ार रुपये इस मद पर सर्फ़ के लिए मंज़ूर कर दिए गए लेकिन मौलवी ने कहा हुज़ूर मेरे इलाके में इस रकम की भी ज़रूरत नहीं, क्योंकि

वहाँ के जागीरदार-जमीदार वगैरह खुद-ब-खुद यह खर्चा कर लेंगे। वे पूरे जोश से इस काम को अंजाम देंगे।"

बेगम खुशी से फूली नहीं समाई, उसने सभी की बहुत तारीफ़ की और कई तरह के सुझाव दिये। वह चाहती थी कि कुछ ज्योतिषियों व फ़क़ीरों को भी कस्बे व गाँवों में भेज कर प्रचार किया जाये कि इंग्रेज़ी हुकूमत का बहुत-जल्द अन्त होने वाला है। उसने यह भी तय कराया कि दूसरे प्रान्तों के बहादुर अमीरों को भी पत्र भेजे जायें ताकि वे भी जंगे-आज़ादी में शामिल हो सकें। जगदीशपुर (बिहार) के जमीदार बाबू कुँवर सिंह, बानपुर का बुंदेल राजा मर्दान सिंह, गोंड राजा शकर शाह और मथुरा के जमीदार राजा देवी सिंह के नामों का उसने विशेष रूप से उल्लेख किया। मथुरा, आगरा, मैनपुरी, एटा, जबलपुर, नागपुर वगैरह के अनेक रईसों को पत्र भेजे जाने के लिये भी उसने सुझाव दिया। यह भी तय किया गया कि शहंशाह बहादुर शाह के पास भी एक खत शाहज़ादा मिर्जा हैदर के साथ भेजा जाये। मिर्जा हैदर के पिता सुलेमान शिकोह ने दिल्ली से भाग कर लखनऊ में शरण ली थी। सुलेमान शिकोह शहंशाह शाह आलम द्वितीय का पौत्र था। अतः मिर्जा हैदर को दिल्ली भेजने से काफ़ी सफलता की आशा थी तथा वह शहंशाह पर यह प्रभाव भी डाल सकता था कि ईरान के शाह को भी खत भेजा जाये ताकि वह भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में समय आने पर मदद दे सकें।

राजा जैलाल सिंह ने यह भी बताया कि अंग्रेज़ी सेना में एक नये ढंग का कारतूस आया है जिसे मुँह से काट कर बन्दूक में भरा जाता है तथा सैनिकों में यह चर्चा है कि कारतूस में गाय व सूअर की चर्बी लगी है। अतः यह कारतूस उन्हें धर्मभ्रष्ट करने के लिये चलाया गया है।

बेगम ने कहा, "यह अफवाह तो हमारे जासूस भी लाये हैं, मगर राजा जैलाल सिंह, इस मामले की जाँच करके असलियत का पता लगाना चाहिये।"

राजा ने उत्तर दिया, "हुजूर, मैंने पूरी तौर से जांच-पड़ताल कर ली है। यह तो इंग्रेज अफसर भी साबित नहीं कर सके हैं कि इसमें गाय और सूअर की चर्बी नहीं है। सिपाहियों में इसके खिलाफ़ काफी हलचल है। इसी से फ़ायदा उठाने की गरज से मैंने भी ज्यादातर छावनियों में अपने जासूस छोड़ रखे हैं जो सिपाहियों को गोरों के खिलाफ बगावत करने को उकसा रहे हैं। हुजूर, कई पल्टनें हमारे साथ मिलने के लिये मौके के इन्तज़ार में हैं। और दूसरी भी कई तैयार होती जा रही हैं।"

"वाह, यह तो अहम खुश-खबरी है! इस तरफ़ पूरी तवज्जह देनी चाहिये क्योंकि अगर ऐसा हो सके तो हमें तजर्बेकार फौजी बड़ी आसानी से मिल जायेंगे।" बेगम ने कहा, "अगर्चे यह हमारी तरफ़ से इंग्रेजों के साथ दगा होगी मगर उन्होंने

हिन्द में हर जगह दग़ाबाजी के जरिये ही सल्तनतें हथिया ली हैं, इसलिये इनके साथ वैसा ही सलूक करना जायज होगा।"

"राजा जैलाल सिंह इस मामले में कामयाब भी हुए हैं, आलीकद्र," महाराज बाल किशन ने कहा, "वैसे तो उनके रवैये से खुद-ब-खुद भी हिन्दुस्तानी सिपाही फिरंगियो के खिलाफ होता जा रहा है, हुजूर! पांच-सात दिन पहले की बात है कि डॉक्टर वेल्स ने फौजी अस्पताल में एक बोतल से मुंह लगा कर ही दवा पी ली। सिपाहियों ने वहां से दवा लेना ही बन्द कर दिया। उन्होंने बोतल झूठी करने की अपने अफ़सरों से शिकायत की तो वह बोतल सबके सामने ही मय दवा के तोड़ डाली गई, मगर फिर भी उन लोगो को तसल्ली नहीं हुई। उन्होंने डॉक्टर के घर को आग लगा दी। डाक्टर वेल्स बड़ी कठिनाई से भाग कर अपनी जान बचा सका था।"

"हुजूर ये फिरंगी हाकिम भी तो ऐसे काम करते हैं जिससे लोगों को खुद ब खुद शुबहा हो जाये।" यह सम्मू खाँ था, "मुरीआँव का एक कप्तान रोजाना सिपाहियो को ईसाई मजहब की अच्छाइयो के बारे में समझाता है और उन पर ईसाई बनने के लिये दबाव डालता है। दूसरी छावनियों में भी कई एक अफसरों ने इसी तरह का रवैया इख्तियार कर रखा है। ईसाई बनाने के लिये उनके पादरी भी हर वक़्त तैयार रहते हैं।"

"हूँ, तो इससे साफ है कि ये लोग अपनी क़ब्र आप खोद रहे हैं!" बेगम ने कहा। "अब जरूर इनके गिने-चुने दिन ही रह गये हैं। शराफुद्दौला कहाँ गये?"

"अभी आ रहे हैं मलका," मौलवी ने कहा।

"अच्छा, आपसे भी तो यह कहना था कि शाहज़ादा सुलेमान शिकोह के बेटे मिर्ज़ा हैदर को शहंशाह के पास पैगाम लेकर दिल्ली भेजना है। उधर शाहे ईरान को भी एक खरीता भेज दीजिये ताकि वक़्त जरूरत वे भी हमारी मदद कर सकें।" बेगम ने कहा और शराफ़ुद्दौला की तरफ देख कर आदेश दिया, "तुम ये इन्तिज़ाम सम्भालो कि ये खत कहाँ-कहाँ किस-किस के हाथ भिजवाये जायें। इसमें बहुत होशियारी बरतने की जरूरत है।"

"जी अच्छा, मलका-ए-आलिया," शराफ़ुद्दौला ने कहा, "हुजूर इतमीनान रखें, हुक्म की तामील होगी।"

खाने का समय हो गया था। कई तरह के व्यंजन तैयार कराये थे राव ने। सभी ने खाने की खूब तारीफ की। खाने के बाद फिर बैठक चली। बेगम ने मौलवी से कहा, "यहाँ तो काम बहुत अच्छा चल रहा है लेकिन हम चाहते हैं कि फौजी कवायद और फौजी तालीम दूसरे इलाकों में भी चालू की जाये।"

"जी आलीक़द्र, इसका मुझे पहिले से ही ख्याल है। दरियाबाद के अलावा

रुदौली, नवाब गंज, गोपालपुर, महमूदाबाद वगैरह में यह काम चल रहा है। यह बहुत ही काबिले तारीफ़ बात है कि रईस या उनके बेटे-बेटी भी इस तरह की तालीम मे बहुत दिलचस्पी से हिस्सा ले रहे हैं।"

"वाह, वाह ! बहुत खूब !! सारे मुल्क को आज एकजुट हो जाने की जरूरत है।" बेगम ने कहा।

एक सामन्त ने यह भी बताया कि कुछ दिनों पहिले चीफ कमिश्नर हैनरी लारेन्स की कार पर कुछ लोगों ने कीचड़ फेंका। हैनरी के सारे कपड़े कीचड़ में सन गये, लेकिन फेंकने वाले का पता नही चल सका ! "हाँ, यह सुना तो हमने भी था। इसका सीधा मतलब यही है कि लोग आमतौर पर इन फिरंगियों के खिलाफ़ हैं और किसी-न-किसी तरह अपने गुस्से का इजहार कर रहे हैं। हमें ऐसा माहौल पैदा करना है कि इस तरह की अलग-अलग कार्रवाइयो के बजाय आम-आवाम हिन्दुस्तानी झंडे के नीचे आकर इनका मुकाबिला करे।" यह बेगम थी।

सभी सामन्तों ने स्वीकृति में सिर हिलाया और वायदा किया कि वे इसी तरह का माहौल पैदा करेंगे और कामयाबी की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे।

इसके पश्चात् बेगम जनाने महल में रानी और बच्चों के साथ व्यस्त रहीं। उसने विशेष रूप से राव की पुत्रियों, अनुराधा और संयुक्ता को अपने वार्तालाप मे देश की स्वतन्त्रता और देश के लिए मर मिटने के लिए प्रोत्साहन दिया। फ़िरंगियों की अनिष्टकारी गतिविधियों और हिन्द को हड़पने की कुत्सित चालों के विषय में भी चर्चा की। चारों कुमारों ने भी इस बातचीत मे काफी दिलचस्पी ली। सभी भाई-बहिनों ने अपना दृढ संकल्प भी प्रकट किया कि वे तन-मन और धन सहित अपना सर्वस्व मातृभूमि की बलिवेदी पर न्यौछावर कर देंगे।

दूसरे दिन बेगम पुनः परेड तथा प्रशिक्षण-कक्षा में उपस्थित हुई। उसने स्वयं भाला, बन्दूक एवं तलवार चलाकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। पिस्तौल का इतना सही निशाना लगा कर दिखाया कि स्वयं कर्नल द्यूपों भी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा। "ऐसे सही निशानेबाज तो हमारी योरोपीयन फ़ौजों में भी गिने-चुने ही मिलेंगे।" कर्नल ने कहा था। प्रशिक्षार्थियों ने जब बेगम को स्वयं इतनी दक्षता से हथियार चलाते देखा तो उनका हौसला और भी बढ़ा। वे अधिक तत्परता और निष्ठा से अपने काम में लग गये।

बेगम पुनः सामन्तों के साथ बैठक में सम्मिलित हुई। शराफ़ुद्दौला ने सभी पत्रों पर बेगम के हस्ताक्षर ले उन्हें सील बन्द कराया। उन्हें भेजे जाने के लिये जो व्यवस्था की थी, उसका विवरण दिया। शाहजादा मिर्जा हैदर को, जो अभी लखनऊ था, एक पत्र द्वारा दरियाबाद बुलाया गया ताकि यहीं से पत्र लेकर उसे दिल्ली भेजा जा सके। शहंशाह को भेजे जाने वाले पत्र को भी अन्तिम रूप दिया

और उस पर भी बेगम के हस्ताक्षर लिये।

यह सब प्रबन्ध हो जाने के बाद बेगम लखनऊ के लिये रवाना हो गई। अधिकांश सामन्त भी लखनऊ लौट आये किन्तु मौलवी अहमदुल्ला शाह फ़ैज़ाबाद के लिये रवाना हो गया। केवल बरकत अहमद और शराफ़ुद्दौला दरियाबाद में रुके रहे ताकि पत्रों को भेजने का काम पूरा किया जा सके।

19

मई का अन्तिम सप्ताह था। सूर्य की प्रखर किरणें धरती को तवे की तरह जला रही थीं। पसीने में लथपथ लोग थोड़ी ही देर काम करने के बाद विश्राम चाहते थे। चीफ कमिश्नर सर हैनरी लारेन्स अस्वस्थ तो था ही, इस जान-लेवा गर्मी ने उसे और भी शक्तिहीन बना दिया। उसे पता लगा था कि छावनी में भारतीय सैनिकों में असंतोष व्याप्त है और वे कभी भी विद्रोह कर सकते हैं। लखनऊ छावनी में बहुत कम योरोपीय सिपाही थे। देशी अफ़सर और सिपाहियों पर कई तरह से सन्देह किया जा रहा था। कुछ मील दूर मुरीआँव की छावनी में पैदल सेना की तीन रेजीमेन्ट थी तथा मुदकीपुर में घुड़सवार सेना। इन दोनों स्थानों पर भी इन दिनों प्रायः उपद्रव की सम्भावनाएँ बनी रहती थीं। उधर कानपुर के समाचार भी बहुत निराशाजनक थे। वहाँ नाना साहब की सेना ने कर्नल व्हीलर से आत्म-समर्पण करा लिया था अतः वहाँ से बार-बार सर हैनरी से मदद के लिये गुहार की जा रही थी। यहाँ वित्त कमिश्नर तथा अन्य कुछ अधिकारी चाहते थे कि देशी पल्टनों से हथियार डलवा लिये जायें ताकि उनकी ओर से किसी तरह के खतरे की गुंजाइश ही नहीं रहे। हैनरी उनसे सहमत नहीं हुआ क्योंकि वह अच्छी तरह समझता था कि हथियार छीन लेने से सैनिक अपमानित महसूस करेंगे और हो सकता है कि समय से पूर्व ही विद्रोह कर दें। कुछ स्वामिभक्त देशी अधिकारियों व सैनिकों के साथ योरोपीय लखनऊ की सुरक्षा करने में नितान्त असमर्थ होंगे। अपनी कमज़ोरी का अहसास होते हुए भी हैनरी लारेन्स भारतीय सैनिकों को किसी भी प्रकार यह ज्ञात नहीं होने देना चाहता था कि अंग्रेज़ चिन्तित या परेशान हैं या उनका विश्वास देशी सैनिकों से बिलकुल उठ गया है।

उधर मेरठ व दिल्ली भी स्वतन्त्र हो भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के हाथ

में आ चुके थे। यह खबरें अवध की सेना में भी मई के मध्य तक पहुँच गई थीं। अतः हैनरी का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। फिर भी परिस्थिति ऐसी थी कि वह सक्रियता से अंग्रेज़ी सैनिकों तथा असैनिकों के परिवारों यानी स्त्रियों तथा बच्चों की सुरक्षा के लिये योजना बना रहा था। उसने इरादा कर लिया था कि लखनऊ छावनी को छोड़ कर मच्छी भवन और रेजीडेन्सी को ही सुरक्षा का केन्द्र बनाया जाये। इन भवनों में स्थान भी काफी था तथा छावनी की अपेक्षा कहीं अधिक सुरक्षित भी थे। विशेष रूप से रेजीडेन्सी में हवा और पानी का भी अच्छा प्रबन्ध था और रहने के लिये पर्याप्त मकान थे। सामने ही नदी थी और निकट ही खुला मैदान। अतः सामने की ओर कोई ऐसा स्थान नहीं था जहाँ से गोलाबारी की जा सके। गोमती नदी के उत्तर में खुला क्षेत्र था। अतः उधर होकर बाहर से सहायता आने में भी अधिक सुगमता थी। कुछ आसपास के ऊँचे मकानों का ऊपरी भाग तुड़वाने का भी हैनरी ने निर्णय ले लिया था ताकि वहाँ से कोई गोलाबारी नहीं कर सके। कमिश्नर ने रात दिन परिश्रम करके इन दोनों स्थानों पर साज-सामान भी काफी एकत्रित करा लिया था। उसे आशा थी कि पुराने सैनिक अंग्रेज़ों के प्रति अधिक वफ़ादार रहेंगे, अतः उसने अनेक अवकाश-प्राप्त सैनिकों को पुनः बुला लिया। उसने असैनिक योरोपीय स्वयंसेवक भी भर्ती करना शुरू कर दिया।

हैनरी जब ये तैयारियाँ कर रहा था तथा किसी भी क्षण विद्रोह होने की प्रतीक्षा में था। हजरत महल के सामन्त तथा अनेक स्वयंसेवक भी अपनी गति-विधियों में तत्परता से व्यस्त थे। रूदौली के साहबज़ादा अनीस अहमद और कुमार प्रताप सिंह और उनकी बहिनें, दरियाबाद के कुमार मदन सिंह, ब्रह्मानंद सिंह, आदित्य और अरविन्द, और दो बहिनें, नवाब गंज के मुहम्मद अलीशाह की बहिन तथा पुत्री और अनेक युवक युवतियाँ सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। लड़कियाँ भी सैनिक पुरुषों की पोशाक में घूमती थीं अतः उन्हें पहिचान पाना भी कठिन था।

अनीस अहमद ने मुदकीपुर छावनी में दो-तीन दिन रह कर वहाँ के अंग्रेज़ अधिकारियों के भ्रष्ट-चरित्र के विषय में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त कर ली थी। देशी सैनिकों ने उसे बताया था कि वही नहीं बल्कि प्रत्येक सैनिक छावनी में भद्र परिवारों की एक दो लड़कियाँ प्रति-दिन कहीं न कहीं से उड़ा कर लाई जाती हैं। कुछ को बाद में कलंकित जीवन जीने के लिये छोड़ दिया जाता है तथा कुछ को रखैल बनाकर रखा जाता है। उसने मालूम कर लिया था कि कप्तान फ्लैचर हेज इस कार्य के लिये बहुत कुख्यात था तथा जब उसे एक दिन देखा तो अनीस सिर से पैर तक घृणा से भर गया था। उसने और प्रताप सिंह ने इसीलिये दृढ़ संकल्प कर लिया था कि सबसे पहिले इस दुष्ट कप्तान का ही काम तमाम करेंगे। वे दोनों तथा उनके स्वयंसेवक मुदकीपुर एवं मुरीआँव जाकर छावनियों

मे अंग्रेज़ों के विरुद्ध प्रचार करते रहते थे। उनका सम्पर्क अत्यन्त सजीव था। इस बार ये पूरे दल बल के साथ अंग्रेज़ों पर हमला करने मुदकीपुर गये तो ज्ञात हुआ कि पलैचर मुरीआँव गया हुआ है। वे तुरन्त मुरीआँव पहुँचे। 30 मई की रात्रि को अनीस, प्रताप और उनके दल किसी प्रकार छावनी में पहुँच गये और देशी सिपाहियों को विद्रोह के लिये संकेत दिया। रात में नौ बजे सबने मिल कर अंग्रेज़ी फौज पर सशस्त्र आक्रमण कर दिया। बहुत से अंग्रेज मारे गये। कुछ भारतीय सिपाहियों ने अंग्रेज़ों का साथ भी दिया किन्तु अंग्रेज़ी शिविर में चारो ओर हाहाकार मच गया। जो सिपाही पकड़े गये उन्हें अंग्रेज़ों ने मृत्यु दण्ड दिया किन्तु अधिकांश तो अवध के विभिन्न स्थानो मे और भी उत्साह मे स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पडने के लिये चले गये तथा कुछ ने दिल्ली की राह पकड़ ली।

कप्तान पलैचर के न मिलने से प्रताप और अनीस को बहुत दुख हुआ। मदन सिंह और ब्रह्मानंद के जासूसो ने उन्हें समाचार दिया कि पलैचर को अवध की कुछ फ़ौज के साथ कानपुर मदद के लिये भेजा गया है। अतः चारों वीर सेनानी कानपुर की ओर चल दिये। वहाँ पहुँच कर उनके गुप्तचरों ने बताया कि पलैचर अपनी फौज के साथ कानपुर से मैनपुरी मार्ग पर उस सड़क को भारतीय सैनिकों से बचाने के लिये आगे बढ़ गया है। वे लोग तुरन्त उसके फ़ौजी दस्ते तक पहुँचे और उसके सैनिको को विद्रोह के लिये उकसाया। सैनिक पहिले से ही तैयार, केवल मौके की प्रतीक्षा मे थे। फिर जासूसों ने उन्हें यह भी बता दिया था कि साहबज़ादा अनीस और कुमार प्रताप अपने हाथों कप्तान पलैचर का वध करना चाहते हैं। तुरन्त हवा मे एक फायर हुआ। पलैचर और उसके साथी अफसर घोडों पर सवार थे। वे धीरे-धीरे इधर-उधर देखते हुए चले जा रहे थे कि बन्दूक की आवाज से चौंके। प्रताप ने पलैचर के बराबर से निकलते हुए एक भाला उसके दे मारा, घोडे से गिरते-गिरते उसकी पिस्तौल से एक गोली छूटी जो हवा में कुछ ऊँचाई तक जाकर कंकड की तरह ज़मीन पर गिर पड़ी। पलैचर ने उठकर प्रताप की ओर पुनः पिस्तौल तानी ही थी कि अनीस ने उछल कर उसकी गर्दन पर भाले से वार किया। पलैचर तड़पने लगा तो अनीस ने कहा, "क़मीने तूने न जाने कितनी भोली-भाली लड़कियों को तड़पाया है उसी का नतीजा आज तू भी भुगत, बदजात तूने न जाने कितनी हिन्दोस्तानी औरतो की आबरू लूटी है, उसी की यह सज़ा है!" "रहम मैं तुम्हारी गाय हूं!" बड़ी मुश्किल से पलैचर के मुँह से यह शब्द निकल पाये, लेकिन प्रताप सिंह ने कहा, "कुत्ते, तेरे साथ यही रहम और रिआयत है कि तुझे इतनी आसान मौत दी जा रही है!" अनीस ने भालो से उसका बदन छलनी कर दिया फिर भी उसे तसल्ली नहीं हुई। जो भी फिरंगी सामने पड़ा उसी का काम तमाम कर दिया। मदन सिंह, ब्रह्मानंद और प्रताप सिंह ने दूसरे चार-पांच अफ़सरो को मौत के घाट उतार दिया। सिपाहियों ने एक-एक

अंग्रेज को गिन-गिन कर मार गिराया और लखनऊ की ओर रवाना हो गये।

इतनी सावधानी बरतने के बावजूद एक अंग्रेज सिपाही सडक से दूर खेतों में जाकर आम के पेड़ पर चढ गया और रात के अंधेरे में अपनी जान बचाने में सफल हो गया। कुछ देर बाद जब सब कुछ शान्त हो गया और भारतीय योद्धा लखनऊ की ओर रवाना हो गए तो वह पेड़ से उतरा और छुपते-छुपाते लखनऊ पहुँच कर हेनरी लारेन्स को सब समाचार सुनाया। सुन कर हेनरी का दिल दहल गया। सिपाहियों मे यह समाचार जंगल की आग की तरह फैल गया और समस्त अंग्रेज़ी सेना में तहलका मच गया। भारतीय सैनिक अपनी स्थिति के बारे में सोचने लगे, उनमे अंग्रेजों का साथ देने वाले बिरले ही थे। अंग्रेज़ी सिपाही आसन्न संकट के कारण अपनी प्राण-रक्षा के उपायों के विषय में चिन्तित थे तथा उनका मनोबल बुरी तरह गिर रहा था।

हेनरी ने तुरन्त सारी योरोपीय महिलाओं व बच्चों को रेज़ीडेन्सी में बुला लिया। आसपास के मकानों के ऊँचे भागों को तुड़वा दिया गया। वह स्वयं भी छावनी से रेजीडेन्सी में आकर रहने लगा और अपना प्रधान कार्यालय भी फ़ौजी छावनी से हटाकर रेजीडेन्सी में ही ले गया। अवध के दूसरे संभागों, खैराबाद (सीतापुर), फैजाबाद तथा बहराइच से भी निराशाजनक समाचार प्राप्त हो रहे थे अतः हेनरी की चिन्ता और भी बढ़ गई फिर भी वह काफ़ी लग्न-शीलता से सुरक्षा के उपायों में व्यस्त रहा।

20

जब रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने,
धरा धँसेगी, प्रलय मचेगी, व्योम लगेगा थर्राने!

दरियाबाद, नवाबगंज या फैजाबाद में लगभग हर महीने सामन्तों की बैठकें होती रही। इन बैठको की सूचना नियमित रूप से हज़रत महल को भी पहुँचाई जाती रही। कई बार स्वयं बेगम भी इन बैठकों में भाग लेने आती रहती थी। उसके महलों पर अंग्रेज़ी निगरानी धीरे-धीरे शिथिल पड़ती गई और अन्त मे बिलकुल हट गई थी। अंग्रेजो ने समझ लिया था कि वहाँ रहने वाली सभी बेगमें आमोद-प्रमोद के अलावा किसी भी ब्रिटिश-विरोधी कार्रवाई में भाग लेने की न तो क्षमता रखती हैं और न ही उन्हें ऐसे कामो में दिलचस्पी है। सभी अमीर अब आसानी से बेगम से मिल सकते थे अतः अब ये बैठकें

अधिकतर लखनऊ में ही होने लगीं। बेगम की योजना थी कि पहिले स्वाधीनता-आन्दोलन लखनऊ के बाहर सीतापुर, फ़ैज़ाबाद, बहराइच, गोंडा और आज़मगढ़ में पनपाया जाये फिर उनके आस-पास के महत्त्वपूर्ण कस्बों में। ऐसा करने से लखनऊ को स्थान-स्थान से आने वाले रास्तों को नियन्त्रण में रखा जा सकता था और अँग्रेज़ी सेनाओं को आने वाली रसद वग़ैरह को भी रोका जा सकता था। इस तरह नाकेबंदी करके लखनऊ में गोरों को सरलता से पराजित किया जा सकता था।

मौलवी अहमदुल्ला शाह ने पूर्ण उत्साह से योजनाबद्ध कार्य शुरू कर दिया था। उसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों, कानपुर, देहली, आगरा, मथुरा, जगदीशपुर (बिहार), आरा वग़ैरह का दौरा किया। बुन्देलखंड, जबलपुर, इन्दौर, झाँसी की तरफ भी गया। अवध में तो वह चप्पे-चप्पे मे फिरता रहा—जहां वह नहीं जा पाता, उसके स्वयंसेवक काम में लगे हुए थे। सभी जगह लोगों को स्वतंत्रता प्राप्त करने को कटिबद्ध होने के लिये प्रेरित किया। उनमे कठपुतली या नौटंकी के तमाशों का भी प्रबन्ध कर गाँव-गाँव मे प्रचार के लिये दल भेजे। कुछ इश्तिहार तैयार कराये, जिसमें सौदागर बन कर भारत में आये अँग्रेज़ों की मक्कारी और चालबाज़ियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार वे भारतीयों को ग़ुलाम बनाकर एक के बाद एक इलाक़े को हड़पते गये। अन्त मे देश में पुनः आज़ादी प्राप्त करने के लिये जन साधारण की सहायता का आह्वान किया। उसने ऐसे फ़क़ीर व पंडितों को भी जगह-जगह भिजवाया जो भविष्यवाणियों के द्वारा लोगों के दिल मे यहाँ विश्वास पैदा करते थे कि अंग्रेज़ी-राज्य शीघ्र ही भारत से जाने वाला है। मौलवी ने कुछ वीरता के गीत भी बनवाये जो कि गायक-मंडलियाँ स्थान-स्थान पर जा कर आल्हा की जोशीली धुन में गाती थीं। यह धुन गाँवों में बहुत लोकप्रिय थी तथा इन गीतों से जन-सामान्य की धमनियों मे रक्त के साथ शौर्य प्रवाहित होने लगता। इन सभी साधनों ने आम जनता का मनोबल बढ़ा दिया और अनेक नागरिक स्वतंत्रता-आन्दोलन में तन-मन-धन से भाग लेने के लिये तैयार हो गये। अंग्रेज़ी छावनियों मे भारतीय सैनिकों में भी देश-प्रेम और आज़ादी की उमंगें तरंगित होने लगीं।

कुछ दिनों तक तो मौलवी अहमदुल्ला का यह काम सभी जगह अबाध गति से चलता रहा किन्तु जब उसने यह अभियान और भी गहन किया तो किसी प्रकार अंग्रेज़ों को पता चल गया। कई इश्तिहार उन्होंने पकड़ लिये तथा मौलवी को गिरफ़्तार करने की आज्ञा दी। जब काफ़ी प्रयासों के बाद भी वे मौलवी को नहीं पकड़ सके तो उन्होंने अपने अनेक गुप्तचर छोड़ दिये तथा सेना के कई दस्ते उसे घेरने को लगा दिये। किसी प्रकार मौलवी को अन्त में पकड़ ही लिया गया और फ़ौजी अदालत में राजद्रोह का अभियोग लगा कर

उसे मृत्यु-दंड की आज्ञा सुनाई। जब उसके गिरफ़्तार होने पर ही इतना विरोध और उपद्रव हो रहे थे तो उसे मृत्यु-दण्ड देना अंग्रेज अधिकारियों ने उचित नही समझा या उन्हें साहस नही हुआ। अतः दण्ड कुछ दिनों के लिये स्थगित करना पड़ा।

मौलवी को गिरफ्तार करके अंग्रेज़ों ने एक तरह से कूड़े के ढेर में दबी हुई आग को छेड़ कर उसे हवा दे दी। स्थानीय देशी सैनिक तथा स्वाधीनता प्रेमी असैनिक प्रायः गुप्त रूप से मिलते रहते थे तथा अंग्रेज़ों को देश से निष्कासित करने की योजना बनाते रहते थे। छावनी में यह भी समाचार मिला कि अंग्रेज़ों ने बनारस में पहिले तो भारतीय सैनिकों से हथियार डलवा लिये तथा बाद में उन पर अपने तोपख़ाने के द्वारा हमला करके सब को मार डाला। अब मौलवी जैसे धार्मिक एवं चमत्कारी शासक व नेता को गिरफ़्तार कर मृत्यु-दण्ड सुनाया गया तो चारो ओर आग भड़क उठी। फ़ैज़ाबाद की 22वीं देशी पैदल सेना ने सूबेदार दलीप सिंह के नेतृत्व मे विद्रोह कर दिया और अंग्रेजी ख़ज़ाने पर अधिकार कर लिया। उन्होंने समस्त अंग्रेज़ी अधिकारियों को वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी तथा उनको निष्कासित करने के लिये कई नौकाओं का प्रबन्ध कर कुछ रुपया भी दे दिया। जैसे ही ये नौकाएँ बैरम घाट पर पहुँचीं, आज़मगढ़ की सत्रहवीं पैदल सेना ने उन्हें रोक लिया और कमिश्नर, कर्नल गोल्डने तथा अन्य सभी योरोपीय यात्रियों को मौत के घाट उतार दिया। उसमें से केवल कर्नल लैनॉक्स व कुछ स्त्रियाँ ही बच सकी।

दलीप सिंह ने तुरन्त मौलवी को कैद से मुक्त कर उसके मार्गदर्शन में स्वतन्त्रता का शंख-नाद बजा दिया। चारों ओर जयघोष के नारे गूँजने लगे। मौलवी खलीफात-उल्लाह ज़िन्दाबाद! हिन्दोस्तान ज़िन्दाबाद, इंग्रेज़ कंपनी मुर्दाबाद! बादशाह वाजिद अलीशाह ज़िन्दाबाद, ! बेगम हज़रत महल ज़िन्दाबाद! गोरी हुकूमत मुर्दाबाद!

मौलवी ने घोषणा करा दी कि फ़ैज़ाबाद मे अंग्रेजी राज्य का अन्त हो गया है और बादशाह वाजिद अली शाह का राज्य पुनः स्थापित हो गया है। अब बेगम-आलिया हज़रत महल वली अहद (युवराज) बिरजिस कदर की ओर से शासन-प्रबन्ध चलायेंगी!

मौलवी अब कही भी जाने को पुनः स्वतन्त्र हो गया। उसने प्रशिक्षित युवकों के नेतृत्व मे जगह-जगह स्वतंत्रता सैनानियो के दल गठित किये। वह अवध तथा आस-पास के क्षेत्रों में घूम-घूमकर आज़ादी का अलख जगाने लगा। अनेक दक्ष नवयुवक व युवतियाँ उसके इस काम मे तत्परता के सहयोग दे रहे थे।

सीतापुर में भी आज़ादी के अनेक दीवाने स्वतन्त्रता की ज्योति प्रज्वलित

करने में लगे थे। यहाँ का अंग्रेज कमिश्नर दृढ़-संकल्प वाला व्यक्ति था। वह अतीत काल से चली आ रही जागीरदारी प्रथा की समाप्ति के विरुद्ध था तथा उसके क्षेत्र में किसानों पर अपेक्षाकृत अधिक न्याय संगत लगान लगाया गया था। कमिश्नर क्रिश्चियन को विश्वास था कि वह अवध अनियमित सेना की दो रेजीमेन्टों पर भरोसा कर सकता है। यहाँ से 41 वीं पैदल सेना लखनऊ की सहायता के लिये रवाना होने वाली थी। सुरक्षा के लिये क्रिश्चियन ने योरोपीय स्त्रियों तथा बच्चों को अपने बंगले में बुला लिया था। उसका बंगला अन्य स्थानों की अपेक्षा तो अधिक सुरक्षित था किन्तु विपत्ति के समय आसानी से भाग सकने के लिये इसमें कोई रास्ता नहीं था।

दो जून को सिपाहियों ने मोहकमसिंह सूबेदार से शिकायत की कि जो आटा कोतवाल ने उनके खाने के लिये भिजवाया है उसमें कीड़े पड़े हैं और खाने के योग्य नहीं है। सूबेदार ने जब बड़े अधिकारियों से कहा तो उन्होंने वह आटा नदी में फिकवा दिया किन्तु सिपाहियों को फिर भी तसल्ली नहीं हुई। पूरी छावनी में यही चर्चा चल रही थी कि उनको खाने-पीने के लिये घटिया से घटिया माल दिया जाता है। रात्रि के समय कुछ सिपाही नगर में घूमने गये तो वहाँ कठपुतली का तमाशा हो रहा था। यह तमाशा भी कुछ विशेष प्रकार का था। एक धोबी, एक धोबन और एक अंग्रेज़ के पुतले दिखाई दे रहे थे। सैंकड़ों दर्शक गर्मी के कारण खुले में बैठे खेल का आनन्द ले रहे थे। धोबी ने धोबन से कहा—”

“बोल मेरी धोबन ! तू किसका मानेगी बचन!!”
चूँ चूँ चूँ करती धोबन बोली, “तेरा रे धोबी तेरा!”
धोबी ने कहा, “तो कर इन साहब को सलाम,
“तुझको देंगे खूब इनाम”
लेकिन धोबन उछल-उछल कर, नाच-नाच कर कहने लगी,
“ना ना ना रे धोबी राजा ना!
“इनका तो राज रहेगा ना!!
“ये हैं सौदागर मक्कार!
“धोखे से ले ली सिरकार
“अब जागे हैं हिन्दोस्तानी,
“गोरों की मर जाये नानी।
“देस छोड़ ये भागेंगे,
“जान की खैर मानावेंगे॥”

उसी समय करीब पाँच गोरे और दस भारतीय सिपाही सार्जेन्ट परेरा के साथ आये और कहने लगे, “बन्द करो ये खेल।” अचानक सैनिकों के आ जाने

से भीड़ छँटने लगी और तमाशा करने वाले पाँच आदमियों को गिरफ्तार कर लिया गया। कठपुतली खेल के मालिक को भी साथ लेकर वे छावनी में कर्नल बर्च के सामने पेश किये गये। कर्नल बर्च शराब पिये हुए मस्ती में झूम रहा था तथा इन लोगों को देखते ही बरस पड़ा, 'यू ईडियट हिण्डोस्टानी। ये क्या खेल करटा है टुम लोग! कहाँ है टुम्हारा मालिक!"

मालिक हाथ जोड़ कर आगे बढ़ा तो बर्च ने कहा, "टुम को दस कोड़े का सज़ा डेगा!" वाक्य पूरा भी नही हुआ था कि कर्नल बर्च के धाँय-से एक गोली सीने में लगी। कठपुतली का मालिक बना कुमार मदन सिंह जोर से चिल्लाया, 'हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद!' और उसने तथा भारतीय सिपाहियों ने सभी अँग्रेज अधिकारियो को मार गिराया। पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार सारा काम सफलता-पूर्वक हो गया। कुमार आदित्य भी उनके साथ था, उसने भी अनेक फिरंगियों पर हाथ साफ किया।

कमिश्नर क्रिश्चियन ने अपने परिवार तथा बंगले में ठहरे अन्य स्त्री-बच्चों व पुरुषों के साथ भागने की कोशिश की, लेकिन 2-3 व्यक्तियों को छोड़ कर आक्रोश में आये सिपाहियो ने सभी को गोली का निशाना बना लिया।

इस तरह सीतापुर कमीश्नरी का समस्त क्षेत्र अँग्रेजी नियन्त्रण से मुक्त हो स्वतन्त्रता सेनानियों के हाथों में आ गया। सारे क्षेत्र में आज़ादी के नारों के साथ घोषणा कर दी गई कि अँग्रेज़ी-हुकूमत खत्म हो गई है।

बहराइच मे छावनी के बैरकों में जब तब भारतीय सिपाही "हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद, आज़ादी के दीवाने ज़िन्दाबाद" के नारे लगाते तो अँग्रेज अधिकारी असमंजस में पड़ जाते थे। उन्हें सारे वातावरण में कुछ अटपटापन सा लगने लगा। वहाँ का कमिश्नर चार्ल्स विंगफ़ील्ड जब लोगों की रहस्यमय गतिविधियाँ देखता तो घबरा जाता। कठपुतली के खेल तथा आल्हा की धुन में वीरतापूर्ण गीत तो पहिले तो देहातो तक ही सीमित थे किन्तु कुछ दिनो से कई जगह बहराइच शहर में भी उनकी मण्डलियाँ अपना काम करने लगी। विंगफील्ड ने यही उचित समझा कि समय रहते योरोपीय स्त्रियों और बच्चों को लखनऊ भेज दिया जाये। उसने तुरन्त उन्हे लखनऊ भेज दिया और स्वयं भी सिकराड़ा छावनी होता हुआ गोंडा भाग गया।

छावनी में अधिकारियों के आदेशानुसर योरोपियन सार्जेन्ट सिपाहियों की प्रत्येक गतिविधि पर निगाह रखे हुए थे। दरियाबाद के कुमार ब्रह्मानंद और कुमार अरविन्द चुपके से छावनी मे जाकर भारतीय सैनिकों और अधिकारियों को स्वतंन्त्रता आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा देते। आज छावनी के निकट शाम को एक मंडली स्वतन्त्रता के आल्हा गा रही थी।

बड़े लड़ैया भारतवासी इनकी चमकि रही तरवार,
कहीं फिरंगी हमरी नैया आनि फँसी अब बीच मँझार।
पड़े जानके लाले उनकूं किये खूब जिन अत्याचार,
उठे देस के सोये सिंह सब गोरन कों जे करहिं सिकार।
आजादी के दीवाने सब सरे आम कहते ललकार,
नहीं रहेगी, नहीं रहेगी, नहीं रहे गोरी सरकार।

तबले की थाप और सारंगी की संगत से लोगों के रक्त में वीरता का संचार होने लगा। अंग्रेज़ी सार्जेन्टों ने जब छावनी के पास ही यह आवाज़ें सुनी तो वे वहाँ जासूसी करने पहुँच गये और लौटकर आल्हा-संगीत का सार अपने अधिकारियों को बताया। अधिकारियों ने आज्ञा दी कि तुरन्त उन लोगों को घेर कर गिरफ्तार कर लिया जाये। आठ सार्जेन्ट क़रीब पचास अंग्रेज़ी सिपाहियों का दल लेकर घेरा डालने पहुँचे तथा गाने वाले 15-20 आदमियों की मंडली को घेरना चाहा लेकिन तब तक ब्रह्मानन्द, अरविन्द और उनके दल के नवयुवकों ने आठों सार्जेन्ट और कुछ सिपाहियों को गोली का निशाना बना लिया। अंग्रेज़ सिपाहियों ने भागना चाहा किन्तु वहाँ आल्हा सुन रहे अन्य स्वयंसेवकों और कुछ घुड़सवारों ने उन्हें घेर कर एक-एक को तलवार के घाट उतार दिया। कप्तान वायल्यू जो छावनी के सदर दरवाज़े पर खड़ा यह हंगामा सुनकर स्थिति का अनुमान लगा रहा था तुरन्त घोड़े पर छावनी के अन्दर भागा और अन्य योरोपियन अधिकारियों को घटना की सूचना दी। उसने अनियमित पैदल सेना के सिपाहियों को, जो अभी भी अपने बैरकों में ही थे, आज्ञा दी कि वे बाहर पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जायें। सभी सिपाही पंक्ति में 'सावधान' की स्थिति में खड़े हो गये। उन्हें छावनी के बाहर, उपद्रव शान्त करने के विचार से, मार्च करने की आज्ञा दी गई तो वे छावनी के बाहर गये। बाहर पहुँचते ही सबने कप्तान वायल्यू को घेर लिया और सूबेदार मोहरसिंह ने कड़क कर कहा, "अगर जान बचानी है तो फ़ौरन भाग जाओ।" वायल्यू इस अप्रत्याशित घटना से पस्त हिम्मत हो गया और उसने छावनी की ओर रुख कर लिया। छावनी में आया तो ज्ञात हुआ कि लेफ्टीनेन्ट बौनहम के अलावा सभी अंग्रेज़ अफ़सर पलायन कर गये हैं। वे दोनों भी हड़बड़ी में वेश बदलकर छावनी छोड़ कर भाग गये।

इस तरह बहराइच पर भी स्वतन्त्रता सेनानियों का एक-छत्र साम्राज्य हो गया और वे गोंडा की तरफ कमिश्नर विंगफील्ड की खबर लेने चले। वहाँ पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि वह और डॉक्टर बारट्रम अपने दल के साथ वहाँ से भी भागकर बलरामपुर पहुँच गये हैं तथा वहाँ के राजा ने अपनी राजपूती परंपरा के अनुसार उन्हें शरण दी है। वे तुरन्त बलरामपुर की ओर गये। राजा ने बताया कि वे यहाँ नहीं हैं। अन्त में वे निराश होकर लौट आये और अपने-अपने काम

मे लग गये। बलरामपुर के राजा ने विंगफील्ड और उसके साथियो को किसी गुप्त सुरक्षित स्थान में भेज दिया था।

आधे जून तक पूरे अवध में अंग्रेज़ी सत्ता पूर्णत: विलुप्त हो चुकी थी। केवल लखनऊ अभी तक बचा हुआ था। यह मुख्यतः बेगम हज़रत महल की अद्‌भुत संगठन-शक्ति के कारण सम्भव हो सका था। उसके आदेशानुसार अब चारों ओर से लखनऊ की नाकेबन्दी कर ली गई थी।

21

हर रहगुज़र पे शमा जलाना है मेरा काम
तेवर हैं क्या हवा के ये मैं देखता नही।

बेगम हज़रत महल और उसके आज़ादी के दीवाने सामन्तो का हौसला विजय के समाचार सुन-सुन कर बढ़ता ही जाता था। अब वह बिना कुछ छुपाये खुले आम शहर में घूमती, आसपास के क्षेत्रों का दौरा करती तथा नित्य अपने अमीरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ताओं का दरबार लगाकर स्वतन्त्रता की योजनाएँ बनाती। उधर कानपुर, मेरठ तथा देहली आदि स्थानों से भी उत्साह-वर्द्धक समाचार मिल रहे थे अतः उसने एक आम सभा भी आयोजित की और उसमें भाषण दिया—

"मेरे प्यारे देशवासियो! फिरंगियों की वजह से जो कुछ हमारे देश का हाल हुआ है, आपसे छुपा नही। इन्होने बहुत से देशी राज्यों को हड़पकर अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया है। बड़े-बड़े औहदों से हिन्दोस्तानी अफ़सरों को हटाकर उनकी जगह अंग्रेज़ी अफ़सरों को लगा दिया है। किसानों पर लगान इस हद तक बढ़ा दिया है कि बेचारे इतनी मेहनत करने के बाद भी दाने-दाने को तरस रहे हैं। हर चीज पर महसूल बढ़ा दिये हैं। ये लोग आये दिन हिन्दुस्तानियों पर जुल्म ढा रहे हैं। हमारे मुल्क का रुपया, सोना, चाँदी और हीरे-जवाहिरात ढो-ढोकर इंग्लिस्तान ले जा रहे हैं। ये लोग हमें गुलाम समझते हैं और फरेब और चाल-बाजियों से हम लोगों में ही आपसी फूट डालकर खुद इलाके पर इलाके हड़पते जा रहे हैं। इनकी चालबाजियों, काले कारनामों और जुल्मों से तंग आकर दिल्ली, मेरठ, कानपुर, बनारस वगैरह कई जगह आज़ादी की लड़ाइयाँ शुरू हो गई हैं और हिन्दुस्तानियों ने फतह पाई है। आपको मालूम ही है कि अवध में भी

इन्होंने बादशाह को कलकत्ते भेजकर क़ैद कर लिया है और इस इलाके को अँग्रेजी राज्य में मिला लिया है। लोगों के हक़ हुकूक छीन लिए हैं। आम आवाम से बेगारें लेते हैं और बेकसूर लोगों को कड़ी से कड़ी सजाएँ दी जा रही हैं। इसीलिये हमने भी इनके खिलाफ जंग छेड़ दी है। अब तक हमें हर जगह कामयाबी हासिल हुई है। सीतापुर, बहराइच और फ़ैज़ाबाद के तमाम इलाके फिर से हमारे क़ब्ज़े में आ गये हैं और फिरंगियों को वहाँ से निकाल बाहर कर दिया गया है। अब वक्त आ गया है कि हम लोग जी-जान से इस जंगे आज़ादी में शरीक होकर मुल्क़ को इन फिरंगियों से हमेशा के लिए निजात दिलायें। फिलहाल हमें लखनऊ में पूरे जोशोख़रोश से इन लोगों से लोहा लेना है। मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारे मुल्क के तमाम बाशिन्दे चाहे वे बूढ़े हों, जवान हों, औरत हों या मर्द हों, मिल-जुलकर इस जंग में किसी न किसी तरह इमदाद करेंगे और अपनी मादरे-वतन को (मातृभूमि को) इन बदज़ात दगाबाजों से आज़ाद करायेंगे।" भाषण अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि जनता ने नारे लगाये—

"बेगम आलिया ज़िन्दाबाद, हिन्दोस्तान ज़िन्दाबाद, फिरंगी मुर्दाबाद! इंग्रेज कम्पनी मुर्दाबाद! मुल्क की अजादी ज़िन्दाबाद! हम जान की बाज़ी लगा देंगे—ज़रोज़ेवर मुल्क पर कुर्बान कर देंगे!"

"वाह मेरे बहादुर साथियो, मुझे यही उम्मीद थी। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि अवध के छोटे-छोटे काश्तकारों ने पिछले छः माह में एक-एक मुट्ठी आटा रोजाना बचाकर हमारे पास करीब पाँच सौ छकड़े भरकर आटा भेजा है। हमारी बहिनों ने अपने जेवरात का लालच छोड़कर बीस मन चाँदी और क़रीब दो मन सोना हमारी इमदाद के लिए भेजा है। हमारे हज़ारों जवानों ने पिछले दिनों फ़ौजी तालीम हासिल करके इस जंग में शरीक होकर कई इलाकों को आज़ाद कराने में मदद की है। लखनऊ में इंग्रेज़ी फ़ौजों के देशी सिपाही ज्यादहतर हमारे साथ हैं। वे हमारी तरफ़ आने के लिए सिर्फ मौके के इन्तज़ार में हैं। फैज़ाबाद, गोरखपुर, सीतापुर, गोंडा और बहराइच वग़ैरह से हज़ारों सिपाही लखनऊ पहुँच चुके हैं। आपको यह जानकर हैरत होगी कि हमारे यहाँ की बहुत सी जवान लड़कियाँ व औरतें भी इस जंग के लिए फ़ौजी तालीम ले चुकी हैं और जगह-जगह इन गोरों से मुकाबिला कर रही हैं। हमने औरतों की एक पल्टन भी तैयार कर ली है जिसमें सभी तबक़ों की औरतें व लड़कियाँ जंगे आज़ादी में हिस्सा ले रही हैं।"

"बेगम हज़रत महल ज़िन्दाबाद, फ़िरंगी हुकूमत मुर्दाबाद!
हिन्द की आज़ादी ज़िन्दाबाद! "इंग्रेज कम्पनी मुर्दाबाद!"

जाने लगे, तो दरोगा ने बूढ़े से पूछा, "तो फिर ये बाहर किसके घोड़े बँधे हैं ?" "घोड़े बँधे हैं क्या हुजूर ?" बूढ़े ने बड़ी शान्ति से कहा, "पता नहीं ये कम्बख्त जिन्नात इन्हें यहीं क्यों बाँध जाते हैं, हाँफ़ रहे होंगे हुजूर ?" "हाँ हाँ, हाँफ रहे हैं !" दरोगा बोला, "बस हुजूर दो-दो दिन खड़े रहें तो भी इसी कदर हाँफ़ते रहते हैं, या खुदा। खैर कर।" बूढ़े ने दुआ माँगते हुए हाथ ऊँचे किए। तभी प्रताप सिंह ने थानेदार को पीछे से छूकर अन्दर फिर से चलने को कहा। वह तुरन्त अन्दर गया। मशालची भी जो पीछे ही खड़ा था पुनः अन्दर गया और जब प्रताप ने दरोग़ा को ऊपर देखने को कहा तो छत से दो बिस्तर लटकते नज़र आये। प्रताप ने मशाल ऊँची करने को कहा तो दिखाई दिया कि छत के दो कड़ों से दो आदमी लटके हुए हैं। उनके पास से एक दोहरी रस्सी दाँई ओर और दूसरी बाँई ओर की खूँटियों से बँधी हुई थी। बस फिर क्या था दरोगा ने अपना कोड़ा निकाला और दरवाज़े की तरफ गया। चारपाई पर सोये हुए दोनों युवकों पर उसने कोड़ा बरसाया और ज़ोर से चिल्लाया, "हरामी के पिल्ले, हम से ही मक्कारी !" दोनो जवान लपक कर उठे और भागने को हुए कि सिपाहियों ने उन्हें दबोच लिया। दरोगा के इशारे पर दोनों को अन्दर ले जाया गया। दरोग़ा गरजा, "अबे उल्लू के पट्ठो ! अगर अपनी खाल नहीं फुड़वानी है तो उतारो इनको नीचे !" दोनों आदमियों ने चुपचाप खूँटी पर से रस्सी खोली। दोहरी रस्सियों को एक तरफ से ढील देते गये और दूसरी तरफ खींचते गए तो दोनों लटके हुए आदमी धीरे-धीरे नीचे उतर आए। वे जैसे ही फ़र्श पर टिके, दरोग़ा ने पाँच-सात कोड़े बरसाए और अहमद की तरफ पहिचानने के लिए देखा। अहमद ने 'हाँ' में सिर हिलाकर बताया कि यही वे आदमी हैं। उसने फुसफुसाकर कहा, "हुजूर ये लीलू मल्लाह है और ये फिरंगी भी उनके साथ आया था।" सिपाहियों को तहव्वर खाँ ने हुक्म दिया कि इन्हें रस्सियों से कस लो। इन दोनों छोकरों को और बुड्ढेमियाँ को भी गिरफ्तार करके बाँध लो। फिर वह बूढ़े की ओर आग उगलती नज़रों से देखता हुआ बोला, "क्यों बे हरामखोर ये ही जिन्नात हैं कि कोई और ?" उसने बूढ़े की डाढी पकड़कर खींची तो हाथ में आ गई, बाल पकड़कर हिलाये तो बाल हाथ में रह गए और वह भागने लगा कि प्रताप ने कमर पर एक लात जमाई। तुरन्त वह धराशायी हो गया, वह भी 25-30 साल का एक युवक ही था। पाँचों को सिपाहियों ने कसकर घोड़ों पर बाँध लिया और रुदौली की तरफ चल दिये। पहुँचते-पहुँचते अँधेरा होने लगा था। बदमाशों के दोनों घोड़ों को रुदौली ले आए। रास्ते में दरोगा ने कहा, "वाह कुमार सा'ब दाद देता हूँ आपकी सूझ को। अगर आप नहीं होते तो, ईमान से, इन हरामियों को पकड़ पाना मुमकिन नहीं था। देखिए तो, स्साले इतनी ऊँची छत से चमगादड़ों की तरह लटके हुए है।"

"और लटकने में भी क्या फ़ुर्ती दिखाई, शायद ये रस्सियाँ मय फंदों के हमेशा तैयार रखी जाती हैं।"

"ज़रूर, ज़रूर वर्ना आनन-फानन में ये ऊपर कैसे लटकाए जा सकते थे?"

"जी हाँ, फन्दे भी खूब बनाये हैं, कोई सोच भी नहीं सकता था कि साली दो-दो लाशें इतनी ऊँचाई पर टंगी होंगी!"

"जी हाँ कुमर साहब, वर्ना पच्चीस साल में ये तहव्वर खाँ धोखा कैसे खा सकता था! यकीन मानिए कुमर साहब यह पहिली बार धोखा खाया है मैंने।"

रुदौली पहुँचकर दरोगा ने पहिले उस अंग्रेज़ को बुलवाया और उसके बयान लेना शुरू किया।

"तुम्हारा नाम?"

"विलियम अल्यूशियस क्रिश्चियन।"

"बाप का नाम?"

"टी० ए० क्रिश्चियन।"

"क्या काम करते हो।"

"फ़ौज मे सिपाही हूँ।"

"कौन-सी फौज मे?"

"अंग्रेजी फौज में।"

"साहबज़ादा अनीस अहमद कहाँ है।"

"हमको कूछ पटा नईं।"

"टुमको कूछ पटा अभी चलाटा है!" थानेदार ने उसे चिढ़ाते हुए कहा और अपना कोडा लहराया, "बोलो पता है या नही?"

"नईं, नईं हमकू कूछ पटा नईं!"

"शड़ाक! शड़ाक!" दो कोड़े जमाते हुए दरोगा ने फिर कहा, "बोलो पता है या नही!"

"नई-नई—टुम इण्डियन हमको नही मार सकटा! हम कम्पनी बहाडर का आडमी है!" गोरे ने कहा।

"अबे कम्पनी बहादर के बच्चे, अभी ले! फ़ीरोज़ इस गधे के पडपोते की मूंछे तो उखाड!" एक सिपाही ने उसके हाथ पीछे से पकड़ लिए और दूसरे ने उसकी मूँछें खींचना शुरू किया तो गोरा चीख पडा। "टुम हिण्डूस्टानी ओह-हं-नेटिव (देशी) टुमको इसका सजा मिलेगा!"

मूंछें छोड़ दी गईं और दरोगा ने कहा, "अबे उल्लू के पट्ठे, सजा तो अभी हम तुझे देंगे।" और दो कोडे मारते हुए उससे पूछा, "पहिले बता अनीस कहाँ है?"

"हमकूं नईं पटा !"

"अच्छा इस मुर्गी के बच्चे की मूंछें उखाड़ लो—बिल्कुल जड़ से खींच लो !" फ़ीरोज़ खां ने फिर ज़ोर से मूंछें खींची तो गोरा दर्द के मारे फिर चीख उठा, "ठहरो अभी बटाटा है।" दरोगा ने उसके हाथ छुड़वा दिए और कहा, "अच्छा अब बताओ, साहबजादा अनीस कहाँ है ?" गोरा कहने लगा, "लखनऊ शहर के पास चार बाग की टरफ़ तीन झोंपरा है—खाली फूंस का छोटा-छोटा···।" कहते कहते फुर्ती से उछला, सबकी आँखों में धूल झोंककर दरवाज़े की तरफ भागा और वहाँ खड़े अपने घोड़े पर सवार होकर सड़क पर सरपट दौड़ाने लगा। प्रताप सिंह भी चीते की तरह उछला और बाहर खड़े घोड़े पर सवार हो उसके पीछे दौड़ा। इस अप्रत्याशित घटना से दरोगा और सिपाही एक क्षण को किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए लेकिन फिर तुरन्त प्रताप सिंह के पीछे-पीछे भागे। कुछ सिपाही थाने की निगरानी के लिए रह गए। गोरा मुश्किल से आधी मील निकला होगा कि एक बहुत ही सँकरे रास्ते से जाते हुए प्रताप सिंह ने उसके भाला फेंककर मारा, गोरा तुरन्त नीचे गिर गया और उसका घोड़ा आगे भाग गया। प्रताप का घोड़ा तेज़ रफ्तार में होने के कारण एकदम रुकने के बजाय, गोरे के ऊपर होकर सँकरा रास्ता पार करते हुए आगे दौड़ा, और तहव्वर खां व उसके सिपाही भी गोरे को कुचलते हुए आगे बढ़ने लगे। तभी प्रताप ने अपने घोड़े की लगाम एकदम खींची, उसे मोड़ा और चिल्लाकर तहव्वर खां और सिपाहियों से रुकने के लिए कहा और गोरे के गिरने के बारे में बताया। सभी लौट पड़े और अँधेरा हो जाने के कारण तुरन्त मशाल जलाई गई। मशाल जलते ही सबको दिखाई दिया कि गोरे की लाश के चिथड़े-चिथड़े बिखरे पड़े थे। "इस कमीने के लिए ऐसी ही मौत ठीक है" दरोगा ने कहा, "चलो लौट चलें।" लाश को जैसी की तैसी छोड़ सब थाने लौट आए और अब लीलू की बारी थी।

"नाम ?"

"जी लीलू मल्लाह।"

"बाप का नाम ?"

"घकड़ू मल्लाह।"

"हाँ तो साहबज़ादा अनीस कहाँ हैं ?"

"हज़ूर, बिल्कुल मालूम नहीं।"

"अच्छा, अच्छा, अभी मालूम होता है !"

"राम जीवन, इस उल्लू के पट्ठे को बिलकुल नंगा करके तिखटी से बाँध दो, औंधा। अभी इस हरामी का दिमाग गरम है, हाँ, हाँ बिलकुल ठीक, अब पानी डाल दे इसके ऊपर, बिलकुल ठीक, और अब इसको खुर्चन कोड़े का मज़ा चखा !"

"शड़ाक ! शड़ाक !" एक कोड़ा बरसा और चमड़ी खुरचता हुआ हवा में लहराया। लीलू चीखने लगा, "हुज़ूर धरम से मुझे नहीं मालूम, हुज़ूर नहीं नई मालूम !" दरोगा ने इशारा किया और दो बार कोड़ा उसकी खाल खींचता हुआ हवा में लहराया। लीलू फिर ज़ोर से चीख पड़ा और उसकी कमर के नीचे खून रिसने लगा।

"बोल अब बतायेगा या कुत्तों से नुचवाऊँ ?"

"मालिक मुझे नहीं मालूम, मालूम होता तो कभी का बता देता।"

"अच्छा, फीरोज़ इसके ऊपर ज़रा नमक मिर्च तो डाल दे।"

उधड़ी चमड़ी की जगह पर नमक और मिर्च छिड़का तो लीलू दर्द से तड़प उठा और बोला, "हुज़ूर अभी बताता हूँ, अभी इस पर पानी डलवाइए।" पानी डलवा कर नमक मिर्च हट तो गया लेकिन भारी झल्लाहट के कारण लीलू व्याकुलता से कराहने लगा, फिर बोला, "हुज़ूर, साहबज़ादे मुदकीपुर की फ़ौजी छावनी में हैं। शायद वे उन्हें जल्दी ही छोड़ देंगे।"

"हूँ, इस गोरे का क्या नाम है ?"

"साब बिली या बिल्ली साब बोलते हैं, मुदकीपुर छावनी का है।"

"लड़की किसके लिए ले जाते थे ?"

"हुज़ूर कप्तान फ्लैचर साब के लिए।"

"हूँ, इनके साथ और कौन था ?"

"हुज़ूर कोई नहीं था।"

"फ़ीरोज़, कुत्ते छुड़वा दो।" तीन बड़े शिकारी कुत्ते तिखटी के चारों ओर चक्कर लगाते, लीलू के रिसते खून को ललचाई नज़रों से देखते हुए ग़ुरा रहे थे। इन भयंकर कुत्तों द्वारा काटे जाने की कल्पना मात्र से ही लीलू छटपटा गया। "हाँ तो बताओ और कौन-कौन था तुम्हारे साथ।" "हुज़ूर बिली साब, माइक साब और जोजफ़।"

"अभी माइक भी साथ आया था तुम्हारे ?"

"नहीं मालिक सिरफ़ बिली साब था।"

"अच्छा, जोसफ़ कौन है ? क्या करता है ?"

"हुज़ूर रेशमी कपड़े बेचता है।"

"फ़ौज में भी कुछ काम करता है।"

"नहीं, बस कभी-कभी लड़कियाँ ला देता है सा'ब लोग को।"

"उस गाँव का मकान किस काम आता है ?"

"सरकार, यहीं छुपने-छुपाने के—जोजफ़ ने बनवाया है, सा'ब लोगों ने धन्दा करके उसे बनवाने के लिये पैसे दिये थे।"

"जोजफ़ अभी तुम्हारे साथ था, वह कहाँ भाग गया ?"

"हजूर, वहाँ दो ही लटकने की जगह थी इसलिये वह आगे कहीं छुपने के लिये भाग गया।"

"हूँ, तो तुम कब से उसे जानते हो, सही-सही बताना वर्ना ये कुत्ते सिर्फ़ एक इशारे क। इन्तज़ार कर रहे हैं। समझे!"

"समझ गया सरकार! क़रीब तीन साल से जोजफ़ ने मुझे इस धंधे में फँसाया है तभी से जानने लगा हूँ उसे।"

"कौन-सा धंधा ?"

"यही हजूर, लड़कियों का।"

"अच्छा, तीन साल में कितनी लड़कियाँ फँसाई हैं तुम लोगों ने ?"

"हजूर 25-30, लेकिन चार तो हाथ में आई हुई निकल गईं सरकार—और इन दो के चक्कर में तो मैं बुरी तरह बर्बाद हो गया हजूर।"

"अभी और भी कहीं लड़कियाँ छुपा रखी हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम हजूर!"

"सही-सही बता वर्ना···।" थानेदार ने आँखें निकल कर कुत्तों की तरफ़ इशारा किया।

"माई-बाप तीन और छुपा रखी हैं।"

"हाँ, अब आये न रास्ते पर, कहाँ छुपा रखी हैं ?"

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम सरकार!"

इशारा पाते ही फीरोज ने दो खुरचन कोड़े और जड़ दिये, लीलू चीख पड़ा। दरोग़ा दहाड़ा, "छोड़ कुत्ते, मादर···या ठीक-ठीक बताता है!"

"हजूर उसी कमरे में छुपी हैं। सोचा था पाँचों को ले जाकर सा'ब लोगों को पेश करेंगे तो तक़दीर बन जायेगी। मगर हजूर···।"

"चुप उल्लू के पट्ठे, तक़दीर बन जायेगी, साला हरामी का बच्चा, जितना पूछें उतना ही जवाब दे!" दरोग़ा गरजा। "लेकिन चमगादड़ की औलाद! उस कमरे में तो कोई और था ही नहीं!"

"नईं मालिक वो जो पीछे का दरवाज़ा है, उसकी चौखट हटाकर एक हौदी है। उसी में छुपी हैं लड़कियाँ, लेकिन चाबी जोजफ़ के पास है।"

"झूठ तो नहीं बोल रहा! अगर झूठ बोला तो ये तेरे बाप कच्चा चबा जायेंगे तुझे!" कुत्तों की तरह इशारा कर दरोगा ने कहा।

"नईं सिरकार अब झूठ से कोई फायदा नहीं, झूठ बोलूँ तो सरकार फाँसी पर लटका देना। मगर कहीं जोजफ उनको पहिले ही नहीं ले उड़े हजूर, वह वहाँ ज़रूर आयेगा।"

बस इतना काफ़ी था। प्रताप और थानेदार दस सिपाहियों लेकर तुरन्त नगला रवाना गये और घोड़ों को पीछे ही छोड़ कर दबे पाँव कमरे के पीछे वाले

दरवाज़े की ओर बढ़े। अँधेरे में एक छाया सी दिखाई दी। घेरा डालकर मशाल जलाई तो जौजफ़ भागने के लिये दाँए-बाँए देखने लगा। प्रताप सिंह ने अपना भाला उसकी पीठ पर टिका कर कहा, "इस हौदी को खोलो!"

"कौन-सी हौदी?" काँपते हुए जौजफ़ बोला।

दरोग़ा ने हंटर निकाल कर एक सड़ाका किया तो कान, आँख और गलों पर लहू झलकने लगा, "अबे गधे की औलाद जो इस चौखट के नीचे है, खोलता है या तुझे यहीं दफनाऊँ?"

जौजफ़ अच्छी तरह समझ गया था कि अब उड़ने से कोई फ़ायदा नहीं, सारा भेद खुल चुका है। वह बिना कुछ बोले बैठ गया और चौखट को सरकाने लगा। पूरा-पूरा दहलीज़ का पत्थर ढक्कन की तरह हट गया और एक हौदी नज़र आई जिसमें चारों तरफ़ चलनी के से सूराख थे। आगे एक ताला लटक रहा था। जौजफ़ ने बिना कहे ही ताला खोल दिया और चुपचाप एक तरफ़ खड़ा हो गया। प्रताप बेताब हो रहा था। उसने हौदी का ढक्कन खोला तो तीन लड़कियाँ बेहोश पड़ी दिखाई दीं। सिपाहियों ने तीनों को सावधानी से निकाला और जौजफ़ को बाँध लिया। लड़कियों को भी घोड़ों पर बाँध कर रुदौली की तरफ़ रवाना हो गये।

अनीस का पता नहीं लग पाने से दोनों हवेलियों में एक बार फिर कोहराम मच गया। प्रताप सिंह, लुत्फ़ो और कनक भी बहुत निराश और दुखी हुए और मन-ही-मन मुदकीपुर छावनी जाकर अनीस अहमद को छुड़ा लाने के मंसूबे बनाने लगे।

16

रहमत का तेरी मेरे गुनाहों को नाज़ है।
बन्दा हूं जानता हूँ तू बन्दानवाज़ है।

नवाब गंज के ताल्लुकेदार मुहम्मद अली शाह के किले में अर्द्धरात्रि को महफ़िल जमी हुई थी। चार सुन्दरियाँ केवल कटि वस्त्र पहिने, अंग-प्रत्यंगों का संचालन कर अपनी नृत्य-कला का प्रदर्शन कर रही थीं। चारों अपनी भाव-भंगिमा से बारम्बार शाह का ध्यानाकर्षण करना चाहती थीं। मुहम्मद अली शाह

मदिरा का सेवन तो नही करता था किन्तु नवयौवनाओं के चंचल नेत्र, नग्न उन्नत उरोज और इठलाते नितम्ब उसे मदहोश करने के लिये पर्याप्त थे। काफ़ी देर तक नृत्य चलते रहने के बाद मुहम्मद अली ने अपने गले से मोतियों का कठा उतार कर एक रूपसी की ओर इशारा किया। रूपसी उसके समीप आ घुटनों के बल बैठ गई और मुहम्मद अली ने कंठा उसके गले मे पहिना कर ताली बजाई तो नृत्य संगीत एकदम बन्द हो गया और तीनों अन्य नर्त्तकियाँ व सभी साजिन्दे कक्ष से बाहर खिसक गये।

"तो तुम्ही आई हो जैसलमेर से लताफ़त जान के?" शाह ने उसे ऊपर खीचते हुए पूछा। "जी आलीजाह, वो मेरी फूफी हैं।" हसीना के एक एक शब्द से मोती झड़ रहे थे। "क्या नाम है तुम्हारा?" "मुझे गुलाबो जान कहते हैं, हजूर!"

मोहम्मद अली ने उसे अपने पार्श्व में बिठाया तो गुलाबो चैती गुलाब सी खिल गई। उसे गोदी में भरकर मुहम्मद अली शैय्या की ओर ले चला तो गुलाबो ने भी निढाल होकर पूर्ण आत्म-समर्पण कर दिया। उसके मदमाते यौवन ने शाह का अंग-अंग मादकता से भर दिया और उसने गुलाबो की कोमल गुलाबी देह पर जहाँ तहाँ बीसियों चुम्बन जड़ दिये। गुलाबो भी लता की भाँति शाह से लिपट-लिपट गई और शेष रात्रि में दोनों मधुर-मधु में सराबोर हो दीन दुनिया से बेख़बर हो गये मानो विधाता की सम्पूर्ण सृष्टि उनके भुज बन्धन में समा गई हो!

पौ फटने को ही थी कि शाह ने गुलाबो को एक बार और आलिंगन बद्ध कर उसके गुलाबी अधरो पर अधर रख दिये और याचना की मुद्रा मे उसकी आँखों में आँखें डाल दीं। "नही आली मुकाम, आप थक गये होंगे, आपको दिन भर अपने इलाके का काम भी तो देखना होगा!"

"गुलाबो, तुम्हारे पहलू में थकान तो कोसों दूर भाग जाती है, अभी ज्यादा देर भी तो नही हुई!"

"यह नाचीज तो हुजूर की मर्ज़ी की गुलाम है, आलीजाह!"

और मुहम्मद अली ने उसको और भी कस कर अंक मे भर लिया। तभी किले में हड़कंप सा मच गया। वह तुरन्त शैया से उठा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहन कर खंजर हाथ मे लिये कक्ष से निकला ही था कि एक दासी ने झुककर अभिवादन किया और सूचना दी, "हुजूर गुस्ताखी मुआफ़ हो, ग़ज़ब हो गया!"

"क्या हुआ नन्नो, जल्द बता क्या बात है?" अधीर होकर शाह ने पूछा।

"अलीजाह साहबजादी जेबुन्निसा और रईसा किले से ग़ायब हैं!" एक साँस में बोल गई नन्नो।

"क्या बकती है, किले से ग़ायब है? यह नही हो सकता। अरे यही कहीं होंगी।" शाह ने कहा।

"नही सरकार, हर जगह तलाश कर लिया गया है, कही पता नही लगा उनका !"

"अरे अपने कमरे मे सो रही होंगी ।" मुहम्मद अली ने स्वयं को तसल्ली देने के लिये कहा, हालांकि उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई थी ।

"नही आलीमुकाम, वे दोनो मेरे सामने हिना मंजिल में अपने कमरे से मुँह अँधेरे निकली थी और हस्ब दस्तूर बगीचे में टहलने के लिये उतरी थी ।"

"तो बगीचे मे ही कही होंगी ।"

"नही हुजूर, बगीचे का चप्पा-चप्पा देख डाला है। उनका वहाँ नामोनिशान भी नही है । बगीचे की दीवार पर कोई कमंद लगाकर चढ़ा है ।"

"कमंद लगाकर चढ़ा है ! अरे क्या बहकी-बहकी बातें कर रही है नन्नो ! तुझे क्या पता कि कोई कमद लगाकर चढ़ा है ।"

"हाँ आलीजाह, इलाहीबख्श ने दीवार पर चढ़कर देखा है कि एक गोह वहाँ जमी हुई है और रस्सी बगीचे के अन्दर की तरफ लटक रही है। रस्सी तो हुजूर मैंने खुद भी देखी है । फिर बगीचे का पिछवाड़े का दरवाजा भी चौपट खुला पड़ा है ।"

मुहम्मद अलीशाह एक बारगी तो घबरा गया, फिर नन्नो से कहा । "चल हम खुद देखते हैं ।" नन्नो अदब से शाह के पीछे-पीछे उतर कर बगीचे में पहुँची । वहाँ बेगम के साथ क़िले के अधिकांश कर्मचारी उपस्थित थे । मुहम्मद अली ने रस्सी देखी फिर चौपट खुला दरवाजा भी···। सभी औरतें रो रही थी और बेगम तो अर्द्ध विक्षिप्त की तरह रो-रोकर कभी रस्सी को खीचती, कभी भागकर दरवाजे की ओर देखती । सेविकाएँ उसे पकड़े-पकड़े इधर से उधर फिर रही थी । मुहम्मद अली को देखते ही बेगम और भी फूट-फूटकर रोने लगी । "हाय आलीजाह, यह दिन देखने को मैं जिन्दा ही क्यों रही ! कितना बुखार चढ़ा फिर भी मैं बच गई, ख़ुदा-तअला मुझे क्यों बचा लिया···!" फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी । मुहम्मद अली ने तसल्ली दी, "बेगम ज़रा सब्र करो, हिम्मत रखो । हम अभी उन्हें तलाश कराते हैं । रोने से क्या वो मिल सकती हैं ?"

तुरन्त शाह ने अपने घुडसवारो को पीछा करने का आदेश दिया । क़रीब 30 घुडसवार भिन्न-भिन्न दिशाओ मे रवाना हो गये । इफ्तिकार अली को उसने आदेश दिया कि कुछ हरकारे आसपास के ताल्लुकेदार और ज़मीदारों के पास भेज कर उनसे भी लड़कियो को तलाश करने में मदद देने के लिये कहा जाये ।

यह सब इन्तजाम करने के बाद भी मुहम्मद अली बहुत चिन्तित था । उसके इतने बड़े और इज्ज़तदार खानदान को बट्टा लग जायेगा । एक उसी की बेटी थी और दूसरी सगी बहिन । दोनों लड़कियाँ समवयस्क और अत्यन्त रूपवती थी । कभी वह ज़रा सी आहट पाकर शुभ समाचार सुनने के लिये उठ खड़ा होता और

कभी स्वयं घोड़े पर सवार हो लड़कियों को ढूँढ़ने के लिये जाना चाहता। किन्तु अन्त में उसने क़िले में रहकर ही उनकी प्रतीक्षा करना उचित समझा।

17

"हुज़ूर मेरा बेटा नीलू बहुत ग़रीब है, बिलकुल बेक़सूर है, उसे छोड़ दीजिये, सिरकार—वो गाय का बच्चा है, उसको कोई बदमास फँसा रहा होगा।"

"अरी अम्मा, वो बदमाश है, गुण्डा है, उसे हम नहीं छोड़ सकते।"

"अरे हज़ूर तुम माई-बाप होकर झूठ बोलते हो—मेरा बेटा बहुत भोला है…।"

"ए अम्मा ! दरोग़ा जी से कैसे बात कर रही है जा बाहर निकल।" एक सिपाही ने कहा।

"नईं हज़ूर दरोग़ा जी तुम को भगवान बड़ा लाट बना दे, मेरे बच्चे को छोड़ दो। तुम्हारे पैरों पड़ूँ, छोड़ दो—मेरा नीलू बहुत भोला है सिरकार। उसने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। हज़ूर नीलू को छोड़ दो, फिर देखो कल परसों तक बड़े लाट बनते हो या नहीं—ग़रीब बुढ़िया की दुआ ज़रूर फलेगी—ज़रूर।" बुढ़िया हाथ फैलाकर दुआ करने लगी। दरोग़ा और सिपाही मुस्कराने लगे, बुढ़िया काफ़ी देर तक गिड़गिड़ाती रही लेकिन जैसे तैसे करके सिपाहियों ने उसे बाहर कर दिया। वह बाहर बैठी भी घंटों बड़बड़ाती रही और अन्त में विवश हो रोती-बिलखती चली गई। यह नीलू मल्लाह की माँ थी। नीलू की गिरफ़्तारी की ख़बर सुनते ही बुढ़िया यहाँ आई और उसे छोड़ने के लिये गिड़गिड़ाती रही थी।

दरोग़ा तहव्वर ख़ाँ ने नगला मुर्द से लाई गई तीनों बेहोश लड़कियों को ज़मींदार की हवेली में भेज दिया और औसफ़ की ख़बर लेने लगा। अन्य अपराधियों की तरह औसफ़ ने भी प्रारम्भ में कुछ भी बताने से इनकार किया। दरोग़ा ने उसको भी तोबरा बाँधकर, कोड़े लगा कर तथा, अन्य कई प्रकार की यातनाएँ दे सच-सच बातें उगलने पर विवश कर दिया। उसने कई [illegible] सूचनाएँ दीं। हर अंग्रेज़ी छावनी में कहीं-न-कहीं से 1-2 लड़कियाँ [illegible] जाती है। वह स्वयं छः मास से यह काम कर रहा है। 4-5 और [illegible]

उनकी जानकारी में, जो यह काम काफ़ी तत्परता से करते हैं। एक लड़की के लिए उन्हें 200 रुपये से 400 रुपये तक मिलते हैं। तीन बेहोश लड़कियों में से दो नवाबगंज के किले से लाई गई हैं तथा एक फरीदपुर के धोबी की लड़की है।

उससे शाहज़ादा अनीस के बारे में भी पूछताछ की गई तो उसने सिर्फ़ यही बताया कि वह मुदकीपुर की छावनी में सुरक्षित है और उसे वहाँ अधिक समय रोके रखने का कोई इरादा नहीं है। शायद दो-चार दिन में उसे छोड़ दिया जायेगा।

जौसफ़ के मकान में सोते हुए युवकों तथा बूढ़े की भूमिका अदा करने वाले से भी कई जानकारियाँ प्राप्त हुईं। वह मकान जौसफ ने तीन साल पहिले बनवाया है। वहाँ 12-14 लड़कियाँ एक-दो दिन के लिए छुपाई गई थीं। कई बार जौसफ़ वगैरह भी कड़े से लटकाए जाकर छुपाये गए थे लेकिन पीछा करने वालों को कभी मालूम नहीं हो सका। इस बार प्रताप सिंह ने ही पहिले-पहिल इस रहस्य से पर्दा हटाया है आदि।

जाँच पड़ताल पूरी होने के बाद दरोगा ने सभी छः अपराधियों को हबीब खाँ की हवेली पर ले जाकर उसके सिपुर्द कर दिया। हबीब खाँ ने अहमद को नौकरी से निकाल कर छोड़ दिया लेकिन शेष पाँच अपराधियों के लिए अपने सिपाहियों को आज्ञा दी, "फिलहाल इन कमीनों को घुप्पी (अँधेरे तहखाने) में डाल दिया जाए और दिन में सिर्फ़ एक बार थोड़ा-सा खाना दिया जाए।" तहव्वर खाँ दरोगा की कारगुज़ारी के लिए हबीब खाँ ने दस अशर्फियाँ इनाम के रूप में दीं और दरोगा शुक्रिया अदा करके चला गया।

बेहोश लड़कियों की नाड़ी-परीक्षा करके हकीम साहब ने एक शर्बत और दवा देकर कहा, "हर घंटे शर्बत के साथ इन्हें यह दवा पिलाते रहो तो उम्मीद है आठ से दस घंटे में इन्हें होश आ जाएगा। बेहोशी की वजह सदमा और साँस घुटना है—शायद इन्हें कोई बेहोशी की दवा सूँघाई गई है।"

लुत्फो, कनक और कई सेविकाएँ लड़कियों की बहुत निष्ठा से सुश्रुषा में लगी थीं। ठीक समय पर दवा पिलाई जाने का पूरा ध्यान रखती थीं। हबीब खाँ बार-बार उनके बारे में पूछताछ करता रहा और प्रताप सिंह भी कई बार आतुरता से उनके विषय में जानकारी लेता रहा।

शाम को लगभग पाँच बजे जेबुन्निसा ने करवट लिया और बड़बड़ाई, "नहीं-नहीं!" फिर आँखें खोलीं और बन्द कीं, फिर एक बार खोलकर उनींदी-सी हालत में बोली, "मैं कहाँ हूँ?" लुत्फो और कनक की बाँछें खिल गईं। वे बड़े प्यार से कहने लगीं, "बहिन, तुम अपनी बहिनों के पास ही हो, बिलकुल फ़िक्र न करो।" वह चारों ओर अर्द्ध-चेतन अवस्था में टुकुर-टुकुर देखती रही। थोड़ी देर

बाद रईसा और शैल बाला भी होश में आ गईं। लुत्फुन्निसा और कनक सुन्दरी ने तीनों को संतरे का रस पिलाया। कुछ देर बाद गरम दूध दिया गया। तीनों लड़कियां जब अच्छी तरह होश में आ गईं तो कनक भागी-भागी हबीब खां के पास गई और कहा, "चच्चाजान उन लड़कियों को होश आ गया है— हकीम जी की दवा बहुत कारगर रही।" हबीब खां खुशखबरी सुनते ही कनक के पीछे-पीछे लड़कियों के पास आया तो प्रताप सिंह भी वहां पहुंच गया था। सभी बहुत उल्लास में थे। पांचों लड़कियों में थोड़ी ही देर में काफ़ी घनिष्टता हो गई। सभी अंग्रेज़ों को कोस रही थी और योजना बना रही थी कि किस प्रकार इनकी तानाशाही का अन्त हो।

जब हबीब खां ने कहा कि इन्हें जल्दी से जल्दी अपने-अपने घरों को पहुंचा देना चाहिए तो कनक और लुत्फ़ो मचल गईं। "नही चच्चा जान, इन्हें कम से कम दो-चार रोज़ तो हमारे साथ रहने दीजिए।" "हां अब्बा हुज़ूर ऐसी भी क्या जल्दी है ? दो-चार दिन बाद भेज दीजिए तो "।" "अच्छा-अच्छा, तुम दोनों तो हमेशा एक ज़ुबान बोलती हो। मैं इनके वालदैन को इत्तिला कराए देता हूँ ताकि वे यह जानकर बेफ़िक्र हो जायें कि लड़कियां यहां हैं।"

हबीब खां ने तुरन्त एक खत मुहम्मद अली शाह को लिखवाया जिसमें दोनों लड़कियों के बारे में पूरा विवरण दे दिया और यह भी लिखा कि हमारी बेटियां उनसे एक ही दिन में इतनी हिलमिल गई हैं कि उन्हे छोड़ने को तैयार नहीं हैं। इसके अलावा आपकी बच्चियों की सेहत के लिए भी 1-2 दिन आराम करना अच्छा रहेगा।

घुड़सवार को यह भी हिदायत दी गई कि वह जल्दी से जल्दी नवाबगंज पहुंच कर मुहम्मद अली शाह को यह खत सौंपे। इसके बाद उसे तीसरी लड़की के बारे में भी फ़िक्र हुई। लड़की धोबी की है यह तो दरोगा ने पता करा लिया था लेकिन फ़रीदपुर में कोई 1-2 धोबी तो हैं नही, वहां तो करीब 50-60 घर हैं उनके। अतः लड़की से ही उसके पिता के बारे में पूछना ठीक रहेगा। पूछने पर मालूम हुआ कि वह धोबी की नहीं बल्कि फ़रीदपुर के ही ठाकुर अनिरुद्ध सिंह की छोटी बहिन है, नाम है शैलबाला। उसे फ़रार करने वालों को वास्तव में यह गलतफ़हमी रही थी कि वह धोबी की लड़की है और ठाकुर के घर कपड़े धोने का काम करती है। हबीब खां को जब यह मालूम हुआ तो वह बहुत खुश हुआ और ठाकुर अनिरुद्ध सिंह को भी तुरन्त एक खत लिखकर भिजवा दिया।

हबीब खां का पत्र मिलते ही नवाबगंज किले में जो मातम छाया था, अब उत्सव में बदल गया। जहां-तहां नए फानूस और कंदील सजाये जाने लगे, शहनाई बजने लगी। सुबह होते ही मुहम्मद अली शाह खुद रुदौली के लिए रवाना हो गया और कुछ ही घंटों में वहां जा पहुंचा। हबीब खां ने उसका खूब स्वागत-सत्कार

किया। जब उसे अपनी लड़की ज़ेबुन्निसा और बहिन रईसा से मिलाया तो उसे बहुत तसल्ली हुई तथा वहाँ उनके रुदौली के परिवारों की बच्चियों के साथ घुल-मिल जाने से उसे और भी अधिक खुशी हुई। उसने प्रताप सिंह का भी बहुत शुक्रिया अदा किया और कहा, "वाकई, बरखुरदार (बेटे) अगर तुम नही होते तो आज हम बर्बाद हो गये होते। न जाने ये बदज़ात फिरंगी इन लड़कियों की क्या हालत बनाते—तुम्हारी सूझबूझ और मेहनत कामयाब हुई। अल्लाह का शुक्र है कि इज्जत बच गई, उसने तुम जैसा फ़रिश्ता इस काम में लगा दिया।" "नही, चच्चा जान! आप फिज़ूल मुझे इतनी इज्ज़त बख्श रहे हैं मैंने तो महज़ अपना फर्ज़ अदा किया है। यह तो क़िस्मत की बात है कि मुझे कामयाबी हासिल हुई।" बड़े अदब से प्रताप सिंह ने कहा।

हबीब खाँ ने मुहम्मद अली को शुरू से आखिर तक का पूरा विवरण सुनाया, लेकिन अनीस अहमद के अभी तक नही मिलने से मुहम्मद अली को भी बहुत फ़िक्र हुई और दुख भी। वह मन ही मन मुदकीपुर छावनी से किसी तरह अनीस को निकालकर लाने की योजना बनाने लगा।

दूसरे दिन प्रातः जब लड़कियो को साथ ले जाने की बात आई तो कनक और लुत्फो ने कहला दिया, "चच्चाजान वैसे तो हम उन्हें कल-परसों तक भेज देते, मगर अब खुद तशरीफ ले आए है तो कम से कम हफ्ते-दस दिन इन्हें अपने यहाँ रखेंगे। बराय मेहरबानी इन्हें आठ-दस दिन यही रहने की इजाज़त···।" "अरे भई वाह! हमें क्या ऐतराज़ हो सकता है और हम इजाज़त देने वाले कौन? इन्हें नई ज़िंदगी तो रुदौली वालों ने ही बख्शी है—मर्जी आए तब तक इन्हें यहाँ रखें और जब मिज़ाज चाहे नवाबगंज भेज दें।" मुहम्मद अली ने बहुत प्यार से कहा। सभी लोग बहुत खुश हुए। हबीब खाँ ने मुहम्मद अली शाह से रुकने के लिए बहुत आग्रह किया लेकिन कुछ ज़रूरी काम-काज की वजह से वह विवश था अतः नवाबगंज के लिए रवाना होने लगा। हबीब खाँ सदर दरवाजे तक उसे बिदाई देने के लिए आया। उसी समय देखता क्या है कि सामने से बढ़े हुए बाल और दाढी मे अनीस अहमद धीरे-धीरे चला आ रहा है। दौड़कर हबीब खाँ ने उसे गोदी मे उठा लिया। दोनों की आँखो मे आँसू छलक आए। मोहम्मद अली को जब मालूम हुआ उसने हबीब खाँ को मुबारकबाद दिया और साहबज़ादे ने जब उसे सलाम अर्ज़ किया तो उसने आशीर्वादो के ढेर लगा दिए। रुकने की इच्छा [illegible]
हुए भी मुहम्मद अली विवश हो नवाबगंज के लिए [illegible] गया।

दोनों हवेलियों में भारी उत्सव मनाया जाने [illegible] नी साल मे दू
बार लौट आई हो। गरीब-अनाथो, साधुओं [illegible] और कपड़े
दिनों तक बाँटे जाते रहे। मज़ारों पर चादरें औ [illegible] गया
हवेलियों के नौकरों को इनाम और मिठाइयाँ बाँट [illegible] स

में इतने व्यस्त थे कि दूसरों को कुछ पूछने का अवसर ही मिलना कठिन हो गया।

अनीस को गोरे सिपाही आँखों पर पट्टी बाँध कर लाए थे और गाँव के पास छोड़ गए थे। उसने थोड़े से समय में अंग्रेज़ छावनी में बहुत कुछ देख लिया था। प्रताप और अनीस ने अँग्रेज़ों के विरुद्ध जंग में शामिल होने का पक्का इरादा कर लिया था। पाँचों लड़कियाँ भी उनका साथ देना चाहती थीं। अनीस और प्रताप ने कप्तान फ्लैचर को अपने हाथों मारने का दृढ़ संकल्प कर लिया था।

18

हवाये तुन्द में मेरा चिराग जलता है।
वो अज़्म रखता हूँ जो हादसों में पलता है।।

दरियावाद के क़िले व हवेली में आज भारी चहल-पहल थी। क़िले के मैदान फ्रान्सीसी सार्जेंट दे'मैले सिपहों को कवायद सिखा रहा था। वहीं एक बड़े कक्ष में मेजर दयूपों जिसे राव बलवंत सिंह ने कर्नल का दर्जा दे दिया था, सेनानायकों को सैनिक प्रशिक्षण दे रहा था। इसमें सबसे आगे की पंक्ति में राव के चार पुत्र और दो पुत्रियाँ बड़ी तन्मयता से रण-नीति के विषय में अध्ययन-रत थे। कर्नल दयूपों भी बड़ी निष्ठा से उन्हें भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में शत्रु से मुकाबिला कर उसे छकाने की युक्तियाँ सिखा रहा था। ये सेनानायक परेड का पूरा प्रशिक्षण ले चुके थे और अब भी या तो रोज़ाना स्वयं परेड करते थे या सिपाहियों को सिखाते थे।

उधर हवेली में दास-दासियाँ फुर्ती से इधर से उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। सभा-कक्ष को सजा-सँवार कर उसका रूप निखार दिया गया था। राव बलवन्त सिंह ने भी सारे प्रबन्ध का स्वयं निरीक्षण कर लिया था। आज 10-12 उमराव उसके अतिथि थे और सभा-कक्ष में राव से मन्त्रणा कर रहे थे। मौलवी ने कहा, "राव साहब, वाक़ई आपका हौसला क़ाबिले तारीफ़ है कि इतने जोखिमों के बावजूद आपने पूरे जोश से तैयारियाँ कर ली हैं। आम अवाम में भी आपने जागरूकता पैदा करने में कोई कसर नहीं रखी है।"

"मौलवी साहब यह बात आपकी राहबरी और दुआओं का नतीजा है वर्ना

यह नाचीज़ किस क़ाबिल है।"

"नहीं राव साहब, यह सब आपकी हिम्मत, जोश और वतन-परस्ती की वजह से है। अगर आप जैसे हिन्द में 100-50 उमराव भी पैदा हो जायें तो इन फ़िरंगियों की तो मजाल ही क्या कोई दुनिया की ताक़त हमारे ऊपर हुकूमत नहीं कर सकती।"

राजा जैलाल सिंह, शराफ़ुद्दौला, सम्मू खां, अली नक़ी खां, महाराज बाल किशन आदि सभी उपस्थित सामन्तों ने भी मौलवी की बात का समर्थन किया और राव की भूरि-भूरि प्रशंसा की तभी किसी ने कक्ष का पार्श्व-द्वार धीरे-से खटखटाया।

"अन्दर चले आओ!" राव ने आज्ञा दी।

एक सेवक ने आकर कहा, "हुज़ूर एक बूढ़े-बुजुर्ग राजा आपसे मुलाक़ात की आज्ञा चाहते हैं। वे अपने दो सरदारों के साथ सिंह-द्वार पर रोक दिए गए हैं। वे कहते हैं कि हम चुल्हावली के राजा हैं, और राव साहब से ज़रूरी काम से मिलना चाहते हैं।

"चुल्हावली के राजा! बिना किसी इत्तिला के! तुमने उन्हें खुद देखा है? कहीं कोई फिरंगी तो नहीं आ धमका वेश बदल कर?"

"नहीं अन्नदाता, मैंने खुद देखा है, उनका रंग ज़रूर बहुत गोरा है, मगर फिरंगी नहीं हैं। वे खुद बहुत कम बोलते हैं, लेकिन सरदारों ने ही बताया है कि राव साहब से बहुत ज़रूरी काम है।"

राव पेशोपेश में थे, तभी मौलवी ने कहा, "कोई मुज़ाइका नहीं, चुल्हावली का राजा हमारा बहुत खैरख्वाह है। अगर सचमुच राजा पृथ्वी सिंह है तो ठीक, लेकिन अगर कोई धोखा है तो तीनों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।" फिर सेवक से कहा, "उन्हें बाइज़्ज़त यहाँ ले आओ, सिर्फ तीन लोगों को।"

"जी हुज़ूर, उनके बाक़ी सिपाहियों को तो गणेश-द्वार पर ही रोक दिया गया है।"

सभी उमराव राजा पृथ्वी सिंह का बेसब्री से इन्तज़ार करने लगे और राव उसके स्वागत के लिए कक्ष से बाहर दालान को पार कर सहन के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। पद-चाप उत्तरोत्तर पास आती जा रही थी जैसे ही राजा पृथ्वी सिंह क़रीब आया, राव ने उसका झुक कर अभिवादन किया। राजा ने भी झुककर ही उत्तर दिया। बलवन्त सिंह ने बड़े स्नेह से कहा, "अहो भाग्य राजा साहब, लेकिन बिना सूचना के ही···।" बीच में ही एक सामन्त ने कहा, "हुज़ूर राजा साहब ने सोचा आप उनकी आवभगत में फिज़ूल परेशान होंगे, इसलिए बे-तकल्लुफ़ी से चले आए।"

"वाह खूब!" राव ने कहा, "आपकी आमद से यह गरीबखाना पाक हो

था। आइए आपकी मुलाक़ात कुछ दूसरे उमरावों से भी करा दूं। यह एक इत्ति-फ़ाक ही है कि आप बहुत ही अच्छे मौक़े पर तशरीफ़ लाए हैं।" और वह राजा को सभाकक्ष में ले गया। पृथ्वी सिंह ने झुक कर सबका अभिवादन किया और सभी सामन्तों ने खड़े होकर उत्तर दिया। राजा पृथ्वी सिंह के आने से सब बहुत प्रसन्न थे। मौलवी ने संक्षिप्त में यहाँ सबके एकत्रित होने का कारण बताया और कहा, "आपसे भी मैं दो माह पहिले मिला था और कुछ तैयारियाँ करने की गुज़ारिश की थी।"

"जी हाँ", राजा ने कहा, "वही तो बताने हाज़िर हुआ हूँ।"

"उफ़!" राजा बलवन्त सिंह ने कहा, "जनाब का गला बहुत खराब हो रहा है, इसीलिए शायद बहुत कम बोल रहे थे।"

"जी हाँ, जी हाँ!" कह कर राजा पृथ्वी सिंह ने अपनी डाढ़ी खींच कर एक तरफ़ रखी ही थी कि सभी सामन्तों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच ली और राजा व उसके साथियों को चारों तरफ़ से घेर कर खड़े हो गए। "कौन हो तुम?" मौलवी ने कड़क कर पूछा। राजा पृथ्वी सिंह ने अपनी मूँछें भी खींच कर अलग रख दी तो सभी उमराव दंग रह गए। उन्होंने अपनी तलवारें तुरन्त म्यान में रख कर आगन्तुक के क़दमों में रख दी तथा आँखें झुकाकर बड़े अदब से सब एक साथ बोले, "आली मुक़ाम, गुस्ताखी मुआफ़ फरमायें। महज़ ग़लतफ़हमी की वजह से यह कसूर बन पड़ा है, हम लोग बहुत शर्मिन्दा हैं।"

बेगम मन्द-मन्द मुस्कराते हुए बोली, "वाह वाह! हमें यक़ीन हो गया कि हमारे उमराव अपने फ़र्ज़ को किस मुस्तैदी से अंजाम देते हैं। इसमें शर्मिन्दा होने की तो कोई बात ही नहीं, दरअसल गलतफहमी तो हमने ही पैदा की थी।"

राजा जैलाल सिंह ने कहा, "मलका-ए-आलिया, आज ये बूढ़ी तजुर्बेकार आँखें भी धोखा खा गईं कि अपने मालिक को भी नहीं पहिचान सकी, हुज़ूर कमाल···।"

"अजी राजा जी, आपने ही तो बताया था न, वही कमरुद्दीन, यह उसी का कमाल है।" बेगम ने कहा।

"वाकई गज़ब हो गया मलका, मैं तो समझा था कि आज कोई फ़िरंगी आ धमका है!" यह मौलवी था।

इसी तरह कुछ देर मज़ाक चलता रहा, उसके बाद सब गंभीरता से विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करने लगे।

बेगम ने कहा, "जैसा कि आप सबको मालूम है हमारे पहिले खत के जवाब में चीफ़ कमिश्नर जैक्सन को फटकार आई और छत्तर मंजिल और क़दम रसूल खाली करा लिया गया था, लेकिन दूसरे खत का जवाब अब आया है और कतई

इन्कार किया है। वे बादशाह सलामत को लखनऊ भेजने को तैयार नहीं हैं और न ही वे अवध की सल्तनत वापिस देना चाहते हैं। वैसे उम्मीद तो पहिले से ही नहीं थी। अब तो एक ही रास्ता बचा है। मलका विक्टोरिया को एक खरीता इंगलिस्तान भेजकर इल्तजा की जाए।"

शरफ़ुद्दौला ने कहा, "जी मलका-ए-आलिया, उम्मीद तो बहुत कम है लेकिन कोशिश ज़रूर करनी चाहिए। अगर हुक्म हो तो खत का मज़मून बना लिया जाए।"

बेगम ने अपने साथ आए एक सामन्त की तरफ़ देखा तो बरक़त अहमद ने एक खत का मज़मून पढ़कर सुनाया, जिसकी सभी ने सम्पुष्टि की और तय हुआ कि बरक़त अहमद ही बुज़ुर्ग बेगम साहबानो के साथ यह खत लन्दन ले जाकर मलका के हुज़ूर में पेश करें और उनसे इल्तिजा करें कि अवध के साथ बेइन्साफ़ी को जल्द दूर किया जाए।

"यह खत तो महज़ खाना-पूरी के लिए भेजा जा रहा है। मुझे कामयाबी की क़तई उम्मीद नहीं। मगर अब वक़्त आन पहुँचा है कि हम पूरे मुल्क में आज़ादी के लिए जिहाद छेड़ें क्योंकि जब तक एक भी रियासत या इलाक़े में फिरंगियों का बोलबाला रहेगा, हिन्द की आज़ादी को हमेशा खतरा बना रहेगा। अब ये अवध के लिए नहीं, बल्कि पूरे हिन्द के लिए जंग होगी।"

"जी मलका-ए-आलिया", शरफ़ुद्दौला ने कहा, "अब तो वाकई पूरे हिन्द के लिए जंग छेड़नी है।"

"आली मुकाम, मेरे ख्याल से एक एक खत नाना साहब और रानी झाँसी को भी इरसाल फ़रमाया जाए तो बेहतर होगा।" यह सम्मू खाँ था।

"हाँ सम्मू खाँ, बिलकुल दुरुस्त!" बेगम ने कहा, "इन्हीं को नहीं बल्कि पूरे हिन्दोस्तान के वालिया-मुल्क रईसों (स्वतन्त्र शासकों) को भी खत भेजे जाएँ और शहंशाह हिन्दुस्तान को भी। महाराजा बाल किशन तुम एक फ़ेहरिस्त तैयार करो, जिसमें उन रईसों के नाम हों जो आज़ादी के दीवाने हैं और अंग्रेज़ों से नफ़रत करते हैं।"

"जी अच्छा मलका-ए-मुअज़्ज़मा, मैं आज ही सबके मशविरे से वह फ़ेहरिस्त बना लेता हूँ।"

"शरफ़ुद्दौला, तुम खत का मज़मून तैयार करो जो इन रईसों को भेजा जाएगा। आज यहीं रुक कर राव साहब की मेज़बानी का भी तो फ़ायदा उठाया जाए।" बेगम ने कहा, "कई अहम मामलों पर भी ग़ौर करना है।"

"ज़हेकिस्मत, मलका-ए-आलिया," राव ने "इस ग़रीबखाने
लाकर हुज़ूर ने जो इस नाचीज़ को इज़्ज़ हमेशा याद
आली मुकाम, अगर मर्ज़ी हो तो कुछ देर का भी

"आप लोगों में से हमें जो भी मदद कर सकते हैं, चाहे पैसे से चाहे मेहनत से, चाहे जंग में शामिल होकर, वे अपने हाथ खड़े कर दें।" बेगन ने कहा। सारी भीड़ में हर व्यक्ति के हाथ खड़े देखकर बेगम ने सबकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि जो हमारी फ़ौज में शामिल होना चाहते हैं वे महलों के पीछे हमारे फ़ौज बख्शी के दफ़्तर में अपना नाम दर्ज करा दें और जो पैसे या ज़र व जेवर से इमदाद देना चाहें वे हमारे दफ़्तर खास में आकर पैसा या चीजें वगैरह जमा करा दें," अन्त में बेगम ने कहा,

"यह मुल्क की आज़ादी का सवाल है और आज़ादी में ही हम सबकी बेहबूदी है। शुक्रिया मेरे साथियो, शुक्रिया!"

"बेगम अलिया ज़िन्दाबाद, इंग्रेज़ कम्पनी मुर्दाबाद!"

भीड छँटने लगी थी लेकिन मीर बख्शी के दफ़्तर में तथा दफ्तर खास में कई दिनों तक लोगों के झुण्ड के झुण्ड आते रहे और या तो अपना नाम दर्ज करा गये या रुपया पैसा और जेवर वग़ैरह जमा करा गये।

यह सब करके भी बेगम को तसल्ली नहीं हुई। वह रात दिन काम में लगी रहती। दरबार के ज़रूरी कागज़ात देखती और जब मोर्चे बन्दी का अवसर आया तो बहुत तत्परता से आदेश देने लगी। ऐसा लगता था कि उसमें कोई दैवी शक्ति आ गई हो। वह मुश्किल से 3-4 घंटे सोती। उसके सामन्त और सेनापति वग़ैरह उसकी इस असाधारण क्षमता पर दांतों तले उँगली दबाते और प्रोत्साहन पाते।

22

ग़ैर फिरता है लिये यूँ तेरे खत को कि अगर
कोई पूछे कि ये क्या है तो छुपाये न बने।

चीफ कमिश्नर के जासूस जब बेगम की गतिविधियों की खबरें उसे लाकर देते तो उसका कलेजा मुँह को आ जाता। अस्वस्थता के कारण वह कमजोर तो था ही, अनिष्ट की आशंकाओं ने उसकी क्षीणता में और भी वृद्धि कर दी। डाक्टरों ने उसे आराम करने पर ज़ोर दिया तो वह मार्टिन गब्बिन्स, वित्त आयुक्त की अध्यक्षता में पाँच सदस्यों की एक अस्थाई परिषद् बनाकर अवकाश पर चला गया। वह स्वयं छावनी छोड़कर रेजीडेन्सी में रहने लगा था और अपना मुख्यालय

भी यहीं ले आया। यद्यपि गब्बिन्स तथा कुछ दूसरे अधिकारियों का विचार था कि खुला विद्रोह होने से पूर्व ही देशी सेनाओं से हथियार डलवा लिए जायें तथापि हेनरी ने ऐसा करके आन्दोलन को समय से पूर्व ही आरम्भ हो जाने देने की मूर्खता नहीं की। जब वह अवकाश पर चला गया तो परिषद् ने उसके इस निर्णय को बदल कर सिपाहियों से हथियार डलवाने का निश्चय कर लिया। हेनरी को मालूम होते ही उसने अपने चिकित्सकों की सलाह के विरुद्ध पुनः कार्य-भार सम्भाल लिया और परिषद् को भंग कर दिया।

रेजीडेन्सी और मच्छी भवन का नगर से सम्पर्क बिलकुल कट गया था लेकिन हेनरी ने गुप्तचर विभाग को पुनः व्यवस्थित किया तथा गुप्तचरों को और भी प्रभावी ढंग से काम करने के लिये प्रशिक्षण और प्रोत्साहन दिया। इस विभाग को मार्टिन गब्बिन्स के अधीन रखा था। यद्यपि इस विभाग में बहुत से योग्य गुप्तचर थे तथापि बेगम के सैनिकों के घेरे से बच निकलना उनके लिये टेढ़ी-खीर थी। एक दिन मेजर गॉल को इलाहाबाद से सम्पर्क स्थापित करने के लिये भेजा गया। कनक सुन्दरी उसी इलाक़े में मदनसिंह के साथ गश्त पर थी। मेजर की घबराहट उसकी नजर से छिपी नहीं रह सकी अतः उसने तुरन्त अपने सिपाहियों को उसे रोकने के लिए इशारा किया। पाँच सिपाहियों ने उसे सामने से रोककर पूछा, "कौन हो तुम?" तो मेजर बगलें झाकता हुआ बोला, "टोडरमल, सूबेदार —एक बागी!" कनक ने कड़ककर कहा, "हमारे यहाँ बाग़ियों के लिए कोई जगह नहीं!" मेजर चक्कर में पड़ गया क्योंकि अंग्रेज़ी सेना में बेगम के आदमियों को 'बाग़ी' कहते थे लेकिन वे स्वयं को बागी न कहकर 'हिन्दुस्तानी सिपाही' कहते थे। कनक की आवाज़ सुनते ही मेजर गॉल ने अपना घोड़ा पीछे की तरफ मोड़ना चाहा मगर कनक पहिले ही सावधान थी। इससे पहिले कि मेजर की पिस्तोल उस पर गोली चलाती कनक ने उसके सीने पर गोली दाग दी। मेजर घोड़े से गिर पड़ा और कनक के सिपाहियों ने उसका भालों से काम तमाम कर दिया। जब तक मदनसिंह उधर पहुँचा सारा मामला शान्त हो चुका था।

एक दो दिन बाद ही एक सिपाही रेजीडेन्सी से कानपुर के लिए रवाना किया गया। मदनसिंह के नायक रामसिंह ने उससे पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"बेगम कोठी, मैं मलका-ए-आलिया का ख़ास खादिम हूँ।"

"तो बेगम कोठी से इधर कहाँ गये थे?"

"इससे तुम्हें मतलब? मुझे मलका-ए-आलिया ने भेजा था।"

"हूँ, तो मलका-ए-आलिया ने कुछ काम भी तो बताया होगा!"

"काम! काम, हाँ वह जासूसी का काम था।" कुछ घबराते हुए सिपाही ने कहा।

"अच्छा अपनी बन्दूक हमारे हवाले करो !"

"बन्दूक, बन्दूक ! नही ये नही दे सकता ।"

तभी मदनसिंह वहाँ आ पहुँचा और उससे बन्दूक छीन लेने की आज्ञा दी। उसकी तलाशी ली गई और जब बंदूक की नली में कानपुर के अधिकारी के लिए लिखा पत्र मिला, उस सिपाही को गिरफ्तार कर लिया गया।

नायक रामसिंह ने कहा, "तुम मलका के खास खादिम हो न ! तुम्हें उन्ही के पास भेजे देते हैं और उसे बेगम कोठी की जेल की घुप्पी में क़ैद कर दिया गया।

कुछ दिनो बाद ही एक बुढ़िया भिखारिन के जैसे चिथड़े पहिने शहर की तरफ जा रही थी। दरियाबाद के सबसे छोटे कुमार अरविन्द को कुछ सन्देह हुआ तो उसने पूछा, " तुम कहाँ जा रही हो माँ ?"

"अरे बेटा, जहाँ पेट भरने को दो दाने मिलें वही जाती हूँ, बेटा पेट की आग बुरी होती है !" कराहते हुए वृद्धा ने कहा।

"लेकिन अम्मा तुम इधर कहाँ से आ रही हो ?"

"इधर, इधर बेटा गोलियों का सिकार बनने, अब जी कर करना भी क्या है ! बेटा यहाँ भी खूब चक्कर लगाये मुई एक भी गोली मुझे नसीब ना हुई—अब भूख से बेदम हो गई हूँ ।" कहते-कहते बुढ़िया गिर पड़ी। अरविन्द ने समझा कि उसे मूर्च्छा आ गई है, अतः पानी मँगवाया। जैसे ही बुढ़िया को पानी पिलाने के लिए एक सिपाही ने छुआ वह चौककर बड़ी फुर्ती से बैठ गई। कुमार अरविन्द को सन्देह हुआ और उसने उसकी तलाशी लेने का संकेत किया। वृद्धा ने बहुत विरोध किया लेकिन उसके वस्त्रों मे छुपा लखनऊ के सेठ मोहनलाल के नाम लिखा एक पत्र मिला। बुढ़िया को तुरन्त शाही महल की जेल में भेज दिया गया।

सिपाही बोधनसिंह शहर की तरफ़ से लौट रहा था तथा पैदल सेना की पंक्ति से बेधड़क निकला चला आ रहा था कि अनीस अहमद और नवाबगंज के ताल्लुकेदार की पुत्री ज़ेबुन्निसा को कुछ सन्देह हुआ अतः अनीस ने कड़ककर पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

"हजूर, राम रतन !"

"कहाँ जा रहे हो इधर ?"

"हजूर इंग्रेजी फौज में जासूसी करने ।"

"अच्छा ! किसने भेजा है तुम्हें ?"

" ——————"

"किसने भेजा है !"

"हजूर राजा साहब ने···।" घबराता हुआ सिपाही बोला। अनीस ने तुरन्त

आज्ञा दी, "इसकी मुश्कें बाँधकर तलाशी लो।"

बोधनसिंह की तलाशी लेने पर एक पत्र मिला जैरामदास मोदी का। उसने पत्र मे लिखा था कि रात को किसी न किसी तरह अंग्रेजी छावनी में रसद पहुँचा दूँगा। बोधनसिंह को अनीस ने तुरन्त जेल भिजवा दिया और अपने मित्र अरविन्द को सारा हाल बताया। अरविन्द अपने बड़े भाई कुमार आदित्य और भतीजे कुमार अदम्य के साथ जैराम दास मोदी की खबर लेने पहुँचे, साथ मे दस-पन्द्रह सिपाही भी थे। जैराम दास सिपाहियो को देखकर कॉप गया। आदित्य ने जाते ही कड़क कर कहा, "क्यों बे गद्दार, फिरंगियों के गुलाम, तेरी ये मजाल!"

"हजूर मैंने कुछ नही किया!"

"और ये खत तेरे बाप ने लिखा है या तूने?" खत निकालकर दिखाते हुए अरविन्द ने कहा।

मोदी काँप रहा था। वह सोच भी नही सकता था कि इतनी जल्दी भेद खुल जायेगा। अरविन्द और अदम्य ने मोदी की लात और घूंसों से खूब अच्छी तरह पूजा कर दी। सिपाहियो ने उसकी पूरी दुकान लूट ली।

"ऐसे क़मीने गद्दारों का शहर में कोई काम नही! इसे फ़ौरन गिरफ्तार करके जेलखाने भेज दिया जाये। मोदी बहुत गिड़गिड़ाता रहा लेकिन कुमार आदित्य ऐसे संगीन मामलों में किसी प्रकार की रू-रिआयत बरतने का क़ायल नही था। कुमार अदम्य के नेतृत्व में उसे महल खास की तरफ़ ले जाया गया। कुछ औपचारिकताएँ पूरी करके उसे जेल के तहखाने में डाल दिया गया।

अरविन्द ने ठाकुर अनिरुद्धसिंह की बहिन शैलबाला व उसके साथ चार गुप्तचर सिपाहियों को सेठ मोहनलाल की दूकान के आसपास रहकर उसकी गति-विधियों का पता लगाने के लिये छोड़ दिया। वह स्वयं अन्य आवश्यक कार्यों में व्यस्त हो गया।

जब हेनरी लारेन्स को ज्ञात हुआ कि उसका एक भी जासूस वापिस नही लौटा और मेजर गॉल को मार डाला गया तो उसे बहुत निराशा हुई। उसे अब अच्छी तरह समझ में आ गया था कि उसे एक बहुत ही सतर्क और साधन-सम्पन्न बलशाली शत्रु से मुकाबिला करना है। वह घेरा डालने वाली सेना की शक्ति का ठीक-ठीक अनुमान लगाना चाहता था। उसको सूचना मिली कि उसमें दो पैदल रेजीमेन्ट, आठ स्थानीय अवध-रेजीमेन्ट, पन्द्रहवीं अनियमित सेना, कुछ घुड़सवार सेनाएँ, दो सुव्यवस्थित तोपखाने तथा कई ताल्लुकेदारों की बहुत सी निजी फौजें थी। अतः सर हेनरी ने अवध के ही कुछ ताल्लुकेदारों से सहायता लेने का प्रयत्न किया। उसके काफी प्रयास के बावजूद रामनगर का राजा गुरुबख्श सिंह और महमूदाबाद के राजा नवाब अली ने साफ इन्कार कर दिया। वास्तव मे उनकी सेनाएँ पहिले ही बेगम की सेना के साथ मिल गई थी। शाहगंज के एक

बहुत शक्तिशाली ब्राह्मण राजा मानसिंह ने उसे भुलावे में डालने को 'हाँ' तो कर दी लेकिन हृदय से वह स्वतन्त्रता सेनानियों के ही साथ था। महमूदाबाद और रामनगर के राजाओं के साथ अधिकतर धनुर्धारी पासी सैनिक थे जो सुरंग लगाने में विशेष रूप से दक्षता रखते थे।

आसन्न संकट की आशंका, और अपनी अत्यन्त शक्तिहीन स्थिति के कारण अंग्रेज़ अधिकारियों का मनोबल बुरी तरह गिर गया था और वे स्वयं को नितान्त असहाय महसूस कर रहे थे।

23

अब हवाएँ ही करेंगी, रोशनी का फ़ैसला,
जिस दिये में जान होगी, वह दिया रह जायेगा।

बेगम हजरत महल ने रेज़ीडेन्सी और मच्छी भवन की बहुत कुशलता से घेराबन्दी की। उसके पास लगभग दस ताल्लुकेदारों की निजी पलटनों के अलावा तीन पूरे तोपखाने, चार घुड़सवार सेना की रेजीमेन्ट थी। यही नहीं नवयुवक स्वयं-सेवकों की फौजें दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थीं तथा एक महिलाओं की बटालियन थी जिसमें अनेक कोटि की वीरांगनाएँ तथा भारी जीवट की बहुत सी हब्शी युवतियाँ थी। फ़ैज़ाबाद, सीतापुर वग़ैरह से भी बहुत सैनिक आते जा रहे थे तथा लखनऊ में हज़ारों स्वयं सेवकों ने अपनी सेवाएँ इस स्वतन्त्रता-संग्राम के लिये बेगम को समर्पित की थी। ये स्वयं सेवक भी बराबर सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे और सेना का अंग बनते जा रहे थे।

कर्नल बरकत अहमद अवध की सेनाओं का संचालन कर रहा था तथा लेफ्टीनेन्ट कर्नल खान अलीखाँ के नेतृत्व में ताल्लुकेदारो की सेनाएँ थी।

बेगम के सभी सैनिक शत्रुओं पर हमला करने के लिये अधीर हो रहे थे किन्तु बेगम का विचार था कि पहिले उन्हें आतंकित कर एक स्थान पर एकत्रित हो जाने दिया जाये, फिर चारों ओर से लगातार आक्रमण किया जाए। तब तक वह चाहती थी कि हर तरह से तैयारियाँ पूरी कर ली जायें।

हेनरी जो बहुत जोश से सुरक्षा का प्रबन्ध कर रहा था, शत्रु-बल का अनुमान लगाने मे असफल रहा तथा बेगम की तरफ से हमले में ढील से उसका हौसला और भी बढ़ गया। उसने सोचा कि व्यर्थ ही बेगम की फ़ौजों का बढ़ा-चढ़ाकर

बखान किया जा रहा है जब कि उसकी सेनाएँ इतनी कमज़ोर हैं कि घेराबन्दी करने के बाद भी आक्रमण की पहल करने की हिम्मत नहीं कर पा रही। उसने सोचा, इन 'बागियों' पर अपनी अनुशासित और प्रशिक्षित सेनाओं द्वारा हमला करके इन्हें तितर-बितर कर दिया जाए ताकि उपद्रवों से मुक्ति मिले और अंग्रेज़ी सेना के प्रति जनता में विश्वास पैदा हो जाए। इतना योग्य तथा अनुभवी अधिकारी होने के बावजूद वह अब भी तथाकथित 'बागियों' को साधारण उपद्रवियों का गिरोह-मात्र समझे बैठा था। उसने अधिकारियों तथा कुछ गुप्तचरों द्वारा लाई गई सूचनाओं को भी अपने उत्साह में अनदेखी कर दिया तथा आक्रमण की पहल करने की योजना बनाने लगा। उसने कर्नल इंगलिस, मेजर बेंक्स तथा मार्टिन गाब्बिन्स को इस सम्बन्ध में मन्त्रणा के लिए बुलाया और अपना मन्तव्य उनके सम्मुख रखा। हेनरी ने बेगम की विलक्षण संगठन शक्ति, साहस एवं शौर्य तथा उसके विश्वसनीय कार्यकर्त्ताओं की अद्‌भुत लगन, वीरता तथा आत्मबलिदान की आतुरता की तो कल्पना तक नहीं की थी। कोई भी अंग्रेज अधिकारी यह कल्पना कर भी कैसे सकता था ? अवध के पिछले इतिहास में लम्बे समय से यहाँ के शासक तक ने भी कभी ऐसा साहस नहीं किया तो फिर राज्य-श्री से च्युत एक अबला बेगम की तो हस्ती ही क्या थी !

हेनरी ने कहा, "हमें यह बकवास अब और ज्यादा दिन नहीं चलने देनी चाहिए।"

"लेकिन शत्रु-बल का अन्दाज़ा लगाए बगैर हम अपने मुट्‌ठी-भर सिपाहियों से उम्मीद भी क्या कर सकते हैं, सर," यह मेजर बेंक्स था।

"मुट्‌ठी-भर ही क्यों ? आखिर इस बेवकूफ बेगम के पास ही ऐसे कौन से साधन होंगे। फिर अप्रशिक्षित सैनिक हों भी तो हमारे अनुशासित जवानों के सामने क्या उनकी दाल गल सकती है ?"

तभी कर्नल इंगलिस ने कहा, "सर कुछ दिनों पहले तो आपका खयाल था कि शत्रु-बल काफी संगठित और अनुशासित मालूम होता है तथा इससे मुकाबिला करना आसान नहीं, लेकिन आज आपके नज़रियों में अचानक परिवर्तन कैसे आया।

"कर्नल ! इन मामलों में हर मिनट स्थिति में परिवर्तन आता है और उसी हिसाब से हमें अपना नज़रिया बदलना भी ज़रूरी होता है। अब देखिए न बेगम की फ़ौजें एक हफ्ते से घेरा डाले पड़ी हैं लेकिन हमला अभी तक नहीं किया। क्यों ? इसका जवाब हमारे कई सिख अफसर लाए हैं। वे कहते हैं कि बेगम के पास जो कुछ भी नाम-मात्र की फ़ौज है वह भूखे नंगे लोगों का हजूम है, उनके पास हथियार भी बहुत कम हैं। तोपखाने सिर्फ आतंक के लिए हैं, लेकिन उनके लिए गोला-बारूद तक सीमित मात्रा में ही है।" हेनरी ने कहा।

"सर, अगर यह सच है तो हमें जल्दी कार्रवाई करनी चाहिए।" कर्नल इंगलिस ने कहा, "लेकिन गब्बिन्स साहब के जासूस तो बहुत ही खौफ़नाक खबरें ला रहे हैं। क्या हम उनकी खबरों पर यक़ीन नहीं करें ?"

"यक़ीन तो करना चाहिए, लेकिन जासूसी खबरों पर यकीन करने से पहिले यह जरूरी है हम उनमें से छानबीन करके वही खबरें छाँट लें जो सम्भावित लगती हों। इसमें कुछ गप्पें, कुछ अफवाहें और कुछ सही खबरें—सभी मिली-जुली होती हैं। मुझे सिख जासूसों की खबरें सम्भावना के बिलकुल निकट मालूम होती हैं। अगर ये सही नहीं होतीं तो बेगम ने हम पर पिछले हफ्ते ही हमला कर दिया होता।"

"देख लीजिए सर, हमें हर कदम फूंक-फूंककर उठाना चाहिए।" मेजर बैंक्स ने कहा।

"हाँ मेजर, हम चाहते हैं कि एक बार इन उपद्रवियों पर हमला करके इन्हें सबक सिखाया जाए। इस तरह सिर्फ इनके रुआब में आकर घेरे में पड़े रहने से तो हम बहुत परेशान हो जायेंगे! औरतों व बच्चों का बुरा हाल है। हैज़ा भी फैलने लगा है। हो सकता है कुछ दूसरी बीमारियाँ भी हमे घेर लें। औरतों को रहने के लिए उपयुक्त जगह भी नही है। ज्यादा दिन हो गए तो राशन भी कम पड़ने लगेगा।"

"सर, देख लीजिए, मुझे तो हर तरह से मुश्किल ही नजर आती है। घेरे में पड़े रहने से भी और हमले की पहल करने से भी।" कर्नल इंगलिस ने कहा।

"बिलकुल ठीक कहते हो कर्नल इंगलिस, लेकिन अगर हमला करके हम जीत जाते हैं तो आम लोगों को अंग्रेजी सरकार पर विश्वास बना रहेगा, जिससे हमें कई तरह के फ़ायदे होंगे। जनता का सहयोग मिल सकेगा और अवध के बहुत से ताल्लुकेदार भी हमें मदद देने के लिए खुशी से तैयार हो जायेंगे। मुझे पता लगा है कि उनमें से बहुत से विजयी पक्ष में मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अगर हम विजयी हुए, जिसकी कि अब मुझे पूरी उम्मीद है, तो हमें पूरे अवध पर फिर से क़ब्ज़ा करने के लिए बहुत से साधन मिल जायेंगे।

"लेकिन अगर हम हार गए तो ?" यह वित्त कमिश्नर गब्बिन्स था।

"लेकिन अगर हम जीत गए तो ?" चिढ़ाकर हेनरी ने कहा, "हमारी जीत की पूरी सम्भावना है। हो सकता है उपद्रवी लोग पहले ही वार में नौ-दो-ग्यारह हो जायें।"

यद्यपि तीनों अधिकारी हेनरी से पूर्णतः सहमत नही थे, उन्होने अन्त मे यही कहा, "आप जैसा उचित समझें स्वय निर्णय लें, और हमे जो कुछ भी आदेश दिए जायेंगे, उनकी शतप्रतिशत अनुपालना होगी।"

"तो मैं यही चाहता हूँ कि घुट-घुट कर मरने से तो यही बेहतर होगा कि

दुश्मन की ताकत का हमें बढ़ा-चढ़ाकर अन्दाज़ा नहीं लगाना चाहिए और हमने की पहल करनी चाहिए।" कहने को हेनरी कहा तो गया, लेकिन उसके दिल में अभी दुश्मन का आतंक छाया हुआ था। उसे सीतापुर, फ़ैज़ाबाद आदि की घटनाओं का स्पष्ट उदाहरण तथा अपने अत्यन्त चतुर गुप्तचरों का इतनी सतर्कता से पकड़ा जाना दुविधा में डाले हुए था। वह काफ़ी देर तक एकान्त में सोचता रहा और अन्त में हमले की पहल करना ही उसे अधिक श्रेयस्कर लगा।

उसने पास ही चिनहाट नामक स्थान पर अपनी सेनाओं को एकत्रित किया और अपना तोपखाना भी वहाँ जमा दिया। अंग्रेज़ी सेना में हलचल देख बेगम ने भी तुरन्त अपने सेना-नायकों को उनका मुकाबिला करने का आदेश दिया। अधीर सैनिक बड़े उत्साह से रणक्षेत्र की ओर बढ़ चले। दिशाएँ "अल्ला हो अकबर!" और "हर हर महादेव!" के घोष से गूँजने लगीं। कर्नल बरकत अहमद की कमान में पैदल तथा घुड़सवार सेनाओं की चार बटालियन चिनहार की ओर रवाना होने लगी तो बेगम हज़रत महल ने उन्हें सफलता के लिए शुभाकांक्षाएँ दीं। बेगम ने सेना की दो टुकड़ियाँ वहीं सहायता-सेना के रूप में तैयारी की स्थिति में रखीं। चिनहार की ओर गई सेना में कई युवक सेना नायक भी सम्मिलित थे। एक पूरा तोपखाना भी युद्ध क्षेत्र की ओर रवाना हुआ। अंग्रेज़ों की 38वीं तथा 32वीं रेजीमेन्ट तथा घुड़सवार सेनायें तथा तोपखाना पहिले ही वहाँ पहुँच चुका था और हेनरी तथा कर्नल इंगलिस की अध्यक्षता में व्यूह रचना की जा रही थी। सबसे आगे तोपों की पंक्ति स्थापित कर इंगलिस ने इस पंक्ति के पीछे पैदल सेना की एक बटालियन लगाई। तोपों के दाँए तथा बाँए खुले मैदान में घुड़सवार सेना को रखा तथा उन्हीं के पीछे कुछ पंक्तियाँ पैदल सेना की व्यवस्थित की गईं।

कर्नल बरकत अहमद ने आगे तथा दाँए और बाँए तोपों की पंक्ति जमाई और इनकी पीछे की पंक्ति में घुड़सवारों को एक गोलाकार पंक्ति स्थापित की। तोपों के दाँए तथा बाँए पार्श्व को इस प्रकार व्यवस्थित किया कि उनकी आड़ में घुड़सवार सेनायें दोनों तरफ से आगे बढ़कर शत्रु पर दोनों ओर से तथा और भी आगे बढ़कर पीछे से हमला कर सकें।

आरंभिक आक्रमण अंग्रेज़ों ने ही किया, किन्तु बेगम की पल्टनों ने अंग्रेज़ी सेनाओं को लगभग चारों ओर से घेर लिया। तुरन्त अंग्रेज़ी सेना में भगदड़ मच गई। उनके तोपचियों ने तोपों की नालियाँ घुमकर अंग्रेज़ी सेना की तरफ कर दीं। 38वीं रेजीमेन्ट के सैनिकों का बहुत बुरा हाल हुआ। वे कुछ ों और से घेर लिए जाने के सदमे से तथा कुछ जून की प्राण-लेवा बिना गोली लगे झुण्ड के झुण्ड धराशायी हो। देशी घुड़सवा ा सिपाही अवध की सेना में आ मिले छोड़कर
नेन्ट जॉन लारेन्स ने एक बार ो को रो

एकत्रित करे किन्तु असफल रहा। उसने उन तोपचियों पर गोली चलाई, जिन्होंने अंग्रेजी सेना पर ही गोलाबारी शुरू कर दी थी, किन्तु तोपची अपनी जान लेकर मैदान छोड़कर भाग गए। अतः जान लारेन्स भी निराश हो मैदान छोड़ भागा। पल्टन के समस्त सिख अधिकारी, जो बेगम की शक्ति के बारे में हेनरी को ग़लत-फ़हमी में डाल चुके थे, तुरन्त बेगम के स्वतन्त्रता सेनानियों मे जा मिले। हेनरी, इंगलिस आदि अधिकारी भी मैदान छोड़कर अपने प्राण बचाने के लिए सिर पर पैर रख कर भाग गए।

"अल्लाहो अकबर ! हर हर महादेव ! वाहे गुरु की फतह !" के घोष से सारी दिशाएँ गूँजने लगी। युवा सेनानायक अनीस, मदन सिंह, ब्रह्मानन्द आदि हाथियों के झुण्ड में सिंहों की भाँति बची खुची अंग्रेजी सेना पंक्ति में निडर होकर प्रवेश करते और सैकड़ों सैनिकों को मौत के घाट उतार रहे थे। सेनानायकों के भाग जाने से अंग्रेजी सिपाहियों के हाथ पैर शिथिल हो गए और वे अव्यवस्थित भीड़ की तरह किसी भी क्षण मौत की प्रतीक्षा करने लगे।

अन्त में अंग्रेजों की अत्यन्त अपमानपूर्ण पराजय हुई। उनकी समस्त तोपें बेगम की फौज के अधिकार में आ गईं तथा भारी क्षति हुई। इस युद्ध से केवल तीन अधिकारी तथा लगभग सवा सौ सिपाही भाग कर अपनी जान बचा सके।

विजयोल्लास मे लौटते हुए अवध के योद्धाओं के नारे लगाना शुरू किया :—
"हिन्द की आज़ादी जिन्दाबाद, इंग्रेज कपनी मुर्दाबाद !
बेगम हज़रत महल ज़िन्दाबाद !"

इस पराजय से अंग्रेजों का मनोबल बुरी तरह टूट गया। जन-साधारण को भी अंग्रेजों की शक्ति पर बिलकुल भरोसा नहीं रहा। अतः उनकी कठिनाइयाँ और भी बढ़ गईं। मज़दूर कई गुनी ऊँची दर से मज़दूरी माँगने लगे। बहुत से घरेलू नौकर भी पलायन कर गए। इसके अलावा अंग्रेज़ी प्रोमिसरी नोटों का मूल्य भी पिचहत्तर प्रतिशत तक गिर कर बहुत ही कम रह गया। अंग्रेज़ों की इस पराजय के कारण पैठ ही गिर गई थी। हेनरी लारेन्स को इस हार का मृत्यु-पर्यन्त पश्चाताप रहा।

उधर बेगम की सेनाओं मे विजयोत्सव मनाया जाने लगा। सैनिको को इस विजय से भारी प्रोत्साहन मिला। सारे योद्धाओं को विश्वास हो गया कि वे गोरी पल्टन से कभी भी लोहा लेने में पूर्ण समर्थ हैं। जनता में बेगम के प्रति विश्वास और भी बढ़ गया। सभी को यकीन हो गया था कि वह दिन दूर नहीं जब न केवल अवध से एक-एक फिरंगी को खदेड़ दिया जाएगा वरन् आज़ादी का शंखनाद हिन्द की चारों दिशाओं में गूँज उठेगा।

बेगम स्वयं भी दुगुने उत्साह से अपने काम में लग गई। उसने अपनी सेनाओं की, एक दरबार लगाकर, भूरि-भूरि प्रशंसा की और इनाम बँटवाए। उसने कहा

"इससे तेज़ मेरे घोड़े चल नहीं सकते!" कोचवान ने चाल और धीमी करते हुए कहा।

"यू ईडियट! तेज़ चलो, वर्ना हम गोली मार देगा!" कर्नल ने डाँटकर कहा।

"आप गोली मारना चाहते हैं तो मार दीजिए, लेकिन याद रखिए, आपको गोली मारने वाले भी ज़्यादह दूर नहीं होंगे।" कोचवान ने क्रुद्ध होकर कहा, "हम आपकी सेवा करना चाहते हैं लेकिन आप फ़िज़ूल धौंस देकर हमें डरा रहे हैं—अपनी जान की तो खैर मनाते नहीं।"

कोचवान का बदला हुआ पैंतरा देखकर कर्नल का कलेजा मुँह को आ गया। अपनी आदत के अनुसार वह कोचवान को गीदड़ धमकी दे तो गया, किन्तु तुरन्त ही उसे अपनी स्थिति का आभास हुआ। यह वह स्थिति थी, जब आदमी अपनी जान बचाने की व्यग्रता के अलावा दीन-दुनिया की और कोई बात सोच भी नहीं पाता। श्रीमती लैनॉक्स ने जब कोचवान का रोषपूर्ण व्यवहार देखा तो वह मधु-सिक्त स्वर में बोली, "तुम मेरे भाई हो, मैं तुम्हारी बहिन! क्या तुम अपनी बहिन को इतनी आसानी से मर जाने दोगे? उसकी इज्जत लुट जाने दोगे?"

कोचवान भाव-विह्वल होकर पानी-पानी हो गया। उसने और भी तेज गति से घोड़े दौड़ाए। काफ़ी दूर पहुँच चुके थे लेकिन तभी दाँई तरफ के रास्ते से लगभग पच्चीस घुड़सवार अचानक प्रकट हुए और सबको घेरकर खिंची हुई तलवार लिए खड़े हो गए और डाँट कर कहा, "खबरदार! अगर कोई अपनी जगह से हिला तो गोली मार दी जाएगी! कौन है इस गाड़ी में?"

सभी यात्रियों के होश उड़ गए लेकिन कर्नल लैनॉक्स ने कुछ साहस बटोरकर कहा, "हम लोग रहम की भीख माँगते हैं, हमे गोरखपुर चला जाने दो।"

"ह! ह! ह!" अट्टहास कर उनका नायक बोला, "रहम की भीख माँगते हो या जान की! नहीं हर्गिज़ नहीं। सब लोगों को हमारे साथ चलना पड़ेगा। इकबाल अहमद और मूलसिंह इन सबको गाडी से उतार कर तलाशी लो। इन घुडसवारों को गोली मार दो। सब घोड़ों को कब्जे में ले लो!"

घुडसवारों में से एक ने म्यान से तलवार खींची ही थी कि धांय से एक गोली लगी और वह गिर गया। फिर धांय-धांय की आवाज़ के साथ ही समस्त घुड़-सवार मारे गए और घोड़ों को कब्जे मे ले लिया गया।

तलाशी मे दो रिवॉल्वर, कुछ बंदूकें, भाले व तलवार निकले जिन्हें सैनिको ने अपने अधिकार मे लिया। नायक ने सभी स्त्रियो और बच्चों तथा कर्नल को गाड़ी में बैठने का आदेश दिया और गाड़ी को चलाने को कहा। थोड़ी दूर जाकर गाड़ी को दाईं ओर की सड़क पर मोड़ने को कहा ही था कि कोचवान गाड़ी रोक कर

कि हमें पूरे हिन्द में आज़ादी का अलख जगा कर फिरंगियों का नामोनिशान मिटा देना है।

फ़ौजी दरबार में नारे लगा रहे थे :—बेगम आलिया ज़िन्दाबाद!

हिन्द की आज़ादी ज़िन्दाबाद! इंग्रेज़ कम्पनी मुर्दाबाद।

फिरंगी सरकार बदल डालो, सब गोरों को मसल डालो!

24

उतर कर कसरे आला से ज़रा तुम सामने आओ

बुलन्दी से किसी के क़द का अन्दाज़ा नहीं होता।

टप-टप, टपा-टप, टप-टप, टपा-टप'''। एक घोड़ा गाड़ी और दस गोरे घुड़सवार गोरखपुर की सड़क पर तेज़ी से दौड़े चले जा रहे थे। कर्नल लैनॉक्स, उसकी पत्नी और कुछ अन्य अंग्रेज़ी परिवारों की स्त्रियाँ घोड़ा गाड़ी में सवार अपनी जान बचाने के लिए व्यग्र थे। कर्नल ने अपनी पत्नी से कहा, "अब जान बचने की कोई उम्मीद नहीं है। चारों तरफ बाग़ी लोगों ने जाल फैला रखा है। ये बाग़ी पता नहीं कितनी यातनाएँ दे-देकर हमें मारेंगे!"

"मरना तो है ही, क्यों न हम लोग पहिले ही ख़ुदक़शी कर लें!" श्रीमती लैनॉक्स ने घबराते हुए कहा।

"इतनी जल्दबाज़ी में कोई निश्चय कर पाना न तो मुमकिन ही होगा और न मुनासिब।" कर्नल ने कहा, "फिर हमारे मज़हब में ख़ुदकशी करना पाप भी तो है!"

"सुना है इस इलाके में गोरखपुर के पुराने नाज़िम मुहम्मद हुसैन के आदमी अंग्रेज़ों पर बहुत ज़ुल्म ढा रहे हैं। शायद हमारा पीछा भी उसी के आदमी कर रहे हों।" यह श्रीमती लैनॉक्स थी।

"ए कोचवान! घोड़ा और तेज़ चलो, जितनी तेज़ रफ्तार से चल सकते हो, चलो।" कर्नल ने कहा।

"लेकिन आपको जाना कहाँ है? इस तरह तो घोड़े थक जाएंगे और हम कहीं भी नहीं पहुँच पाएँगे!" कोचवान ने कहा।

"तुम चले चलो, एकदम तेज़, समझा!"

"इससे तेज़ मेरे घोड़े चल नहीं सकते !" कोचवान ने चाल और धीमी करते हुए कहा।

"यू ईडियट ! तेज़ चलो, वर्ना हम गोली मार देगा !" कर्नल ने डाँटकर कहा।

"आप गोली मारना चाहते हैं तो मार दीजिए, लेकिन याद रखिए, आपको गोली मारने वाले भी ज्यादह दूर नहीं होंगे।" कोचवान ने क्रुद्ध होकर कहा, "हम आपकी सेवा करना चाहते हैं लेकिन आप फिजूल धौंस देकर हमें डरा रहे हैं—अपनी जान की तो खैर मनाते नहीं।"

कोचवान का बदला हुआ पैंतरा देखकर कर्नल का कलेजा मुँह को आ गया। अपनी आदत के अनुसार वह कोचवान को गीदड़ धमकी दे तो गया, किन्तु तुरन्त ही उसे अपनी स्थिति का आभास हुआ। यह वह स्थिति थी, जब आदमी अपनी जान बचाने की व्यग्रता के अलावा दीन-दुनिया की और कोई बात सोच भी नहीं पाता। श्रीमती लैनॉक्स ने जब कोचवान का रोषपूर्ण व्यवहार देखा तो वह मधु-सिक्त स्वर में बोली, "तुम मेरे भाई हो, मैं तुम्हारी बहिन ! क्या तुम अपनी बहिन को इतनी आसानी से मर जाने दोगे ? उसकी इज्ज़त लुट जाने दोगे ?"

कोचवान भाव-विह्वल होकर पानी-पानी हो गया। उसने और भी तेज गति से घोड़े दौड़ाए। काफी दूर पहुँच चुके थे लेकिन तभी दाँई तरफ़ के रास्ते से लगभग पच्चीस घुड़सवार अचानक प्रकट हुए और सबको घेरकर खिंची हुई तलवार लिए खड़े हो गए और डाँट कर कहा, "खबरदार ! अगर कोई अपनी जगह से हिला तो गोली मार दी जाएगी ! कौन है इस गाड़ी में ?"

सभी यात्रियों के होश उड़ गए लेकिन कर्नल लैनॉक्स ने कुछ साहस बटोर कर कहा, "हम लोग रहम की भीख माँगते है, हमें गोरखपुर चला जाने दो।"

"ह ! ह ! ह!" अट्टहास कर उनका नायक बोला, "रहम की भीख माँगते हो या जान की ! नहीं हर्गिज़ नहीं। सब लोगों को हमारे साथ चलना पड़ेगा। इकबाल अहमद और मूलसिंह इन सबको गाड़ी से उतार कर तलाशी लो। इन घुड़सवारों को गोली मार दो। सब घोड़ों को कब्जे में ले लो !"

घुडसवारों में से एक ने म्यान से तलवार खीची ही थी कि धाँय से एक गोली लगी और वह गिर गया। फिर धाँय-धाँय की आवाज़ के साथ ही समस्त घुड़-सवार मारे गए और घोड़ों को कब्ज़े मे ले लिया गया।

तलाशी में दो रिवॉल्वर, कुछ बंदूकें, भाले व तलवार निकले जिन्हें सैनिकों ने अपने अधिकार में लिया। नायक ने सभी स्त्रियों और बच्चों तथा कर्नल को गाड़ी मे बैठने का आदेश दिया और गाड़ी को चलाने को कहा। थोडी दूर जाकर गाड़ी को दाँई ओर की सड़क पर मोड़ने को कहा ही था कि कोचवान गाड़ी रोक कर

नीचे उतरा। तभी एक सैनिक ने डपटकर कहा, "अबे क्या है ? गाड़ी बढ़ाता क्यों नही ?

"मैं इनके प्राणो की भीख मांगता हूँ हुजूर, इन्हे गोरखपुर जाने दीजिए !" चिरौरी करते हुए कोचवान ने कहा।

"इन्हें गोरखपुर जाने दीजिए," घृणा से मुँह चिढ़ाते हुए नायक ने कहा और भाला उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए गरजा, "अबे गद्दार, तू बड़ा हमदर्द बना है इनका, ठहर पहिले तेरी ही खबर ले लूँ।" उसी समय श्रीमती लैनॉक्स विद्युत गति से गाडी से कूदी और कोचवान तथा नायक के बीच में खडी हो गई। "नई-नई पहिले मुझे मारो फिर मेरे इस भाई को।" नायक को यह सुनकर बहुत कौतूहल हुआ। एक अंग्रेज मेम का भाई कोचवान ! उसने डपट कर कहा, "ए औरत, तू हट जा ! हम औरतों पर हाथ नही उठाते।" जब काफी डर दिखाने पर भी वह नही हटी तो नायक मुस्कराया और भाला वापिस खींचते हुए चीखा, "तो फिर सीधे-सीधे गाड़ी हमारे साथ ले चल। "कर्नल की पत्नी गाडी में पुन: सवार हुई तो गाड़ी चलने लगी। लगभग एक मील गए होंगे कि रशीदपुर गाँव आ गया। एक हवेली में पहुँच कर समस्त अंग्रेज़ बन्दियों को नाज़िम मुहम्मद हुसैन के सामने पेश किया गया।

मुहम्मद हुसैन अवध-सल्तनत में गोरखपुर का नाज़िम रह चुका था। अब इसी इलाके मे उसने पूरे जोश से स्वाधीनता संग्राम छेड़ रखा था। वह गाँव-गाँव का दौरा करके अंग्रेजो को ढूँढ-ढूँढ कर मरवा देता था। लेकिन असहाय औरतों और बच्चो का कभी वध नही किया जाता था। मुहम्मद हुसैन ने स्त्रियों और बच्चों को अन्दर ले जाने को कहा और लैनॉक्स से पूछा, "कहाँ से आ रहे हो ?"

"फ़ैज़ाबाद से।"

"कहाँ जा रहे थे ?"

"अंग्रेज़ी कैम्प में गोरखपुर।" काँपते हुए कर्नल ने कहा।

"हाँ, तो अब तुम्हे भी अपनी जान प्यारी लगने लगी—आज तक तुमने हिन्दुस्तानियों की जान की तो कभी परवाह नहीं की !"

"मैं आपकी पनाह में आ गया हूँ, आप जो चाहें सलूक करें, मैं आपसे रहम की भीख माँगता हूँ।" घुटनों के बल बैठकर कर्नल ने कहा।

"जब पनाह में ही आ गए हो तो मुहम्मद हुसैन कभी तुम्हें बेपनाह नही होने देगा। शब्बीर इन्हें कहाँ ठहराओगे ?"

"हुज़ूर अस्तबल में ! इस कमीने के लिए तो वो ही जगह ठीक रहेगी।" शब्बीर ने कहा।

"नही, नही, इन्हें ऊपर के कमरे में ठहराया जाए।" नाज़िम ने डाँट कर कहा। तब तक एक सरदार ने आकर कहा, "हुज़ूर इस कुत्ते को अभी मौत के

घाट उतार देना हू, इसे कही भी ठहराने की क्या जरूरत है ?"

सुनते ही मुहम्मद हुसैन बहुत क्रोधित हुआ और डपटकर कहा, "हम हिन्दुस्तानी आज़ादी के दीवाने हैं—खून के प्यासे नही, फिर ये तो हमारी पनाह में आ गए हैं। जंग की बात अलग है लेकिन हम क़ातिलों की तरह किसी की जान नही लेते। इन्हें शरवत पिलाया जाए और बाइज्ज़त ऊपर के कमरे मे ठहराया जाए।"

लैनॉक्स ने कई बार घुटने टेक कर कृतज्ञता प्रकट की, क्योंकि उसे तथा अंग्रेज स्त्रियों व बच्चों को नाज़िम की शरण में अभयदान मिल गया था। कुछ दिनों बाद इन सभी शरणार्थियों को अंग्रेज़ी शिविर मे सुरक्षित पहुँचा दिया गया।

डिप्टी कमिश्नर बुशर अपनी जान लेकर घोड़े पर सवार हो तेज़ी से भाग रहा था। ठाकुर बुलीसिंह उसका पीछा कर रहा था। वह सड़क से हटकर चक्कर खाता हुआ हबीबपुरा गाँव में पहुँचा, जहाँ उसे पन्नालाल नामक ब्राह्मण मिला। उसने गिड़गिड़ा कर पन्नालाल से कहा, "मुझे बचा लो! मेरा पीछा ठाकुर बुली सिंह कर रहा है! भगवान के लिए, प्लीज, बचा लो।" ब्राह्मण ने बिना कोई प्रश्न किए कहा, "अच्छा, आओ मेरे साथ, हाँ-हाँ इधर!" और उसे अपने घर में लाकर छुपा दिया। पन्नालाल उसका घोड़ा लेकर किसी गुप्त स्थान में छुपाने जा ही रहा था कि ठाकुर बुलीसिंह मय अपने दल के आ पहुँचा। वह डपट कर बोला, "तुम ब्राह्मण होकर मुल्क के साथ ग़द्दारी करते हो!" पन्नालाल थर-थर कांपने लगा। फिर बुलीसिंह ने गर्जना की, "इसी पंडित के घर में छुपा होगा! ले आओ कुत्ते को, ढूढ निकालो!" तुरन्त ब्राह्मण के घर में तीन-चार सिपाही घुसे और बुशर को थोड़ी ही देर में बाल पकड़ कर घसीट लाए। पन्नालाल के घर के सामने भीड़ इकट्ठी हो गई थी। बुशर घुटनों के बल बैठ सिर झुका झुका कर कहने लगा, "मैं तुम्हारी गाय हूँ मुझ पर दया करो! रहम करो, आप हमारा गॉड है—भगवान हैं—रहम!" बुलीसिंह को उसकी यह दयनीय स्थिति देखकर प्रसन्नता हो रही थी। तभी एक नायक ने बुशर की कमर में लात मार कर कहा, "साला अब तो गाय बन रहा है वैसे देशी लोगों के लिए क्या नाहर बन जाता था।"

"हरीसिंह!" डपटकर बुलीसिंह ने कहा, "यह हमारी शरण में आ गया है। दया का पात्र है! इस तरह इसका अपमान मत करो, इसे हमारे घर पहुँचा दिया जाए।" इस तरह बुशर को भी शरण मिल गई और कुछ दिनों बाद उसे अंग्रेज़ी शिविर में भेज दिया गया।

अनेक स्थानो पर जन-साधारण तथा बहुत से महत्त्वपूर्ण लोगो ने भारतीय परम्परा के अनुसार अंग्रेज शरणार्थियों की सुरक्षा की तथा सहायता भी। स्त्रियों और बच्चो की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया गया और उन्हें यथा-सम्भव सुर-

क्षित स्थानों पर पहुँचाने का प्रयत्न किया गया। शाहगंज के राजा मानसिंह ने किले में अनेक अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चों को रखा। कुछ दिनों के बाद जब उन्हें पूर्व की ओर दानापुर भेजना पडा तो रास्ते में बिरहर के ज़मींदार बाबू माधो प्रसाद और गोपालपुर के राजा ने भी उन्हें थोड़े दिनों तक अपनी सुरक्षा में शरण दी।

देहरा के रुस्तम शाह ने सुल्तानपुर तथा आसपास के बहुत से अंग्रेज पुरुष, स्त्रियों और बच्चों को शरण दी। धारूपुर के राजा लाल हनुमन्त सिंह से सालोन के डिप्टी कमिश्नर मेजर बैंरो ने जब दया की याचना की तो उसने भी इन भगोड़ों की सहायता करना स्वीकार कर लिया। वह शहर के बाहर गया और अपनी सुरक्षा में शरणार्थियों को क़िले मे ले आया। कुछ दिनो बाद वह उन्हे इलाहाबाद तक सुरक्षित पहुँचा आया। उसके इस रवैये से आशान्वित होकर मेजर बैरो ने उससे अंग्रेज़ों के पक्ष में युद्ध करने की याचना की तो उसने साफ़-साफ कह दिया, "जनाब, आप शरण के लिए आए, इसलिए हमने अपनी रीति के अनुसार आपको शरण दी और सुरक्षा की। इसका मतलब ये नहीं कि हम अपने मुल्क के लिए गद्दारी करें। अब हम दल-बल के साथ लखनऊ जाएँगे और अपने देश से अंग्रेज़ों को खदेड़ कर भगाएँगे!"

फ़ैज़ाबाद के डिप्टी कमिश्नर कप्तान रीड की याचना पर मौलवी अहमदुल्ला शाह ने भी उसे तथा उसके साथियो को शरण देना मजूर कर लिया था। यही नही अयोध्या में हनुमान गढ़ी के महन्तों तक ने अपनी जान जोखिम मे डालकर बहुत से अंग्रेज बच्चों व औरतो को बचाया।

रुस्तम शाह, बाबू माधो प्रसाद, मोहम्मद हुसैन तथा मौलवी अहमदुल्लाह शाह और लाल हनुमन्त सिंह वगैरह सभी अमीर बड़ी जीवट के साथ स्वाधीनता संग्राम में लड़े किन्तु फिर भी उन्होने बेसहारा भगोड़े स्त्रियों और बच्चो की सदैव रक्षा की और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा कर ही दम लिया। जिन अंग्रेज पुरुषों को उन्होंने शरण दी, उन्हें जीवनदान देकर भारतीयता का उच्च आदर्श निभाया।

25

वह लाख चाहें मगर कांच की चट्टानों से।
हमारे अज़म का तूफ़ान थम नहीं सकता॥

बेगम हज़रत महल बड़ी लगन से युद्ध की तैयारी करती रही। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया वह सैनिकों के प्रशिक्षण तथा सेनाओं के निरीक्षण में अधिकाधिक व्यक्तिगत रुचि लेने लगी। अवध के अन्य क्षेत्रों में सफलता तथा चिनहाट की विजय के बाद उसने लखनऊ पर ध्यान केन्द्रीभूत किया। सर्वप्रथम उसने मच्छी भवन और रेज़ीडेन्सी के विरुद्ध मोर्चाबन्दी प्रारम्भ की। रेज़ीडेन्सी के उत्तर की तरफ़ गोमती के किनारे कर्नल बरकत अहमद को, पूर्व में बेलेगारद के विरुद्ध राजा गुरु बख्श सिंह को, दक्षिण में सरदार बलवन्त सिंह और पश्चिम में शहर की तरफ़ लैफ्टीनेन्ट कर्नल खॉन अली खाँ को कमान सौंपी गई। बेगम ने दो तोपखानों को इस तरह अवस्थित किया कि वे मच्छी भवन और रेज़ीडेन्सी दोनों पर सीधी गोलाबारी कर सकें। अवध की चार रेज़ीमेन्टों तथा एक तोपखाने को सहायता के लिए आरक्षित रखा और शेष सभी को मोर्चे पर सुरक्षित रूप से व्यवस्थित कर दिया गया।

बेगम के संकेत पर रण-भेरी बजने लगी और योद्धाओं ने जयघोष किया, "बेगम आलिया जिन्दाबाद! हिन्द की आज़ादी अमर रहे। इंग्रेज़ कम्पनी मुर्दाबाद!"

"हर-हर महादेव! वाहे गुरु की फतह! वाहे गुरु का खालसा! अल्लाहो अकबर!" नगाड़ों और बिगुल की ध्वनि से अंग्रेज़ी शिविर में खलबली मच गई।

धांय-धांय-धड़म-धड़ाम! तोपों से गोलाबारी शुरू हुई। बन्दूकों और तीरों के निशाने बनकर मच्छी भवन के सिपाही धड़ाधड़ मरकर गिरने लगे। यहाँ की सेना कर्नल पामर के अधीन थी। पामर ने पहले ही हमले में समझ लिया कि इस स्थान की रक्षा करना किसी भी तरह सम्भव नहीं है। अतः उसने हेनरी लारेन्स से सम्पर्क स्थापित करना चाहा ताकि उचित आदेश मिल सके कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए। उसने एक के बाद एक संदेश-वाहक रेज़ीडेन्सी की ओर भेजे किन्तु वे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही गोलियों के शिकार बन गए।

इधर हेनरी लारेन्स जब अपने कक्ष में काम कर रहा था तो एक छोटा-सा गोला अन्दर आकर फटा, किन्तु विशेष नुकसान नहीं हुआ। कप्तान विलसन वहाँ मौजूद था। उसने कहा, "सर, शायद उन्होंने आपको पहिचान कर इस कमरे को अपना निशाना बनाया है। आप इसे जल्दी से जल्दी बदल लें तो बेहतर होगा।" हेनरी काफ़ी व्यस्त था। उसने लापरवाही से कह दिया, "ठीक है कैप्टिन, कल

बदल लेंगे। फिर कोई ऐसा निशानेबाज भी तो नहीं हो सकता जो ठीक इसी जगह फिर अपना निशाना लगा सके।" इसके बाद वह चारों ओर की स्थिति का निरीक्षण करने को निकला तो उसकी समझ में आया कि मच्छी भवन की स्थिति अत्यन्त सकट में है। उसे तुरन्त अपनी भूल का आभास हुआ कि दो जगह सेनाओं को रखना बुद्धिमानी नहीं। उसने तुरन्त कप्तान फुल्टन को बुलाकर कहा, "कैप्टिन हमें तुरन्त मच्छी भवन को छोड़ देना चाहिए वर्ना हमारी फौज बर्बाद हो जाएगी। तुम फौरन पामर को सूचना दो कि वह मच्छी भवन छोड़कर मय अपनी फौज के रेज़ीडेन्सी मे आ जाये।"

"लेकिन सर, इस वक़्त यह सूचना कैसे पहुँचाई जाए, इस गोलाबारी में किसी आदमी का जाना सम्भव नहीं और हमारी सिग्नल-मशीन बिलकुल खराब पड़ी है। उधर बन्दूकों और तीरों ने नाक में दम कर रखा है।"

"हाँ कैप्टिन, इसके लिए आदमी भेजना तो ठीक नहीं रहेगा, किसी तरह सिग्नल से ही इत्तिला करो। शायद कुछ कोशिश करने से सिग्नल-मशीन ठीक हो सके। पामर को कहना कि सब लोग अपनी बन्दूकें भर लो, किले को उड़ा दो और आधी रात को अपनी फ़ौजें लेकर रेज़ीडेन्सी में चले जाओ।" हेनरी ने कहा।

"वैरी वैल सर !" कहकर फ़ुल्टन कुछ सहायकों की मदद से मशीन ठीक करने में लगा रहा और कई घंटों के परिश्रम के बाद वह पामर को सूचना देने में सफल हो गया।

सूचना मिलते ही कर्नल पामर के दम में दम आया। मच्छी भवन क़िले का कुछ भाग तो तोपों की अनवरत मार से पहिले ही धराशायी हो चुका था, शेष भाग को भी तहस-नहस कर दिया गया और पामर ने सेना को रात के साढ़े ग्यारह बजे रेज़ीडेन्सी जाने का आदेश दिया। लगभग रात के एक बजे मच्छी-भवन की पूरी सेना रेज़ीडेंसी पहुँच थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही बेग़म ने गोलाबारी शुरू करा दी। महमूदाबाद और रामनगर के पासी सैनिक अपने तीरों से ही अंग्रेज़ी सेना का विनाश कर रहे थे।

हेनरी लारेन्स कई महत्त्वपूर्ण स्थानों का निरीक्षण कर अपने कमरे में बैठा कुछ आवश्यक काग़ज़ देख रहा था कि तभी कमरे के ठीक बीचों बीच एक भारी गोला फटा। हेनरी के सामने बैठा कप्तान विलसन घबरा कर ज़मीन पर गिर पड़ा। धुएँ और धूल से सारे कमरे मे अंधेरा छा गया था। इसी बीच हेनरी का भतीजा कमरे से बाहर भाग गया।

कुछ भी नहीं दिखाई देने के कारण विलसन ने पूछा, "सर, आपको चोट तो नहीं लगी !" हेनरी ने क्षीण स्वर में उत्तर दिया, "कैप्टिन मैं ख़त्म हो चुका हूँ।"

विलसन ने तुरन्त डॉ० फेरर को बुला भेजा। डॉक्टर ने परीक्षण करके कहा कि चोट काफ़ी गंभीर है। हेनरी ने पूछा, "डॉक्टर मैं कितनी देर और जी सकता हूँ।" फेरर का उत्तर था, "लगभग चालीस घंटे!"

हेनरी को डॉक्टर के घर ले जाया गया, जहाँ से वह कई आवश्यक आदेश प्रसारित करता रहा और अधीनस्थ अधिकारियों को सुरक्षा व्यवस्था के विषय में विस्तृत मार्ग दर्शन भी देता रहा। तीसरे दिन उसका देहान्त हो गया। हेनरी जैसे सुलझे हुए और अनुभवी अधिकारी के निधन से पूरे अंग्रेज़ी शिविर मे निराशा, घबराहट और शोक का वातावरण छा गया। विरोधी सेनाओं को उसकी मृत्यु का जल्दी पता न लग सके इसलिए हेनरी ने इच्छा प्रकट की थी कि उसे बिना किसी आडम्बर के चुपचाप दफना दिया जाए। यही किया गया। कई दिनों तक बेगम की सेनाओं को उसकी मृत्यु का समाचार नही मिल सका।

अन्त में जब अवध के शिविर में यह समाचार तथा अंग्रेज़ों की दुर्दशा का हाल ज्ञात हुआ तो चारों ओर उत्साह की लहर दौड़ गई। अब रेज़ीडेन्सी के मकानो को लक्ष्य बनाकर गोलाबारी की जाने लगी।

अल्लाहो अकबर—वाहे गुरु की फतह! वाहे गुरु का खालसा—हर हर महादेव के नारों से अंग्रेज फौजों का दिल दहलने लगा। एम० सी० अमन्न, न्याय कमिश्नर और नया चीफ कमिश्नर मेजर बैंक्स भी कुछ दिनों में गोलियो का शिकार बन गये। नित्य प्रति अंग्रेज़ी सैनिक और अधिकारी मारे जाने लगे।

मेजर बैंक्स के निधन के बाद ब्रिगेडियर इंगलिस चीफ कमिश्नर बना और रेज़ीडेन्सी से सदैव के लिए असैनिक सत्ता की समाप्ति हो गई। पूरे सैनिक क्षेत्र में मार्शल लॉ लगा दिया गया था। अंग्रेज़ी जवान व अधिकारी खाइयों में पड़े अपनी सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील थे। वैसे कभी-कभी उनकी ओर से भी गोलाबारी तथा छुटपुट हमले होते रहते थे।

26

फरीदपुर के ठाकुर अनिरुद्ध सिंह की बहिन शैलबाला ने रुदौली में सैनिक प्रशिक्षण लिया था। वह अपने दूसरे भाई उद्गम सिंह के साथ आकर लखनऊ में बेगम की सेना मे सम्मिलित हो गई थी। प्रताप सिंह तथा उसकी बहिन कनक सुन्दरी भी लखनऊ आ गए थे। ये सभी आसपास के इलाकों में क्रियाशील थे।

कभी वे युद्धों में भाग लेते, कभी चौकसी का काम करते तथा कभी जासूसी का। रुदौली में शैलबाला के प्रवास के समय से ही प्रतापसिंह और उसमें एक-दूसरे के प्रति काफ़ी आकर्षण हो गया था। जहाँ अपने वीरता तथा साहस के कामों में शैलबाला पुरुषों से बढ़ी-चढ़ी, वहीं जब वह प्रताप सिंह के समीप होती तो उसमें नारी-सुलभ लज्जाशीलता के साथ ही चपलता-पूर्ण आत्मीयता का आविर्भाव हो जाता। कनक सुन्दरी और वह प्रायः मिलती रहती थी। आज जब वह कनक से मिलने गई तो प्रताप ने ही दरवाज़ा खोला और कहा, "आइए शैलजी, आज तो बहुत प्रसन्न नज़र आ रही हैं, क्या किसी नये फिरंगी का शिकार किया है ?"

"फिरंगी को तो छोड़िए—रोज़ का ही काम हो गया है यह तो, लेकिन असली शिकार तो किसी भोले-भाले हिन्दुस्तानी को ही बनाया जाएगा।" शैल ने कहा।

"कौन होगा ऐसा भाग्यशाली ?"

"कनक घर में है ? क्या अन्दर नहीं आने दोगे ?" बात बदलते हुए, शर्म से आँखें झुकाकर शैल ने कहा।

"ओहो, आइए, आइए, बैठिए ! कनक आती ही होगी, कर्नल रिपुदमन सिंह ने बुलाया है। शायद उद्गम सिंह के साथ गई है। मैं भी अभी-अभी आया हूँ। पड़ोसियों ने बताया है।" यह प्रताप था।

कुछ देर मौन रहा और दोनों एक-दूसरे से मूकता में ही भावनाओं का आदान-प्रदान करते रहे। प्रताप सोच रहा था, "अब तुम्हारे सिवा कोई हृदय में पैठता ही नहीं !" शैल कल्पना मे ही प्रताप को अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रही थी। प्रकट मे वे अलग होते हुए भी एक-दूसरे के हृदय मे समाये जा रहे थे।

प्रताप ने ही मौन तोड़कर आज वह प्रश्न कर डाला जो अर्से से उसके दिल मे घुमड़ रहा था। "शैल जी अब कितनी प्रतीक्षा और करनी होगी।"

"प्रतीक्षा ! किस बात की प्रतीक्षा, कुँवर साहब ?" अनजान बनते हुए शैलबाला ने कहा।

"ओहो शैल जी, क्या अब यह भी बताना पड़ेगा ? अब तो हम लोग काफ़ी निकट आ चुके हैं।"

"लेकिन फिर भी तो आप मुझे शैलजी ही कहते हैं," 'जी' पर जोर देते हुए इठला कर कहा, "वैसे सब कुछ तो अभी बड़ो को ही तय करना होगा। मैं तो इसे अपना सौभाग्य ही मानूँगी, लेकिन सर्वप्रथम तो हमें अपने देश का ऋण चुकाना है।"

"हाँ शैल जी।" प्रताप ने कहना शुरू ही किया था कि शैल ने उसके मुँह पर हाथ रखकर उपालम्भ से कहा, "देखिए आपने फिर 'जी' लगाया मेरे नाम के साथ !"

"अच्छा-अच्छा, शैल, मेरी प्यारी शैल, हमारा कर्त्तव्य तो वाक़ई देश के प्रति है। वास्तव में जब तुम निकट होती हो तो मैं सब कुछ भूल जाता हूँ।"

"लेकिन सब कुछ भूलकर तो मनुष्य कर्तव्य-च्युत हो जाता है और कर्त्तव्य-च्युत होना उसका पतन है, हमारे प्राण तो मातृभूमि की धरोहर हैं कुमार!"

"बिलकुल ठीक कह रही हो शैल—अभी तो हमे कठिन परीक्षाओं से गुजरना है—फिर भी, शैल हृदय से मैं तुम्हें समर्पित हो चुका हूँ।"

"मैं कौन पीछे रही हूँ कुमार! किन्तु अभी तो हमें अनेक कठिन समस्याओं से जूझना है। विवाह की औपचारिकताओं के लिए समय ही कहाँ है हमारे पास? वैसे मैं हृदय से तुम्हारी हूँ, तुम्हारी ही रहूँगी। बड़े भैया ने भी तय कर ही लिया है।"

"अहोभाग्य शैल, बस इतना काफ़ी है। अब तो सिर्फ़···।" प्रताप भावातिरेक मे कुछ और भी कहता है कि तभी कनक सुन्दरी आ गई। शैल उठकर गले मिली। कनक बुरी तरह हाँफ रही थी।

"हाँफ क्यों रही है कनक, क्या हुआ?" शैल ने पूछा।

"अरी, कुछ मत पूछ, आज तो गजब हो गया। हमें कर्नल साहब ने कानपुर की सड़क पर बशीरतगंज के आसपास नाकाबन्दी करने भेजा था। तीन गोरे एक गाड़ी मे रसद लिए जा रहे थे कि हमारे सिपाहियों ने उन्हें रोक लिया और बल्लमो से उन्हें छेद डाला। तभी आठ दस गोरे घुड़सवार और आ गए और मुझे घेरने लगे। लेकिन कुमार उद्‌गम ने बन्दूक दाग दी। मैं अपनी रिवॉल्वर से गोली चलाती हुई एक तरफ़ हटकर खड़ी हो गई। फिर दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। हम कुल छः जने थे, लेकिन गोरे और आ गये। मैंने और कुमार ने पीछे हटकर भागने का बहाना किया तो गोरे हमारा पीछा करने लगे। बस पलट कर इधर से हमने और पीछे से हमारे चार सिपाहियो ने जो उन पर हमला किया तो वे भौंचक्के रह गये। हमारा केवल एक सिपाही खेत रहा लेकिन हमने उन पन्द्रह गोरों को यमपुर भेज कर ही दम लिया।" शैल और प्रताप दोनों विस्मय से सुनते रहे फिर प्रताप ने ही वातावरण को हल्का करने के लिए कहा, "अरी दम कहाँ लिया, तू तो अभी भी हाँफ रही है। ज़रा बैठ जा और दम ले ले!"

"नहीं भैया, अभी बैठना नहीं है। कर्नल रिपुदमन सिंह ने आदेश दिया है कि हम सब मिलकर उधर से आने वाली रसद को रोकें। लुत्फ़ो, अनीस भाई, मैं, आप, शैल, आदित्य, अरविन्द और कुमार उद्‌गम, सभी को उधर ही चलना है साथ ही पचास सिपाहियों का दस्ता भी हमारे साथ होगा।" कनक एक साँस में बोल गई। "और सब तो वहाँ पहुँच गए होंगे, मैं सिर्फ़ आपको बताने ही यहाँ आई हूँ।"

"अच्छा तो लगता है उन्होंने, बशीरतगंज में कोई रसद का साधन ढूँढ लिया

होगा, चलो उधर ही चलते है, यह तो बहुत संगीन मामला है, और वह रास्ता बन्द करना निहायत जरूरी है।" प्रताप ने कहा। सब घोड़े पर सवार होकर चल दिए।

वशीरतगंज के इक्कों के अड्डे पर जाकर वे लोग हारे-थके यात्रियों की तरह एक बड़ के पेड़ के नीचे बैठ गये। वही चारों तरफ़ चाट के खोमचे वाले बैठे थे और लोग चाट खा रहे थे। तभी एक घोड़ा-गाड़ी आई, जिसके चारों ओर पर्दा लगा था। कुछ लोगों को चिलम पीते देख कोचवान दो-चार कश मारने के लिए गाड़ी से उतरा। घोड़ागाड़ी में जोता गया घोड़ा अभी बिलकुल नया था तथा उसकी लगाम के साथ जेलकड़ा फँसा हुआ था ताकि लगाम खींचते ही उसके जबाड़ों मे कड़ा चुभे और घोड़ा कोई बेजा हरक़त नही कर सके। जैसे ही कोचवान उतरा, घोड़े ने चैन की साँस ली और ज़ोर-जोर से हिन-हिनाकर दोनों अगले पैर हवा में उठा, पिछले दोनों पैरों पर खड़ा हो गया और तेज़ी से दौड़ने लगा। कोचवान विस्मित-सा उसे पकड़ने भागा लेकिन घोड़ा इतनी तेजी में था कि उसके क़ाबू में नहीं आ सका। पहिले तो घोड़े ने खोमचे वालो को गिराते पटकते बड के पेड़ के ही चार-पाँच चक्कर काटे और फिर खेतो की तरफ दौड़ने लगा। सब लोग इस दृश्य का मजा ले रहे थे और घोड़े को रोकने के लिए उसके पीछे-पीछे भाग रहे थे। भीड़ की आवाज़ से चौंक कर घोड़ा और भी तेज़ी से भागने लगता और कई बार दो पैरों पर खड़ा होकर हिनहिनाता जाता। फिर भी किसी के क़ाबू में आने से पहिले और भी तेज़ रफ़्तार से दौडने लगता। अन्त में एक ओर कुछ पत्थर की पट्टियाँ और दूसरी ओर एक ऊँची सी मेंड़ के अवरोध से गाड़ी अटक गई और घोड़े को भी रुकना पड़ा। वह दो पैरो पर खड़ा होकर हिनहिनाने लगा। तभी कोचवान ने घोड़े को पकड़कर थपथपाया और भीड़ की मदद से गाड़ी को पीछे हटा कर मोड़ा। भीड़ के लोगों ने कहा सवारियों का बुरा हाल हो गया होगा उन्हें ज़रा बाहर निकाल कर कुशल-क्षेम पूछ ली जाए। कोचवान के मना करते-करते किसी ने पर्दा हटाया तो देखा कि गाड़ी में तीन बदहवास से गोरे बैठे हैं। अनीस ने आगे बढ़कर एक को हाथ पकड़कर नीचे उतारा तो प्रताप ने दूसरे को। आगे बैठे हुए गोरे को कुमार उद्गम ने नीचे खींच लिया। गोरों के नीचे उतरते ही धाँय-धाँय दो गोलियाँ चलीं और दो गोरे लुत्फुन्निसा ने धराशायी कर दिये। उसने उन गोरों को अपनी पिस्तौल सम्भालते हुए देख लिया था। अनीस ने हाथ उठाकर फायर करने को मना कर दिया और कहा, "प्रताप भैया, यही गोरा सार्जेन्ट माइकल या माइक है जो हम लोगों को भगाकर ले जाने वालों के साथ भी था।"

"क्यों माइक, इन्हें पहिचानते हो?" अनीस की तरफ इशारा करते हुए प्रताप ने पूछा।

"अपना नाम सुनकर गोरा अचम्भे में पड़ गया और अनीस की ओर ग़ौर से देखकर बोला, "इन्हें-इन्हें, हाँ एनीस, रुडौली···।" अस्पष्ट सी भाषा मे उसने स्वीकार किया। वह बुरी तरह काँप रहा था ।

"यहाँ क्या करने आए थे ?"

"रसद का इन्तजाम करने ।"

"क्या वशीरतगंज मे रसद मिलती है ?"

"हाँ, बहुत ऊँची कीमत देकर ।"

"तुमने लड़कियाँ कितनी भगाई थी ।"

"ओह, नई-नई—भगाया !"

"जानते हो झूठ बोलने पर कोड़े की सज़ा मिलती है। जल्दी बताओ—सही-सही।

"करीब पैंतीस।" माइक बुरी तरह काँप रहा था ।

"अच्छा वशीरतगंज में कहाँ से रसद लेते हो ?"

"————"

"जल्दी बताओ वर्ना···।" प्रताप ने कोड़ा उठाया।

प्रताप के लहराते हुए कोड़े को देखकर माइक बोला, "डोरी लाल भिखारी दास से।"

'और किससे लेते हो ?"

"और तो कोई नही डेटा ।"

"अच्छा सार्जेन्ट माइक, तुमने रुदौली मे हमारी बहिनों और अनीस भाई को भगाया था—इसलिए अनीस भाई को तुम्हें मारने का हक है। लेकिन वह तुम्हें कातिलों की तरह नही मारेगा, बल्कि तुमसे बराबरी की लड़ाई करके ही मारेगा। तलवार से लड़ना जानते हो ?"

"यस, यस, लेकिन हम लड़ेगा नईं, हमे मारना चाहटे हो टो मार डो ।"

"नही, हम लोगों को कुत्त की मौत नही मारते । तुम अनीस अहमद से बन्दूक, तलवार, भाला या रिवाल्वर कुछ भी लेकर लड़ सकते हो। वैसे तुम हो तो कुत्ते की मौत ही मरने के क़ाबिल !" प्रताप ने कहा, "अगर तुम जीत गए तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।"

"ओह, श्योर ?" खुश होकर माइक ने पूछा ।

"हाँ, जरूर, जीतने पर तुम्हें हम छोड़ देंगे और इंग्रेजी कैम्प तक पहुँचा देंगे। लेकिन तुम फिर कभी रसद लेने इधर नही आओगे ।"

माइक को आशा हुई कि अगर जीत गया तो मेरी जान बच जाएगी अतः वह तलवार से लड़ने को राज़ी हो गया।

सभी लोग बड़े कौतूहल से यह तमाशा देख रहे थे ।

अनीस और माइक दोनों ढाल-तलवार लेकर लड़ने लगे। सार्जेन्ट ने कई पैंतरे दिखाए लेकिन अनीस ने अपनी ढाल पर सभी वार रोक लिए और लगा जोश में तलवार घुमाने। माइक के औसान गायब हो गए और उसका बाँया हाथ कट गया, फिर भी वह लडता रहा और अन्त में उसकी गर्दन पर एक ऐसा वार हुआ कि वह वहीं ढेर हो गया।

तीनों लाशों को उसी खेत में छोड़कर सभी योद्धा वापिस आ गए और पुन: अड्डे पर जाकर सडक की चौकसी करने लगे। प्रताप, लुत्फुन्निसा और आदित्य कुछ सवारों को साथ ले वज़ीरतगंजशहर की तरफ रवाना हो गए। कुछ ही क्षणों में वे डोरीलाल भिखारीदास की दुकान पर जा पहुँचे।

प्रताप ने पूछा, "मालिक कहाँ है दूकान का ?"

"हुकम करिए, वे घर पर हैं, सेठ भिखारीदास।" मुनीम ने कहा।

"उन्हें बुलाइए, उन्ही से काम है।"

मुनीम विस्मित-सा अन्दर गया और उन्हें बुला लाया।

प्रताप ने कहा, "सेठजी हमें पन्द्रह छकड़े आटा, दो छकड़े दाल और···।"

"हज़ूर, इतना माल हमारे पास कहाँ है! हम तो पाव आधा पाव की परचूनी बिक्री कर लेते हैं सा'ब,—बस गुज़र चल जाती है।" सेठ ने सोचा कि अंग्रेज़ों के बराबर ये लोग हर्गिज़ कीमत नहीं दे सकते, इसलिए टाल देना ही अच्छा है।

"तो सारा माल तुम इंग्रेज़ों को दे चुके हो, इसलिए खत्म हो गया है!" कटाक्ष करते हुए प्रताप ने कहा।

सेठ तुरन्त चौकन्ना होकर घबराया और कहने लगा, "हुज़ूर नही! इंग्रेज़ों से हमारा क्या वास्ता! सिरकार अगर माल होता तो पहिले आपको ही देता।"

लुत्फुन्निसा ने कोड़ा निकालकर "शड़ाक-शड़ाक" दो सेठ के जड दिया तो सेठ तिड़ी-बिड़ी होकर गिर गया और जब सम्हल कर उठा तो प्रताप ने पूछा, "हाँ तो सही-सही बताओ वर्ना इसी कोड़े से खबर ली जाएगी।"

"हज़ूर वे ज़बरदस्ती आकर पांच सौ बोरी आटा और पचास पीपे तेल के दाम दे गए थे।" सेठ ने कहा।

इस बार आदित्य ने उसके एक लात जमाई, "ज़बरदस्ती दाम दे गए और तू रात को 'ज़बरदस्ती' माल पहुँचा देगा! गद्दार सच-सच बता तूने दस गुनी कीमत वसूल की है या नही ?"

"हज़ूर मैं आप की गैय्या हूँ। आइन्दा उनको कुछ नहीं दूंगा। सिरकार अब मेरी आँखें खुली हैं कि यह तो मैं मुल्क से गद्दारी कर रहा था," सेठ ने स्वयं के कान पकडकर गालों पर दोनों तरफ़ चपत जमा लिए, "हज़ूर कई छकडे माल चोरी-चोरी उनके कैम्प मे पहुंचाता रहा हूँ। अरे धिक्कार है तुझको भिखारीदास धिक्कार! अब आपको जो भी माल चाहिए भिजवा दूँ हज़ूर, आप से कोई

ज्यादा कीमत थोड़े ही लेनी है !"

"जो भी माल चाहिए भिजवा दूं !" मुंह चिढ़ाते हुए आदित्य ने कहा, "तू तो पाव आधा पाव की परचूनी बिक्री करता है कुत्ते ! तुझे तो मौत के घाट ही उतार देना चाहिए।"

तभी प्रतापसिंह ने इशारा किया और सिपाहियों ने गिड़गिड़ाते हुए सेठ और मुनीम दोनों को गिरफ़्तार करके लखनऊ कैदखाने के लिए रवाना कर दिया।

सिपाहियों को दूकान लूटने की आज्ञा देकर प्रताप शहर का चक्कर लगाने चल दिया। अनीस, आदित्य और लुत्फुन्निसा भी वहां की गतिविधियों पर नज़र डालते घूमते रहे और अन्त में सभी अपने दल में आकर इधर-उधर सड़क की चौकसी पर निकल गए।

27

रेज़ीडेन्सी में अंग्रेज़ों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। प्रति-दिन दस-बीस लोगों की मृत्यु हो जाती थी। ब्राइसन, मेजर फ्रांसिस और नीड आदि अनेक महत्त्वपूर्ण अधिकारी और कर्मचारी गोलियां लगने या सुरंग फटने से मर गए। बहुत से लावारिस जानवर चोर की तलाश में इधर-उधर आवारा घूमते थे। इनमें से कई कुओं में गिर गए, जिससे पानी दूषित हो गया। कुछ घोड़ों और अन्य बेकार जानवरों को गोली से उड़ा दिया गया लेकिन उनकी लाशें उठाना मुश्किल हो गया, जिनसे दुर्गन्ध उठने लगी। कुछ गायों और बकरियों से दूध मिलता था जो बच्चों के काम आता था लेकिन फिर भी कई बच्चों का दूध के अभाव में ही प्राणान्त हो गया। चेचक, हैज़ा और पेचिस की बीमारियां फैलने लगीं।

स्थान के अभाव में तहख़ाने में कई विभिन्न परिवार के स्त्री और बच्चे छोटे-छोटे कमरों में रहने पर विवश थे, जहां दुर्गन्ध और चूहों के कारण जीना दूभर था। सैनिक और असैनिक सभी को सेना में काम करना ज़रूरी हो गया। अधिकांश पुरुष खाइयों में पड़े रेज़ीडेन्सी की सुरक्षा करने में व्यस्त थे। प्रत्येक क्षण यही भय रहता था कि स्वाधीनता सेनानी रेज़ीडेन्सी पर अधिकार करके स्त्रियों और बच्चों समेत सभी अंग्रेज़ों को मार डालेंगे ! कुछ अंग्रेज स्त्रियां सदैव अपने पास अफ़ीम का सत्व और प्रसिक एसिड रखती थीं ताकि दुश्मन द्वारा अपमानित होकर मारे जाने से पहिले वे आत्महत्या कर सकें।

कुछ स्त्रियों के अलावा चीफ़ कमिश्नर इंगलिस की पत्नी भी चेचक से पीड़ित हो गई। कई दिनों की यातना के बाद उसे बीमारी से मुक्ति मिल सकी। एक दो दिन वर्षा हुई तो कुछ राहत मिली। मरे जानवरों के अवशेषों से दुर्गन्ध आना कम हो गया तथा वातावरण स्वच्छ होने लगा किन्तु लोगों का मरना बन्द नहीं हुआ। वैवस्टर, ब्राउन, डा० ब्राइडन और लेफ्टीनेन्ट लैस्टर आदि कई अधिकारी जो सुरक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी थे, मारे गए। कुछ लोग हैजे के प्रकोप के कारण मृत्यु के ग्रास बन गए। साबुन, तेल, लकड़ी आदि अनेक आवश्यक वस्तुओं का दिनों दिन अभाव होता गया।

बेगम हज़रत महल चाहती थी कि किसी प्रकार अंग्रेजी सेना खुले में आकर युद्ध करे ताकि उन पर पूरी शक्ति से हमला किया जा सके किन्तु ब्रिगेडियर इंगलिस मैदान में आकर हिन्दुस्तानी सेना का सामना करने का साहस नहीं कर सका। एक तो वह हेनरी लॉरेन्स की गलती को दोहराना नहीं चाहता था, दूसरे उसके सैनिकों की क्षति दिन प्रतिदिन होती जा रही थी। साधनों के अभाव और सीमित सेना के कारण वह प्रति दिन कानपुर से सहायता की आशा लगाए रहता था। वहाँ कई सन्देश-वाहक भेजे गए थे लेकिन उनमें से अभी तक कोई लौटकर नहीं आया था। बेगम के जासूसी दस्तों ने अधिकांश को या तो मौत के घाट उतार दिया था या क़ैद कर लिया था।

अन्त में बेगम ने आज्ञा दी कि खाइयों पर हमला करके रेज़ीडेन्सी को अधिकार में ले लिया जाए।

हर हर महादेव ! वाहे गुरु की फतेह ! अल्लाहो अकबर ! की ध्वनि के साथ अनेक योद्धा अपने-अपने दलों के साथ आगे बढ़ने लगे। खाइयों में से अंग्रेजी सेना ने भी अत्यन्त वीरता से प्रतिरोध किया। अवध-सेना के योद्धा-नायक जैसे ही वीरगति को प्राप्त होते, वैसे ही दूसरे योद्धा उनका स्थान ले लेते। आठ-दस घंटों की लड़ाई में अंग्रेज़ों की भारी क्षति हुई। उनके लगभग पचास सैनिक खेत रहे जिसमें से तीस योरोपीय थे। अवध-सेना भी बहुत बहादुरी और जोश से लड़ी किन्तु गोला बारूद तथा कारतूसों की कमी पड़ जाने के कारण उन्हें युद्ध बन्द कर देना पड़ा। रेज़ीडेन्सी पर अधिकार नहीं हो सका।

ब्रिगेडियर इंगलिस तथा अन्य अधिकारी अवर्णनीय साहस और धैर्य से इस बार रेज़ीडेन्सी की रक्षा करने में सफल अवश्य हुए, किन्तु उनकी वास्तविक शक्ति अत्यन्त क्षीण हो चुकी थी। उन्हें कानपुर से कुमुक आने की आशा के सिवा चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार नज़र आता था।

कुमुक के लिए इंगलिस ने कानपुर में अवस्थित जनरल हैवलॉक को स्पष्ट रूप से लिख दिया था कि अधिक दिनों रेज़ीडेन्सी की रक्षा करना सम्भव नहीं होगा। उसने यह भी लिखा कि आवश्यक भोजन-सामग्री के अलावा कपड़े,

दवाइयाँ, आदि भी उपलब्ध नही हो रहे। अस्पताल में बहुत से मरीज जमीन पर पड़े दवाइयों के अभाव में मर रहे थे ! अपने पत्र में इंगलिस ने स्त्रियों और बच्चो की सुरक्षा के विषय में विशेष चिन्ता व्यक्त की। विभिन्न स्थानों से भागकर स्त्रियाँ, बच्चे और योरोपीय सैनिक व असैनिक रेज़ीडेन्सी मे शरण लेते रहे थे। वहाँ लगभग 200 औरतें और 250 बच्चे थे।

ऐसी संकटमय स्थिति में अंगद नाम का एक गुप्तचर कानपुर से लौटकर आया और सीधा चीफ़ कमिश्नरी के पास पहुँचा। उसे देखते ही इंगलिस आतुरता से पूछने लगा, "वैल अंगद क्या खबर लाए ? कुछ उम्मीद है ?"

"सर बहुत अच्छी खबर है।"

"ओह, जल्दी बताते क्यों नहीं, क्या हुआ।"

"हुजूर, जल्दी ही कानपुर से मदद आने वाली है। उधर नाबासाहब पेशवा को हैवलॉक साहब ने हरा दिया है।"

"अच्छा ! वैरी गुड, कोई खत लाए हो ?"

"सर लाया तो था लेकिन रास्ते में बेगम के जासूसों ने पकड़ लिया था। उन्होंने मेरी तलाशी ली, उससे पहिले ही मैंने खत निगल लिया था—एक छोटा सा कागज था।"

"ओह अंगद ! तुम्हारी बात पर यकीन नही होता ! नाना हार गया ? कब आ रहा है जनरल हैवलॉक हमारी मदद को ?"

"सर वे कुछ दिनों में ही यहाँ पहुँचने वाले हैं।"

"नो, नो अंगद नो ! कोई तुम्हारी बात पर इत्मीनान नही कर सकता। तुम हमारा लैटर लेकर फिर जाओ, कानपुर और उनका जवाब लेकर फौरन वापिस आओ।"

"सर मैं चला जाऊँगा, लेकिन आप इत्मीनान रखिए कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, बिलकुल सच है।"

"ओह नो, नईं, कैप्टन फुल्टन को बुलाओ।"

तुरन्त कैप्टन फ़ुल्टन आया और ब्रिगेडियर इंगलिस ने जनरल हैवलॉक को एक पत्र लिखाया जिसमें अपनी अत्यन्त अवसादपूर्ण स्थिति का विवरण देते हुए त्वरित सहायता की याचना की।

पत्र लेकर अंगद गया और कुछ ही दिनों में उत्तर लेकर वापिस लौटा। उत्तर हैवलॉक के क्वार्टर-मास्टर-जनरल फ्रेज़र टाइट्लर भेजा था। उसने पाँच-छः दिन मे आने का आश्वासन देते हुए लिखा था कि हमने नाना पर विजय प्राप्त कर ली है, किन्तु वह अन्तर्ध्यान हो गया है। बिठूर मे उसके महल व मंदिर आदि विनष्ट कर दिए हैं और उसकी सेना इधर-उधर भाग गई है।

इंगलिस ने अंगद को तुरन्त पाँच सौ रुपए का इनाम दिला दिया। उसके

द्वारा लाया गया समाचार अत्यन्त उत्साहवर्द्धक था। अंग्रेज़ी शिविर में हताश लोग कुछ दिनों के लिए आशान्वित हो गए। इंगलिस ने अंगद को पुन: एक पत्र देकर रात्रि के समय कानपुर भेज दिया, जिसमें सहायता सेना के लिए कुछ आवश्यक सूचना एवं सुझाव दिए गए थे।

जब कई दिनों की निरन्तर प्रतीक्षा के बाद भी कोई सेना नहीं आई तो अधिकांश लोगों ने अपने जीवन की आशा छोड दी। यही नहीं उनमें अब जीने की अभिलाषा भी बुझ गई। वे उन साथियों को अधिक भाग्यशाली मानने लगे जो नित्य कब्रों मे दफ़नाये जाते थे।

एक दिन सायंकाल छ: बजे दूर से बंदूकों की आवाज़ तथा तोपो के धड़ाके सुनाई दिये तो शिविर में आशा का संचार हुआ। इसके बाद प्रतीक्षा-रत पुरुष स्त्रियों और बच्चो की आँखें पथरा गईं किन्तु कहीं कुछ नहीं हुआ। तोप और बन्दूकों की आवाजें भी वातावरण मे समा कर रह गईं। फिर वही त्रासदी और अवसाद की घड़ियाँ, वही निराशापूर्ण दिन और वही आशंका-जन्य भयावह रातें!

28

बेगम हज़रत महल का दरबार लगा हुआ था। अवध के महत्त्वपूर्ण अमीर तथा सेनानायक वहाँ उपस्थित थे। कई महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विचार-विमर्श करना था। सर्वप्रथम बेगम ने पिछले दिनों रेज़ीडेन्सी पर अधिकार करने में असफलता का विश्लेपण करना चाहा।

सेनानायक बरकत अहमद और खान अली खाँ से उसने पूछा "इतनी फ़ौज व भारी तोपखाने के होते हुए भी हम नाकामयाब क्यों रहे?"

कर्नल बरकत अहमद ने कहा, "अव्वल तो हमारे गोला-बारूद वगैरह खत्म हो चुके थे। यह तब हुआ जब तक कि हम कामयाबी के बिलकुल करीब थे। हमने यही मुनासिब समझा कि लड़ाई बन्द कर दी जाये ताकि दुश्मन को मालूम न हो सके कि हमारे पास सामान की कमी है।"

लेफ्टीनेन्ट कर्नल खान ने कहा, "मलका-ए-आलिया एक और वजह हमारी नकामयाबी की यह है कि हमारे इरादो का इंगरेजों के जासूसों को पहिले से ही पता लग जाता है। अगर अचानक हमला किया जाता तो हम लोग

शर्तिया रेज़ीडेन्सी पर कब्जा कर लेते।"

बेगम ने जासूसी दस्ते के हाकिम रिपुदमन सिंह की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा तो उसने कहा, "आलीकद्र हम लोग उनके पचासों जासूसों को मौत के घाट उतार चुके हैं या पकड़ कर कैदखाने मे भिजवा चुके हैं, मगर दो-चार अभी भी ऐसे हैं जो हमारे मन्सूबों की इंग्रेज़ों को पेशगी खबर दे देते है। इनमे अंगद और अंजूर तिवारी सबसे ज्यादा चालबाज और हौसलेमन्द हैं। वैसे मैंने इनको गिरफ्तार करने के लिए अपने जासूसी दस्तों को आगाह कर दिया है मगर फ़िर भी अभी तक कामयाबी नही मिली। अंगद तो एक बार पकड़ में आ भी गया था। उसके पास कोई सबूत नही मिल सका इसलिए हमारे आदमियों ने उसे मेरे पास पेश करने को भेजा, लेकिन वह सब की आँखों मे धूल झोंक कर रास्ते में ही ऐसा गायब हुआ कि पकड़ में ही नहीं आ सका।"

"उफ़ कर्नल ! इस शख्स पर खास तौर से नजर रखी जाये और जब भी वह पकड़ में आ जाये, उसे गिरफ्तार करके क़ैद में डाल दिया जाये।" बेगम ने कहा।

"जी अलीजाह, अब की बार अंगद और अंजूर तिवाड़ी दोनो को ही गिरफ्तार करके क़ैद में डाल दिया जायेगा।"

"कारतूसों व गोलाबारूद के बारे में क्या किया जाये ?" राजा जैलाल सिंह की तरफ़ देखते हुए बेगम ने पूछा।

"आलीकद्र, बारूद तैयार कराई जा रही है और जल्द ही अच्छी तादाद में मुहैया हो सकेगी। फिलहाल गोलों की जगह पिटे हुए लोहे और पीतल से काम लिया जा सकता है, वैसे हमारे मिस्त्रीखाने मे रात दिन काम चल रहा है और इनकी कमी भी दो चार दिनों में दूर हो जायेगी।" राजा ने कहा।

तभी कर्नल बरकत अहमद ने बताया, "रोज़ाना की लड़ाई मे मलका-ए-आलिया, फिलहाल हम लोग गोलियों की जगह लकड़ियाँ, लोहे के टुकड़े, पैसे और जानवरो के सीगों को काम में लेकर दुश्मनों का हौसला पस्त कर रहे हैं। इसमे भी बहुत लोग घायल हो जाते हैं—कुछ मर भी जाते हैं।"

कर्नल की बात सुन कर बेगम सहित सभी लोग मुस्करा उठे।

'वाह आफ़ो कर्नल आफ़ो ! लेकिन फिर भी हमें जल्द ही कारतूसों का इन्तिजाम कराना चाहिए। तब तक पासी लोगों को सुरंगें लगाने और तीर-कमान से काम लेने को कहा जाये। अली नकी खाँ और राजा जैलाल सिंह तुम दोनों कारतूसें मुहैया कराने का इन्तिज़ाम करो।" बेगम ने कहा।

"जी आलीक़द्र, बहुत जल्द यह इन्तिजाम हो जायेगा," दोनों अमीरों ने एक साथ कहा।

"अच्छा महमूब खाँ हमारे भेजे हुए खरीतों मे से कुछ के जवाब तो आ

गये थे, क्या और भी कोई आया है ? रानी लक्ष्मीबाई ने तो बहुत ही जोशीला खत भेजा था। लिखा था कि वे हमारे साथ हैं और वतन की आज़ादी के लिए अपना सब कुछ क़ुर्बान करने को तैयार हैं।" यह बेगम थी।

"जी मलका-ए-आलिया ! नाना साहब का एक खत और आया है। यह भी पहिले की तरह उन्होंने अपने खून से लिखा है। कहते हैं कि हम हर तरह से आपके साथ हैं और साथ ही रहेंगे। जल्द आपसे मिलेंगे और आगे की कार्रवाई पर सलाह-मशविरा करेंगे।" महमूद खाँ ने कहा "यह जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह का खत है, उन्होंने इंग्रेज़ के खिलाफ खुलेआम जंग छेड़ दिया है। वे लिखते हैं कि आज़ादी के हज़ारों दीवाने उनके साथ हैं। वे अपनी जान की बाज़ी लगा कर मुल्क से इंग्रेज़ों को नेस्तोनाबूद कर देंगे। अपने इलाके की तरफ से अवध की ओर बढ़ेंगे और जल्द बेगम आलिया से मुलाकात करेंगे।"

"वाह, बहुत खूब, वकई आज़ादी के दीवानों की कोई कौम नहीं होती ! वाह-वाह ! मुल्क को ऐसे ही बहादुरों की ज़रूरत है !" यह बेगम थी।

" हुज़ूर बेणी माधव वग़ैरह और शंहशाह के खतों का तो आप मुलाहिज़ा कर ही चुकी हैं।" महबूब खाँ ने कहा।

"हाँ महबूब खाँ, वो हमने पढ़ लिए हैं। अब चारों तरफ से इंग्रेज़ों पर हमले हो रहे हैं। अगर हम बाहदुरी से लड़ते रहे तो बहुत जल्द हमें क़ामयाबी हासिल हो जायेगी। लगता है इंग्रेज़ों का सितारा अब डूबने ही वाला है !" यह बेगम थी।

इसके बाद महाराज बालकिशन ने बेगम को बताया, "जगह-जगह से, हुज़ूर, हज़ारों छकड़े आटा आ रहा है, अब रसद की कोई कमी नहीं है। सोने-चाँदी के ढेर लग गए हैं। हुज़ूर को मुकम्मिल हिसाब एक दो दिन में पेश कर दूँगा लेकिन आप इत्मीनान रखें, आलीकद्र, कि हमारे पास पैसे की तंगी कभी नहीं आ सकती। जिस मुल्क की रिआया इतनी गर्मजोशी से इमदाद दे, उस मुल्क़ में पैसा तो क्या किसी चीज की भी किल्लत नहीं हो सकती।"

"वाह, सुहानल्ला, बहुत खूब।" बेगम ने कहा और सबका शुक्रिया अदा करके दरबार का समापन कर दिया। विभिन्न अमीरों ने कुछ आवश्यक आदेशों पर बेगम के हस्ताक्षर कराए और कई मुद्दों पर मार्गदर्शन लेकर विदा ली।

29

अंग्रेज़ी छावनी मे स्त्री-पुरुष और बच्चे सभी जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे थे। चीफ़ कमिश्नर इंगलिस को रात दिन विभिन्न स्थानो पर जाकर रक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता। उसने जी-जान लड़ाकर बहुत अल्प साधनों से ही रेज़ीडेन्सी की सुरक्षा मे योगदान किया। समय के अभाव के कारण वह लगभग दो माह से बिना कपड़े बदले ही सो पाता था। अवध सेना के पासी सैनिक सुरंग लगाने में बहुत सिद्ध-हस्त थे। अंग्रेज़ी सेना में कप्तान फुल्टन को विशेष रूप से इन सुरंगों से सुरक्षा का ध्यान रखना पड़ता था। वह संदेहास्पद स्थानो पर घंटों घात लगाए बैठा रहता था। कई बार सुरंगें भारी विनाश का कारण बन जाती थीं। एक सुरंग के विस्फोट से लकड़ी के बाड़े का लगभग 50 फुट भाग उड़ गया। इंगलिस स्वयं बाल-बाल बचा और दो योरोपीय सैनिक हवा में उछल गए। उसी समय गोलियों की बौछार भी हुई और कई आदमी मारे गए। कानपुर से सहायता सेना की अनवरत प्रतीक्षा अब निराशा में बदल चुकी थी। अधिकांश लोगो ने धैर्य बिलकुल खो दिया था। सुरंगों के कारण रेजीडेन्सी की कई दीवारें धराशायी हो गई थी। औरतों के निवास असुरक्षित हो जाने के कारण उन्हें इधर-उधर अन्य स्थानो पर रखना पड़ा, जिससे वे काफी परेशान थी। पुरुष खाइयों में पड़े प्रतिक्षण आसन्न मृत्यु से आशंकित थे। साबुन उपलब्ध न होने से कपड़े केवल पानी से ही धोए जा सकते थे तथा इसके लिए भी धोबी भारी मज़दूरी वसूल करता था। कपड़ों का नितान्त अभाव था तथा गिने चुने लोग ही कपड़े बदल पाते थे।

अस्पताल में मरीज़ों की संख्या बढ़ती ही जाती थी। गंदगी और कृमियों के कारण वहाँ का वातावरण अत्यन्त दूषित था। दवाओं का अभाव था। यदि किसी का हाथ या पैर कट जाता तो उसकी मृत्यु अवश्यंभावी थी।

कई बार दूध देने वाली बकरियों और तोप ढोने वाले बैलों तक को मार कर मांस की आपूर्ति करनी पड़ती। सिगरेटों और अफीम का अभाव भी कम दुखदाई नही था। सिगरेटो की प्रायः चोरी होती रहती थी। अफ़ीम के आदी बहुत से सैनिक इसके अभाव के कारण ही रेज़ीडेन्सी छोड़कर चुपचाप चले जाते थे।

ऐसी आपदा में ब्रिगेडियर इंगलिस ने अपने अधिकारियों से मन्त्रणा हेतु एक बैठक बुलाई। इंगलिस ने कहा, "रेजीडेन्सी का एक हिस्सा गिर जाने से बहुत से सिपाही दब गए हैं। उन्हें निकालने वालों पर भी बराबर गोलीबारी होती रही। अतः केवल एक आदमी ही जिन्दा निकाला जा सका। बाकी बाग्द लोगों की तो सिर्फ लाशें ही निकाली जा सकी हैं। इन हालात की वजह से एक तो जगह की तङ्ग

तंगी हो गई है, दूसरे खतरा भी ज्यादा बढ़ गया है। हमें पता नहीं कितने दिन और इस आफत का सामना करना पड़े। मैं समझता हूँ हमें फिर किसी को कानपुर भेजना चाहिए ताकि सही हालत का पता लग सके।"

"जी हाँ, हालत दिनों-दिन बदतर होती जा रही है हम लोग जाल में फँसे चूहों से बेहतर नहीं। कुमुक की उम्मीद करते-करते इतने दिन हो गए। लगता है वे लोग भी कोशिश तो कर ही रहे होंगे, लिहाजा किसी को भेजना जरूरी है क्योंकि अब तो एक-एक दिन भी भारी पड़ रहा है।" वित्त कमिश्नर गब्बिन्स ने कहा।

"जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है, हमारी फ़ौज के बहुत से हिन्दोस्तानी भी बाग़ियों से हमदर्दी रखते हैं और उनसे खतो-किताबत करते रहते हैं।" यह इंगलिस था।

"जी हाँ, सर ! एक सिपाही से तो हमने ऐसा खत पकड़ भी लिया था। पन्द्रह-सोलह सिपाही कल ही रेजीडेन्सी से फ़रार हो बाग़ियों में जा मिले हैं।" कप्तान फुल्टन ने कहा।

"उफ़ फुल्टन, इस बेगम की कोशिश ही ऐसी है कि हिन्दी सिपाही व अफसर सभी उससे हमदर्दी रखते हैं और मौका पाते ही ऐसे जाते हैं जैसे रोशनी की तरफ़ पतंगे।" इंगलिस ने कहा, "लेकिन हमें कुछ ऐसा इन्तिजाम करना चाहिए कि वे खुद को खतरे मे डाले बग़ैर रेजीडेन्सी नही छोड़ सकें।"

"मेरे खयाल से हमे उनके बचाए हुए पैसे भी अपने पास जमा कर लेने चाहिए ताकि वे अपने खून-पसीने की कमाई छोड़ कर जाने से कतराएँ।" यह गब्बिन्स था।

"बिलकुल माकूल खयाल है। इसके अलावा जिन लोगों पर शक़ हो, उन्हें ऐसी जगह तैनात किया जाए कि फरार होने की कोशिश करते वक़्त उन्हें मार दिया जाए क्योंकि ये लोग दुश्मन के कैम्प में जाकर हमारे खिलाफ जासूसी का काम भी तो करते हैं।" इंगलिस ने कहा।

"यस सर, ऐसा ही करेंगे।" फ़ुल्टन ने कहा।

कप्तान एण्डरसन ने कहा, "सर इस बेगम ने भी कैसा ग़जब ढाया है कि हम लोगों का जीना हराम हो गया है। हर दिन मौत के इंतिज़ार में निकल रहा है। अजीब हौसले व हिम्मत की औरत है ये बेगम !"

"कैप्टन, उसे औरत कहना तो उसकी तौहीन है ! देखते नहीं उसने पूरे अवध पर किस होशियारी से क़ब्जा कर लिया है, किस तरह रेजीडेन्सी के खिलाफ़ मोर्चेबन्दी कर रखी है ! लखनऊ में हमारी हुकूमत आखिरी साँसें गिन रही है। उसने आम लोगो मे आज़ादी का नशा फूंक दिया है—यह उसी की राहबरी है कि जगह-जगह से अलग-अलग कौमों के लोग उसके झंडे के नीचे इकट्ठे होकर हमें

क़दम-क़दम पर मात दे रहे हैं। उसका हौसला, दिलेरी, हिम्मत, बहादुरी और हुस्ने तंज़ीम (संगठन शक्ति) किसी भी होशियार और तजर्बेकार योरोपीय जनरल से कहीं बढ़ कर है। मैदाने जंग में वह रणचंडी-सी घूमती है! है कोई ऐसी मिसाल किसी योरोपियन स्त्री की? खैर, कैप्टन अब हमें राशन आधा करना पड़ेगा और उसमें भी सिर्फ़ बहुत जरूरी चीज़ें ही दी जानी चाहिए जिससे घेरे में पड़े लोग कुछ दिनों और ज़िन्दा रह सकें। देखो शायद कुछ दिनों में कानपुर से इमदाद मिल जाए।"

"सर, कानपुर में जनरल हैवलॉक को क्या लिखा जाए?"

"उन्हें यहाँ की हालत के बारे में खुलासा हाल लिखो। साफ़-साफ यह भी लिख दो कि अगर चन्द दिनो में हमे मदद नही मिलेगी तो रेज़ीडेन्सी में एक भी शख्स का बचना मुश्किल है। इसके अलावा हमारी सारी तोपें और 23 लाख रुपये का खजाना बाग़ियों के हाथ पड़ जाएगा। लिहाज़ा वे हमें लिखें कि अभी मदद भेजने में कितना वक्त और लग जाएगा और वहाँ की फ़ौजों की क्या हालत है। यह खत अंगद के ज़रिए आज ही भेज दो।"

"वैरी वैल सर!" फ़ुल्टन ने कहा।

"इसके अलावा हमें सुरंगों के खिलाफ खास तौर से कुछ करना है। उधर जुहानीज़ के मकान पर कोई ऐसा निशानेबाज़ बैठा है जिसका निशाना कभी चूकता ही नही। उसे किसी क़दर खत्म करना ज़रूरी है।"

"यस सर, उसे हम लोग 'कील ठोक बॉब' कहते हैं, सुना है कोई अफ्रीकन है।" कैप्टन एण्डरसन ने कहा, "उस एक आदमी ने जितने लोगों को मारा है शायद ही किसी ने मारा होगा।" "फिर भी कोशिश करो, उसे मारने से हमे बहुत राहत मिलेगी, क्योंकि इन दिनों हमारे लिए एक-एक आदमी की जान बेशक़ीमती है।" इंगलिस ने कहा।

30

अनेक बार राजा जैलाल सिंह, अहमदुल्ला शाह और महबूब खाँ वग़ैरह अमीरों ने बेगम से निवेदन किया था कि नाबालिग युवराज बिरजिस कादर का औपचारिक रूप से राज्याभिषेक कराया जाकर इसका ऐलान कराया जाए। इससे स्वाधीनता-सेनानियों को ऐसा वैधानिक प्रमुख मिल जाएगा जो सत्ता का प्रतीक

हो। उसके झंडे के नीचे सैनिकों को अधिक उत्साह और प्रेरणा मिल सकेगी।

बेगम ने इस प्रस्ताव के कई पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के बाद इसे स्वीकार कर लिया। उसने यह भी तय किया कि स्वाधीनता-संग्राम को एकरूपता यानी राष्ट्रीय स्वरूप देने के लिए दिल्ली के मुगल-सम्राट से पुनः सम्बन्ध स्थापित किया जाए। सम्राट् को समस्त देश का अधिष्ठाता मानते हुए उसके आदेशों का अक्षरशः पालन किया जाए। बिरजिस क़ादर के अवयस्क होने के कारण बेगम हज़रत महल को उसकी ओर से अभिभावक के बतौर शासन व युद्ध सम्बन्धी कार्य चलाना था। कहना नहीं होगा कि बेगम पहिले से ही यह कार्य पूर्ण उत्साह एवं लग्नशीलता से कर रही थी।

राज्याभिषेक की तैयारियाँ होती रहीं और जुलाई के अन्त में बिरजिस कादर को सिंहासनारूढ़ करा दिया गया। उस दिन चारों तरफ रोशनी की गई। आतिश बाजी, बन्दूकें और तोपें चला कर खुशियाँ मनाई गईं और विभिन्न लोगों को यथोचित इनाम बाँटे गए। रेज़ीडेन्सी में जब यही तोपों के धमाके और बन्दूकों की आवाजें सुनाई दी थी तो अंग्रेजों ने समझा था कि सहायता-सेना आ पहुँची है। अन्त में उन्हें निराशा ही हाथ लगी।

बेगम ने अमीरों की मन्त्रणा के अनुसार महत्त्वपूर्ण पद हिन्दू और मुसलमानों को समान रूप से दिए। शराफुद्दौला को प्रधान मन्त्री बनाया गया। वित्त विभाग महाराज बालकिशन को दिया गया। राजा जैलाल सिंह को युद्ध मंत्री और सम्भू खाँ को मुख्य न्यायाधीश का पद मिला। महबूब खाँ को बेगम का मुख्य सलाह-कार तथा अलीनकी खाँ को मीर बख्शी बनाया गया। अन्य सभी पदाधिकारियों को बदस्तूर रखा गया।

राज्याभिषेक की औपचारिक घोषणा करते हुए बेगम के सैनिकों ने रेज़ी-डेन्सी में घिरे हुए सैनिकों को अभूतपूर्व उत्साह से सूचित किया कि हमने अपने बादशाह की ताजपोशी कर दी है। फिरंगियों की हुकूमत हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो गई है। हम बहुत जल्द रेज़ीडेन्सी पर कब्जा करने पहुँच रहे हैं।

उस युग में जन-साधारण को एकजुट करने के लिए किसी प्रेरणा-स्रोत की आवश्यकता भी थी। इस राज्याभिषेक ने सदैव अखरने वाले इस अभाव को दूर कर दिया और लोग दूने उत्साह और अपूर्व निष्ठा से स्वाधीनता संग्राम में जुट गये।

31

बेगम हज़रत महल अपने सैनिक कार्यालय-कक्ष में कुछ आवश्यक पत्रावलियों का निरीक्षण कर रही थीं कि एक निजी सहायक ने आकर सूचना दी, "आली मुकाम, दो फ़ौजी अफ़सर आपसे बारियाबी (भेंट) की इजाज़त चाहते हैं, उन्होंने अपनी यह मुहर दी है।"

मोहर देखते ही बेगम ने कहा, "ओहो ! यह तो नाना साहब महाराजा पेशवा बहादुर की मुहर है, कहाँ हैं वे ?"

"हुज़ूर वे फौजी दफ्तर के सदर दरवाज़े पर हैं।"

"अच्छा-अच्छा, हम खुद उनके इस्तक़बाल के लिए चलते हैं।" बेगम ने तुरंत उठकर कहा। वह आनन-फ़ानन में सदर दरवाज़े पर पहुँच गई। नाना और उसके साथी युवक ने झुककर बेगम का अभिवादन किया और बेगम भी उसी तरह अभिवादन का जवाब देती हुई बोली, "जहे किस्मत महाराजा पेशवा बहादुर, मैं कितने दिनों से जनाब के इन्तज़ार में थी। आइये, आइये, तशरीफ़ लाइये।"

"सोच तो मैं भी काफी दिनों से रहा था, मगर इन कम्बख्त फ़िरंगियों से निपटना भी तो मुश्किल महाल था। अब आकर निजात मिली तो फौरन आपके पास हाज़िर हुआ हूँ।" नाना ने कहा।

"कानपुर पर तो आपने क़ब्ज़ा कर ही लिया था।"

"जी हाँ बेगम-आलिया, जनरल व्हीलर को हराकर हमारी फतह तो हो ही चुकी थी। सारे इंग्रेज़ों को निकाल भगाया था हमने, लेकिन ये लोग भी गजब का हौसला रखते हैं। जनरल हैवलॉक के आने की कानोंकान खबर नहीं लगी और उसने कानपुर पर अचानक हमला बोल दिया। हमें थोड़ी भी पहिले से खबर हो जाती तो हम उसके दाँत खट्टे कर देते लेकिन अफसोस ! हमारी फ़ौजों की बुरी तरह हार हो गई। समझिए कि कानपुर और बिठूर तो पूरी तरह से हमारे हाथों से निकल गए।"

"उफ अफसोस, सद अफ़सोस ! यह तो बहुत बुरी खबर है महाराजा !"

"जी हाँ मलका-ए-आलिया, बिठूर जाकर मेजर स्टीवेन्सन ने हमारे सारे महल और मन्दिर तहस-नहस कर दिए हैं। करोड़ों रुपयों का खजाना लूट लिया है। हमने ज्यादहतर खजाना एक कुएँ में हिफ़ाज़त के लिए डलवा दिया था। उन बदज़ातों ने वह भी निकाल कर कब्ज़े में कर लिया है। हैवलॉक ने जो कुछ किया वह तो किया ही लेकिन कर्नल नील ने तो बनारस, इलाहाबाद और कानपुर

में कहर बरपा दिया है। कमीने ने आम के दरख्तों पर मीलों दूर तक फांसी के फन्दे लटका दिए और हजारों बेगुनाह गरीब-अमीर, बूढ़े-बच्चे और मर्द-औरतों को फांसी दे दी। इतनी बेरहमी तो तवारीख मे कहीं देखने को भी नहीं मिलेगी। उस बदजात ने खेलते हुए बच्चों तक को नही बख्शा है।"

"हय अल्लाह, यह तो बड़ी सनसनी खेज और दर्दनाक खबर है। इस कमीने कर्नल को भी एक-न-एक दिन जरूर सजा मिलेगी।"

"जी मलका, उसने कम अज कम छः हजार लोगों को क़त्ल करा दिया होगा।"

"या खुदा! यह तो इन्सान नही भेड़िया है, भेड़िया!" बेगम ने कहा, "महाराजा साहब आपने हमें कई तरह से इमदाद दी उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया! अब यह भी तो फरमाइए कि आगे क्या करना है।"

"बेगम-आलिया, आपने भी तो कम इमदाद नही पहुँचाई है, अभी तो बहुत कुछ करना है। गो हमारी कानपुर में हार हो गई है फिर भी अभी हौंसला पस्त नहीं हुआ। हम लोग और भी जोशो खरोश से इन बदजातों के खिलाफ लड़ेंगे और इन्हें मुल्क से निकालकर ही दम लेंगे।"

"बेशक महाराजा, हमे एकजुट होकर इनसे लोहा लेना चाहिए।"

"जी मलका-ए-आलिया, मैं अभी फतेहपुर चौरासी के राजा जसंसिह के पास जाकर फौजें जमा करूंगा और इन कमीनों पर कानपुर की तरफ से हमला करूंगा। इधर से आप इनकी खबर ले रही है। मैं चाहता हूँ कि किसी तरह चन्द्रनगर के फ्रांसीसी गवर्नर से मुलाकात हो जाये। मैंने उसे एक खत भी भेजा है पता नही पहुँचा या नही। मुझे पूरी उम्मीद है कि अगर हमे उसकी मदद मिल गई तो इन इंग्रेजो को हम लोग छठी का दूध याद करा देंगे।"

"कोशिश करते रहिए, वहाँ से इमदाद की पूरी उम्मीद भी है।" बेगम ने कहा, "लेकिन महाराजा आपने इस नौजवान का अभी तक तअर्रुफ (परिचय) नही कराया।"

"ओ हो, वाकई यह तो मैं भूल ही गया था। यह फौजी नौजवान नही बल्कि हमारी बहिन है—नाम है सुनन्दा उर्फ़ नगाबाई। छबीली बहिन यानी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इसकी चाची है। सात साल की उम्र में यह बेवा हो गई थी लेकिन छबीली बहिन की संगत ने इसे अजहद बहादुर और दिलेर बना दिया है। तलवार, बन्दूक नेजा और रिवाल्वर के इस्तेमाल मे तो माहिर हैं ही, फर्जी कमान में भी इसका मुकाबिला बड़े-बड़े सिपहसालार भी नही कर सकते। सच पूछा जाए तो जनरल व्हीलर को हराने में सुनन्दा बहिन का ही ज्यादा हाथ रहा है। इसे मैं आपकी खिदमत मे छोड़े जा रहा हूँ।"

"वाह, वाह, सुहानल्ला! इनके तअर्रुफ से पेश्तर तो मुझे गुमान भी नही

हुआ था कि ये मर्द नहीं औरत हैं—जहे किस्मत ! मैं इन्हें खातून (महिला) बटेलियन की कमान सौंप दूंगी ।"

"बहुत माकूल तजवीज़ है बेगम साहिबा । अच्छा अब मुझे इजाज़त दीजिए ।" नाना ने कहा ।

"वाह इस तरह इजाज़त क्यो कर मिल सकेगी महाराजा, मैं खाना मँगवाती हूँ और कुछ माली इमदाद भी ।"

"नही बेगम साहिबा, खाने मे बहुत देर हो जाएगी और फिलहाल माली इमदाद की भी ज़रूरत नहीं है । जब होगी तो आपको ही तकलीफ़ दूंगा ।" नाना ने कहा ।

नाना के लाख मना करने के बावजूद बेगम नही मानी और फौरन खाना मँगवाया । साथ ही उसने वजीर खजाना महाराज बालकिशन को बुलवाकर नाना को एक लाख रुपये अपने खज़ाने से देने की आज्ञा दी । खजाना ले जाने के लिए उसने दस घुड़सवारों का एक गारद भी नाना के साथ जाने के लिए तैयार कर दिया ।

"शुक्रिया बेगम साहिबा बहुत-बहुत शुक्रिया !" नाना ने कहा ।

"यह सब तो हिन्द की आज़ादी के लिए है, इसमें मेरा क्या है ! सब कुछ मुल्क के लिए क़ुर्बान है ।" बेगम ने जवाब दिया ।

"अच्छा अब इजाजत बख़्शें, बेगम साहिबा ।" यह नाना था ।

"अपसे जुदा होना अच्छा तो नही लग रहा महाराजा पेशवा, मगर वक़्त की नज़ाक़त देखते हुए आपको रोकना भी मुनासिब नही होगा ।"

नाना तुरन्त उठ खड़ा हुआ तथा बेगम और सुनन्दा सदर दरवाज़े तक उसे पहुँचाने गईं । जब नाना जुदा होने लगा तो बेगम और सुनन्दा दोनों की आँखें नम थी । भरे हुए गले से बेगम ने कहा, "अच्छा, खुदा हाफ़िज़ ।"

नाना ने कहा, "खुदा हाफिज़ !" और घोड़े पर सवार हो तेज़ी से रवाना हो गया । बेगम और सुनन्दा उसे तब तक देखती रही जब तक कि वह आँखों से ओझल नही हो गया ।

इधर बेगम ने सुनन्दा को महिलाओं की बटालियन का निरीक्षण कराया, उसका परिचय सभी सेना-नायकों से कराया और उसे कर्नल का ओहदा देकर इस बटालियन की कमान सौंप दी ।

"कर्नल सुनन्दा हमें इस बटालियन के लिए एक जहीन, हौसलेमंद और तजर्बेकार सिपहसालार की कमी खटक रही थी, वह तुमने पूरी कर दी ।"

"शुक्रिया, बेगम आलिया, शुक्रिया, मैं भी अपने फर्ज़ को अंजाम देने मे कभी कोई कमी नहीं रखूंगी ।" यह सुनन्दा थी ।

"बेशक़-बेशक, हमे तुम से यही उम्मीद है ।" बेगम ने कहा ।

32

अनीस अहमद और ज़ेबुन्निसा के पिता दोनों ही उन दोनों की मँगनी के लिए तैयार थे लेकिन स्वाधीनता संग्राम में कार्यरत होने के कारण न तो अनीस राज़ी होता था और न ज़ेबुन्निसा ही। वैसे वे कई अभियानों में साथ-साथ रहकर सफल हुए थे तथा उनमें परस्पर आत्मीयता बढ़ती जा रही थी। ज़ेबुन्निसा अनीस की वीरता, स्फूर्ति तथा उच्च आदर्शों की प्रशंसक थी और अनीस उसके सौंदर्य, साहस और लग्नशीलता पर मोहित था। हबीब खाँ ने लुत्फुन्निसा की मँगनी नवाबगंज के अमजद अलीशाह से करना तय कर लिया था। वह तथा अमजद अली का बड़ा भाई मुहम्मद अलीशाह चाहते थे कि दोनों मँगनियाँ एक साथ ही कर दी जायें लेकिन अमजद अली और लुत्फ़ो को भी वतन की आज़ादी का ऐसा नशा छाया था कि वे अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य देश के लिए समर्पित भाव से काम करना ही मानते थे। अतः जब कभी मँगनी का प्रसंग आता तो वे टाल जाते थे। लुत्फ़ुन्निसा का अमजद अली से अधिक संपर्क नहीं रहा था किन्तु वह ज़ेबुन्निसा से प्राय उसके सम्बन्ध मे बातचीत करती रहती थी और मन-ही-मन उसे चाहने लगी थी। आज जब वे कानपुर की सड़क पर अपने फौजी दस्ते के साथ गश्त पर थी तो लुत्फ़ो ने ज़ेबुन्निसा से कहा, "ज़ेबो क्या हुस्न पाया है तुमने, जिधर जाती हो लोगों की निगाहें तुम्हें ही निहारती रह जाती हैं! अनीस भाई तो तुम्हारे सामने खोये-खोये से हो जाते हैं।"

"धत्त लुत्फो, तुम्हें तो बस शैतानी ही सूझती रहती है। वे भला खोये-खोये क्यों कर होंगे? अरे अपनी कहो कि अमजद भाई तुम्हें देखकर दीन-दुनिया को ही भूल जाते हैं। जनाब ज़रा आइने में कभी अपनी सूरत भी देख लिया कीजिए। क्या ग़ज़ब ढाती हो कि परी शर्माए और हूरें पानी भरें!" ज़ेबो ने कहा।

"अये हये, ज़ेबो! भाई जान की सुहबत में रहकर तुम्हें बातें बनाना तो खूब आ गया है!—वह दिन दूर नहीं, जब तुम अच्छी खासा शायरा बन जाओगी! जब शुरूआत मे ही यह हाल है तो आगे न जाने…।" यह लुत्फ़ो थी।

"मैं शायरी नहीं कर रही, वाकया बयान कर रही हूँ लुत्फुन्निसा! यकीन मानो मैंने जो कुछ कहा है बावन तोले पाव रत्ती सही है।"

"हर शायर यही कहा करता है ज़ेबुन्निसा।
अच्छा तो निकालूं आईना, रक्खूं सामने?"

"अच्छा तो जनाब अब आईना भी साथ रखने लगी हैं!"

उसी वक़्त घोड़ों की टापों की आवाज सुनाई दी तो वे चौकन्नी होकर सड़क के दोनों तरफ देखने लगीं। आवाजें पास आती जा रही थीं और कानपुर की तरफ धूल के ग़ुबार भी नजर आने लगे। जैसे ही घोड़ों की हिनहिनाहट सुनाई दी लुत्फुन्निसा ने आज्ञा दी, "जवानों होशियार !" सभी सिपाहियों ने एक जगह रुककर अपने-अपने हथियार सम्भाल लिए। उन सभी को लुत्फुन्निसा ने सड़क से हटकर एक खेत में खड़े होने का आदेश दिया और ज़ेबुन्निसा के साथ स्वयं भी एक भारी पेड़ के पीछे खड़ी हो गई। जैसे ही घुड़सवार योद्धा पास पहुँचे वैसे ही उन्हें लुत्फुन्निसा के फौजी दस्ते ने घेर लिया। अनीस, प्रताप, अमजद, कनक और शीतबाला के साथ आठ-दस सवार थे। उन्हें देखते ही दोनों कुमारियाँ सकते में आ गईं। पहल लुत्फ़ो ने ही की, "मुआफ़ करिये भाईजान, हमने तो समझा था कि दुश्मन का कोई जासूसी दस्ता चला आ रहा है !" कह तो वह अनीस से रही थी लेकिन तिरछी निगाहों से वह अमजद की तरफ देख रही थी। तभी अमजद ने कहा।

"हम लोग तो यही समझे थे कि अब हमें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

अब ज़ेबुन्निसा की बारी थी, "भाईजान वाक़ई लुत्फ़ुन्निसा की गिरफ्त से बचना नामुमकिन है—आज तो आप···।"

"धत्त ज़ेबो, बहुत बोलने लगी हो !" धीरे से कहकर लुत्फ़ो ने आँखें झुका लीं।

अनीस जो अब तक ज़ेबुन्निसा के रूप-सौन्दर्य को निहार रहा था बोला, "भई अभी गिरफ्तारी का वक़्त नहीं आया लिहाज़ा कुछ काम की बात कर ली जाए। एक निहायत ज़रूरी ख़बर बेगम-आलिया तक पहुँचानी है। अच्छा हुआ तुम लोग यहीं मिल गईं वर्ना हमें ही लखनऊ जाना पड़ता। जनरल हैवलॉक कानपुर से मगरवारा की तरफ बढ़ रहा है। शायद बशीरत गंज पर हमला करने वाला है। वैसे वहाँ हमारी थोड़ी-सी पल्टन मौजूद है मगर बहुत ज्यादह फौजों की ज़रूरत होगी। हम लोग वापिस अपनी पल्टन की मदद को जाते हैं और तुम जल्दी से जाकर बेगम-आलिया को इत्तिला कर दो ताकि फ़ौरन और फ़ौजें रवाना हो सकें।"

"जी अच्छा, हम लोग अभी जाते हैं।" दोनों ने कहा। अमजद अली ने बताया, "यह ख़बर हमें तीन गोरे जासूसों से मिली है—दो गोरे तो मारे गए, लेकिन एक को गिरफ्तार किया है। इनसे यह ख़त भी बरामद हुआ है। यह ख़त और इस गोरे को भी तुम लोग अपने साथ ही ले जाओ, शायद इसके ज़रिये कुछ और भी मालूमात हो सकें।

"जी बहुत अच्छा।" दोनों कुमारियों ने कहा। घोड़े पर बँधे हुए गोरे को

खोलकर इनके हवाले किया गया और उसे फ़ौरन दूसरे घोड़े पर कस लिया गया। दोनों दल सड़क पर एक-दूसरे के विरुद्ध दिशाओं की ओर रवाना हो गए।

33

लखनऊ पहुँचकर लुत्फो और खैरो दोनों सीधी बेगम के पास पहुँचीं और यह सनसनीखेज़ समाचार सुनाया। वह पत्र और पकड़े गए गोरे को भी पेश किया गया। बेगम ने उस गोरे से कई तरह के प्रश्न किये और फिर उसे क़ैदखाने में डालने का आदेश दिया। वह सोचने लगी, "मालूम होता है कि हैवलॉक के पास अब काफी फ़ौजें आ गई हैं!"

उसने युद्धमन्त्री राजा जैलाल सिंह, प्रधानमन्त्री शराफ़ुद्दौलह और खास-खास सेनानायकों को बुलाकर कहा, "कूच की तैयारी की जाए, हमें कानपुर की तरफ रवाना होकर जनरल हैवलॉक से लोहा लेना है।"

"जो हुक्म आलीमुकाम। अब तो सिर्फ आधे घंटे मे हमारी फौजें रवाना हो सकती हैं।" सेनानायकों ने एक साथ कहा।

"वाह बहुत अच्छा, अपने साथ गोला-बारूद काफी तादाद मे ले चलना है। एक तोपखाना भी साथ जाएगा।"

"जी मलका-ए-आलिया।" और सभी तैयारियों में लग गए।

थोड़ी देर बाद जब जैलालसिंह तैयार सेनाओं का निरीक्षण करके महल चौक मे प्रविष्ट हुआ तो आश्चर्य से कहने लगा, "मलका-ए-आलिया, यह क्या! आप फौजी लिबास मे! इतनी सिपह और अफसरों के होते हुए हुजूर को जंग में शामिल होने की क्यों कर ज़रूरत आन पड़ी!"

"हम तुम्हारी खैरख्वाही की दाद देते हैं, राजा जैलालसिंह, मगर हमारा इरादा है कि हम बजात खुद जंग में शामिल होकर दुश्मन से दो-दो हाथ करें और अपनी फौजों का हौसला बढ़ायें। देखते नही हमारा घोड़ा भी हिनहिना-कर कूच के लिये बेताब हो रहा है!"

"वाह मलका-ए-आलिया वाह! जिस मुल्क में हुजूर जैसे रहनुमा हों वहाँ इंग्रेज तो क्या दुनिया की कोई ताकत हुकूमत नही कर सकती। इजाज़त हो तो बन्दा भी हुजूर के साथ...।"

"नहीं राजा नही। वज़ीरे जंग का यहाँ रहना ज़रूरी है ताकि मोके के मुताबिक फौजों को हुक्म देकर मोर्चे पर कुमुक भेजी जा सके और यहाँ रेजीडेन्सी के खिलाफ़ भी जंग जारी रखने का इन्तजाम देखा जा सके।"

"जो हुक्म, आलीजाह," राजा ने कहा, "मैंने पल्टनों का मुआयना कर लिया है —हर तरह से तैयारियाँ पूरी हो गई हैं।"

उसी समय एक सेविका ने आकर बेगम से कहा, "हुजूर तीन इंग्रेज औरतें मय दो बच्चों के चारबाग के पुल से गिरफ़्तार कर के लाई गई हैं ···।"

"उफ इस वक्त हम कितनी जल्दी में हैं! राजा जैलाल सिंह तुम खुद उनके बारे में जांच करो और ज़रूरत समझो तो हमें तफ़सील दो।"

"जी अच्छा आलीजाह!" कहकर वज़ीर चला गया। बेगम तोपखाने और सेनाओं का निरीक्षण करने घोड़े पर सवार होकर निकली तो उसे फौजी पोशाक में देखकर एक-एक सैनिक ने ऐसी देवी के झण्डे के नीचे अपना जी-जान लड़ा देने की मन ही मन क़सम खाई। जब वह वापिस महल चौक में पहुँची तो राजा जैलाल सिंह ने कहा, "आलीकद्र, मैंने उन औरतों के बारे में पूरी जाँच कर ली है। जासूसी का कोई सबूत तो नही मिला है मगर मेरा और फ़ौजी अफ़सरान का खयाल है कि इन्हे गोली मार दी जाये ताकि शुबहा की कोई गुंजाइश ही न रहे।"

"क्या कहते हो राजा जैलाल!" बेगम ने आवेश में आकर कहा, "नही राजाजी नही, जब तक कोई गुनाह साबित न हो, इन्हे मौत की सजा देना मुनासिब नहीं, फिर ये औरतें हैं, साथ में बच्चे भी! अगर हम भी बेगुनाह औरतों और मासूम बच्चों को इस तरह मारने लगे तो हममें और उस बदज़ात कर्नल नील में फर्क ही क्या रहा। ये जगे-आजादी है, अगर हम बेगुनाहो का खून बहायेंगे तो तवारीख हमें कभी मुआफ नही करेगी।" फिर उन औरतों की तरफ देखते हुए बेगम ने पूछा, "आप लोग कहाँ से आई हैं?" तीनों सिसकते हुए बोली, "रेज़ीडेन्सी।"

"चारबाग पुल के पास क्या कर रही थी?"

"योर मैजेस्टी, रेज़ीडेन्सी में चार दिन से दूध नई मिला, हमको अपना भूख प्यास का परवा नई, मगर बच्चों को भूखा मरना नई देख सकता था। चारबाग पुल पर गई कि कोई गाय या बकरी वाला मिल मिल जाये तो बच्चों के लिये दूध ले लें।" एक औरत ने टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में सिसकते हुए कहा।

"लेकिन आप काँप क्यो रही हैं? घबराइये नही, हाँ फिर आपको दूध मिला?"

"नई मिला योर मैजेस्टी! और आपका सिपाई लोग हम को पकड लाया।"

दूसरी औरत रोती हुई कह रही थी।

"अच्छा! राजाजी इनकी हथकड़ियाँ खुलवा दी जायें। बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर रो रहे हैं, उन्हें दूध पिलाया जाये और इन औरतों को खाना खिलाया जाये।" बेगम ने आदेश दिया।

तीनों औरतें बेगम के सामने घुटनों के बल बैठकर कहने लगी, "थैंक यू योर मैजेस्टी, थैंक यू! आप कितना ग्रेट हैं, थैंक यू, शुक्रिया।" वे बार-बार सिर झुकाकर कृतज्ञता प्रकट कर रही थी।

"अरे आप हमारे पैरों में क्यों पड़ रही हैं, आप तो हमारी बहिनें हैं। वजीर, जब भी ये चाहें इन्हें बाइज्जत रेजीडेन्सी के पास पहुँचा दिया जाये।"

"थैंक यू, योर मैजेस्टी!—आप कितना दरिया-दिल है—कितना ग्रेट हैं—ठीक वैसा ही जैसा हमने छावनी में सुना था।"

राजा जैलालसिंह ने एक अधिकारी को बुलाया और उसे आवश्यक निर्देश देकर औरतों और बच्चों को खाना खिलाने और दूध वगैरह के लिये उसके साथ भेज दिया।

इसके बाद बेगम ने कुछ सेनानायकों और कर्नल सुनन्दा को भी लखनऊ में ही रुकने को कहा। वज़ीर-ए-आजम शराफ़ुद्दौला तथा इन सेनापतियों को उसने आवश्यक आदेश दिये। फिर ऊपर के बड़े झरोखे में जाकर उसने कूच के लिये तैयार सेना को सक्षिप्त-सा भाषण दिया, "मेरे बहादुर साथियो! आज हमें इंग्रेजों के एक बहुत मशहूर जनरल हैवलॉक से मुकाबिला करना है। हमें जान पर खेलकर उसे यह दिखा देना है कि हर हिन्दोस्तानी आजादी का दीवाना है, वतन के लिये हँसते-हँसते मर मिटना जानता है और हिम्मत व बहादुरी में फिरंगियों से कहीं बढ़ चढ़कर है। हमें पूरा यकीन है कि इस लड़ाई में हम ज़रूर कामयाब होंगे।" बेगम के आदेश पर कूच का डंका और बिगुल बजने लगा।

बेगम आलिया जिंदाबाद—बिरजिस कादर जिन्दाबाद!
हमारा वतन आज़ाद हो! इंग्रेज़ कम्पनी बर्बाद हो!!

आल्हा की धुन में गवैयों का एक दल बड़े जोश से गा रहा था:—

वड़े लड़ैया भारतवासी इनकी चमकि रही तरवार।
बेगम हज़रत रणचण्डी-सी जुद्ध-क्षेत्र में भरैं हुँकार॥
दहल रहे सब गोरा हाकिम काँपति हाथन मे तरवार।
आगि उगलि रही तोप अवध की तकि-तकि करैं तोपची वार॥
कहैं फिरंगी हमरी नैया आनि फँसी अब बीच मँझार।
पड़े जान के लाले उनकूँ किये खूब जिन अत्याचार॥

उठे देस के सोये सिंह सब, गोरन कौ करि रहे सिकार।
रुण्ड मुण्ड कटि गिरहिं फिरंगी त्राहि-त्राहि करि रहे पुकार॥
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, चहुँ दिसि मचि गयौ हाहाकार।
हज़रत बेगम और सुनन्दा तांत्या टोपे सब सरदार॥
नाना साहब लक्ष्मीबाई करि रहे चहुँ दिसि मारामार।
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख सबहिं मिलि नाहर जैसे रहे दहाड़॥
बिजली कड़के उत बादर में चमकै इत इनकी तरवार।
फटै करेजा इंगरेजन कौ छुपते फिरें सबहिं नरनार॥
अरे फिरंगी सौदागर तुम बैठे क्यों कर पाँइ पसार।
जागि उठे अब भारतवासी एक-एक कूँ देइ पछार॥
आजादी के दीवाने सब सरे आम कहते ललकार।
नहीं रहेगी, नहीं रहेगी, नहीं रहे गोरी सरकार॥

गवैयों का यह दल भी सेना के साथ चल रहा था। ढोल और नकारों की टंकार के साथ इस जोशीले गीत को सुनकर सैनिकों की भुजाएँ फड़कने लगीं और वे तीव्र गति से कानपुर की ओर चल दिये। बेगम हज़रत महल अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो इस सेना का नेतृत्व कर रही थी।

34

लखनऊ रेज़ीडेन्सी से ब्रिगेडियर इंगलिस के अत्यन्त अनुनयपूर्ण पत्र जनरल हैवलॉक को लगातार प्राप्त हो रहे थे तथा हैवलॉक शीघ्र ही उसे राहत पहुँचाने के लिए आतुर था। नाना को परास्त करने के बाद उसने लखनऊ की सहायता करने की योजना बनाई। तदनुसार उसने गंगा नदी पार करके कानपुर से पाँच मील दूर मगरवारा में अपनी सेनाएँ एकत्रित कीं। आगे बढ़ने से पूर्व उसने अपने अधीनस्थ अधिकारियों से मन्त्रणा की तो कर्नल फ्रेज़र टाइटलर ने कहा, "सर, हमारे पास बढ़िया से बढ़िया हथियार हैं। हमारी एनफील्ड राइफिल का वे बागी एक घंटे भी मुकाबिला नहीं कर सकते। सर, अगर हम चाहें तो आनन फ़ानन ही बागियों को तहस-नहस कर लखनऊ पहुँच सकते हैं। अवध की फ़ौजों को भी कोई फ़ौज कह सकता है। वह तो सिर्फ़ बागियों की

एक भीड़ है जिसे तितर-बितर करना हमारी फ़ौजों के लिये बायें हाथ का खेल है।"

कर्नल नील जो हैवलॉक की कमान में द्वितीय अधिकारी था यही राह देख रहा था कि लखनऊ पर जल्दी से जल्दी क़ब्ज़ा करके वहाँ के लोगों को फाँसी के फन्दे पर लटका कर चारों ओर आतंक फैलाया जाये। उसने कहा, "सर, अब हमें जरा भी देर नहीं करनी चाहिये—हिन्दुस्तानी सिपाही हमारा नाम सुनते ही मैदान छोड़ कर भाग जायेगा। हम अगर चाहें तो दो दिन में ही लखनऊ पर फतह पा सकते हैं।"

हैवलॉक स्वयं भी यही सोच रहा था कि अनुशासित ब्रिटिश सेना के सम्मुख देशी सेना घंटे दो घंटे से अधिक नहीं ठहर सकेगी अतः उसने मगरवारा से आगे बढ़ने का निश्चय किया। उसे उन्नाव तक पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उन्नाव में कर्नल मेंहदी हसन की कमान में प्रताप सिंह, मदन सिंह, ब्रह्मानंद सिंह तथा कुमार उद्गम आदि सेनानायक इंग्रेजी सेना के मुकाबिले के लिये पहुँच चुके थे। घमासान लड़ाई में इंग्रेजों का भारी नुकसान हुआ तथा वे पीछे हटना ही चाहते थे कि कर्नल मेंहदी हसन ने सोचा कि इतनी सरलता से ये पीछे हट गये तो फिर एक दो दिन मे इधर हमला करेंगे, अतः इनका बल जितना हो सके अभी कम कर देना चाहिये। उसने एक चाल चली। अपनी सेना को गुप्त रूप से आदेश दिया कि वह बशीरतगंज की तरफ पीछे हटे। तदनुसार अवध सेना पीछे हटने लगी। हैवलॉक ने समझा कि शत्रु हार कर भाग रहा है। वह उनका पीछा करता हुआ बशीरतगंज तक जा पहुँचा। अवध सेना नगर के अन्दर घुस गई तथा इंग्रेजी सेना भी विजय के गर्व में चहारदीवारी से घिरे इस नगर में पीछा करती हुई जा पहुँची। बस फिर क्या था अवध की सेना ने घिरी हुई इंग्रेजी सेना से भयंकर युद्ध करना शुरू किया। ब्रिटिश सेना मे भगदड मच गयी। कर्नल नील अपनी जान लेकर मगरवारा की तरफ भाग गया।

उसी समय बेगम हजरत महल के नेतृत्व में लखनऊ से विशाल सेना बशीरतगंज जा पहुँची। इंग्रेजी सेना का भीषण संहार होने लगा। बेगम को रण-क्षेत्र में देख कर अवध सेना को अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिल रहा था। उनके विकट आक्रमण के कारण शत्रु-सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। अधिकांश इंग्रेज सैनिक सिर पर पैर रख कर मगरवारा की ओर भागने लगे। अवध के कई सैनिक दस्तों ने कुछ
दूर तक उनका पीछा किया और फिर बशीरतगंज [illegible] गये। इस
इंग्रेजों की अपार क्षति हुई। जनरल हैवलॉक, [illegible] था
अधिकारियों को स्वप्न मे भी आशा नहीं थी कि [illegible]
साहस, शौर्य, और अनुशासन से लड़ सकेंगी। [illegible]
से केवल पन्द्रह सौ बच सके थे। उनकी कई तोपें [illegible]

कार कर लिया था।

इस विजय से अवध सेना का साहस और भी बढ़ गया तथा सभी को पूर्ण आशा हो गई कि अब भारत वर्ष में अँग्रेजी सितारा डूबने में अधिक देर नहीं। बेगम हज़रत महल ने सभी योद्धाओं को सम्बोधित कर उनका मनोबल बढ़ाया तथा युद्ध की तैयारियाँ जारी रखने के आदेश प्रसारित किये। उसके गुप्तचरों ने खबर दी थी कि हैवलॉक इधर बढ़ने के लिये पुनः तैयारियाँ कर रहा है तथा अतिरिक्त सैन्य-दल के आने की प्रतीक्षा में हैं। बेगम ने भी लखनऊ से कुछ सैन्य दल और बुला भेजे।

उधर मगरवारा-शिविर में पहुँचने के बाक हैवलॉक अपनी फ़ौज की भीषण क्षति के कारण बिलकुल पस्त-हिम्मत हो गया था। जिस शत्रु सेना को वह तथा उसके अधिकारी केवल अनुशासन-हीन बागियों की भीड समझे-बैठे थे वह उनकी वर्षों से प्रशिक्षित सेना से कहीं बेहतर साबित हुई। उसके सैनिकों की वीरता, शौर्य तथा साहस देख कर जनरल हैवलॉक और नील जैसे पराक्रमी एवं अनुभवी सेनानायक भी दाँतों तले उँगली दबा गये। हैवलॉक बिना अतिरिक्त सैन्य सहायता के पुन. इस ओर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सका। उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दो दिन बाद ही उसे पर्याप्त सहायता प्राप्त हो गई और वह एक बार पुनः लखनऊ की ओर अग्रसर हुआ। इस बार उन्नाव में उसे प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा और वह बशीरत गंज तक सही सलामत पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही अवध सेना "अल्लाहो, अकबर!, वाहे गुरु की फतह! हर हर महादेव!" का घोष करती हुई इंग्रेजी सेना पर टूट पड़ी। रुस्तम शाह ने हनुमान का वेष धारण कर अपने दल के ब्रह्मानंद सिंह और कुमार आदित्य के साथ अँग्रेजी सेना में प्रलय मचा दी। ये सेनानायक जिधर भी जाते उधर ही अंग्रेजी सैनिकों का सफ़ाया होता चला जाता। बेगम हज़रत महल, कुमार प्रताप, मदन सिंह, कुमार अरविन्द और उद्गम के साथ रणचण्डी सी फिर रही थी, जिधर जाती शत्रुदल काई की तरह फट जाता। चारों ओर भीषण संहार हो रहा था तथा जनरल हैवलॉक का युद्ध-अनुभव, कई तरह की रणनीति तथा व्यूह रचना के बावजूद असफल सिद्ध हो रहा था। अन्त में उसने पीछे हटने का आदेश दिया, लेकिन बेगम के विकराल सैनिक दस्तों के सामने उसके लिये पीछे हटना भी उतना ही कठिन था जितना आगे बढ़ना।

अँग्रेजी सेना के सिपाही अनुशासन-हीन समूह की तरह जहाँ-तहाँ भागकर अपनी जान बचाने का प्रयत्न कर रहे थे, लेकिन अवध के सैनिक पीछे हटती सेना पर भी कदम क़दम पर वार करते जा रहे थे। कुछ बचे खुचे सैनिक हैवलॉक ने बुढ़िया की चौकी पर एकत्रित कर अन्तिम प्रयास करना चाहा किन्तु अवध सैनिकों ने वहाँ पहुँच कर भी उनका संहार करना शुरू किया। जो थोड़े लोग अपनी जान

एक भीड़ है जिसे तितर-बितर करना हमारी फ़ौजों के लिये बाँयें हाथ का खेल है।"

कर्नल नील जो हैवलॉक की कमान में द्वितीय अधिकारी था यही राह देख रहा था कि लखनऊ पर जल्दी से जल्दी क़ब्जा करके वहाँ के लोगों को फाँसी के फन्दे पर लटका कर चारों ओर आतंक फैलाया जाये। उसने कहा, "सर, अब हमें जरा भी देर नही करनी चाहिये—हिन्दुस्तानी सिपाही हमारा नाम सुनते ही मैदान छोड़ कर भाग जायेगा। हम अगर चाहें तो दो दिन में ही लखनऊ पर फतह पा सकते हैं।"

हैवलॉक स्वयं भी यही सोच रहा था कि अनुशासित ब्रिटिश सेना के सम्मुख देशी सेना घटे दो घंटे से अधिक नही ठहर सकेगी अतः उसने मगरवारा मे आगे बढ़ने का निश्चय किया। उसे उन्नाव तक पहुँचने में कोई कठिनाई नही हुई। उन्नाव मे कर्नल मेंहदी हसन की कमान में प्रताप सिंह, मदन सिंह, ब्रह्मानद सिंह तथा कुमार उद्‌गम आदि सेनानायक इंग्रेजी सेना के मुकाबिले के लिये पहुँच चुके थे। घमासान लड़ाई मे इंग्रेजों का भारी नुकसान हुआ तथा वे पीछे हटना ही चाहते थे कि कर्नल मेंहदी हसन ने सोचा कि इतनी सरलता से ये पीछे हट गये तो फिर एक दो दिन में इधर हमला करेंगे, अतः इनका बल जितना हो सके अभी कम कर देना चाहिये। उसने एक चाल चली। अपनी सेना को गुप्त रूप से आदेश दिया कि वह बशीरतगंज की तरफ पीछे हटे। तदनुसार अवध सेना पीछे हटने लगी। हैवलॉक ने समझा कि शत्रु हार कर भाग रहा है। वह उनका पीछा करता हुआ बशीरतगंज तक जा पहुंचा। अवध सेना नगर के अन्दर घुस गई तथा इंग्रेजी सेना भी विजय के गर्व में चहारदीवारी से घिरे इस नगर में पीछा करती हुई जा पहुँची। बस फिर क्या था अवध की सेना ने घिरी हुई इंग्रेजी सेना से भयकर युद्ध करना शुरू किया। ब्रिटिश सेना मे भगदड़ मच गयी। कर्नल नील अपनी जान लेकर मगरवारा की तरफ भाग गया।

उसी समय बेगम हज़रत महल के नेतृत्व मे लखनऊ से विशाल सेना बशीरतगंज जा पहुँची। इंग्रेजी सेना का भीषण संहार होने लगा। बेगम को रण-क्षेत्र में देख कर अवध सेना को अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिल रहा था। उनके विकट आक्रमण के कारण शत्रु-सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। अधिकांश इंग्रेज सैनिक सिर पर पैर रख कर मगरवारा की ओर भागने लगे। अवध के कई सैनिक दस्तों ने कुछ दूर तक उनका पीछा किया और फिर बशीरतगंज वापिस आ गये। इस युद्ध में इंग्रेजों की अपार क्षति हुई। जनरल हैवलॉक, कर्नल टाइट्‌लर, या नील वर्ग रह अधिकारियों को स्वप्न में भी आशा नही थी कि अवध की सेनाएँ इतनी वीरता, साहस, शौर्य, और अनुशासन से लड़ सकेंगी। उनके आठ-दस हज़ार सैनिकों मे से केवल पन्द्रह सौ बच सके थे। उनकी कई तोपों पर भी बेगम की सेना ने अधि-

कार कर लिया था।

इस विजय से अवध सेना का साहस और भी बढ़ गया तथा सभी को पूर्ण आशा हो गई कि अब भारत वर्ष में अँग्रेजी सितारा डूबने में अधिक देर नहीं। बेगम हज़रत महल ने सभी योद्धाओं को सम्बोधित कर उनका मनोबल बढ़ाया तथा युद्ध की तैयारियाँ जारी रखने के आदेश प्रसारित किये। उसके गुप्तचरों ने खबर दी थी कि हैवलॉक इधर बढ़ने के लिये पुनः तैयारियाँ कर रहा है तथा अतिरिक्त सैन्य-दल के आने की प्रतीक्षा में हैं। बेगम ने भी लखनऊ से कुछ सैन्य दल और बुला भेजे।

उधर मगरवारा-शिविर में पहुँचने के बाक हैवलॉक अपनी फ़ौज की भीषण क्षति के कारण बिलकुल पस्त-हिम्मत हो गया था। जिस शत्रु सेना को वह तथा उसके अधिकारी केवल अनुशासन-हीन बागियों की भीड़ समझे-बैठे थे वह उनकी वर्षों से प्रशिक्षित सेना से कहीं बेहतर साबित हुई। उसके सैनिकों की वीरता, शौर्य तथा साहस देख कर जनरल हैवलॉक और नील जैसे पराक्रमी एवं अनुभवी सेनानायक भी दाँतों तले उँगली दबा गये। हैवलॉक बिना अतिरिक्त सैन्य सहायता के पुनः इस ओर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सका। उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दो दिन बाद ही उसे पर्याप्त सहायता प्राप्त हो गई और वह एक बार पुनः लखनऊ की ओर अग्रसर हुआ। इस बार उन्नाव में उसे प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा और वह बशीरत गंज तक सही सलामत पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही अवध सेना "अल्लाहो, अकबर!, वाहे गुरु की फतह! हर हर महादेव!" का घोष करती हुई इंग्रेज़ी सेना पर टूट पड़ी। रूस्तम शाह ने हनुमान का वेष धारण कर अपने दल के ब्रह्मानद सिंह और कुमार आदित्य के साथ अँग्रेजी सेना में प्रलय मचा दी। ये सेनानायक जिधर भी जाते उधर ही अँग्रेजी सैनिकों का सफाया होता चला जाता। बेगम हज़रत महल, कुमार प्रताप, मदन सिंह, कुमार अरविन्द और उद्गम के साथ रणचण्डी सी फिर रही थी, जिधर जाती शत्रुदल काई की तरह फट जाता। चारो ओर भीषण संहार हो रहा था तथा जनरल हैवलॉक का युद्ध-अनुभव, कई तरह की रणनीति तथा व्यूह रचना के बावजूद असफल सिद्ध हो रहा था। अन्त में उसने पीछे हटने का आदेश दिया, लेकिन बेगम के विकराल सैनिक दस्तों के सामने उसके लिये पीछे हटना भी उतना ही कठिन था जितना आगे बढना।

अँग्रेज़ी सेना के सिपाही अनुशासन-हीन समूह की तरह जहाँ-तहाँ भागकर अपनी जान बचाने का प्रयत्न कर रहे थे, लेकिन अवध के सैनिक पीछे हटती सेना पर भी कदम क़दम पर वार करते जा रहे थे। कुछ बचे खुचे सैनिक हैवलॉक ने बुढ़िया की चौकी पर एकत्रित कर अन्तिम प्रयास करना चाहा किन्तु अवध सैनिकों ने वहाँ पहुँच कर भी उनका संहार करना शुरू किया। जो थोड़े लोग अपनी जान

लेकर भागे, उनका पीछा, बेगम के आदेश से इस बार गंगा के किनारे तक किया गया। बेगम ने निश्चय किया था कि इस बार उन्हें कानपुर में वापिस धकेल देना ही श्रेयस्कर होगा। अंग्रेज़ी शिविर मगरवारा तक अवध की सेनाएँ पहुँची और वहाँ सब कुछ तहस नहस कर डाला। अब जनरल हैवलॉक को गंगा नदी पार कर के कानपुर वापिस भागने के अलावा कोई चारा नहीं था। बचते बचाते भारी आपदाओं का सामना करते हुए उसने गंगा के पार कानपुर पहुँच कर ही दम लिया। अवध के सैनिक दस्ते अब इस क्षेत्र में बेखटके गश्त कर रहे थे और जनता को अपनी विजय का सन्देश दे रहे थे।

बेगम ने कुछ पल्टनों को वज़ीरत गज तथा आस पास के इलाकों की रक्षा के लिये छोड़कर लखनऊ के लिये प्रस्थान किया। सारे रास्ते जयघोष से दिशाएँ गूँजने लगीं, "बेगम आलिया ज़िन्दाबाद, बिरजिस कादर ज़िन्दाबाद—फिरंगी सरकार मुर्दाबाद! इंग्रेज कम्पनी मुर्दाबाद।"

हाथी पर सवार होकर जब बेगम अपने जलूस के साथ लखनऊ के समीप पहुँची तो सर्वप्रथम कर्नल मुनन्दा ने उसका स्वागत किया। इसके पश्चात् सभी वज़ीरों तथा महत्त्वपूर्ण अधिकारियों ने भी उसका स्वागत किया। जलूस नगर में जहाँ-जहाँ भी जाता पूरे नगर में अट्टालिकाओं पर खड़ी नारियाँ पुष्प-वर्षा तथा विजय-गान से उसका अभिनन्दन करतीं। पूरे नगर में विजय के कारण हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई थी।

विजयोत्सव में अधिक समय नष्ट नहीं करते हुए बेगम पुन: सैनिक तैयारियों में व्यस्त हो गई क्योंकि उसे विश्वास था कि हैवलॉक अभी और भी शक्तिशाली सेना के साथ लखनऊ पर अभियान करेगा।

इस विजय का प्रभाव दूरगामी हुआ। अवध के कुछ ताल्लुकेदार जिनकी स्वामिभक्ति अभी तक अंग्रेज़ी सरकार और बेगम के बीच विभाजित थी अब पूर्ण रूप से बेगम के पक्ष में हो गये और स्वतन्त्रता-युद्ध में पूरी निष्ठा से सहायता देने लगे।

35

बोझ वह सर से गिरा है कि उठाये न बने।
काम वह आन पड़ा है कि बनाये न बने॥

रेज़ीडेन्सी में काफी त्रासदी फैली थी मेजर एण्डरसन पेचिश के कारण मर चुका था। कप्तान फ़ुल्टन ने सर में गोली लगी और वह चल बसा। ये दोनों ही अधिकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। जब जुहानीज़ के मकान पर बैठे अचूक निशानेबाज को मार गिराया था तो उसके स्थान पर एक के बाद एक कई वैसे ही अचूक निशानेबाज बैठाये गये और रेज़ीडेन्सी के लोगों को निशाना बनाते गये। तब कप्तान फुल्टन ने ही एक सुरंग लगा कर जुहानीज के मकान को उड़ा दिया था और इस आफ़त से अंग्रेजों को मुक्ति दिलाई थी। गब्बिन्स तो उसे लखनऊ का प्रतिरक्षक कह कर पुकारता था।

हैवलॉक के दूसरी बार पीछे हटने से जहाँ अवध सेना को अपनी शक्ति पर विश्वास और भी बढ़ गया वही अंग्रेजी शिविर में घोर निराशा छा गई। लोगों मे जो अंग्रेजी सैन्य-शक्ति के प्रति सम्मान था वह समाप्त हो गया। अवध के कतिपय ताल्लुकेदार जो अभी तक निष्पक्ष बैठे विजयी-पक्ष को ही समर्थन देने की प्रतीक्षा में थे अब बेगम के पक्षधर हो गये। उन्होंने भी अब अपना कर बेगम को भेजना शुरू कर दिया।

जनरल हैवलॉक ने अपनी पराजय को विजय का रूप देने के प्रयत्न में हर जगह यही प्रकट किया था कि वह जान बूझ कर इसलिये पीछे हटा है कि अधिक शक्तिशाली सैन्य-बल आने पर ही लखनऊ पर आक्रमण कर सके। कोई भी विवेक-शील व्यक्ति यह नही मान सकता था। यदि वास्तव में उसकी विजय हुई होती तो वह लखनऊ की तरफ़ अवश्य बढता क्योंकि इसी इरादे से उसने दो बार बशीरतगंज तक पहुँच कर लखनऊ जाने का प्रयत्न किया था। अवध सेना की असन्दिग्ध विजय ने ही उसे अपना इरादा बदलने और वापिस कानपुर भागने पर विवश किया था।

उसकी असफलता से निराश होकर ही सम्भवत: गवर्नर जनरल ने कानपुर की कमान सँभालने के लिये जनरल ऑटरम को भेजा। इससे पूर्व जनरल ऑटरम को मध्य भारत की सेना की कमान दिये जाने का प्रस्ताव था। गवर्नर-जनरल फिर भी हैवलॉक को वहाँ से हटा कर एकदम हतोत्साहित नही करना चाहता था क्योंकि उसने कानपुर में नाना को हरा कर कम्पनी सरकार की महत्वपूर्ण सेवा की थी। अत: ऑटरम के साथ हैवलॉक को भी वहीं रहने दिया गया। ऑटरम के साथ लगभग 3000 योरोपीय तथा पाँच सौ भारतीय सिपाही थे। भारतीय सिपाहियो मे भी सिक्खो की संख्या अधिक थी।

सितम्बर के मध्य मे ऑटरम ने लखनऊ की ओर जाने का इरादा किया। उसकी सेना आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थी। जैसे ही ऑटरम लखनऊ की ओर बढ कर मगरवारा पहुँचा उसे अवध-सेना से भीषण संग्राम करना पडा। अवध-सेना यद्यपि अनुपम वीरता एवं साहस से लड़ी तथापि अच्छे हथियारों के

अभाव में वह अँग्रेज़ी सेना के सामने अधिक समय तक नहीं ठहर सकी। ऑटरम को उन्नाव और बशीरतगंज में भी विरोधियों का सामना करना पड़ा किन्तु वह सब को हराता हुआ लखनऊ के समीप आलम बाग़ पहुँच गया। बेगम को जैसे ही यह पता लगा, उसने कुछ अतिरिक्त सैनिक दस्ते आलम बाग़ भेज दिये। फिर भी घटिया हथियारों के कारण वे ज़्यादा देर तक ऑटरम की सेना से संघर्ष नहीं कर सके। अवध-सेना ने चार बाग़ पुल और नहर के सहारे वाले सीधे रास्ते को, जो रेज़ीडेन्सी जाता था अच्छी तरह अवरुद्ध कर लिया था। ऑटरम ने इस सीधे मार्ग के बजाय एक लम्बे मार्ग को चुना। यह मार्ग भी चारबाग़ के पुल के ऊपर से जाता था। पुल के ऊपर अँग्रेज़ी सेना को भयंकर युद्ध का सामना करना पड़ा। बेगम हज़रत महल स्वयं इस युद्ध का नेतृत्व कर रही थी। अँग्रेज़ों को भारी क्षति उठानी पड़ी। उनके लगभग 35 अधिकारी और 500 जवान खेत रहे। लगभग पाँच सौ ही मैदान छोड़कर भाग गये। फिर भी ऑटरम तथा हैवलॉक बेगम कोठी से सिकन्दर बाग़ तक पहुँच गये और एक चक्करदार मार्ग से अपने बचे-खुचे सैनिक दस्तों को लेकर रेज़ीडेन्सी पहुँच गये। इस मार्ग को अवरुद्ध न करने की भूल के विषय मे अवध के सेनापतियों को बाद में ही पता चल सका।

यद्यपि ऑटरम रेज़ीडेन्सी पहुँच गया था तथापि अपनी सेना के भारी विनाश के कारण उसका हौसला पस्त हो चुका था। वह किसी भी तरह रेज़ीडेन्सी में घिरे अँग्रेज़ों की सहायता करने में असमर्थ था। उसे मार्ग मे हुए संघर्ष से यह अनुमान हो गया था कि अवध सैनिकों से लोहा लेना बहुत जोखिम का काम है। इसी संघर्ष में कर्नल नील, जो भारतीय सेनाओं मे 'हत्यारा-नील' के नाम से प्रसिद्ध था, मारा गया था।

ऑटरम चाहता था कि रेज़ीडेन्सी मे रुककर वह घेरे में पड़े अपने देश-वासियों की कठिनाइयों को और अधिक नही बढ़ाये, इसलिये आलम बाग पहुँचकर और सेनाओं के आने की प्रतीक्षा करे, किन्तु वहाँ पहुँचने के लिये भी वह साहस नही जुटा सका क्योंकि बेगम की सेना ने अब सभी रास्ते दृढ़ता से अवरुद्ध कर दिये थे। अत. ऑटरम तथा हैवलॉक को अपनी बची खुची सेनाओ के साथ रेज़ीडेन्सी मे ही गुज़ारा करने पर विवश होना पड़ा जहाँ स्थानाभाव के अलावा खाद्य सामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की पहिले ही बहुत तंगी थी।

ऑटरम यह भी चाहता था कि घेरे मे फँसे अँग्रेज़ बच्चो और स्त्रियो को वहाँ से निकाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे किन्तु विरोधियो की सतर्कता के कारण यह भी सम्भव नही हो सका। फलस्वरूप घेरे में पड़े सभी लोगों की आपदाएँ और भी बढ़ गईं। राशन मे और भी कटौती करनी पड़ी। आटे के बजाय अब गेहूँ दिया जाने लगा जिसे पिसाने का प्रबन्ध लोगो को स्वयं करना पड़ता था। मांस की कमी हो गई। कभी-कभी पालतू भेड़ो और बकरियों को भी

मांस के लिये मारना पड़ता था। बच्चों को दूध तक मिलना कठिन हो गया तथा खाइयों में काम कर रहे लोगों को आधे पेट रह कर भी परिश्रम करना पड़ता था। साबुन उपलब्ध नहीं था अत: बहुत से परिवारों को उसकी जगह बेसन से काम लेने पर विवश होना पड़ा। अत: ऑटरम की सेना के आने से घेरे में पड़े लोगों की मुसीबतें किसी भी प्रकार कम नहीं हुई फिर भी इनके आ जाने से उन्हें सम्बल अवश्य मिला तथा उनकी अधीरता धैर्य में परिणत हो गई।

ऑटरम राह देखने लगा कि किसी तरह कुछ और सेनाएँ आ जायें तो वह लखनऊ के विरुद्ध अभियान की कारवाई कर सके।

36

बेगम हज़रत महल अपने दरबार में बैठी युद्ध की वर्तमान स्थिति की समीक्षा कर रही थी। उसने कहा, "हमारी फ़ौजें वाक़ई बहुत हिम्मत और बहादुरी से लड़ी और अंग्रेज़ी फौजों की तबाही में कोई कसर नहीं छोड़ी फिर भी मालूम हुआ है कि हैवलॉक व ऑटरम अपनी कुछ सिपह के साथ बच निकले हैं और रेजीडेन्सी तक पहुँचने में कामयाब हो गए हैं।"

"जी हां आलीमुकाम," महबूब खां ने कहा, "पहुँच तो ज़रूर गए हैं मगर उनके पहुँचने से दुश्मन का बजाय फ़ायदे के नुकसान ही हुआ है।"

"क्यों, घेरे में पड़ी सिपाह का हौसला तो ज़रूर बढ़ा होगा। जहाँ वे हर रोज मौत का इन्तिज़ार कर रहे थे उन्हें राहत तो मिली ही होगी।"

"मलका-ए-आलिया, उनकी हौसला-अफजाई तो ज़रूर हुई होगी, मगर हमारे जासूस खबर लाये हैं कि बजाय राहत मिलने के उनकी मुसीबतें ही बढ़ी हैं। क़रीब हज़ार डेढ़ हज़ार लोगों के पहुँच जाने से वहाँ हर चीज़ की तंगी हो गई है। बच्चे दूध के लिए तरसते हैं और बहुत से तो भूख से तड़प-तड़प कर दम तोड रहे हैं। औरतों की हालत और भी बदतर है—लगता है चन्द रोज में ही सबका सफाया हो जायेगा।" कह कर शराफ़ुद्दौला हँसने लगा।

बेगम एकदम गम्भीर हो कर बोली, "उफ़, वज़ीरे आज़म, हम चाहते हैं कि अगर उन औरतों व बच्चों को वे लोग किसी महफ़ूज़ मुकाम पर ले जाना चाहें तो उन्हें थोडी-सी सिपह के साथ बिना रोक-टोक के चला जाने दिया जाये। उधर तैनात तमाम नायकों को ताकीद कर दी जाये।"

अभाव में वह अँग्रेज़ी सेना के सामने अधिक समय तक नहीं ठहर सकी। ऑटरम को उन्नाव और बशीरतगंज में भी विरोधियों का सामना करना पड़ा किन्तु वह सब को हराता हुआ लखनऊ के समीप आलम बाग़ पहुँच गया। बेगम को जैसे ही यह पता लगा, उसने कुछ अतिरिक्त सैनिक दस्ते आलम बाग भेज दिये। फिर भी घटिया हथियारों के कारण वे ज्यादा देर तक ऑटरम की सेना से संघर्ष नहीं कर सके। अवध-सेना ने चार बाग पुल और नहर के सहारे वाले सीधे रास्ते को, जो रेज़ीडेन्सी जाता था अच्छी तरह अवरुद्ध कर लिया था। ऑटरम ने इस सीधे मार्ग के बजाय एक लम्बे मार्ग को चुना। यह मार्ग भी चारबाग के पुल के ऊपर से जाता था। पुल के ऊपर अँग्रेज़ी सेना को भयंकर युद्ध का सामना करना पड़ा। बेगम हज़रत महल स्वयं इस युद्ध का नेतृत्व कर रही थी। अँग्रेज़ों को भारी क्षति उठानी पड़ी। उनके लगभग 35 अधिकारी और 500 जवान खेत रहे। लगभग पाँच सौ ही मैदान छोड़कर भाग गये। फिर भी ऑटरम तथा हैवलॉक बेगम कोठी से सिकन्दर बाग़ तक पहुँच गये और एक चक्करदार मार्ग से अपने बचे-खुचे सैनिक दस्तों को लेकर रेज़ीडेन्सी पहुँच गये। इस मार्ग को अवरुद्ध न करने की भूल के विषय में अवध के सेनापतियों को बाद में ही पता चल सका।

यद्यपि ऑटरम रेज़ीडेन्सी पहुँच गया था तथापि अपनी सेना के भारी विनाश के कारण उसका हौसला पस्त हो चुका था। वह किसी भी तरह रेज़ीडेन्सी में घिरे अँग्रेज़ों की सहायता करने में असमर्थ था। उसे मार्ग में हुए संघर्ष से य अनुमान हो गया था कि अवध सैनिकों से लोहा लेना बहुत जोखिम का काम है इसी संघर्ष में कर्नल नील, जो भारतीय सेनाओं में 'हत्यारा-नील' के नाम प्रसिद्ध था, मारा गया था।

ऑटरम चाहता था कि रेज़ीडेन्सी में रुककर वह घेरे में पड़े अपने वासियों की कठिनाइयों को और अधिक नहीं बढ़ाये, इसलिये आलम बाग प और सेनाओं के आने की प्रतीक्षा करे, किन्तु वहाँ पहुँचने के लिये भी वह सा जुटा सका क्योंकि बेगम की सेना ने अब सभी रास्ते दृढ़ता से अवरुद्ध थे। अत. ऑटरम तथा हैवलॉक को अपनी बची खुची सेनाओं के साथ में ही गुज़ारा करने पर विवश होना पड़ा जहाँ स्थानाभाव के अ सामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की पहिले ही बहुत तंगी थी।

ऑटरम यह भी चाहता था कि घेरे में फँसे अँग्रेज बच्चों अ वहाँ से निकाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे किन्तु विर र्कता के कारण यह भी सम्भव नहीं हो सका। फलस्वरूप घेरे मे की आपदाएँ और भी बढ़ गईं। राशन में और भी कटौती करनी बजाय अब गेहूँ दिया जाने लगा जिसे पिसाने का प्रबन्ध लोगों क पड़ता था। मांस की कमी हो गई। कभी-कभी पालतू भेड़ों और बग

"जी आलीजाह, अब तो वे भी कारतूस नहीं देते—दे भी कहाँ से, उनके पास माल है ही नहीं। नया माल इंग्रेज कम्पनी किसी भी बन्दरगाह पर उतरने ही नहीं देती।" यह अली नक़ी खाँ था।

"तो फिर दूर के लिए गोला-बारूद से ही काम चलाया जाये, साथ में तलवार, नेज़े वग़ैरह का पास की लड़ाई में इस्तेमाल करना मुनासिब होगा। कारतूस मुहैया कराने की कोशिशें भी जारी रखी जायें।"

"जी आली मकाम, इधर तो गोला-बारूद और बन्दूक़ की गोलियाँ ख़त्म हो रही हैं, उधर ख़ुफ़िया ख़बरें मिली हैं कि अब इंग्रेज़ी फ़ौजों का कमाण्डर-इन-चीफ़ सर कॉलिन कैम्पबैल कानपुर की तरफ़ रवाना हो गया है और उनका इरादा लखनऊ पर हमला करने का है। उसने हैवलॉक और ऑटरम को भी लखनऊ पर दूसरी तरफ़ से धावा बोलने की सलाह दी है।" राजा जैलाल सिंह ने कहा।

"इन्होंने तो जैसे लखनऊ को घास फूँस का घरौंदा ही समझ रखा हो! अरे अब तक इतनी दफ़ा कोशिशें कर लीं और हमेशा मात खाई। अगर कभी थोड़ी बहुत कामयाबी भी मिली तो भारी नुकसान के बाद। ये हैवलॉक कौन सूरमा है! दो बार दुम दबा कर कानपुर की तरफ़ भाग चुका है। ऑटरम जो ख़ुद को रुस्तम समझता था, ख़ुद ही चूहे की तरह रेज़ीडेन्सी में क़ैद है! वह हमारी फ़ौजों के डर से वहाँ से हिल भी नहीं पा रहा।" बेगम ने आवेश में आ कर कहा।

"लेकिन आलीजाह, हमें कैम्पबैल की फ़ौजों से मुक़ाबिले के लिए मुकम्मिल तैयारियाँ तो करनी ही होंगी।" तीन-चार अमीर एक साथ बोले।

"बेशक, बेशक, हमारी तैयारियों में कोई कमी नहीं होनी चाहिये। हमारी सिपह का हौसला बुलन्द है। वह किसी भी ताक़तवर से ताक़तवर दुश्मन से टक्कर ले सकती है उधर कानपुर पर नाना साहब पेशवा हमला करेंगे और इधर से हमारी फौजें कैम्पबैल को खदेड़ेंगी। अगर हमें फ़िक्र है तो सिर्फ़ गोला-बारूद व गोलियों की क़िल्लत के बारे में है। ये काफ़ी तादाद में मुहैया हो जायें तो हमें यक़ीन है कि कैम्पबैल तो क्या, दुनिया की कोई ताक़त हमारा मुक़ाबिला नहीं कर सकती।" बेगम भावावेश में बोलती गई।

सभी अमीरों व सेनापतियों ने सहमति व्यक्त की तो बेगम ने रिपुदमन सिंह से कहा, "कर्नल तुम अपने जासूसी दस्तों को ताकीद कर दो कि इंग्रेज़ी सिपह की हर हलचल पर कड़ी नज़र रखें और हमें इत्तिला देते रहें।"

"जी अच्छा मलका-ए-आलिया, हुक्म की तामील होगी।" कर्नल ने कहा।

"मेंहदी हसन और बन्दा हसन तुम अपने फ़ौजी दस्तों के साथ बुधाइन की

"जान की अमान हो हुज़ूर, यह तो मुनासिब नहीं होगा। आखिर यही बच्चे तो बड़े हो कर हमारे दुश्मन हो जायेंगे—साँप का बच्चा भी साँप जैसा ही ज़हरीला होता है, आलीजाह ! इनकी जितनी बर्बादी हो जाये…।"

"वज़ीरे आज़म, हुक्म की तामील हो !" बेगम का चेहरा आक्रोश से तमतमा उठा, "वे साँप के बच्चे नहीं बल्कि आदम की बेगुनाह औलाद हैं ! हमारी लड़ाई मासूम बच्चों और बेकसूर औरतों के खिलाफ़ नहीं—हम आज़ादी के दीवाने हैं लेकिन क़ातिल नहीं—काश उन मुसीबत-ज़दा औरतों व बच्चों को हम अपने यहाँ पनाह दे सकते !"

सभी उपस्थित अमीरों के सिर बेगम की महानता व उच्च आदर्श के कारण श्रद्धा से झुक गए। वे सोचने लगे कि जो दुश्मन के साथ भी इतनी हमदर्दी रखता हो वह इन्सान नहीं, फरिश्ता है फरिश्ता !

राजा जैलाल सिंह और अली नक़ी खाँ ने बताया कि अब गोला बारूद की बहुत कमी हो गई है—दिसावरों से कच्चा माल नहीं मिल पा रहा और कारतूसों की आमद भी एकदम खत्म हो रही है। हिन्दुस्तानी सौदागरों का तो माल बिलकुल खत्म हो चुका है और इंग्रेज़ी कम्पनियों से अब माल मिलना बन्द ही हो गया है।"

"इसके लिए कुछ न कुछ इन्तिज़ाम तो करना ही पड़ेगा। जहाँ कहीं से जिस भाव भी लोहा और गंधक मुहैया हो मँगवा लिया जाए। हमारे ख़याल से शोरे की तो कोई कमी नहीं होगी।"

"जी आलीजाह शोरे की बिलकुल कमी नहीं है—गंधक का भी इन्तिज़ाम हो जायेगा। उम्मीद है हमारे तोपख़ाने तो फिर भी बख़ूबी काम कर सकेंगे लेकिन बन्दूकें क़रीब-करीब नाकाम हो जायेंगी।" अली नक़ी खाँ ने कहा।

"कोई मुज़ाइका नहीं। बन्दूकों के लिए भी कारतूस मँगाने का बन्दोबस्त करना चाहिये। तब तक उनका इस्तेमाल कम कर दिया जाए—कारतूसों को किसी भी हालत में ज़ाया नहीं किया जाये। रोज़ाना तो तीर तलवार, छर्रे की बंदूकों और सुरंगें लगा कर ही लड़ते रहना मौज़ूं रहेगा।"

"हुज़ूर अब तक तो जो सिपाही इंग्रेज़ी फौजों से आकर हमारे साथ शामिल हो गए थे अपने साथ काफ़ी कारतूसें वग़ैरह लाये थे लेकिन अब उनका आना भी करीब-करीब बन्द हो गया है। उनकी लाई हुई कारतूसें भी इस्तेमाल हो चुकी हैं।" यह राजा जैलाल सिंह था।

"यह तो वाक़ई बहुत मुश्किल मसला है ! कई जर्मन या फ़्रान्सीसी सौदागर भी बन्दूकों व कारतूसों की तिजारत करते हैं; उनसे भी पता किया जाए !" बेगम ने चिन्तित हो कर कहा।

'जी आलीजाह, अब तो वे भी कारतूस नहीं देते—दें भी कहाँ से, उनके पास माल है ही नहीं। नया माल इंग्रेज़ कम्पनी किसी भी बन्दरगाह पर उतरने ही नहीं देती।" यह अली नक़ी खाँ था।

"तो फिर दूर के लिए गोला-बारूद से ही काम चलाया जाये, साथ में तलवार, नेज़े वग़ैरह का पास की लड़ाई में इस्तेमाल करना मुनासिब होगा। कारतूस मुहैया कराने की कोशिशें भी जारी रखी जायें।"

"जी आली मक़ाम, इधर तो गोला-बारूद और बन्दूक की गोलियाँ ख़त्म हो रही हैं, उधर खुफिया खबरें मिली है कि अब इंग्रेज़ी फ़ौजों का कमाण्डर-इन-चीफ़ सर कॉलिन कैम्पबेल कानपुर की तरफ़ रवाना हो गया है और उसका इरादा लखनऊ पर हमला करने का है। उसने हैवलॉक और ऑटरम को भी लखनऊ पर दूसरी तरफ से धावा बोलने की सलाह दी है।" राजा जैलाल सिंह ने कहा।

"इन्होंने तो जैसे लखनऊ को घास फूँस का घरोंदा ही समझ रखा हो! अरे अब तक इतनी दफा कोशिशें कर ली और हमेशा मात खाई। अगर कभी थोड़ी बहुत कामयाबी भी मिली तो भारी नुकसान के बाद। ये हैवलॉक कौन सूरमा है! दो बार दुम दबा कर कानपुर की तरफ़ भाग चुका है। ऑटरम जो खुद को रुस्तम समझता था, खुद ही चूहे की तरह रेज़ीडेन्सी में कैद है! वह हमारी फौजों के डर से वहाँ से हिल भी नही पा रहा।" बेगम ने आवेश में आ कर कहा।

"लेकिन आलीजाह, हमें कैम्पबेल की फ़ौजों से मुक़ाबिले के लिए मुकम्मिल तैयारियाँ तो करनी ही होंगी।" तीन-चार अमीर एक साथ बोले।

"बेशक, बेशक़, हमारी तैयारियों में कोई कमी नहीं होनी चाहिये। हमारी सिपह का हौसला बुलन्द है। वह किसी भी ताकतवर से ताक़तवर दुश्मन से टक्कर ले सकती है उधर कानपुर पर नाना साहब पेशवा हमला करेंगे और इधर से हमारी फ़ौजें कैम्पबेल को खदेड़ेंगी। अगर हमें फ़िक्र है तो सिर्फ गोला-बारूद व गोलियों की क़िल्लत के बारे में है। ये काफ़ी तादाद में मुहैया हो जायें तो हमें यकीन है कि कैम्पबेल तो क्या, दुनिया की कोई ताकत हमारा मुकाबिला नहीं कर सकती।" बेगम भावावेश में बोलती गई।

सभी अमीरों व सेनापतियों ने सहमति व्यक्त की तो बेगम ने रिपुदमन सिंह से कहा, "कर्नल तुम अपने जासूसी दस्तों को ताकीद कर दो कि इंग्रेज़ी सिपह की हर हलचल पर कड़ी नजर रखें और हमें इत्तिला देते रहें।"

"जी अच्छा मल्का-ए-आलिया, हुक्म की तामील होगी।" कर्नल ने कहा।

"मेंहदी हसन और बन्दा हसन तुम अपने फ़ौजी दस्तों के साथ मुसाहब

तरफ मुकीम रहो; दरियाबाद, मगरवारा, आलमबाग़ वग़ैरह की तरफ फौजें बदस्तूर कायम रहें और उन्हें हर सामान मुहैया कराने का पूरा-पूरा इन्तिज़ाम किया जाये। कर्नल सुनन्दा तुम लखनऊ में बेगम-कोठी, क़ैसर बाग, छत्तर मंजिल वग़ैरह की हिफ़ाज़त करोगी। सूबेदार जबरीना को भी ताकीद कर दो कि वह अपनी हब्शी औरतों की पल्टनों को दुश्मन से मुकाबिले के लिए तैयार रखे।"

"जी अच्छा मलका-ए-आलिया," सुनन्दा ने खड़े होकर कहा, "अगर इजाज़त हो तो···।"

"हाँ हाँ, बोलो कर्नल सुनन्दा, क्या कहना चाहती हो।"

"हुजूर, एक तोहफ़ा ख़िद्‌मत में पेश करने की इजाजत चाहती हूँ।"

"तोहफा ! कैसा तोहफा कर्नल ? जंग के माहौल में तोहफ़े !" कौतूहल और प्यार से बेगम ने कहा।

"जी हां आलीजाह, यह जंग से ही ताल्लुक रखता है।" सुनन्दा का उत्तर था।

"ओह तो सुनन्दा, पेश क्यों नहीं करतीं !" स्नेह उँडेलते हुए बेगम ने उत्सुकता से कहा।

कर्नल सुनन्दा एक टोकरी लेकर बेगम के पास पहुँची और उसे खोल कर दिखाती हुई बोली, "आलीक़द्र यह उस हत्यारे कर्नल नील का सिर है। उस दिन सिकन्दरा बाग़ के पास मैंने ही उसे तलवार के घाट उतार कर यह तोहफ़ा संजो कर रखा है।"

"वाह-वाह मेरी बहादुर बहिन," दरबार की औपचारिकता भुला, बेगम भाव-विह्वल हो कर बोली, "यह तो मैंने सुन लिया था कि कर्नल नील उस दिन मारा गया, यह भी पता था कि तुम्हीं ने उसे मौत के घाट उतारा था लेकिन जान पर खेल कर भी यह सिर काट लाओगी यह तो मैं सोच भी नहीं सकती थी। वाह-वाह कर्नल सुनन्दा तुमने इसमें भूसा भरवा कर इन्सान की खाल में उस भेड़िये के साथ बिलकुल ठीक सुलूक किया है।" बेगम ने आल्हादित हो कर कहा। सभी अमीर-उमरा और हुक्काम भी सब तरफ़ से "वाह-वाह !" करने लगे।

"जी हां आलीकद्र," सुनन्दा ने कहा, "अगर हुजूर की मर्जी हो तो इसे काफी दिनों तक रखा जा सकता है।"

"बेशक मेरी बहिन बेशक ! तुम्हारे इस बेशकीमती तोहफे को हिन्द की तवारीख कभी नहीं भुला सकेगी ! कल की लड़ाई में यह एक लम्बे बाँस पर टाँग कर हमारे झंडे के पीछे-पीछे ले जाया जायेगा। और उसके बाद क़ैदख़ाने की मीनार पर लटका दिया जायेगा।"

तदनन्तर तोहफा सभी उपस्थित अमीरों को दिखाया गया। मरने के बाद भी नील के चेहरे से क्रूरता टपक रही थी। स्वयं को अतिमानव समझने वाले

उस निरंकुश, दंभी, अत्याचारी की एक भारतीय वीरांगना के हाथों मृत्यु ने मानों उन हज़ारों निरीह बेगुनाहों के खून का बदला ले लिया था जिन्हें उसने अकारण फाँसी पर चढ़वा दिया था।

कुछ अन्य आवश्यक मुद्दों पर मन्त्रणा करने के पश्चात् दरबार का समापन हो गया।

37

है शोहरत ये परवानों की क़ुर्बान शमा पर हो जाते।
दीवानी शमा को भी हमने गल गल के पिघलते देखा है।।

शैलबाला तेज़ बुखार के कारण बेचैन थी। कनक सुन्दरी उसकी परिचर्या में लगी थी। "देखो शैल इस तरह घुट-घुट कर मरने से तो अच्छा है कि तुम शादी कर लो," कनक ने स्नेह से कहा, "मैं प्रताप भैया को तो राज़ी कर लूँगी, पिताजी भी मेरी बात से तुरन्त सहमत हो जायेंगे। वे और अम्मा तो बिलकुल तैयार ही बैठे हैं—उधर तुम्हारे बड़े भैया भी इसी प्रतीक्षा में हैं कि तुम हाँ करो तो फौरन शादी कर दी जाये।"

"यह तुम कह रही हो कनक? शादी का मतलब ही खुशी होता है। इस संकट की घड़ी मे जब लाखो लोग देश के लिये अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, हम शादी करें!" शैल भावावेश मे बोले जा रही थी, "नहीं कनक नही तुम भूलकर भी कुमार से इस सम्बन्ध में जिक्र न करना। जानती हो वे पहिले ही कई बार विचलित हो चुके हैं। मुझे तो उनके मार्ग में उजाले भरने हैं, अन्धकार मे डालकर उन्हें राह से भटकाना तो देश के प्रति गद्दारी होगी!"

"तो शैल क्या तुम यूँ ही तड़पती रहोगी? हकीम जी ने साफ़-साफ़ तो कह दिया है कि बुखार तो कल तक उतर जायेगा लेकिन जब तक मानसिक पीड़ा दूर नहीं···।"

"बहिन कनक, तुम्हारी व्यथा क्या मुझसे छिपी है? अगर हकीम जी तुम्हारी नब्ज देख लें तो तुम्हारे लिये भी यही कहेंगे। तुमने भी तो कितने अंगारे दबा रखे हैं अपनी छाती मे। उद्गम भैया तो समझते हैं कि तुम्हें उनकी मुहब्बत के बारे मे इल्म नहीं, लेकिन कमाल है तुम्हारा भी कनक कि इतनी पीड़ाएँ हृदय में समेटे बैठी हो और भैया को इसका भान तक नहीं होने देती।

मुझे हुआ ही क्या है ! बुखार उतरा नहीं कि फिर मैदाने जंग में। क्या हम स्वार्थ के लिये अपने महान उद्देश्य से विरत हो जाएँ ?"

"वास्तव में शैल तुम कितनी महान हो !"

"लेकिन उतनी नहीं जितनी कि तुम हो ?"

"चलो मान लिया कि हम दोनों ही महान हैं," मज़ाक करते हुए कनक ने कहा और फिर गम्भीरता से बोली, "वाकई बहिन यह जरूरी है कि अभी हम लोग इस पीड़ा को अपने अन्तस्तल में ही पलने दें—उन्हें व्यक्त करना तो भैया और कुमार उद्‌गम को शक्तिहीन बनाकर मार्ग से विमुख करना होगा।"

"हाँ कनक हमें तो उनकी शक्ति और प्रेरणा के स्रोत की तरह काम करते रहना है। हमारी स्फूर्ति देखकर उनका मनोबल बढ़ता है, हमें निष्ठा से काम करते देख वे दुगुने उत्साह से अपना कर्त्तव्य निभाते हैं।"

"हाँ शैल, फिर यह भी पारस्परिक है। उन लोगों से हमें भी तो कितनी प्रेरणा मिलती है। उधर अनीस भाई और ज़ेबो को देखो, लुत्फ़ो और साहबज़ादा अमजद अली को देखो—सभी ने तो मातृभूमि की खातिर अपने प्राण तक न्योछावर करने की ठान ली है।"

"बिलकुल ठीक कहती हो कनक, एक नहीं अनेक ऐसे नवयुवक और नवयुवतियाँ हैं जो एक दूसरे के प्रति प्रेम संजोये हुए भी उसे व्यक्त नहीं करते। उन्हें सिर्फ एक ही धुन सवार है—वतन आज़ाद हो। उसी के लिए उन्होंने अपनी सारी खुशियों को तिलांजलि दे रखी है—अगर देश के लिए प्राण भी चले जायें तो भी वे स्वयं को धन्यभाग्य समझेंगे। फिर शादी तो मात्र एक खानापूरी है बहिन—समाज के लिये एक दिखावा, वर्ना शादी तो उसी दिन हो जाती है जिस दिन दो हृदय एक दूसरे का परस्पर वरण कर लेते हैं।"

तभी लुत्फुन्निसा, अनीस अहमद, प्रताप, उद्‌गम और अदम्य आ गये। शैल का हाल पूछा, फिर उन्होंने बताया कि अंग्रेजी कमाण्डर-इन-चीफ अब भारी सेना लेकर कानपुर से लखनऊ की तरफ बढ़ रहा है लिहाजा हमें उससे मुकाबिले के लिए तैयार रहना है।

शैलबाला यह सुनते ही उठकर बैठने लगी कि कनक ने उसे पकड़कर फिर लिटा दिया। लुत्फ़ ने कहा, "नहीं बहिन जब तक बुखार बिलकुल नहीं उतर जाए"।"

"नहीं बहिन अब बुखार है ही कहाँ···मैं···।"

"नहीं नहीं ! ऐसी जल्दी नहीं है," अनीस ने कहा, "हम लोग हैं तो सही। एक दो दिन और आराम करो तो ठीक रहेगा।"

"जब तक हकीम जी इजाज़त नहीं दे दें तुम्हें पूरा आराम करना चाहिए,

तुम्हारा काम हम लोग बाँट लेंगे।" यह कुमार अदम्य था।

शैल भाव-विह्वल हो गई और कुछ भी नहीं बोल सकी।

लुत्फ़ो ने कनक से कहा, "बहिन अब तुम थोड़ी देर आराम कर लो, शैलबाला की तीमारदारी तब तक मैं कर लूंगी।"

कनक आराम करने गई और सब लोग अपने गन्तव्य स्थानों को चले गये।

लुत्फ़ो ने शैल के माथे पर हाथ रखा और चौंककर बोली, "हय अल्लाह ! तुम्हारा बदन तो तवे की तरह जल रहा है !"

"लुत्फ़ो, फ़िक्र न करो, मैं इतनी आसानी से नहीं मरूँगी, यह जान तो वतन की धरोहर है—अगर निकली भी तो मैदानेजंग में ही निकलेगी।" शैल बुखार की तेजी में बोले जा रही थी।

"नहीं बहिन, ज्यादा बोलने की कोशिश मत करो, तुम्हें वाकई बहुत तेज बुखार है। हाँ, दवा कब देनी है ?" लुत्फ़ो ने पूछा।

"बस अब दे ही दो वक्त हो गया है।" शैल ने कहा।

दवा देने के बाद लुत्फ़ुन्निसा बार-बार शैलबाला के भिन्न-भिन्न अंगों पर हाथ रख के देखती रही। लगभग आधे घंटे के बाद उसने प्रसन्नता से कहा, "वाह, अब तो बुखार उतर गया !"

शैल को नींद आ गई थी और वह पसीने में नहा रही थी। लुत्फ़ुन्निसा ने धीरे-धीरे पसीना पोंछना शुरू किया और जब तक कि पसीना निकलना बिलकुल बन्द नहीं हो गया बड़ी आत्मीयता से पोंछती ही गई।

नींद में शैलबाला बड़बड़ा रही थी, "कुमार प्रताप···न-हीं···मुझे— तलवार ला·· ओ···अ···रे···ये··गो···रा···!"

सरल नेत्रों से लुत्फ़ुन्निसा उसे निहार रही थी।

38

भारतीय स्वाधीनता-संग्राम को शीघ्र दबा देने के विचार से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सर कॉलिन कैम्पबेल को, जो एक अत्यन्त अनुभवी जनरल था, भारत में अंग्रेजी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया। उसी समय इंग्लैंड से भेजे गये अतिरिक्त सैन्यदल भी भारत की धरती पर उतरे तथा उन्हें अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद आदि सभी साधनों से सुसज्जित कर कलकत्ते से उत्तर भारत की

ओर भेजा गया। अक्टूबर के अन्त में कैम्पबेल भी कुछ सैनिक दस्तों के साथ कलकत्ते से रवाना हुआ। बनारस होता हुआ वह रात्रि के समय इलाहाबाद की तरफ बढ़ रहा था कि स्वाधीनता सेनानियों के एक दल ने उसे ललकारा। ठाकुर रुद्र प्रतापसिंह के नेतृत्व में लगभग सौ सवारों के इस दल ने उसके सैनिक दस्ते को चारों ओर से घेरकर रोक लिया था। ठाकुर ने कैम्पबेल की बग्घी के पास जाकर कड़कती हुई आवाज में पूछा, "कहाँ जा रहे हो ?"

सर कॉलिन हिन्दुस्तान में पहिले भी कई साल तक रह चुका था और हिन्दुस्तानी काफी अच्छी बोल लेता था। उसी ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, "हम लोग बेगम की मदद के वास्ते लखनऊ जाटे हैं, आपका डोस्त हैं—फ्रांस से आया है, हमें बेगम ने ही मडड के लिये बुलाया है। सारा लोग फ्रांस का है—फ्रेंच !"

"बेगम का कोई फ़रमान है तुम्हारे पास ?"

"हाँ है, टुम डेखना मॉंगटा है ?"

"हाँ, दिखाओ।"

रुद्र प्रतापसिंह को उसकी बोली सुनकर तथा कई अन्य कारणों से सन्देह हो गया था कि यह फ्रांसीसी नहीं है किन्तु कैम्पबेल को लगा कि ठाकुर आश्वस्त हो गया है तथा ज्यादा सावधान नहीं है। उसने अपनी बग्घी में पड़े एक लोहे के बक्से को उठाया और मशाल की रोशनी में कागज खोजता हुआ अचानक गरजा, "फायर !"

पास बैठे उसके सहायक ने फुर्ती से रिवॉल्वर दागी लेकिन ठाकुर जो पहिले ही से सावधान था एकदम उछला और सहायक की गर्दन पर इतनी ज़ोर से हाथ मारा कि उसका रिवॉल्वर छिटककर फायर करता हुआ नीचे जा गिरा। ठाकुर ने इसके बाद अपने भाले से उसे छेद डाला। अँधेरे तथा गड़बड़ का लाभ उठाकर कैम्पबेल बग्घी से कूदकर खेतों की तरफ भागा और एक विशाल आम के पेड़ पर चढ़ गया। प्रधान सेनापति का आदेश सुनकर जैसे ही अँग्रेजी सिपाही फ़ायर करने को तैयार हुए, तो ठाकुर के सिपाहियों ने उन्हें अपनी बन्दूकें सीधी करने तक का मौका दिये बिना उन पर तलवार और भालों से हमला बोल दिया। गोरों के सिर धड़ से अलग होकर गिरने लगे। रुद्र प्रतापसिंह के भी बहुत से सिपाही मारे गये लेकिन अँग्रेजों का विनाश अधिक हुआ। ठाकुर के सेनानी उनके हथियार अधिकार में करना चाहते थे लेकिन तभी बनारस की तरफ से ही कैम्पबेल की सेना की एक और टुकड़ी वहाँ आ पहुँची। जैसे ही ठाकुर के एक गुप्तचर ने उसके इधर आने की सूचना दी, ठाकुर ने वहाँ ठहरना ठीक नहीं समझा और वह अपने बचे-खुचे सैनिकों को लेकर एक कच्चे रास्ते से सड़क छोड़कर अंधकार में विलीन हो गया।

प्रधान सेनापति कैम्पबेल मौका पाकर तुरन्त अपने शरण-स्थल से उतरकर

नये आये हुए फ़ौज़ी-दस्ते से आ मिला। उसकी बग्घी सही-सलामत थी अत: उसी में बैठकर वह इलाहाबाद की ओर रवाना हो गया। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे यात्रा के समय भरी हुई बन्दूकें तैयारी की स्थिति मे रखें तथा कोई भी प्रतिरोध उपस्थित होने पर बिना आज्ञा की प्रतीक्षा किये फ़ायर करना शुरू कर दें। इलाहाबाद पहुँचने से पूर्व भारतीय सिपाहियों ने उसे दो बार और ललकारा लेकिन बिना अधिक हानि के वह वहाँ पहुँचने में सफल हो गया।

इलाहाबाद पहुँच कर उसे सन्देश मिला कि मध्य भारत की विद्रोही सेनाएँ कालपी के पास एकत्रित हो कानपुर पर आक्रमण की योजना बना रही है तथा नाना भी आकर उनसे मिलने वाला है। अत: प्रधान सेनापति ने पहले लखनऊ सहायता पहुँचाने के बजाय कानपुर पहुँचना ही उचित समझा। जनरल ऑटरम से उसे लगातार अत्यन्त करुणाजनक पत्र प्राप्त हो रहे थे क्योंकि उसकी स्थिति रेज़ीडेन्सी में दिनोदिन दयनीय होती जा रही थी। फिर भी कई कारणों से कैम्पबेल ने कानपुर को प्राथमिकता दी। कानपुर में उसे कई सैनिक दस्ते मिलने की आशा थी तथा हथियारों के लिए गोला-बारूद, गोलियाँ आदि भी। वहाँ पहुँचते ही उसने स्थिति का जायज़ा लिया। गुप्तचरों द्वारा पता लगा कि कालपी की सेनाओं द्वारा आक्रमण होने में अभी कुछ समय और लग जायेगा। वह कानपुर से आवश्यक सामग्री लेकर तथा वहाँ की सेनाओं का भार कर्नल विढम को सौंप कर लखनऊ की ओर रवाना हो गया। उसके साथ अब एक अत्यन्त सशक्त सेना तथा अनुभवी तथा कुशल सेनाधिकारी एवं सैनिक थे। दिल्ली पर पुन: अंग्रेजों का अधिकार हो जाने के कारण वहाँ से ब्रिगेडियर विलसन ने कर्नल ग्रेट हेड की कमान में कुछ फौजी दस्ते और भिजवा दिये थे, अत: वे भी लखनऊ की ओर रवाना कर दिये गये।

कैम्पबेल ने तोपखाने के कमाण्डर कर्नल होपग्रान्ट को पहिले से लखनऊ पहुँचने का आदेश दिया ताकि वह अंग्रेजी सेना की स्थिति का जायज़ा ले, कुछ सेना व रसद वगैरह वहाँ सहायता के लिए छोड़ दे तथा बंटेरा नामक स्थान पर आकर प्रधान सेनापति से मिले। बंटेरा लखनऊ के समीप ही एक स्थान था जहाँ प्रधान सेनापति ने अपना शिविर स्थापित करने की व्यवस्था की थी। होपग्रान्ट को कई जगह अवध-सेनाओं से मुठभेड़ हुई तथा बड़ी कठिनाई के बाद वह अपने गन्तव्य तक पहुँच सका। कुछ सेनाएँ वहाँ छोड़कर वह बंटेरा जा पहुँचा। कैम्पबेल को स्वयं भी बंटेरा पहुँचने मे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

बंटेरा से प्रधानसेनापति कैम्पबेल ने ऑटरम को समाचार भेजा कि अधिक सहायता के लिए शीघ्र ही उसके पास अतिरिक्त सेनाएँ पहुँच रही हैं। उसने बंटेरा में अपना शिविर स्थापित करने के सम्बन्ध में भी उसे सूचित किया। उसे

यह भी आदेश दिया कि वह संकेत मिलने पर मोती महल की ओर रवाना होकर वहीं प्रधान सेनापति से मिले। होपग्रान्ट ने जो सैनिक दस्ते सहायता के लिए ऑटरम के पास छोड़े थे, उन्हीं की सहायता से ऑटरम को रेजीडेन्सी से मोती महल की ओर चलना था।

कैम्पवेल नवम्बर के मध्य में बैंटेरा से आलमबाग पहुँच गया। अवध-सेना ने वहाँ तक भी कैम्पवेल का आगे बढ़ना दूभर कर दिया था। उसकी सेना की व्यापक क्षति हुई फिर भी वह दिलकुशा की ओर बढ़ा। वह दिलकुशा तथा मार्टिनियर भवनों पर अधिकार करना चाहता था। अवध-सेना ने अत्यन्त वीरता से चप्पा-चप्पा ज़मीन पर भीषण युद्ध किया किन्तु अंग्रेज़ी तोपों की गोलाबारी के कारण वह अन्त में पराजित हो गई तथा प्रधान सेनापति ने उन भवनों पर अधिकार कर लिया। इन प्रारम्भिक युद्धों से कैम्पवेल की समझ में अच्छी तरह आ गया था कि बेगम की सेनाओं से लोहा लेना उतना सरल नहीं है जितना कि उसने अनुमान किया था। अत: वह और आगे बढ़ने का साहस नहीं जुटा सका। अपनी सेना को यहीं विश्राम करने का आदेश दे उसने भावी रण-नीति पर परामर्श करने को अपने सेनाधिकारियों की बैठक बुलाई।

बैठक में उसने कहा, "हालांकि हम लोगों ने इधर के इलाकों को फ़तह करके उन पर कब्जा कर लिया है, मैं इसे सही तौर पर अपनी फतह नहीं मानता। मैं तो कभी ख्वाब में भी नहीं सोच सकता था कि हमारे इतने बढ़िया हथियारों और मजबूत तोपखाने के बावजूद वे तलवारों, भालों और मामूली बन्दूकों से हमारे छक्के छुड़ा देंगे। उनका एक-एक सिपाही इतनी हिम्मत, बहादुरी और वफ़ादारी से लड़ा कि जब तक मर नहीं गया उसने हमें रास्ता नहीं दिया। मैंने देखा कि कई लोगों का हाथ या पैर कट गया या आँख में गोली लग गई तो भी वे हमारे सिपाहियों को मार-मार कर गिरते रहे।"

"जी हाँ सर!" होपग्रान्ट ने कहा, "एक सवार की दोनों टाँगे कट चुकी थीं फिर भी मरने से पहले घोड़े पर बैठे-बैठे उसने भाले से हमारे सात सिपाहियों को मार गिराया।"

"हाँ कर्नल, मैंने क्रीमिया, ईरान वगैरह कई जगह बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी हैं मगर इतनी जीवट के लोग कहीं नहीं देखे। अब हमें कुछ तरकीब से ही काम लेना होगा वर्ना हम कामयाब नहीं हो सकते।" कैम्पवेल ने कहा, "हमें मोती महल पहुँचकर जनरल ऑटरम की सेनाओं से मिलना है। हमारा सिगनल (संकेत) मिलते ही ऑटरम रेजीडेन्सी से चलकर वहाँ पहुँचेगा और इधर से हम लोग गोमती के पास से नहर पार करके सिकन्दरा बाग पर हमला करेंगे लेकिन दुश्मन को ग़लतफ़हमी में डाले रखने के लिए बेगम कोठी पर गोलाबारी कराते रहेंगे। हमारे स्काउट खबर लाए हैं कि सिकन्दरा बाग़ के एक तरफ तो उन्होंने

दरवाज़े बन्द करके बचाव का पूरा इन्तिज़ाम कर लिया है, लेकिन हम लोग दूसरी तरफ से पहुँचेंगे तो वे हड़बड़ा जायेंगे। जब तक वे इधर बचाव की तैयारी करेंगे तब तक हम लोग सिकन्दरा बाग़ पर कब्ज़ा कर लेंगे। सिकन्दरा बाग़ में दुश्मन के पास तोपें भी नहीं हैं।"

"तरकीब तो बहुत माक़ूल है सर, लेकिन हमारे सिपाही हिम्मत हार गए हैं—वे एक दो दिन यहीं रुककर आराम करना चाहते हैं इसलिए...)" यह ग्रेटहैड था।

बीच में ही तुनककर कैम्पबेल ने कहा, "आराम! फ़ौज में आराम नाम की कोई चीज़ नहीं होती। सिपाही के लिए आराम करने की जगह तो सिर्फ़ उसकी क़ब्र है!" फ़ौजों को कूच के लिए हुक्म दिया जाए और कूच करते ही बेगम कोठी पर गोलाबारी शुरू करा दी जाए।"

सेनाधिकारी जब अपनी-अपनी पल्टनों में जाकर सिपाहियों को तैयार होने का आदेश देने लगे तो पहिले उन्होंने मिन्नतें की कि कम-से-कम दो दिन और रुका जाए ताकि वे अपने हथियारों वग़ैरह को ठीक कर लें और घायलों की तीमारदारी की जा सके। तब तक बहुत से घायल भी ठीक होकर काम पर लग जायेंगे। इस पर जब अधिकारियों ने आज्ञापालन का कड़ाई से आदेश दिया तो सैनिक की आँखों में धृष्टता तथा उद्दण्डता की भावना झलकने लगी। किसी अप्रत्याशित घटना को टालने की दृष्टि से अधिकारियों ने कैम्पबेल को किसी तरह दो दिन और रुकने के लिए राज़ी कर लिया।

तीसरे दिन अंग्रेज़ी सेनाएँ सिकन्दरा बाग़ की तरफ रवाना हुईं और बेगम कोठी पर गोलाबारी शुरू कर दी गई। अवध के महत्वपूर्ण सैनिक दस्ते बेगम कोठी की रक्षा में व्यस्त हो गए। सिकन्दरा बाग के रक्षकों को असावधानी की स्थिति में घेर लिया गया—वे इस तरफ़ के दरवाज़े भी बन्द नहीं कर पाए थे कि अंग्रेज़ी सेनाएँ अन्दर घुस पड़ीं। रक्षक पल्टनें पूरे उत्साह से लड़ीं और घमासान लड़ाई में उन्होंने अंग्रेज़ी सेना का भारी संहार किया। उनका एक भी आदमी मैदान छोड़कर नहीं भागा और सारे सिपाहियों ने बहादुरी से लड़ते-लड़ते वीरगति पाई। बाग़ में लगभग ढाई हज़ार लाशें जहाँ-तहाँ पड़ी थीं। इनमें लगभग पाँच सौ अंग्रेज़ी सिपाहियों और अधिकारियों के अलावा सभी अवध के सेनानी थे।

प्रधान सेनापति कैम्पबेल आगे बढ़कर क़दम रसूल और शाह नजफ़ आदि भवनों पर अधिकार करता हुआ मोती महल जा पहुँचा। ऑटरम उसकी प्रतीक्षा में था—उसने थोड़ी देर पहिले पहुँचकर मोतीमहल के बीच की कुछ इमारतों को गोलाबारी करके गिरा दिया था। अंग्रेज़ी सेना के एक हज़ार से अधिक सैनिक व अधिकारी मारे गए थे। प्रधान सेनापति स्वयं भी घायल हो गया था। अगले दिन

वे रेजीडेन्सी पहुँचे जहाँ जनरल हैवलॉक पेचिश के कारण अपनी मृत्यु शैया पर पड़ा था। लगातार युद्धों तथा उचित भोजन के अभाव के कारण उसकी स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। उसे तीन चार दिन बाद दिलकुशा ले जाया गया जहाँ उसका प्राणान्त हो गया।

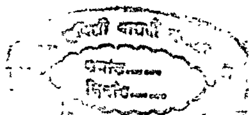
प्रधान सेनापति अपने साथ पर्याप्त मात्रा में रसद तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ लाया था। उसके आने से रेज़ीडेन्सी में घिरे लोगों की, विशेष रूप से स्त्रियों और बच्चों की दुर्दशा का अन्त हुआ किन्तु कैम्पबेल ने अनुमान लगा लिया था कि रेज़ीडेन्सी मे अधिक देर तक रुकना खतरे से खाली नहीं है क्योंकि बेगम की सेनाएँ किसी भी समय उनका मार्ग अवरुद्ध कर सकती हैं। अतः उसने सबसे पहले स्त्रियों तथा बच्चों की ओर ध्यान दिया। उन सबको आवश्यक सामान तथा एक सैनिक टुकड़ी के साथ कानपुर भेज दिया गया। यद्यपि कैम्पबेल को आशंका थी कि अवध-सैनिक उनपर हमला करेंगे तथापि बेगम की आज्ञानुसार उनके मार्ग में कोई रुकावट नही डाली गई तथा सभी शांतिपूर्वक तथा सुरक्षित कानपुर पहुँच गए।

तत्पश्चात् कैम्पबेल ने अंग्रेज़ी सेना को भी रेज़ीडेन्सी खाली करने का आदेश दिया। यह कार्य रात्रि के समय सम्पन्न हुआ। शत्रु को धोखे में रखने के लिए वहाँ सभी बत्तियाँ जलती छोड़ दी गईं। फलस्वरूप अवध की सेनाएँ रेज़ीडेन्सी खाली होने के बाद भी उस पर गोलाबारी करती रहीं।

बेगम हज़रत महल को जब कैम्पबेल की सफलता तथा अवध सेना की पराजय तथा क्षति के समाचार प्राप्त हुए तो वह घोर चिन्ता में पड गई। उसका विचार था कि सिकन्दरा बाग तथा उसके आसपास तैनात सेनाएँ ही अंग्रेज़ों से निपट लेंगी अतः उसने अपना ध्यान विशेष रूप से बेगम कोठी तथा निकटवर्ती क्षेत्रों पर ही केन्द्रीभूत कर लिया था क्योंकि उस क्षेत्र पर सतत गोलाबारी हो रही थी। प्रधान सेनापति की चाल सफल हो गई थी लेकिन बेगम फिर भी हिम्मत नहीं हारी। उसने तुरन्त आस-पास मे कार्यरत अपने सेनानायकों को बुलाया। रुस्तम शाह, बरकत अहमद, मौलवी अहमदुल्ला शाह आदि वरिष्ठ सेनापति तथा प्रताप सिंह, मदनसिंह, अनीस अहमद, ब्रह्मानन्द, आदित्य, अरविन्द आदि नवयुवक सेनाधिकारी तुरन्त उपस्थित हो गए और बेगम से मार्गदर्शन तथा आदेश प्राप्त कर दुश्मन की ओर रवाना हो गए। रुस्तम शाह ने बजरंगबली हनुमान का वेश धारण कर लिया था। बेगम स्वयं और सुनन्दा रणचण्डी की तरह युद्ध भूमि की ओर रवाना हुईं। कैम्पबेल की फ़ौजों से जगह-जगह घमासान युद्ध हुआ तथा बेगम की सेना ने शाह नजफ़, क़दम रसूल, सिकन्दरा बाग़ तथा मोती महल आदि सभी स्थानों पर पुनः अधिकार कर लिया। अंग्रेज़ी सेना में [illegible] मच गई [illegible] उनके सैकड़ों सैनिक मारे गए या भाग गए।

कैम्पबेल अब लखनऊ या उसके आसपास के क्षेत्रों पर पुनः आक्रमण करने का साहस नही जुटा पाया। इसी समय उसे सन्देश मिला कि कानपुर पर तात्या टोपे और नाना की सेनाओं ने अधिकार कर कर्नल विन्धम को खाइयों में खदेड़ दिया है अतः वह आलम बाग में अपनी बची खुची सेनाओं को एकत्रित कर कानपुर की ओर भागा तथा आलमबाग में कुछ सैनिक टुकड़ियाँ और तोपखाना छोड़कर आॅटरम को वहीं जमे रहने का आदेश दे गया।

39



'टप-टप-टपा-टप-टप-टा-टपा-टप' घोड़ों के टापों की ध्वनि उत्तरोत्तर निकट आती जा रही थी। रात्रि का तीसरा प्रहर था। कुमार उद्‌गम, कनक सुन्दरी तथा कुमार अदम्य जो लखनऊ-दरियाबाद के बीच गश्त पर थे चौकन्ने होकर अपने सैनिकों सहित सड़क के एक ओर छिप कर खड़े हो गये। जैसे ही घुड़सवार दल समीप आया, उन्होंने सड़क पर खड़े होकर उनका मार्ग अवरुद्ध कर दिया। कुमार उद्‌गम ने सबसे आगे वाले वृद्ध नायक से पूछा, "क्षमा कीजिए श्रीमन्त, आप कौन हैं और कहाँ जाना चाहते हैं ?" उनके सिपाहियों ने मशालें जला ली थी। उजाले में उन्होंने देखा कि वृद्ध-नायक बहुत स्फूर्तिमान तथा तेजस्वी था। खड़िया की तरह ऊपर की ओर बल खाई हुई सफेद मूँछों तथा मशाल की तरह चमकती विशाल किन्तु शान्त आँखों ने उसके चेहरे को अत्यन्त प्रभावशाली और रौबीला बना दिया था। वृद्ध को इतनी रात गए घूमते इन नौजवानों और सैनिक पोशाक मे नवयुवती को देखकर भारी कौतूहल हुआ और वह बड़े स्नेह से बोला, "बरखुरदार, क्या हम भी पूछ सकते हैं कि आप कौन हैं और हमें क्यों कर रोक रहे हैं ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं ! हम लोग अवध-सेना में सेना-नायक हैं और इस सड़क पर चौकसी कर रहे हैं—इसीलिए आपको रोका है।" बड़े आदर से कुमार उद्‌गम ने उत्तर दिया, फिर तीनों के नाम तथा पिताओं के नाम भी बताये।

"वाह वाह ! बहुत खूब !" घोड़े से उतरकर वृद्ध ने दोनों कुमारो को बारी-बारी से गले लगा लिया और कनक सुन्दरी के सर पर हाथ फेरा फिर नम आँखें करके कहने लगा, "धन्यभाग्य इस देश के ! हिन्दुस्तान को तुम जैसे नौजवानों पर गर्व है ? आज़ादी की दीवानगी में तुम दिन और रात का अन्तर भी भुलाकर

इतनी सावधानी से देश-सेवा कर रहे हो---मेरा नाम कुँवरसिंह है, जगदीशपुर, बिहार का रहने वाला हूँ---काश मैं भी तुम लोगों की तरह नौजवानी में ही इँग्रेजों के खिलाफ़ जंग छेड़ देता तो इन फिरंगियों के शिकंजे में हमारा मुल्क नहीं पड़ पाता और यह दिन देखने को नहीं मिलता।"

कुँवर सिंह का नाम सुनते ही दोनों कुमारों और कनक ने उसके चरण-स्पर्श किए। अदम्य ने बड़े प्रेम से कहा, "आपकी वीर-गाथाएँ तो हम लोग कई महीनों से सुनते आ रहे हैं बाबा साब ! आप तो हमारे प्रेरणा-स्रोत हैं---आपने जो देश के लिए इस उम्र में भी क़ुर्बानियाँ की हैं वे हमारे लिए आदर्श हैं, अब आज्ञा दीजिए कि आपकी क्या सेवा कर सकते हैं।"

"बेटे हमें तो सिर्फ़ लखनऊ पहुँच कर बेगम आलिया हज़रत महल से मिलना है ताकि हम उन्हें बता सकें कि हमने जंगे आज़ादी में अब तक क्या-क्या किया है और उनसे आगे की कार्रवाई पर सलाह मशविरा कर सकें।" कुँवर सिंह ने कहा।

कुमार उद्गम और अदम्य ने कनक सुन्दरी से कुछ देर मन्त्रणा की और फिर अदम्य ने कहा, "बाबा साब, आप शौक़ से चलें। मैं और कनक आपके साथ चल रहे हैं ताकि रास्ते में आपको कोई रोके-टोके नहीं।"

"वाह मेरे बेटे वाह, तब तो बहुत सहूलियत हो जाएगी मुझे, लेकिन देखना तुम्हारा यहाँ का काम हर्ज नहीं होना चाहिए।" वृद्ध ने कहा।

"नहीं बाबा साब, अब थोड़ी रात और रही है, यहाँ का काम उद्गम भैया बखूबी सम्भाल लेंगे।" अदम्य ने कहा। वह और कनक सुन्दरी दस सिपाहियों को ले बाबू कुँवरसिंह के साथ चल दिए।

अभी वे तीन-चार मील ही निकले होंगे कि पाँच छः सवार बिना किसी आहट के खेतों में से निकल कर अचानक सड़क पर पहुँचे। तुरन्त कुमार अदम्य और कुँवरसिंह ने उन्हें घेर कर रोक लिया।

"कौन हो तुम लोग ? कहाँ जा रहे हो ?" कुँवरसिंह ने कड़कती आवाज़ में पूछा किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। चारों ओर कई मशालें जल गईं और तब दिखाई दिया कि चार अंग्रेज़ सवार हैं और दो हिन्दुस्तानी। एक अंग्रेज़ अपनी रिवॉल्वर से कुँवर सिंह की ओर फ़ायर करना ही चाहता था कि कुँवर सिंह ने उसकी गर्दन पर ज़ोर से एक हाथ मारा। सवार तुरन्त घोड़े से एक तरफ़ लटक गया और पिस्तौल दूर जा गिरी। रक़ाबों में दोनों पैर फँसे होने के कारण वह उन्हें निकालने का प्रयत्न करने लगा कि आसन्न संकट के अहसास के कारण चिंघाड़ता हुआ घोड़ा घेरा तोड़ कर सरपट दौड़ने लगा। लटका हुआ सवार सिर के बल घिसटने के कारण बुरी तरह चीखने लगा। कुमार अदम्य के इशारे पर दो सिपाही उसके पीछे घोड़े दौड़ाते हुए गए और उसके घोड़े को रोककर उसके पैर रक़ाबों

में से मुक्त कराए और लोहू-लुहान अंग्रेज़ को वापिस लाये। कुँवरसिंह ने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो ?"

"हम नवाबगंज से आ रहे हैं।" एक गोरे ने उत्तर दिया।

"हूँ, वहाँ किसलिए गए थे ?"

"वहाँ से कुछ सामान लाना था।"

"क्या सामान ?"

"चाय, सिगरेट, साबुन और बिस्कुट वगैरह।"

तलाशी लेने पर ढेरों सामान निकला। कुमार अदम्य ने उन्हें गिरफ्तार करने की आज्ञा दी तो दो गोरों ने तलवार निकाल कर विरोध किया। कुंवरसिंह ने तुरन्त आगे बढ़कर दोनों के सिर धड़ से अलग कर दिए किन्तु तभी तीसरे गोरे ने कुमार अदम्य की तरफ़ भाला उठाया तो कनक सुन्दरी ने उसके हृदय स्थल में भाला भोंक कर उसका काम तमाम कर दिया। कनक की फुर्ती और बहादुरी देख कुंवरसिंह की आँखों में प्रसन्नता के आँसू छलक उठे।

अब एक घायल अंग्रेज और दो हिन्दुस्तानी रह गए थे। उन्हें गिरफ्तार करके लखनऊ ले आया गया। कुंवरसिंह और अदम्य कनक के दल पौ फटते लखनऊ पहुँच गए। कुंवरसिंह ने कहा "इस वक्त तो बेग़म साहिबा आराम कर रही होंगी इसलिए एक पहर बाद ही उनके पास हाज़िर होना ठीक रहेगा।"

कुमार अदम्य ने कहा, "नहीं बाबा साब वे तो मुश्किल से दो-तीन घण्टे ही सोती हैं—इस समय वे फ़ौजी दफ्तर में काम कर रही होंगी। अभी मिलना ठीक रहेगा क्योंकि थोड़ी देर बाद वे मुआइने पर निकल जायेंगी।"

"ओहो भई वाह ! मलका-ए-आलिया भी इतनी मेहनत और लगन से इस जंगे आजादी मे जुटी हैं ! वाह वाह धन्य है वह देश जहाँ ऐसी वीरांगनाएँ जन्मी हैं। चलो कुमार अदम्य फिर तो अभी चले चलते हैं।"

कुमार अदम्य ने जाकर वेगम को बाबू कुँवरसिंह के आगमन का सन्देश दिया तो बेगम स्वयं उठकर स्वागत के लिए बाहर चली आईं और कहा, "ज़हे किस्मत बाबू साहब ! आपके तशरीफ़ लाने से हमारा हौसला बुलन्द हो गया है। पिछले 10-15 दिन से आपकी कोई खबर न मिलने से हमे फ़िक्र हो गई थी। वैसे हमारे आदमी आपके बहादुरी के कारनामों की अक्सर खबर देते रहते हैं। वाक़ई इस जंगे-आज़ादी में आपने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया है। हम आपके तहेदिल से शुक्रगुजार हैं।" वेग़म के साथ वे लोग दफ्तर में पहुँच गए।

"यह क्या फ़रमा रही हैं वेगम-आलिया, अब इस बूढ़े बदन से कोई मश्क या परवात तो बनेंगे नहीं, अगर आज़ादी की लड़ाई मे कुछ काम आ जाए तो यह जनम सुधर जाए, तारीफ़ तो इन नौजवानों की है जो रात-दिन अपनी जान हथेली पर लिए जंगल-जंगल की खाक छान रहे है। शुक्रिया के हकदार तो ये

हैं।" कुँवरसिंह ने अदम्य और कनक की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। बेगम बड़े स्नेह से उन दोनों की तरफ़ देखती देखती रही। आँखों ही-आँखों में बिना कुछ बोले ही जैसे उनकी तारीफ़ के पुल बाँध दिए हों उसने! कुँवरसिंह ने अपने मित्र निशानसिंह और भाई अमरसिंह से भी बेगम का परिचय कराया। वह बहुत खुश हुई। थोड़ी देर तक मौन रहा तथा बेगम और कुँवरसिंह मन-ही-मन एक-दूसरे की सराहना करते रहे।

इसके बाद कुँवरसिंह को सायंकाल दरबार में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दे बेगम ने मेहमान-घर में उसे ठहराने की व्यवस्था की और अपनी सेनाओं के निरीक्षण के लिए चली गई।

कुँवरसिंह जिला आरा (बिहार) में जगदीशपुर का एक बहुत ज़मींदार था। उसकी वार्षिक आय तीन लाख रुपए से अधिक थी। देशभक्ति से ओतप्रोत सत्तर वर्ष का यह वृद्ध राजपूत अंग्रेज़ों की भारत में बढ़ती गतिविधियों से अत्यन्त खिन्न था। वह चाहता था कि देश से इनका अनिष्टकारी प्रभाव किसी प्रकार समाप्त हो इसलिए सम्राट् बहादुरशाह, कानपुर के नाना साहब तथा बेगम हज़रत महल आदि से बराबर पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क करता रहता था। फिर भी स्थानीय अंग्रेज अधिकारियों से वह प्रकट् में ऐसा व्यवहार रखता था कि उन्हें किसी प्रकार का सन्देह न हो सके। उसने अपने आसपास के क्षेत्रों में जन-साधारण को तो सगठित किया ही, अंग्रेज़ी सेना के भारतीय सैनिकों में भी गुप्त रूप से देश-प्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए प्रचार किया तथा उन्हें गोरे शासकों के विरुद्ध अभियान के लिए तैयार कर लिया। वह केवल समुचित अवसर की प्रतीक्षा में रहने लगा। जैसे ही उसे मेरठ, दिल्ली और कानपुर मे विद्रोह के समाचार मिले वह स्वयं भी सक्रिय हो गया। अंग्रेज अधिकारियों को दानापुर की पल्टन में सैनिकों पर सन्देह था अतः उन्होंने प्रयत्न किया कि उनसे हथियार ले लिए जायें, किन्तु असफल रहे तथा सैनिकों ने विद्रोह कर अंग्रेज अधिकारियों पर गोली चलाई। उनका पीछा करने के लिए कप्तान डनबर एक शक्तिशाली सैन्य-दल लेकर गया तो बाबू कुँवर सिंह के नेतृत्व मे सिपाहियों ने उसे तहस-नहस कर दिया और डनबर सहित समस्त अंग्रेज अधिकारियों को मार गिराया। कुँवरसिंह ने आरा के किले पर अधिकार करके अंग्रेज़ी खज़ाने को भी लूट लिया।

कुँवर सिंह के अनेक उत्साही सहायक थे। विशेष उल्लेखनीय थे उसके भाई अमरसिंह, दयालसिंह और राजपति सिंह, उसका भतीजा रितुभंजन सिंह, उसका साठ वर्षीय मित्र निशानसिंह और तहसीलदार हरकिशन सिंह। कुँवरसिंह के सेनानियों मे साहस, उत्साह और निष्ठा का अभाव तो नहीं था किन्तु उनके पास गोला बारूद, हथियारों तथा कारतूसों की बहुत कमी थी। फिर भी उसने बिहार

तथा सीमावर्ती इलाकों पर अधिकार करके लम्बे समय तक अंग्रेज़ों को संकट में डाले रखा। उसने छापा मार युद्धों के द्वारा अंग्रेज़ों की नींद हराम कर दी। अवसर पाकर मेजर आयर ने जगदीशपुर में उसका क़िला, महल तथा मन्दिर आदि सभी नष्ट कर दिए किन्तु वह स्वाधीनता-संग्राम द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बराबर प्रयत्नशील रहा।

कुंवर सिंह की आकांक्षा थी कि दिल्ली जाकर भारत के केन्द्र-स्थान से युद्ध-संचालन में योगदान करे। इसी विचार से वह बिहार से मध्यभारत की ओर गया ताकि सुरक्षित रूप से दिल्ली पहुँच सके किन्तु उसे जब यह ज्ञान हुआ कि दिल्ली पर अँग्रेज़ों ने पुनः अधिकार कर लिया है तो उसे अपनी योजना बदलनी पड़ी। अँग्रेज़ी सेनाएँ बराबर उसका पीछा करती रहीं तथा वह जिस क्षेत्र में भी उपस्थित होता इन सेनाओं में आतंक छा जाता था। वह नाना की सेना के साथ कानपुर पर आक्रमण करना चाहता था क्योंकि अब युद्ध के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र कानपुर और अवध ही थे। वह रीवा, बाँदा तथा कालपी आदि स्थानों से होता हुआ नाना और तांत्या टोपे की सेनाओं से जा मिला और कानपुर पर अधिकार करने में सराहनीय सहयोग दिया। भारतीय सेनाओं ने वहाँ के सेनाधिकारी विंढम को खाइयों में खदेड़ कर कानपुर तथा आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। जब प्रधान सेनापति कैम्पबेल सशक्त सेना के साथ विंढम की मदद के लिये कानपुर पहुँचा तो उसे भीषण संग्राम करना पड़ा। काफ़ी कठिनाइयों के बाद अन्त में विजय-श्री अँग्रेज़ों के ही हाथ लगी। कानपुर में तांत्या टोपे की पराजय के बाद बाबू कुँवर सिंह ने स्वाधीनता युद्ध के सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्र लखनऊ ही जाना उचित समझा। वह सीधे रास्ते के बजाय काफ़ी लम्बे और चक्करदार रास्ते से लखनऊ पहुँचा था।

बेगम के आदेशानुसार सायंकाल दरबार में युवराज बिरजिस क़ादर ने कुंवर सिंह का औपचारिक रूप से स्वागत किया तथा उसे खिलअत (सम्मान-सूचक वस्त्र) पहिनाकर सम्मानित किया। साथ ही युवराज ने उसे आज़मगढ़ पर अधिकार करने के लिए एक फर्मान भी दिया। कई महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर कुंवर सिंह ने बेगम से मन्त्रणा की तथा शीघ्र ही आज़मगढ़ की ओर रवाना हो गया।

40

मौलवी अहमदुल्ला शाह की अध्यक्षता में युद्ध के विषय में विचार-विनिमय चल रहा था। प्रधान मंत्री शराफ़ुद्दौला, युद्ध मन्त्री राजा जैलाल सिंह और वित्त मन्त्री महाराज बाल किशन के अलावा कर्नल बरकत अहमद, ख़ान अली खां, रिपुदमन सिंह, कर्नल सुनन्दा, मेंहदी हसन तथा वन्दा हसन वग़ैरह अनेक योद्धा वहाँ उपस्थित थे।

राजा जैलाल सिंह ने बताया "जनाब आली, हमारा जो पोशीदा कारखाना गोला बारूद, व बन्दूकें वग़ैरह बनाने का फतेहगढ़ के किले में चल रहा था, वहाँ काफी तादाद में जंग का सामान बनाया जाता था और हमारी फ़ौजों को मुहैया किया जाता था। यह सामान बहुत बेहतरीन दर्जे का होता था। अभी-अभी मुझे खबर मिली है कि जनरल कैम्पबेल की फौजों ने फतेहगढ़ के किले पर क़ब्ज़ा करके कारखाने को बर्बाद कर दिया है और सारा सामान भी उन्हीं के हाथ पड़ गया है। हालाँकि हमारे दूसरे कारखानों में भी माल बराबर बनाया जा रहा है, फिर भी उस कारखाने के छिन जाने से हमें काफ़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।"

शराफ़ुद्दौला ने कहा,"उफ्फ-ओ! यह तो बहुत फिक्र की बात है! हथियारों की तो पहिले ही हमारे यहाँ तंगी है फिर यह और भी परेशानी हो गई। लेकिन अब कोई चारा भी तो नज़र नहीं आता। हमें कोई दीगर रास्ता निकालना चाहिये। मेरे खयाल से हमारे पास पैसे की तो कोई कमी नहीं है। क्यों न हम एक और आला दर्जे का कारखाना लखनऊ में ही कायम कर दें? दरियाबाद और भी मौज़ू जगह रहेगी। मुझे उम्मीद है कि महाराज बालकिशन इसके लिए रुपया मुहैया करा सकेंगे।"

"जी हाँ, जनाब आली, कारखाने के लिए तख़मीना बना लिया जाये। रुपये की हमारे पास वाक़ई कोई कमी नहीं है। सारे इलाके से लगान व खिराज की रकम बराबर आ रही है। आम लोग चन्दा भी बहुत दरियादिली से भेज रहे हैं। ये रकमें खज़ाने में बराबर जमा हो रही हैं।" बालकिशन ने कहा।

"रुपये की तो तंगी नहीं है और दरियाबाद जगह भी बहुत माकूल रहेगी लेकिन हमारे पास वक्त की बहुत ज्यादह तंगी है। कैम्पबेल ने कानपुर पर फिर एक बार क़ब्ज़ा कर लेने के बाद फर्रुखाबाद, फतेहगढ़ और मैनपुरी में फिर से इँग्रेज़ी हुकूमत कायम कर ली है। वह हम लोगों पर कभी भी हमला कर सकता है। फिर भी अगर मुनासिब हो तो मैं नये कारखाने का तख़मीना बनवाये देता

हूँ।" राजा जैलाल ने कहा।

"आपके खयाल से इसमें अन्दाजन कितना वक्त लग सकता है?" मौलवी अहमदुल्ला शाह ने पूछा।

"मेरे खयाल से तकरीबन छः-सात माह लग जायेंगे," जैलाल सिंह ने कहा, "इससे पेश्तर माल बनाये जाने की शुरूआत होना मुमकिन नहीं।"

"वाकई राजा जी, इतना वक्त तो लग ही जायेगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो जायेगी!" यह मौलवी था।

उसी समय बेगम हज़रत महल भी सभाकक्ष में आ पहुँची। सभी उपस्थित सरदार व अधिकारी उठ खड़े हुए और आदाब बजाया।

"कार्रवाई जारी रखी जाये," बेगम ने कहा और अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। मौलवी ने अब तक हुई चर्चा के विषय में संक्षेप में बताया तो बेगम ने कहा, "इसमें कोई शक नहीं कि हमारे पास वक्त की बेहद तंगी है। हमारे खयाल से नया कारखाना कायम करने के बजाय चालू कारखानों में ही काम बढ़ाया जाये तो बेहतर होगा और वक्त भी खराब नहीं होगा। कुछ ज्यादा कारीगर व मिस्त्री मुकर्रर कर दिये जायें और तीन पारियों मे रात-दिन काम चालू रखा जाये। जितनी जल्दी और ज्यादह माल तैयार हो सके उतना ही हमारे लिये कामयाबी का बायस होगा।"

अधिकांश उपस्थित लोगों की भी यही राय थी अतः राजा जैलाल सिंह और अली नकी खाँ को यह काम सौंप दिया गया तथा समय-समय पर इसके बारे में अवगत कराने को कहा गया।

बेगम अँग्रेजों की प्रगति से बहुत चिन्तित थी। उसने कहा, "हमारी फ़ौजों की हिम्मत, बहादुरी और वफादारी में तो कोई कमी नहीं है मगर जब तक उन्हें अच्छे किस्म का सामान मुहैया नहीं होगा, इंग्रेजी फ़ौजों से मुकाबिला करना आसान नहीं। जहाँ-जहाँ भी इंग्रेज फ़तहयाब हुए हैं सिर्फ़ आला क़िस्म के सामानेजंग, यानी हथियारों वग़ैरह की वजह से हुए हैं। वैसे वे किसी भी कदम हिम्मत व बहादुरी में हमारे जवानों से बेहतर नहीं। हथियारों की कमी या घटिया क़िस्म के हथियारों के बावजूद हमारे जवान इंग्रेजी सिपह को अब तक बुरी तरह मात देते आ रहे हैं। तलवार और नेज़े की लड़ाई में उन्होंने हर जगह इंग्रेजों के हौसले पस्त किये है। अगर कभी फिरंगियों की फ़तह भी हुई है तो भारी नुकसान के बाद ही हुई है।"

"जी मलकाए-आलिया," कई अमीर एकसाथ बोले, "इसमें कोई शक नहीं। इंशाअल्लाह, आगे भी हमारी ही फ़तह होगी।"

"उम्मीद तो यही है मगर हमें तैयारियाँ पूरी रखनी चाहिये," बेगम ने कहा, "जो कुछ भी सामान हमारे पास है उसी का इस्तेमाल हमें बेहतर ग

बेहतर तरीके से करना है।"

उसी समय एक सेवक ने आकर कहा,"गुस्ताखी मुआफ़ हो हुजूर एक साहब दिल्ली से तशरीफ़ लाये हैं और हुजूर से बारियाबी की इजाजत चाहते हैं— अपना नाम बताने से इन्कार किया है।"

बेगम ने कर्नल रिपुदमन सिंह को बाहर जाकर आगन्तुक के विषय में जानकारी करने की आज्ञा दी। कर्नल थोड़ी देर में वापिस आया और मौलवी अहमदुल्ला को बाहर ले गया क्योंकि मौलवी ही बख्त-खाँ नाम के आदमी को अच्छी तरह जानता था। तुरन्त ही वे दोनों आगन्तुक को साथ लेकर वापिस आये और मौलवी ने ही बख्त खाँ का बेगम से परिचय कराया। नाम सुनते ही बेगम भाव-विह्वल होकर बोली, "ओ हो तो तुम्हीं हो जनरल बख्त खाँ, शाही फ़ौजों के सिपहसालार! तुम्हारी दिलेरी के कारनामों के बारे में तो हम अर्से से सुनते आ रहे हैं मगर कभी मुलाकात नहीं हो सकी!"

जमींबोस करते हुए बख्त खाँ ने कहा, "जी मलका-ए-आलिया इस नाचीज़ को ही बख्त खाँ कहते हैं—वैसे बदबख्त कहना ज्यादा मुनासिब होगा। दिल्ली की शिकस्त के बाद बमुश्किल तमाम…।"

"सिपहसालार, तुम्हारी जुबान से ये नाउम्मीदी की बातें सुनकर हमें हैरत हो रही है। दिल्ली की शिकस्त के बाद भी तो कोशिश जारी होगी। सुनाइये क्या हाल है वहाँ का। यहाँ तो अफ़वाह है कि शहंशाह को इंग्रेज़ों ने नज़रबन्द कर लिया है मगर मुझे तो कतई इत्मीनान नहीं होता। दिल्ली पर इंग्रेज़ों के दुबारा कब्ज़ा कर लेने के बाद उधर से हमें सही खबरें भी नहीं मिल पा रही। शहशाहे हिन्दोस्तान खैरियत से तो हैं?" बेगम एक साँस में बोल गई।

"ग़ज़ब हो गया है मलका-ए-आलिया गज़ब! सब कुछ खत्म हो गया है। दिल्ली बर्बाद हो गई, जहाँपनाह को कैद कर लिया गया है और उन्हें किसी गैर मुल्क में भेजने का इरादा है। उन पर मुकद्दमा चल रहा है मगर वह तो महज़ खानापूरी है।" बख्त खाँ ने बताया।"

"या खुदा!" बेगम ने बड़े अफ़सोस से कहा, "यह तो वाकई क़हर है, लेकिन शहशाह की गिरफ़्तारी क्यों कर मुमकिन हो सकी? तुम तो उनकी फौजों के सिपहसालार थे और बड़े जोशोखरोश से जंगे आजादी का निज़ाम कर रहे थे। शहशाहे हिन्दोस्तान को इंग्रेज़ों की गिरफ्त में आने से पेश्तर और कुछ नहीं तो यहाँ तो ला ही सकते थे। यहाँ वे पूरी तरह महफ़ूज़ रहते और आगे के लिये भी कुछ तदबीर की जा सकती थी।

"ये हिन्द की बदनसीबी है आलीजाह!" बख्त खाँ ने बड़े दुःख से कहा, "मैंने दिलोजान से कोशिश की थी उन्हें यहाँ आने के लिए रजामन्द करने की, वे रजामन्द हो भी गये थे लेकिन आलमपनाह के समधी इलाही बख्श और रजब

अली मुसाहिब ने इंग्रेज़ों से साज़िश कर ली। आलम पनाह के सामने दोनों वफ़ादारी का दम भरते रहे और उन्हें यही समझाते रहे कि दिल्ली छोड़कर कहीं नहीं जायें। वे उनकी बातों में आ गये और मेरे हज़ार मिन्नतें करने के बावजूद दिल्ली छोड़ने को तैयार नहीं हुए। आखिरकार उन्हीं दोनों ने उन्हें कप्तान हॉडसन से मिलकर गिरफ्तार करा दिया। जहाँपनाह ने इन्हीं दोनों की सलाह पर हुमायूं के मक़बरे में पनाह ली थी।"

बेगम हैरत से सुनती रहीं और बोलीं, अफ़सोस सद अफसोस! काश हम उनकी कुछ मदद कर सकते!" फिर एक गहरा निश्वास लेकर कहा, "वाकई ये हिन्द की बदनसीबी है। इलाहीबख्श और रजब अली जैसे गद्दारों के बलबूते पर ही तो ये फिरंगी हिन्दोस्तान पर पंजा गड़ाये बैठे हैं। बख्त खाँ, दिल्ली के लिए क्या अब भी कुछ किया जा सकता है?"

"अफ़सोस मलका-ए-आलिया, अफ़सोस! अब कुछ भी नहीं हो सकता। इंग्रेज़ों ने दिल्ली पर फ़ौलादी शिकंजा कस लिया है। तीन शाहज़ादों को तो खुद हॉडसन ने कत्ल कर दिया, क़रीब इक्कीस को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। अब दिल्ली के बेगुनाह बाशिन्दों से बदला लिया जा रहा है। औरतों की आबरू लूटी जा रही है—जो सामने आता है—बूढ़ा-बच्चा या जवान—उसे गोली का निशाना बना लिया जाता है। बेशुमार माल लूट लिया है। चारों तरफ़ तबाही मच रही है। पूरा शहर कब्रिस्तान नज़र आता है। इंग्रेजों की बेरहमी की हद नहीं।" बख्त खाँ का गला भर आया था। "अब तो हुज़ूर की पनाह में आया हूँ। अगर मुल्क के लिये मेरी यह जान किसी काम आ सकती हो तो मैं हाज़िर हूँ। अब दिल्ली में इंग्रेज़ों से पेश पाना नामुमकिन है।"

"बहुत अफ़सोसनाक व दर्दनाक खबर है दिल्ली की!" बड़े दुःख से बेगम ने कहा, "लेकिन हमें अभी तो बहुत कुछ करना है बख्त खाँ—अगर तुम चाहो तो हमारी कुछ पल्टनों की कमान सम्भाल सकते हो। जंगे आज़ादी में जौहर दिखाने का फिर से मौका मिलेगा तुम्हें।"

"जी, आलीजाह बन्दा हाज़िर है।" बख्त खाँ ने कहा।

"राजा जैलालसिंह, "बेगम ने कहा, "हम बख्त खाँ को यहाँ भी जनरल का ओहदा अदा करते हैं—इन्हें हमारी कुछ पल्टनों की कमान सिपुर्द की जाये।"

"जी आली मुकाम, हुक्म की तामील होगी।" राजा ने कहा।

"हमें अब सब कुछ बहुत जल्दी करना है—वक्त की अज़हद तंगी है। पता नहीं कब ये फिरंगी हमला कर दें, लिहाज़ा मेरा सबसे यही इसरार है कि बहुत चुस्ती से अपने-अपने कामों को अंजाम दिया जाये। हमारे ख्याल से अब लोहे की कमी तो नहीं होगी, राजा जी, लोहे के सौदागरों ने अपने-अपने गोदामों

से माल भेजना शुरू कर दिया है। हमारे ऐलान के बाद आप लोग भी काफ़ी तादाद में लोहा भेज रहे हैं।"

"जी आली क़द्र ! लोहा तो काफ़ी तादाद में इकट्ठा हो रहा है, गंधक की कमी जरूर है।" राजा ने कहा, "फिर भी कोशिश की जा रही है कि जहाँ-जहाँ से मुमकिन हो मँगवाया जाये।"

"कोशिश जारी रखें और कभी-कभी हमें जानकारी देते रहें। शायद सीतापुर और बहराइच में गंधक के कुछ गोदाम हों।" बेगम ने कहा।

"जी आलीकद्र, वहीं से मँगवाने के लिये मैंने अपने आदमी भेज रखे हैं।"

इसके बाद बेगम ने सबका शुक्रिया अदा किया और महल ख़ास की तरफ़ चली गई।

41

लखनऊ से जाने के बाद प्रधान सेनापति कैम्पबेल ने कई बार लखनऊ-विजय की योजना बनानी चाही किन्तु पिछले युद्ध मे प्राप्त कटु-अनुभव के कारण वह इसे टालता रहा। उसने तात्या टोपे और नाना की सेना पर विजय पा कानपुर पर फिर से अधिकार कर लिया तो लखनऊ की ओर ध्यान देने के बजाय वह कानपुर के आसपास के क्षेत्रों पर अभियान करता रहा और इस तरह तीन महीने मे अधिक का समय व्यतीत हो गया।

आँटरम को आदेश था कि वह आलम बाग पर किसी प्रकार अधिकार बनाये रखे किन्तु थोड़ी-सी सेना के साथ उसके लिये अपनी स्थिति बनाये रखना अत्यन्त कठिन था। उसे सदैव यही खतरा रहता था कि अवध की सेनाएँ किसी भी समय उसकी फ़ौज को तहस-नहस कर सकती हैं या कम-से-कम उसे वहाँ से भागने पर विवश कर सकती हैं। वास्तव मे यदि अवध के सेनाधिकारियो को उसकी इस नाजुक स्थिति का भान होता तो आँटरम का वहाँ एक दिन भी जमे रहना सम्भव नही होता। इसीलिये आँटरम प्रधान सेनापति को वारम्बार आग्रहपूर्ण पत्र भेजता रहा कि शीघ्र कुमुक भेजी जाये अथवा उसे वहाँ से हटने का आदेश दिया जाये लेकिन इस बार कैम्पबेल अपनी पिछली ग़लती को दोहराना नही चाहता था। उसने अच्छी तरह देख लिया था कि बिना एक

विशाल एवं अत्यन्त शक्तिशाली सेना के लखनऊ पर आक्रमण करना मूर्खता होगी।

इधर जब कभी अवध सेना के अधिकारी आलम बाग पर आक्रमण की योजना बनाते तो आँटरम के गुप्तचर अंगद और अंजूर तिवारी इतने कुशल थे कि बहुत पहिले से अंग्रेजी शिविर में सूचना दे देते। अत. अवध सेना कभी आकस्मिक आक्रमण नही कर सकी तथा जब कभी आक्रमण किये, उसमे अधिक सफलता नही मिल सकी। आँटरम जैसे योग्य जनरल को पूर्व-सूचना होने के कारण बचाव का प्रबन्ध करने में अधिक कठिनाई नही होती थी तथा वह अपनी स्थिति पर डटा रहा।

कैम्पबेल लखनऊ पर आक्रमण को किसी प्रकार स्थगित ही करता जा रहा था। उसका इरादा था कि पहिले रुहेलखण्ड मे ब्रिटिश-सत्ता की पुनर्स्थापना की जाये किन्तु गवर्नर-जनरल लॉर्ड केनिग ने लखनऊ को ही प्राथमिकता देने पर बल दिया। उसका कहना था कि दिल्ली की भाँति लखनऊ भी एक बहुत महत्वपूर्ण केन्द्र है तथा राजनीतिक दृष्टिकोण के अनुसार उस पर अधिकार कर लेना ब्रिटिश-सत्ता की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। फलत: कैम्पबेल को अपना ध्यान लखनऊ पर केन्द्रीभूत करना आवश्यक हो गया। वह कानपुर मे ही युद्ध की योजना बनाता रहा। वह चाहता था कि अवध पर कई तरफ से आक्रमण किया जाये।

नेपाल के राजा जंग बहादुर ने अँग्रेजों की सहायता के लिए एक सेना पहिले ही भेज दी थी। इस सेना ने उत्तर की ओर से गोरखपुर पर आक्रमण किया। मुहम्मद हुसेन जो अवध-सेना की विजय के बाद पुन: गोरखपुर का नाजिम बन गया था, अपने थोड़े से सैन्य-दल के साथ गुरखा सेना का प्रतिरोध कर रहा था किन्तु अन्त मे वह परास्त हो गया और गोरखपुर से दूर तराई की तरफ चला गया। गुरखा सेना आजमगढ़ और जौनपुर की तरफ़ चली गई।

कैम्पबेल ने अब जनरल फ्रैंक्स के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना सुल्तानपुर की ओर भिजवा दी। इसके साथ नेपाल से आई एक गुरखा-सेना भी थी। चन्दा नामक स्थान पर इसे कर्नल बन्दा हुसन ने ललकारा और बड़ी कठिनाई से जनरल फ्रैंक्स को विजय प्राप्त हुई। बन्दा हुसन ने बुधायन के पास पुन: मोर्चा बनाया जहाँ कर्नल मेहदीहुसन भी उससे आ मिला। यहाँ भी अवध-सेना की पराजय हुई।

इसके पश्चात् जनरल फ्रैंक्स सुल्तानपुर की तरफ़ गया, जहाँ अवध का सेना-अधिकारी गफूर बेग पहिले ही एक विशाल सेना के साथ मुकाबिले के लिये तैयार था। अँग्रेजी-सेना के साथ उसका भीषण संग्राम हुआ। "अल्ला हो अकबर" और "हर-हर महादेव' के घोष से दिशाएँ गूँजने लगी। जनरल फ्रैंक्स की आधुनिकतम

सेना भी अब पराजय के कगार पर खड़ी थी। यद्यपि गफूरबेग की सेना की व्यापक क्षति हुई तथापि वह विजयी हुई। फ्रैंक्स ने वहीं विश्राम करने का निश्चय किया और दूसरे दिन फिर आक्रमण किया। वह अपनी पराजय से बहुत व्यग्र था अतः दूसरे दिन उसने एक चाल चली। जब गफ़ूर-बेग ने उसकी सेना को पीछे की ओर खदेड़ना शुरू किया तो वह जानबूझकर पीछे हटता गया। अवध-सेनाएँ उसे बहुत दूर तक खदेड़ती चली गईं। ग़फ़ूर बेग की सेना में घटकर बहुत कम सिपाही रह गये थे तथा उनमें भी बहुत से तो घायल थे। अतः अँग्रेजी सेना को पराजित समझकर जब वह सुल्तानपुर की ओर लौटने लगे तो अँग्रेजी फ़ौजों ने वापिस पलटकर हमला करना शुरू कर दिया। उसी समय एक सिख बटालियन भी फ्रैंक्स की सहायता के लिए आ पहुँची। फ्रैंक्स ने गफूर बेग की सेना को चारों तरफ़ से घेर लिया तथा उसे गोलाबारी और बन्दूक का निशाना बनाना शुरू किया। अन्त में गफ़ूर बेग सहित अवध-सेना के बचे खुचे लोग भी वीरगति को प्राप्त हुए। जनरल फ्रैंक्स ने नगर पर अधिकार कर लिया तथा वहाँ आवश्यक सैन्य-दल छोड़कर लखनऊ की ओर प्रस्थान किया।

मार्ग में भी फ्रैंक्स की सेना को जगह-जगह छापामार युद्धों का सामना करना पड़ा। यद्यपि उसके लगभग एक तिहाई सैनिक सुल्तानपुर में ही मारे गये थे तथापि उसे छापामार युद्धों में विजय-प्राप्त करने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। मार्च के शुरू में जब वह बँटेरा पहुँचा तो उसकी सेना घटते-घटते आधी रह गई थी।

नेपाल का राजा जंगबहादुर भी अँग्रेज़ों की सहायता देने के लिये आतुर था। अतः गवर्नर जनरल ने प्रधान सेनापति कैम्पबेल को आदेश दिया कि उसकी सेना के पहुँचने के बाद ही लखनऊ पर आक्रमण किया जाये। मार्च के दूसरे सप्ताह में महाराजा जंगबहादुर स्वयं एक शक्तिशाली सेना लेकर बँटेरा आ पहुँचा।

42

बेगम हज़रत महल को गोरखपुर और सुल्तानपुर की पराजय से काफ़ी दुःख हुआ किन्तु वह निराश नहीं हुई। बेगम को केवल एक ही चिन्ता थी। गोला बारूद तथा आधुनिकतम हथियारों का अभाव। राजा जैलालसिंह ने बताया था कि काफ़ी कोशिश करने के बाद भी गंधक बहुत कम तादाद में मिल सका है।

अब कोई साधन ऐसा नहीं रहा कि जहाँ से गंधक प्राप्त किया जा सके। फतेहपुर चौरासी के राजा जसिंह को भी होप ग्राट ने पहिले ही परास्त कर उसका क़िला व महल आदि नष्ट कर दिये थे। लगातार निराशापूर्ण समाचार मिलते रहने पर भी बेगम हतोत्साहित नहीं हुई। वह और भी परिश्रम से युद्ध कार्यों की व्यवस्था करती तथा अपने सेनानायकों को प्रेरणा देती रही तथा आशा करती रही कि विजय हमारी ही होगी। उसकी दैवी शक्ति से सब को स्फूर्ति मिलती थी तथा सभी अधिकारी तथा कर्मचारी लग्न और निष्ठा से अपना-अपना काम कर रहे थे। वह भी विभिन्न विभागों मे स्वयं मौजूद रहने का प्रयत्न करती थी।

आज वह मौलवी और जैलालसिंह बग़ैरह के साथ तोपखाने का निरीक्षण कर रही थी कि एक गुप्तचर सूचना लाया, "मलका-ए-आलिया, इँग्रेज़ी फ़ौजों का बँटेरा पर जमाव बढ़ता ही जा रहा है। जनरल होप ग्रान्ट और जनरल फ्रैंक्स की फ़ौजें तो पहिले ही वहाँ पहुँच चुकी थी, आज नेपाल के महाराजा जंग बहादुर भी अपनी फ़ौजो के साथ उनकी मदद के लिए आ पहुँचे हैं। उनके साथ क़रीब पन्द्रह हज़ार आदमियों की सिपह आई है।"

"उफ्फ़ ओ, इसका मतलब है कि लखनऊ पर किसी भी दिन हमला हो सकता है।" उसने चिन्तातुर होकर मौलवी और बरकत खाँ की तरफ़ देखा।

"जी मलका-ए-आलिया, मालूम हुआ है कि कानपुर से जनरल कैम्पबेल भी रवाना होकर वही पहुँच रहे हैं। उनके आने के बाद इँग्रेज़ी फ़ौजों में कम-से-कम पचास-हज़ार आदमी हो जायँगे और उन सब के पास बहुत आला दर्जे की बन्दूकें और संगीन तोपें हैं।" गुप्तचर ने बताया।

आज बेगम पहिली बार व्यग्र हुई थी। वह प्रश्नवाचक दृष्टि से मौलवी और बख़्त खाँ की तरफ़ देखने लगी।

"बेगम आलिया हमें पस्त हिम्मत नही होना चाहिये। कुछ तदबीर करना ही मुनासिब होगा।" मौलवी ने कहा।

"तो क्या हम बँटेरा पर हमला करने की पहल करें या खामोश बैठें उनकी तरफ से पहल का इन्तिज़ार करें?"

"मेरे खयाल से पहल करने से कोई फ़ायदा नहीं होगा, फिर भी दरबार में सभी सिपहदारान की राय ले ली जाये तो बेहतर होगा।" मौलवी ने कहा।

बख़्त खाँ, बरकत अहमद और राजाजी ने भी मौलवी की बात का ही समर्थन किया और तदनुसार सायंकालीन दरबार में बेगम ने यह प्रस्ताव रखा तथा मौलवी की राय से भी सब को अवगत कराया।

राजा जैलालसिंह ने कहा, "मलका-ए-आलिया, हमें पहल तो नही करनी चाहिये मगर मोर्चाबन्दी ज़रूर कर लेनी चाहिये।"

"जी हाँ आलीक़द्र" बख़्तख़ाँ ने कहा, "कुछ फौजी दस्ते हमें बँटेरा से क़रीब दस मील पीछे की तरफ रातोंरात भेज देने चाहिए। जब इंग्रेज़ी फौजें आगे बढ़ें तो हम इधर से तो मुक़ाबिला करेंगे ही, ये फ़ौजी दस्ते उनका पीछा करते हुए हमला करेंगे।"

"ख़याल तो बिलकुल दुरुस्त है! अच्छा ये दस्ते किसकी कमान में भेजे जाने चाहिये ?" बेगम ने पूछा।

"अगर आली मुकाम हुक्म फरमायें तो बन्दा हाज़िर है।" बरकत अहमद ने कहा।

"वाह बहुत खूब ! कर्नल बरकत अहमद की कमान में कुमार मदनसिंह और ब्रह्मानन्दसिंह भी अपने फ़ौजी दस्तों के साथ कूच करेंगे।" बेगम ने आज्ञा दी।

"हुज़ूर लोहे के पुल पर भी कुछ सिपह हिफ़ाजत के लिए रखना ज़रूरी होगा। इजाज़त हो तो मैं उस तरफ़ की कमान सम्भाल लूं।" राजा जैलालसिंह ने कहा।

"नहीं राजा जैलालसिंह," बेगम ने तुरन्त कहा, "तुम्हारे जिम्मे तो सारे अवध की कमान है। तुम्हें यहाँ रहकर सारे इन्तिज़ाम की देखभाल करनी है।"

"आलीकद्र, ये बूढ़े हाड़ भी दुश्मन से दो-दो हाथ करने के लिए बेचैन हैं। हुज़ूर खुद भी तो मैदाने जंग में…।"

"राजाजी हम तुम्हारी दिलेरी की दाद देते हैं। तुम्हें हम महल खास के इर्द-गिर्द के इलाके की कमान सौंपते हैं लेकिन उसकी ज़रूरत आखिरी खतरे के वक़्त ही पड़ेगी। कर्नल सुनन्दा बेगम कोठी और मूसा बाग के आस-पास के इलाके की हिफ़ाजत करेंगी। उनके साथ जबरीना की हब्शी-पल्टन, जेबुन्निसा, शैलबाला, कनक सुन्दरी, संयुक्ता, लुत्फुन्निसा और आराधना तथा रईसा के फौजी दस्ते तो होंगे ही, इसके अलावा कुमार प्रतापसिंह, साहबज़ादा अनीस अहमद और मुहम्मद अलीशाह की सिपह भी इनके साथ तैनात की जाती है।"

"जी बेगम आलिया," सुनन्दा ने कहा। जिस-जिस सेनानायक का नाम बेगम लेती जा रही थी, वह खड़ा होकर स्वीकृति में अपना सिर झुकाता जा रहा था।

"हस्तमसिंह की कमान में कुमार आदित्य और उद्गम अपने फ़ौजी दस्तों के साथ चार बाग के इर्द-गिर्द मोर्चा क़ायम करेंगे।" बेगम ने कहा।

मौलवी ने निवेदन किया, "बेगम आलिया, अगर इजाज़त हो तो मैं बज़ात ख़ुद बँटेरा की तरफ़ इंग्रेज़ी फ़ौजों के सामने का मोर्चा सम्भालूं। मेरे साथ ख़ाँ बहादुर ख़ाँ की फ़ौजें रहेंगी।"

"बिलकुल दुरुस्त मौलवी साहब, हम खुद भी यही तजवीज़ करने वाले थे," बेगम ने कहा, "और जनरल बख्तखाँ तुम लोहे के पुल के पास मोर्चा कायम करो, कुमार अरविन्द, अदम्य, हिम्मत बहादुर और नरसिंह राव की पल्टनें तुम्हारी कमान मे रहेंगी।

उसी समय शाहजादा फीरोज़शाह दरबार मे उपस्थित हुआ। सभी मंत्री व अधिकारी खड़े हुए और आदरपूर्वक सिर झुकाया। बेगम ने स्नेहसिक्त वाणी में कहा, "जहे क़िस्मत साहबे आलम, आपकी ही कमी थी, मैं बहुत बेचैनी से आपका इन्तिजार कर रही थी, लेकिन आप बहुत ही अच्छे मौके पर तशरीफ़ लाये हैं। शायद हमारा पैग़ाम मिल गया होगा।"

"जी बेगम आलिया, इसीलिये तो हाज़िर हुआ हूँ, वर्ना बहराइच, सीतापुर और फैज़ाबाद में बहुत काम बाकी है। उधर गोरखपुर में नैपाल की फ़ौजों ने नाजिम मोहम्मद हुसैन को हरा दिया था लेकिन जैसे ही मुझे मालूम हुआ मैं वहाँ जा पहुँचा और फिर से कब्ज़ा करके नाजिम के पास काफी सिपह छोड़कर बहराइच जा रहा था कि आपका पैग़ाम मिल गया।" फीरोज़शाह ने कहा।

फीरोजशाह दिल्ली के मुग़लवंश का एक अत्यन्त पराक्रमी शाहजादा था। उसके पूर्वज दिल्ली मे अनेक षड्यन्त्रों के कारण काफ़ी समय से अवध मे ही रहने लगे थे। फ़ीरोजशाह सीतापुर बहराइच तथा गोरखपुर के इलाकों में ही अभियान करके उन क्षेत्रों पर स्वाधीनता सेनानियों का कब्जा बनाये रखने मे व्यस्त था। अँग्रेज़ी फौजों ने वहाँ अनेक बार आक्रमण करके अपना अधिकार स्थापित करना चाहा, किन्तु इस शाहज़ादे की सूझ-बूझ तथा सामयिक कार्रवाई के सामने उनकी एक नही चली। वह बेगम का विश्वास-पात्र था तथा जिस तरफ वह कोई काम सम्भाल लेता था, बेगम उस तरफ से बिलकुल निश्चिन्त रहती थी। बेगम ने उसे अब तक की कार्रवाई के विषय में सूक्ष्म मे बताया और कहा, "अब साहबे आलम आप खुद ही बतायें कि आप किस तरफ की कमान सम्भालेंगे।"

"बेगम आलिया! मैं तो मुल्क का एक अदना-सा सिपाही हूँ, आप तजवीज़ कर दें, वही काम सम्भाल लूँगा।" बड़े आदर तथा सौम्यता से शाहज़ादे ने कहा।

बेगम गद्गद हो गई, "साहबे आलम, आप मुल्क की बादशाहत के हकदार है, आप जैसे बहादुरों पर हिन्द को नाज़ है। आप अपनी कमान मे कर्नल मेंहदी हसन, सुल्तानसिंह व हीरासिंह की सिपह रखें और सभी मोर्चों की देखभाल करें।"

"जी अच्छा बेगम आलिया।" शाहज़ादे ने कहा। इसके बाद बेगम ने अन्य मन्त्रियों, सेनाधिकारियों तथा नागरिक अधिकारियों को विभिन्न कार्यों के उत्तर-दायित्व सौंपे। लड़ाई के लिये हथियारों, गोला-बारूद इत्यादि की स्थिति के बारे

में उपस्थित लोगों को विवरण दिया। उन्हें प्रोत्साहित करते हुए बताया कि अंग्रेज़ी सरकार की प्रतिष्ठा देश मे काफी गिर चुकी है और उसे पुनः प्राप्त करने के प्रयत्न में वे लगे हैं।

उसने कहा, "गो कई जगह उसकी फ़तह हुई है मगर फिर भी हमें हिम्मत नही हारनी चाहिये। इस दफ़ा मुकाबिला बहुत सख्त होगा लेकिन हमें जान की बाजी लगाकर भी उन्हें मात देनी है। अगर इस बार हम फतहयाब होते है तो दुनिया की कोई ताकत हमे शिकस्त नहीं दे सकती। होली का त्यौहार नजदीक है। इस बार हम होली का मामूली जश्न मनाने के बजाय खून की होली खेलेंगे।" तत्पश्चात् सबका शुक्रिया अदा करते हुए बेगम ने दरबार-समाप्ति की घोषणा की। सभी अधिकारी तथा अमीर-उमरा अपने-अपने काम मे जुट गये।

43

लखनऊ की सुरक्षा के लिए अवध-सेना ने गोमती के किनारों पर मिट्टी भरवा दी। नगर में कई पंक्तियों में अवरोधक भी लगवा दिए गए किन्तु गोमती के उत्तर की ओर से उन्हें आक्रमण का अन्देशा नही था अतः उस तरफ़ की सुरक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। उस तरफ कुछ फ़ौजी दस्ते खानापूरी के बतौर तैनात किए गए थे।

कैम्पबेल के पास लगभग पचास हज़ार आदमियों की अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेना थी। वह पूरी तैयारी से लखनऊ पर आक्रमण करने की स्थिति में था। उसने ऑटरम को आदेश दिया कि वह गोमती के उत्तरी किनारे की ओर पहुँच कर आगे बढ़े और अवध-सेना पर आक्रमण करे। लोहे के पुल तक पहुँचकर उस पर अधिकार जमा ले और उसी स्थिति पर डटा रहे।

जनरल ऑटरम ने पूछा, "क्या मुझे लोहे के पुल से आगे नही बढ़ना है?"

"नही जनरल, तुम्हें वही तक बढ़ कर पुल पर कब्ज़ा कायम रखना है।"

"लेकिन सर, इस तरह तो बहुत देर हो जाएगी और...।"

"नही जनरल, यह मेरा हुक्म है," कैम्पबेल ने कहा, "हमें किसी तरह का जोखिम मोल नही लेना है।" अपने पूर्व अनुभवों के कारण कैम्पबेल अब फूंक-फूंक कर क़दम रखना चाहता था।

ऑटरम योजनानुसार पर्याप्त सेना लेकर गोमती के उत्तरी किनारे की ओर

गया और लोहे के पुल की ओर बढ़ने लगा। यद्यपि इस तरफ़ अवध-सेना का मोर्चा अधिक सशक्त नही था तथापि आँटरम को विकट संघर्ष का सामना करना पड़ा। जब तक अवध का एक-एक सिपाही नही मर गया, लोहे के पुल पर उसका अधिकार नही हो सका। जब अधिकार हो भी गया तो शाहज़ादा फिरोज शाह उस तरफ़ अपने सैन्य दल को लेकर रवाना हुआ और आँटरम को पीछे धकेल दिया। आँटरम ने पुनः प्रयत्न किया और एक बार फिर पुल पर क़ब्ज़ा करने में सफल हो गया। बख़्त खाँ और शाहज़ादा फ़िरोज ने उसे ललकारा और पुल पर अधिकार कर लिया। कुछ सैन्य-दल वही छोड़कर बख़्तखाँ तथा शाहज़ादे को मुख्य-सेना का मार्ग अवरुद्ध करने के लिए जाना पड़ा। आँटरम ने इस बार पूरी शक्ति से आक्रमण किया और लोहे के पुल पर अपनी सम्पूर्ण सेना को केन्द्रित कर दिया। बख़्त खाँ के साथ शाहज़ादा फ़ीरोज़ शाह अब मुख्य-सेना से उलझ रहा था अतः लोहे के पुल पर आँटरम का स्थायी अधिकार हो गया। गोलाबारी और बन्दूकों की मार से अवध-सेना का व्यापक संहार तो हुआ ही किन्तु वीर सेनानियों ने अपने तलवार और भालों से ही असंख्य अंग्रेज़ी सिपाहियों को धराशायी कर दिया।

आक्रमण करने के लिए कैम्पबेल की मुख्य-सेना को कदम-कदम पर भीषण क्षति उठानी पड़ी किन्तु उसकी आधुनिकतम विशाल तोपों और एनफ़ील्ड राइफिलों के के विरुद्ध अवध-सेना अधिक समय तक संघर्ष नही कर सकी। बरकत अहमद के फ़ौजी दस्तों ने पीछे से आक्रमण किया तथा मौलवी ने सामने से मार्ग अवरुद्ध करने का प्रयत्न किया। अपनी हानि की परवाह न करते हुए अंग्रेजी सेना गोलाबारी करती हुई गोमती के दक्षिण की ओर से आगे बढ़ने लगी। क़दम-कदम पर उसे अवध के योद्धाओं से संघर्ष करना पड़ा। जब शाहज़ादा फ़ीरोज़ शाह ने देखा कि अंग्रेज़ी सेना की प्रगति रोकना सम्भव नही हो पा रहा तो वह स्वयं मौलवी की सहायता के लिए जा पहुँचा। वह और मौलवी दोनों ही अदम्य साहसी एवं अनुभवी सेनानायक थे। दोनों मिलकर अचानक अंग्रेज़ी सेना पर टूट पड़े। शत्रु का हौसला पस्त हो गया तथा उसके सैनिक पीछे हट कर ताबड़-तोड़ भागने लगे। पीछे से बरकत अहमद के सैन्य दल ने उनका संहार करना शुरू किया। अब तीनों सेनानायक एक साथ हो गए और अंग्रेज़ी तोपख़ाने पर, जहाँ से कि तोपची भाग गए थे, कब्ज़ा करने ही वाले थे कि जनरल होपग्रान्ट ने अपने दूसरे सैनिक दस्तों को गोलाबारी करने का आदेश दिया। उस ओर से तोपें आग उगलने लगी। धुएँ का अम्बार लग गया और अवध-सेना के घोड़े चिंघाड़ते हुए इधर-उधर भागने लगे। अंग्रेज़ी सेना आगे बढ़ती गई, अपनी छोड़ी हुई तोपो पर पुनः अधिकार कर लिया और दिलकुशा तक बिना अधिक प्रतिरोध के जा पहुँची। वहाँ जनरल बख़्त का सैन्य-दल फिरंगियों को मौत के घाट उतारने लगा तथा मौलवी, बरकत अहमद तथा शाहज़ादा फ़ीरोज़ शाह भी अपनी क्षत-विक्षत सेना के साथ वहाँ जा पहुँचे।

अब अवध के सेनाध्यक्षों का एक ही ध्येय था—किसी प्रकार महल खास तथा अन्य महत्त्वपूर्ण इमारतों, क़िलों आदि पर अपना नियन्त्रण बनाए रखना तथा अपनी संगठित शक्ति से किसी प्रकार अंग्रेज़ी सेना को पीछे हटा देना।

हर हर महादेव ! वाहे गुरु की फतह ! अल्लाहो अकबर ! के घोष के साथ वीर सेनानी जहाँ तहाँ गोरों पर टूट पड़े। बेगम स्वयं भी स्थान-स्थान पर पहुँच कर अपने योद्धाओं को प्रोत्साहित कर रही थी और शत्रु-सेना के संहार में महत्त्व-पूर्ण भूमिका निभा रही थी। चारों ओरसे आल्हा की धुन में अवध-सेना का गुणगान स्वाधीनता सेनानियों की धमनियों में जोश प्रवाहित कर रहा था। कई सेनानायक महाबली हनुमान के वेश में शत्रु-सेना का विनाश करते हुए सैनिकों का हौसला बढ़ा रहे थे। इतनी साधन-सम्पन्न एवं विशाल अंग्रेज़ी सेना के भी इन पराक्रमी योद्धाओं ने छक्के छुड़ा दिए।

काफ़ी संघर्ष के बाद कैम्पबेल ने मार्टिनियर भवन पर अधिकार कर लिया और धीरे-धीरे कई महल, किलों, मकबरों एवं बाग़ों पर भी यूनियन जैक फहराने लगा। सभी सम्भव प्रयत्नों के बावजूद फिरंगी मूसा बाग़ और बेगम कोठी तथा आस पास की महत्त्वपूर्ण इमारतों पर दो और दिनों तक अधिकार नहीं कर पाए। वहाँ पहुँचने से पूर्व तथा उनमें प्रवेश के बाद भी उन्हें चप्पे-चप्पे पर साहसी योद्धाओं से लोहा लेना पड़ा।

कर्नल सुनन्दा, शाहज़ादा फ़िरोज़शाह, मौलवी, राजा जैलाल सिंह, बख़्त खाँ, अनीस अहमद और प्रताप सिंह आदि अपनी जान पर खेल कर शत्रु-दल का विनाश कर रहे थे। अंग्रेज़ी सेनाध्यक्ष उनकी वीरता तथा अदम्य साहस पर दाँतों तले उँगली दबा रहे थे।

महिला पल्टनें ग़जब ढा रही थीं। कर्नल सुनन्दा महिषासुर मर्दिनी महाकाली की तरह जहाँ तहाँ गोरों का संहार करती हुई अपनी सेना को प्रोत्साहित कर रही थी। जैबुन्निसा कई बार गोली का निशाना बनते-बनते बाल-बाल बची, किन्तु फिर भी वह अनेक अंग्रेज़ों को रण-भूमि में सुला रही थी। लुत्फ़ो, कनक, संयुक्ता, रईसा, शैलबाला तथा आराधना आदि सभी वीरांगनाएँ क्रुद्ध सिंहनियों की भाँति अंग्रेज़ों को धराशायी कर रही थीं।

अबरीना ने अनेक फिरंगियों को हताहत किया। अब उसके पेट में तलवार का एक लम्बा घाव लग गया। आँतें बाहर निकलने को ही थीं कि उसने उन्हें अपने बाँए हाथ से संभाल लिया और दाँए हाथ से बहुत से गोरों को यमलोक पहुँचाती रही। जब तक उसके सिर में गोली नहीं लग गई, वह रुकी नहीं और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुई। उसकी हब्शी पल्टन की बहादुर युवतियाँ भूखी शेरनी की तरह अंग्रेज़ों पर झपटती और असंख्य योद्धाओं को मार कर गिराती रहीं। शैलबाला जिधर निकल जाती, अनेक गोरों का सफ़ाया कर डालती। अन्त

में एक गोरे की तलवार का निशाना बन जाने के कारण वह गिर पड़ी। वह साहस करके पुनः उठने को हुई कि कनक, लुत्फों तथा जेबुन्निसा ने उसे चारों ओर से घेर लिया और जान पर खेल कर उसे किसी सुरक्षित स्थान मे पहुँचा उसके उपचार का प्रबन्ध कराया। वे सभी पुनः रणभूमि में आकर कर्त्तव्यरत हो गई और शत्रु का विनाश करने लगी।

अनेक अंग्रेज़ अधिकारी उनके अदम्य साहस, अनुपम-वीरता और देश-प्रेम को देखकर मन ही मन उन्हें सराहते रहे।

उधर प्रताप, अनीस, आदित्य तथा उद्गम आदि भी समरभूमि में काल भैरव की भाँति शत्रु पर छा रहे थे। उनके प्रचण्ड आक्रमणों से कई बार गोरो के पैर उखड़ने लगे किन्तु हर बार नए सैन्य-दल आ जाने से उन्हें पराजित नही किया जा सका।

प्रताप सिंह का बाँया हाथ तोप के गोले से उड़ गया तथा धमाके के साथ वह गिर पड़ा। कुमार आदित्य तथा उद्गम वग़ैरह उसे तुरन्त युद्ध-भूमि से उठाकर दूर ले गए।

राजा जैलाल सिंह घायल होकर भी अपना जौहर दिखा रहा था। शत्रु-दमन की लालसा में उसे यह ध्यान भी नही था कि शरीर से कितना ख़ून बह चुका है। उसी समय बख़्त ख़ाँ वहाँ जा पहुँचा। उसने राजा से आग्रह किया कि कहीं सुरक्षित स्थान पर चला चले।

"नही जनरल, मैं वज़ीरे जंग हूँ—मेरी जगह यही है, तुम बेगम आलिया को लखनऊ से हटा कर किसी महफ़ूज़ जगह पर ले जाओ," अनुभवी राजा से अब यह छिपा नही रहा कि अवध-सेना अन्तिम बाज़ी हार चुकी है, "मैं तब तक इन फिरंगियों की ख़बर लेता हूँ।"

राजा की हालत देखकर बख़्त ख़ाँ ने उससे पुनः आग्रह किया किन्तु राजा ने एक नही सुनी। वह गरजा, "बख़्त ख़ाँ तुम मलका-ए-आलिया को लेकर किसी महफ़ूज़ जगह पर फ़ौरन चले जाओ, यह मेरा हुक्म है!" और वह महाकाल की तरह शत्रु-दल पर टूट पड़ा। बख़्त ख़ाँ विवश हो बेगम की तलाश में चल दिया। वह रण-चंडी-सी फिरंगियों के दल पर प्रहार कर अपना जौहर दिखा रही थी।

"बेगम आलिया! लखनऊ में हम बाज़ी हार चुके हैं, हुज़ूर किसी महफ़ूज़ मुकाम पर…।"

"क्या कह रहे हो बख़्त ख़ाँ, मैदान छोड़कर भाग जाऊँ—नही, यह नही हो सकता, अनगिनत साथियो को मौत के मुँह में धकेल कर मैं बचकर निकल जाऊँ!" बेगम ने भावुकता से कहा।

"आली मुकाम, सारा हिन्द आपकी तरफ़ उम्मीदें लगाए बैठा है—लखनऊ हाथ से जा रहा है, मगर अभी तो अवध, बिहार, रुहेलखंड बहुत कुछ बाकी है, नही

हुजूर, आपको फ़ौरन यहाँ से निकल जाना चाहिए। इसी में मुल्क की बेहवूदी है!" बख्त खाँ ने कहा।

काफ़ी आग्रह के बाद बेगम तैयार हुई और कर्नल मेंहदी हसन वग़ैरह के साथ लखनऊ खाली करके चली गई। उसके साथ लगभग सात हजार सिपाही योद्धा भी गए।

बख्त खाँ पुन: राजा जैलाल सिंह के पास पहुँच गया।

"उफ़ जनरल, ये क्या ग़जब कर रहे हो—फिर मौत के मुँह में! ''''।" कुछ और कहता उससे पहिले ही राजा के सिर में एक गोली लगी और वह परम वीर सदा के लिए रण-भूमि में सो गया। बख्त खाँ ने उसे उठाना चाहा किन्तु उसकी निष्प्राण देह को उठाकर करता भी क्या! चारों ओर से शत्रुओं से घिरा वह चीते की तरह शत्रु-सेना पर उछल-उछल कर वार करने लगा।

मौलवी अहमदुल्ला शाह, मदन सिंह, ब्रह्मानन्द, अरविन्द और अदम्य ने अंग्रेजी-सेना मे त्राहि-त्राहि मचा दी थी। यद्यपि अवध-सेना की पराजय हो चुकी थी फिर भी इन साहसी योद्धाओं को अंग्रेजी सेनाएँ तीन और दिनों तक अपने स्थान से नही हटा सकी। जब मौलवी ने देखा कि अब सब कुछ समाप्त हो चुका है तथा बेगम भी अपने गन्तव्य तक सुरक्षित पहुँच गई होगी तभी वह युद्ध क्षेत्र से अपनी बची-खुची सेना के साथ फैज़ाबाद की ओर पलायन कर गया।

अंग्रेजो ने मूसा बाग, बेगम कोठी, छत्तर मजिल आदि सभी स्थानों पर अधिकार कर लिया और महलों व समस्त नगर में लूट-पाट मचा दी। जब अंग्रेज सेनाधिकारी महल खास में पहुँचे तो पिंजड़ों में बन्द कुछ मैना व तोते बोल रहे थे, "बेगम आलिया ज़िन्दाबाद! इंग्रेज कम्पनी मुर्दाबाद! अल्लाहो अकबर हर हर महादेव?" बेगम कोठी, मूसा बाग़ और आस-पास के क्षेत्रों में अवध-सेनानियो की लगभग पाँच हजार लाशें अपने शौर्य की कहानी कह रही थी। वीरों की होली समाप्त हुई और अब चील, कौए, गिद्ध और शृंगाल मानव रक्त से होली खेल रहे थे!

44

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक।
कौन जीयेगा तेरी ज़ुल्फ के सर होने तक॥

टप-टप—टपा-टप—टप-टप—टपा-टप।

अंग्रेजी घुड़सवार सेना का एक दस्ता सरपट चाल से चला आ रहा था। सूर्यास्त का समय था। "यही कही छिपे होंगे वे लोग, आगे कोई निशान नही मिलते।" नायक ने कहा। थोड़ी देर तक गोरे अपने घोड़ो से उतर कर सड़क के दोनों तरफ के खेतों मे खोजते रहे। अंधकार हो जाने के कारण वे मशाल जलाना ही चाहते थे कि अनीस अहमद जो एक घने आम के पेड़ पर छिपा उन्हीं की घात में बैठा था अचानक पेड़ से कूदा, हाथ में नंगी तलवार थी। आठ-दस गोरे एक बारगी हतप्रभ हो गए और जब तक कि वे सम्भले अनीस अहमद ने चार को बुरी तरह घायल कर दिया। तभी झुरमट में से मदन सिंह, ब्रह्मानंद, आदित्य और उद्गम हाथों में भाले या नंगी तलवारें लिए निकले और गोरों का काम तमाम कर दिया। आक्रमण के समय गोरे सवार चीख-चीखकर सड़क के दूसरी ओर गए अपने साथियों को बुलाते रहे लेकिन जब तक वे वहाँ पहुँचे, पाँचों वीर सेनानी अंधकार के गर्त मे विलीन हो चुके थे। थोड़ी देर तक गोरे बंदूकें ताने इधर-उधर आहट लेते रहे किन्तु जब उन्हें यह निश्चय हो गया कि आक्रमणकर्ता कहीं दूर चले गये हैं तो मशाल जला कर अपने साथियों की लाशों का जायजा लेने लगे। उसी समय चारों ओर से नगी तलवारें व भाले लिए भारतीय योद्धा निकले और गोरे सवारों पर झपटे। उन्होंने एक भी गोरे को जीवित नही छोडा।

कुमार उद्गम ने अपने साथियों से कहा, "आज के लिए हम लोग चिन्ता-मुक्त हैं, अब कोई हमारा पीछा नही करेगा अतः यही निश्चिन्त होकर रात्रि-विश्राम कर सकते हैं और कुमार प्रताप सिंह और बहिन शैलबाला के इलाज का प्रबन्ध भी।"

वे सभी एक गाँव मे पहुँचे, जहाँ एक कच्चे मकान के कमरे में प्रताप सिंह और शैलबाला दो छोटी-छोटी खाटो पर पड़े थे। प्रताप की हालत बहुत खराब थी। वह जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा था। शैलबाला की स्थिति उससे काफी अच्छी थी लेकिन बहुत रक्त-स्राव हो जाने के कारण वह कमज़ोर हो गई थी। तभी शैलबाला ने कनक और लुत्फों को जो उनकी परिचर्या में लगी थी, इशारे से बुलाया। जेबुन्निसा भी पास पहुँच गई तथा थोड़ी देर काना-फूंसी हुई। वे तीनों कुमार उद्गम और अनीस आदि को बाहर ले गईं और विचार-विमर्श करती रही। कुछ क्षणों मे ही सब पुनः कमरे में प्रविष्ट हुए।

उद्गम के इशारे पर लुत्फो और जेबुन्निसा ने शैलबाला की खटिया प्रताप सिंह की खटिया के समीप उठाकर रख दी। शैल का मुखमण्डल प्रसन्नता से चमकने लगा। कुमार उद्गम ने शैल का हाथ प्रताप के हाथ मे थमा दिया। प्रताप ने मुस्करा कर कहा, "मेरी शैल!" प्रताप ने इशारा किया तो कनक सुन्दरी और जेबुन्निसा ने शैल का सिर प्रताप के समीप कर दिया। प्रताप ने अपने एक घाव

से रिसते रक्त से शैल की माँग भर दी और माथे पर सुहाग-बिन्दु लगा दिया। शैल गद्‌गद हो गई, उसके नेत्रों में हर्षाश्रु चमक उठे। सभी उपस्थित जन भाव विह्वल हो गये।

"वीरों का विवाह ऐसे ही होता है शैल !" प्रताप ने कहा।

"हाँ कुमार, आज हमारी साध पूरी हुई ! मैं धन्य हुई...," कहकर शैलबाला एक ओर लुढ़क गई, निढाल और निष्प्राण, मानो वह इन्हीं सुहाग-चिह्नों की प्रतीक्षा में अब तक जीवित रही हो ! सभी कुमारियाँ क्रन्दन करने लगीं। उद्‌गम, अनीस आदि सभी की आँखों मे आँसू थे।

प्रताप ने धीमे स्वर में कहा, "मैं भी आता हूँ शैल, तुम्हें अकेले इतनी लम्बी यात्रा नही करने दूंगा !"

"क्या कह रहे हो भैया !" कनक और लुत्फ़ो चीखी, लेकिन दूसरे ही क्षण प्रताप की आँखें पथराकर रह गईं। कुमारियाँ रोती रह गईं और कुमार स्तब्ध खड़े थे। मदन सिंह ने कहा, "वाकई ये दोनों धन्य हैं। मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दोनों साथ चले गए। हमारे देश मे शहीदों की सुहागरात इसी तरह मनाई जाती रही हैं ?"

45

जुल्मत कदे में मेरे शबे गम का जोश है।
इक शमा है दलीले सहर सो खमोश है॥

मौलवी के युद्ध-क्षेत्र से पलायन करते ही लखनऊ पूर्णरूपेण अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। विजयोल्लास ने अब सिपाहियों को लूट के लिए उन्मत्त बना दिया। सर्वप्रथम लूट के केन्द्र बने शाही महल। कई गोदाम और संग्रहालय तोड़ डाले गए, जिनमें सोने-चाँदी के बर्तन, गोटे किनारी, अनेक प्रकार के बाजे तथा हथियार (जिन पर सोना चढ़ा हुआ था अथवा हीरे-जवाहिरात जड़े हुए थे), तथा बहुमूल्य वस्त्रादि संचित थे। इन्हें तोड़-फोड़कर उनमें से सोना-चाँदी तथा हीरे जवाहिरात सैनिकों ने ही हथिया लिए। कई ऐसे सन्दूक मिले, जिनमे हीरे, पन्ने, लाल नीलम आदि बहुमूल्य रत्न अलग-अलग खानों में भरे हुए थे। ये सब सैनिक अधिकारियों ने गायब कर दिये। असंख्य बेशकीमती कलात्मक वस्तुएँ प्रतिशोध की भावना से जला डाली गईं। इस

तरह करोड़ों रुपयों का माल नष्ट या भूमिगत हो जाने के बाद भी ब्रिटिश-सरकार को युद्ध-विजय की लूट के रूप में लगभग तीन करोड़ रुपये का माल हाथ लगा।

सैनिको ने शहर में भी लूट-पाट तथा मारकाट मचाई। सैंकड़ों नागरिक जिनमें स्त्री, बालक और बूढ़े भी थे मौत के घाट उतार दिए गए। चौक में दुकानें लूट ली गईं। चौपटिया नक्खास आदि जिधर भी अंग्रेज सैनिक निकल गए निर्ममता से लूट, बलात्कार और हत्या का तांडव नृत्य करते रहे। अधिकांश लोग अंग्रेज़ी-विजय का समाचार सुनते ही शहर छोड़कर बाहर भाग गए थे फिर भी जो सामने आया उनी पर विजेताओं ने अपना क्रोध निकाला। छोटा बरहा, बड़ा बरहा नज़ीराबाद, हुसैनगंज अमीनाबाद, गणेशगंज, मवैय्या और वज़ीराबाद आदि सभी जगह गोरे सैनिक फैले हुए थे तथा निर्दोष नागरिकों की जान-माल तथा आबरू से हैवानियत का खेल खेल रहे थे।

बताशा वाली गली के मकान में मंसाराम का परिवार किसी सुरक्षित स्थान मे भाग जाने का मौक़ा देख रहा था। गोरे सिपाही आँगन की दीवार कूदकर घर में घुसे और मंसाराम तथा उसकी पत्नी ललिता को संगीनों से छेद डाला। उनकी दो किशोरी पुत्रियों को आततायियों ने पकड़ लिया और घसीटते हुए एक तरफ ले गये। मंसाराम का पाँच वर्षीय पुत्र तुतलाकर कहने लगा, "मुझे मत मारिये, मैंने कुछ नही किया!" किन्तु यह अमृत-वाणी वायुमण्डल में गूँजती रही और अबोध बालक को भाले की नोंक से छेद कर आसमान की ओर उठाकर उछाल दिया गया। बालक की निष्प्राण देह धरती माता की गोद में लिपट गई।

चावल वाली गली मे शब्बीर हुसेन के घर का दरवाजा दो-तीन ठोकरों में ही ज़मीन पर आ गिरा। उसके वालिद बशीर मियाँ जो उसे रोके खड़े थे, पहिले शिकार बने। एक मनचले गोरे ने सिगरेट जलाई और उसकी डाढ़ी में भी आग लगा दी। वृद्ध तड़पने लगा तो उसे तलवार के घाट उतार दिया। घर में कोहराम मच गया। दो वृद्धाऐं, तीन दुधमुंहे बच्चे तथा तीन पुरुष भालो अथवा संगीनों से छेद डाले गए। नन्नो और छम्मो के अनुपम सौन्दर्य पर गोरों की लार टपकने लगी। उन्हें दया की भीख माँगते-माँगते कई गोरों ने एक साथ पकड़कर, कपड़े फाड़ निर्वसन कर दिया। करुणा की याचना और चीत्कार करती उन बेकसूर कुमारियों के साथ पिशाच-लीला कर रहे थे वे नर पिशाच!

लाज इज्जत आबरू की कीमत ही क्या है! कई घर जला दिये गये, दीवारें व फर्श तोड-फोड़कर जहाँ-तहाँ दबा सोना-चाँदी और रुपया पैसा लूट लिया गया। हजारों दुकानो का माल जला दिया गया या लूट लिया गया।

यह पीला बँगला है, जहाँ एक गोरे अधिकारी एण्डरसन की जान गई थी। वही एक असहाय अभागा हिन्दुस्तानी मिल गया विजेताओं ने उसकी दोनो टाँगे

पकड़कर उसे चीरना चाहा। जब यह सम्भव नहीं हुआ तो उन्होंने टाँगे पकड़कर घसीटना शुरू किया और उसके अंगों में अपनी संगीनें भौंकते गये। वह अगहनीय पीड़ा से चीत्कार करता रहा लेकिन नृशंसता के कानों में विजय-गर्व की रुई ठुँसी हुई थी। धरती पर बिछे निरपराध रक्त ने कण-कण में क्रन्दन भर दिया किन्तु मानवता फिर भी सोती रही। मूच्छित अवस्था में भी प्राण शेष थे तथा मूकता में ही उसका करुण मुख-मण्डल प्राणों की याचना कर रहा था। इसी दशा में उसे धीमी आग पर लटका दिया गया। वह अभागा मृत्यु से संघर्ष करता रहा तथा एक बार जब उसकी चेतना लौटी तो उसने प्रयत्न किया मृत्यु और उत्पीड़न से दूर भाग जाने का! निर्बलता के कारण कुछ दूर ही जा सका था कि मृत्यु-दूतों ने उसे पकड़ लिया तथा आग पर तब तक लटकाये रखा जब तक कि मृत्यु ने ही उसे यातना-मुक्त नहीं कर दिया। धरती का कलेजा हिल गया। शर्म को भी शर्म आने लगी, निर्ममता भी चीत्कार कर उठी। आसमान रो पड़ा, दिशाएँ क्रन्दन कर उठीं। मानवता के इतिहास में अभूतपूर्व बर्बर क्रूरता के रक्त-स्नात इस पृष्ठ ने जुड़कर पाशविकता का भी सिर झुका दिया।

लखनऊ के अनेक स्थानों में प्रतिशोध की भयंकर होलिकाएँ दहन हो रही थीं। ऊँची अट्टालिकाओं तक ज्वालाएँ उठ-उठकर मानो भगवान से याचना कर रही थीं दया की! प्रह्लाद को आज कोई बचाने वाला नहीं था। अनेक निर्दोष मंसाराम और शब्बीर प्रलयकारी तूफान में समा गए। कितनी ही नन्नो और छम्मो पैशाचिकता का शिकार बन गईं! आज लखनऊ का कोई धनी धोरी नहीं था।

रात्रि हो चुकी थी। जगमग करती लखनऊ नगरी अपना सुहाग लुटाकर श्री-विहीन खड़ी थी। सारे नगर में प्रेत-छाया का अंधकार और श्मशान का-सा सन्नाटा था। कभी-कभी अनेक गीदड़ एक साथ रोने लगते "हुआ···हु···आ··· ···हुआ···आ आ" और फिर वही मौत की निस्तब्धता!

कई दिनों तक ढील देने के पश्चात ही आँटरम ने इस ताण्डव नृत्य पर नियंत्रण किया। आखिर विजेताओं को अपने श्रम का परितोष तो मिलना ही चाहिए था।

46

लखनऊ से चलकर कुंवरसिंह आज़मगढ़ पहुँचा। नेपाली सेना गोरखपुर को जीतने के बाद आज़मगढ़ पर अभियान कर रही थी, किन्तु तब तक कुंवरसिंह ने अपनी सेना संगठित करके उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। अब गुरखे कैम्पबेल की सेना को सहायता पहुँचाने के लिए लखनऊ की ओर पलायन कर गए। कुंवर सिंह ने पास ही के गाँव अतरौली पर धावा बोल दिया और वहाँ के सेनाध्यक्ष कर्नल मिलमैन को परास्त कर भगा दिया। आज़मगढ़ पर कुंवरसिंह का अधिकार हो गया था। उसी समय फ़ैज़ाबाद से बेगम के दूत उसके पास पहुँचे और उसे उस इलाके के अलावा बिहार की ओर भी अभियान करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस वृद्ध सेनानी की स्फूर्ति और तत्परता देख अंग्रेज़ों के पैरों तले ज़मीन खिसकने लगी। मिलमैन ने परास्त हो गाज़ीपुर सहायता के लिए याचना भेजी। वहाँ से कर्नल डेम्स एक आधुनिकतम सुसज्जित सेना लेकर आया और मिलमैन तथा उसकी सम्मिलित सेना ने आज़मगढ़ पर आक्रमण किया लेकिन साधनहीन कुंवरसिंह के सेनानियों ने उन्हें भयकर संघर्ष के बाद बुरी तरह परास्त करके पीछे हटा दिया। इस अभियान मे कुंवरसिंह के साहस और कुशल नेतृत्व के कारण गोरों की भारी हानि तो हुई ही, दो बार पराजित हो जाने से उनकी प्रतिष्ठा को भी गहरा आघात पहुँचा। उन्होंने जब लॉर्ड मार्कर और लुगर्ड की कमान मे इस बार अत्यन्त विशाल और शक्तिशाली सेनाएँ भेजी तभी कुंवरसिंह को नगर से हटाया जा सका। अपनी अत्यन्त सीमित तथा क्षत-विक्षत सेना के बावजूद कुंवरसिंह कभी हतोत्साहित नही हुआ और आस-पास के क्षेत्रों में अंग्रेज़ों से लोहा लेकर उन्हें भूमि चटाता रहा।

उसके छापामार युद्धों के कारण अंग्रेज़ों का कलेजा दहलने लगा। कुंवरसिंह के चार-पाँच सौ जवान अपने साहस, शौर्य और दृढ संकल्प के कारण अंग्रेज़ों के दो-दो हज़ार सुसज्जित सैनिकों को भारी क्षति पहुँचा तितर-बितर कर देते थे।

कुंवरसिंह शिवपुर घाट की तरफ़ जा रहा था तो कर्नल डगलस ने उसकी सेना को इस खुले मैदान में तहस-नहस करने का अत्यन्त उपयुक्त अवसर समझा जबकि कुंवरसिंह की सेना के कई दस्ते इधर-उधर अभियानों में व्यस्त थे। डगलस ने आक्रमण किया तो वह हाथियों के झुण्ड मे घायल सिंह की तरह उस पर झपटा। डगलस के प्राण संकट में पड़ गए और वह पीछे हटकर ही अपनी जान बचा सका। उसके पीछे हटते ही कुंवरसिंह ने अपनी सेना व्यवस्थित कर ली और जब तक डगलस ने होश सम्भालकर उसका पीछा किया, उसकी सेना शिवपुर घाट

से गंगा पार कर चुकी थी। डगलस की सेना को छकाने के लिए उसके दो-तीन सौ आदमियों की एक पल्टन ही काफ़ी थी जिसे वह गंगा के इस पार छोड़ गया था। जब डगलस ने देखा कि कुंवरसिंह जा चुका है तो उसे बहुत निराशा हुई। वह अपनी सेना को आवश्यक विनाश से बचाने के लिए तुरन्त पीछे हट गया।

गंगा पार करते समय एक तोप के गोले से कुंवरसिंह की बाँई भुजा घायल हो गई थी। उसकी सेना में लगभग एक हज़ार शस्त्रहीन सैनिक रह गए थे—तोपें नहीं, बन्दूकें नहीं, केवल तलवारें और भाले ही उनके अस्त्र थे। कुंवरसिंह अब अपने जन्म स्थान जगदीशपुर की ओर जा रहा था कि उसकी इस निर्बल दशा का लाभ उठाने के लिए आरा के कप्तान ली ग्रान्ड ने इस वृद्ध सिंह पर आक्रमण करने का दुस्साहस किया लेकिन कुंवरसिंह को तो जैसे रण-क्षेत्र के लिए मृत्युंजय मन्त्र सिद्ध हो! उसने ली ग्रान्ड की सेना में त्राहि-त्राहि मचा दी। गोरों के होश उड़ गए। जो युद्ध में मारे नहीं गए वे अपनी जान लेकर भागे। ली ग्राण्ड की विशाल सेना में से केवल डेढ सौ ही सैनिक जीवित आरा पहुँचने में सफल हो सके उसका एक भी तोपची जीवित नहीं बचा था।

कुंवरसिंह जगदीशपुर पहुँच गया था। उसकी एक बाँह तोप के गोले से खण्डित हो चुकी थी तथा काफ़ी रक्त-स्राव होता रहा था। कई स्वामिभक्त सैनिक उसकी परिचर्या में व्यस्त थे किन्तु उसे अब जीवन की आशा नहीं रही थी। उस योद्धा को मृत्यु-शैया पर पडा देख उसका छोटा भाई अमरसिंह और भतीजा रितु मजनसिंह बड़ी कठिनाई से अपने आँसू रोक पा रहे थे। अपनी नम आँखें और रुँधी आवाज़ को छिपाने के लिए वे बहुत कम बोल पा रहे थे तथा सिर झुकाए बैठे थे। तभी कुंवरसिंह ने बुलन्द आवाज़ में पुकारा, "अमरसिंह!" अमरसिंह एकदम चौकन्ना होकर इस तरह खडा हो गया कि उसकी आँखों पर कुंवरसिंह की नज़र न पड सके और बड़े आदर से बोला, "जी भाई जी!"

"अरे तू रो रहा है! तुझे तो अभी बड़े-बड़े काम करने हैं—इस तरह हिम्मत हारेगा तो क्या कर पायेगा!"

"नहीं भाई जी नहीं—मैं रो कहाँ रहा हूँ?"

"अच्छा तो ध्यान से सुन, अब ज्यादा वक़्त नहीं है, हमें यह आज़ादी की जंग जारी रखनी है और पूरे जोश से जारी रखनी है—फिरंगियों को यह महसूस नहीं हो कि कुंवरसिंह मर चुका है···।"

"भाई जी! यह क्या कह रहे हैं आप?" अमरसिंह बालकों की तरह बिलख रहा था।

"बात तो सुन अमर, तू बहुत बहादुर है, रितुमंजन भी परमवीर और साहसी है। फिर मेरा दोस्त निशानसिंह मेरी जगह पर तेरा बड़ा भाई है ही, मेरी आत्मा को तभी शान्ति मिलेगी; जब तुम लोग जंगे आज़ादी चा···लू र···खो···गे।

निशानसिंह और रितुमंजन उसके इशारे पर झुके। दोनों के सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दे वह महान पराक्रमी, आज़ादी का दीवाना, अनन्य देशभक्त चिर-निद्रा की गोद में सो गया। अमरसिंह तथा रितुमंजन बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगे। उसी समय निशानसिंह भी आ पहुँचा। दोनों को ढाढ़स बँधाते स्वयं भी रो पड़ा। उसे ली ग्राण्ड के कुछ सैनिकों को यमलोक पहुँचाने में देर हो गई थी। कुँवरसिंह की मृत-देह के समीप वे लोग थोड़ी देर तक किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो कर बैठे रहे।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के आकाश का एक देदीप्यमान सितारा बुझ चुका था किन्तु उसकी दीप्ति सदा के लिए अमिट और उसकी कीर्ति अमर हो गई।

47

हर रह गुज़र पे शमा जलाना है मेरा काम।
तेवर हैं क्या हवा के ये मैं देखता नहीं॥

जिस समय मौलवी अहमदुल्ला शाह, शाहज़ादा फीरोज़शाह और बख्त खां वगैरह अपनी जान हथेली पर लिए अंग्रेज़ों से लोहा ले रहे थे, बेगम हज़रत महल अपने विश्वस्त सेवकों व सैन्य दल के साथ बहुत दूर निकल चुकी थीं। उसके सुरक्षित पलायन के लिए रणबाँकुरे मौलवी ने तीन दिन तक अंग्रेज़ी सेना को और अटकाए रखा। अन्त में जब सब कुछ अंग्रेज़ों के अधीन हो चुका और वे महलों में पहुँचे तो गोरे सेनाधिकारियों को अपनी भूल का अहसास हुआ। कैम्प-बेल तथा आँटरम अब तक यह समझ रहे थे कि लखनऊ पर अधिकार होते ही उनके संकटों का अन्त हो जाएगा। अब उनका साहस टूट गया क्योंकि मुख्य-मुख्य योद्धाओं व नेताओं के पलायन के कारण उनकी विजय बेमानी थी। बेगम, मौलवी, शाहज़ादा फिरोजशाह बख्त खां और मेंहदी हुसेन आदि के स्वतन्त्र रहते अंग्रेज़ कभी चैन की नींद नहीं सो सकते थे।

बेगम कर्नल मेंहदी हुसेन और कर्नल सुनन्दा के साथ सबसे पहिले शंकरपुर के पास एक गाँव निधौली पहुँची। शंकरपुर के ताल्लुकेदार वेणी माधव को जैसे ही उसके आगमन की सूचना मिली वह बेगम के शिविर में उपस्थित हुआ और नज़र पेश की। हाल की घटनाओं की जानकारी होने के बाद उसने निवेदन किया, "मलका-ए-आलिया, अभी लखनऊ ही तो गया है लेकिन हमारे मुल्क में

सैकडों लखनऊ इंग्रेजों से लोहा लेने को तैयार हो जायेंगे, हुजूर की राहबरी में अनगिनत आजादी के दीवाने मुल्क पर अपनी कुर्बानी दे देंगे।"

"वाह राजा वेनीमाधव तुमसे हमें यही उम्मीद थी। हमें लखनऊ की शिकस्त का अफसोस जरूर है मगर इससे हम पस्त हिम्मत नहीं हुए। हम हिन्द के जर्रे-जर्रे में आजादी का जज्बा पैदा कर देंगे। मुल्क के कोने-कोने में आज़ादी की शमा जला देंगे। तुम जैसे बहादुरों के रहते फिरंगी कभी चैन से नहीं बैठ सकेंगे।"

वेणी माधव भाव विह्वल हो गया, फिर बेगम को अत्यन्त आग्रह और सम्मान से शंकरपुर किले में ले गया। बेगम ने इससे पूर्व आज़मगढ़-क्षेत्र में युद्धरत बाबू कुंवरसिंह से सम्पर्क कर उसे प्रोत्साहन दिया तथा आर्थिक व सैनिक सहायता भिजवाई। उसे बिहार आदि के व्यापक क्षेत्र में संग्राम जारी रखने की सलाह भी दी।

धीरे-धीरे बेगम की सेनाएँ भी शंकरपुर पहुँचती गईं। बेगम आस-पास के क्षेत्रों मे जाकर जागीरदारों, ज़मीदारों तथा जन-साधारण को विदेशी शासकों के विरुद्ध अनवरत युद्ध की प्रेरणा देती रही। कुछ दिनों बाद शंकरपुर से बदलकर उसने अपना शिविर फ़ैज़ाबाद के पास लगाया तथा बहराइच और फ़ैज़ाबाद के बीच अत्यन्त निष्ठा और लग्न से स्वाधीनता सग्राम का सचालन करती रही। यहीं कानपुर के नाना साहब से उसने सम्पर्क बनाया। यह गौरवशाली वीर भी उसके साथ सम्मिलित रूप से इन अभियानों में अपना योगदान देता रहा।

बेगम ने भारतीय योद्धाओं में उत्साह फूंक, स्वाधीनता संग्राम की चिनगारी फैलाकर, दूर-दूर तक ज्वाला प्रज्वलित कर दी। अनेक सेनानायक, अनेक योद्धा और अनेक स्वाधीनता-चेता उसकी ध्वजा के नीचे एकत्रित होते गए—एक बार और अंग्रेजों के भारत मे अस्तित्व को मिटा देने के भागीरथी प्रयत्न के लिए।

कानपुर और लखनऊ मे केन्द्रित युद्ध ने अब बहुत ही व्यापक रूप ले लिया। अब ये पूरे अवध, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त, रुहेल खण्ड और बिहार के क्षेत्रों में विस्तृत हो गया—उधर तात्या टोपे राजस्थान तथा मध्यभारत मे अंग्रेजों की नींद हराम कर रहा था।

मौलवी, मुहम्मद हुसेन, मेंहदी हुसेन, सुनन्दा लाल, माधोसिंह तथा बख्त खाँ आदि कतिपय सेनानायक नवीनीकृत उत्साह से क्रियाशील हो गए। सभी क्षेत्रों मे बेगम सामयिक सहायता पहुँचाती रहती थी।

अब जनरल कैम्पबेल इस व्यापक युद्ध के विरुद्ध अभियानों की व्यवस्था करने में छकड़ी भूल गया। अधिकांश स्वाधीनता सेनानी छापा मार युद्ध करते रहे तथा जहाँ अंग्रेजी सेना की कमजोरी देखते वहीं अचानक आक्रमण करके विभिन्न नगरों तथा दुर्गों पर अधिकार करते रहे।

कुंवर सिंह का देहान्त अवश्य हो गया था किन्तु उसकी कमान अमर सिंह ने

सँम्भाल कर गोरे सेनाध्यक्षों की नाक में दम कर दिया। अमर सिंह ने सहसराम, आरा, घुरमार तथा गया आदि कतिपय स्थानों पर आक्रमण कर अँग्रेजों को त्रस्त कर दिया। अंग्रेजों की शक्तिशाली सेनाओ ने उसे पकड़ने अथवा मार देने की हर सम्भव कोशिशें की किन्तु यह वीर लगभग छः महीने तक उनसे लोहा लेता रहा। सर एडवर्ड लुगर्ड उसके अभियानों से इतना आतंकित हो गया कि बीमारी का बहाना कर अपनी कमान ही छोड़ कर चला गया। किसी क्षेत्र में उसकी उपस्थिति मात्र की सूचना से अँग्रेज़ अधिकारी भयभीत हो जाते थे। अन्त में जब सतत युद्धों के कारण उसकी सेना क्षत-विक्षत हो गई तो वह अन्य कई स्वतन्त्रता सेनानियों की भाँति नेपाल चला गया।

कैम्पबेल पहिले रुहेल खण्ड को पूर्णतः नियन्त्रण में लाना चाहता था लेकिन अवध में भी अँग्रेज़ी शासन की नीव हिल रही थी। बेगम और नाना के आह्वान पर मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, फतेहगढ, बरेली आदि रुहेलखण्ड के अनेक स्थानों पर तथा अवध में अमेठी, रामपुर कमिया तथा शंकरपुर वग़ैरह में स्वाधीनता संग्राम की चिनगारियाँ फैल गईं और उनसे भीषण अग्नि प्रज्वलित होने लगी।

शंकरपुर के वेणी माधव की अविचलित देश भक्ति ने उसे अपने लक्ष्य से कभी विमुख नहीं होने दिया। उसकी वीरगाथाएँ बड़ी श्रद्धा से गाँव-गाँव मे गाई जाने लगी। लोक-गीतों ने उसके अनुपम साहस और दृढ-संकल्प के कारण उसका नाम अमर कर दिया है। वह कभी बेगम या नाना के साथ तथा कभी अकेला एक स्थान पर प्रकट होता और जब तक ब्रिटिश सेना सावधान हो पाती उसका विध्वंस कर दूसरी जगह प्रकट हो जाता। जब ब्रिटिश अधिकारियो ने उसे आत्म-समर्पण करने का प्रस्ताव भेजा तो उसने ठुकरा दिया और स्पष्ट कह दिया कि जब तक मेरी जान में जान है देश की आज़ादी के लिये लडता रहूँगा। वास्तव मे वह तब तक लड़ता रहा जब तक कि उसे नेपाल की ओर पलायन करने के लिये विवश नही हो जाना पड़ा।

शाहाज़ादा फीरोज शाह, तात्या-टोपे, मान सिंह, राव साहब, मथुरा के देवी बख्श आदि अनेक स्वाधीनता-नेताओं ने लम्बे समय तक शक्तिशाली ब्रिटिश-राज की नीव हिला कर रख दी। बेगम से इनका सतत सम्पर्क बना रहता था।

मौलवी अहमदुल्ला शाह लखनऊ की पराजय के बाद से द्विगुण उत्साह से सैनिक अभियान करने लगा। अवध के अलावा उसकी गतिविधियाँ फर्रुखाबाद, मैनपुरी के आस-पास के क्षेत्रो में ब्रिटिश अधिकारियो के लिये भारी चुनौती थी क्योंकि इस तरफ उन्होने पूरा अधिकार तथा नियन्त्रण कर लिया था। मौलवी कई बार सैनिको के छोटे से दल को लेकर अँग्रेज़ी तोपों से गोला-बारी की ज़रा भी परवा नही करते हुए उनकी बड़ी-बडी सेनाओं को क्षत-विक्षत कर देता था।

समय-समय पर पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार ये सभी नेता बेगम और नाना

के पास जाकर मंत्रणा करते थे और उपलब्धियों का विश्लेषण कर भविष्य के लिये कार्य-विधि निश्चित करते थे। ऐसी ही एक बैठक में नाना साहब ने मौलवी से कहा, "मौलवी साहब, इंग्रेज़ी सरकार ने आपको गिरफ्तार करने के लिये पचास हज़ार रुपये का इनाम घोषित किया है, इसलिये आपको बहुत सावधानी बरतनी चाहिये, अच्छा हो कि आप एक-दो माह अपनी कारगुज़ारियाँ स्थगित कर दें।" बेगम ने भी नाना साहब का समर्थन किया, "जी हाँ मौलवी साहब, यह ज़रूरी भी है। जब से यह इंग्रेजी इश्तिहार निकला है, हमें आपके बारे में बहुत फ़िक्र रहने लगी है।"

"महाराजा पेशवा और मलका-ए-आलिया, यह आप दोनों क्या फरमा रहे हैं, अपनी जान के लालच में छिप कर बैठा रहूँ! मुल्क की खिदमत से मुंह मोड़ लूँ जब कि मुल्क एक-एक हिन्दुस्तानी की क़ुर्बानी का मोहताज है। फिर इन फिरंगियों का क्या? उन्होने तो क़रीब-क़रीब हर आज़ादी के दीवाने की जान की या गिरफ्तारी की कीमत लगा रखी होगी! सौदागर जो ठहरे, उनके लिये माल और इन्सान में फर्क ही क्या है।" मौलवी भावावेश में कहता गया।

सभी उपस्थित लोग गद्गद हो गये। बेगम और नाना की आँखें नम हो गईं और वे गला भर आने के कारण कुछ क्षणों तक बोल नहीं सके। शाहज़ादा फीरोज शाह ने पहल की, "वाह मौलवी साहब वाह! हिन्द को आप जैसे जाँ-निसारों पर नाज है!"

"नहीं शाहज़ादे, चन्द ग़द्दारों को छोड़ कर हिन्द को हर हिन्दुस्तानी पर नाज है! आपने ही अपनी जान जोखिम मे डाल कर फिरंगियों को मुल्क से उखाड़ने के लिये क्या क्या नहीं किया! जनरल बख्त खाँ, मेहदी हुसेन, सुनन्दा, कुँवर सिंह, अमर सिंह, बेनी माधो, महबूब खाँ, जैलाल सिंह सभी पर तो नाज है हमारे मुल्क को—फिर उन लाखों शहीदों के नाम तो शायद किसी को याद भी नहीं होंगे जिनके खून से लथपथ हुई यह फिरंगी-सरकार हिन्द पर हुकूमत का दम भर रही है। महाराजा पेशवा, मलका-ए-आलिया और तात्या टोपे के बारे में तो कुछ भी कहना सूरज को दिया दिखाना है," मौलवी के कथन के बाद बैठक में थोड़ी देर निस्तब्धता रही फिर बेगम ने चुप्पी तोड़ी, "वाक़ई मौलवी साहब आप ठीक कहते हैं कि हिंद को इस वक़्त एक-एक बाशिन्दे की क़ुर्बानी की ज़रूरत है। जब तक जान में जान है हमें लड़ते रहना चाहिये, हमे लड़ाई जारी रखना चाहिये इन फिरंगियों के खिलाफ कभी न खत्म होने वाली जंग।"

"जो बेगम आलिया, बिलकुल बजा फ़रमा रही हैं," मौलवी ने कहा, "अब हमें यह तय करना है कि किस-किस की कमान में कहाँ-कहाँ हमले करना मुनासिब होगा ताकि बेहतरीन से बेहतरीन नतीजे हासिल हो सकें।"

बेगम, नाना, शाहज़ादा वग़ैरह सभी ने मौलवी की बात की सम्पुष्टि की

और विचार विमर्श में व्यस्त रहे। बेगम और नाना का सुझाव था कि लम्बे-चौड़े क्षेत्र में अभियानों का विस्तार किया जाये ताकि इंग्रेज़ी हुकूमत बौखला उठे और इस बौखलाहट से अधिक से अधिक लाभ उठाया जाये।

सभी नेताओं को अवध और सीमावर्ती क्षेत्रों मे विभिन्न स्थानों में अभियान करने का कर्त्तव्य निभाना था किन्तु मौलवी भारत के लगभग सभी स्थानों से परिचित था इसलिये उसे रुहेलखण्ड की ओर मोर्चा सम्भालने का काम सौंपा गया। सुरक्षा की दृष्टि से बेगम और नाना को एक सीमित क्षेत्र में ही सक्रिय रह कर विभिन्न क्षेत्रों में सैनिक व आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था करनी थी।

सुनन्दा तथा सभी कुमारियाँ तथा कुमार सेनानायक भी बेगम के शिविर में मौजूद थे। उन्हें सामान्य सैनिक कार्यों के अलावा जासूसी का काम भी सौंपा गया क्योंकि इस काम में वे काफी अनुभवी और कुशल थे।

शाहजादा फ़ीरोज शाह भी मौलवी के साथ ही रुहेलखण्ड की ओर रवाना हो गया। इन दोनों सेनानायकों ने बरेली, मीरगंज, मुरादाबाद आदि स्थानों में त्राहि-त्राहि मचा दी। अँग्रेजी जनरल वालपोल, जनरल जोन्स वगैरह के साथ जनरल कैम्पबेल भी युद्धों में शामिल होता था किन्तु स्वाधीनता सेनानियों की फ़ुर्ती और साहस के सामने उन्हें अनेक स्थानों पर मात खानी पड़ी। अवध, रुहेलखण्ड और बिहार के क्षेत्रों मे जगह-जगह सुलगती आग को बुझा पाना शक्तिशाली साधन सम्पन्न ब्रिटिश सेना के लिये भी विकट समस्या हो गई। कैम्पबेल का बौखला जाना स्वाभाविक था। एक बार शाहज़ादा फ़ीरोज़ शाह को फ़िर अवध की तरफ जाना आवश्यक था किन्तु मौलवी अकेला ही अँग्रेज़ों से लोहा लेने को काफी था। उसने शाहजहाँपुर के किले और जेल पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश अधिकारियों के अनेक प्रयत्नों के बावजूद उसने शहर पर भी अधिकार कर लिया तथा काफ़ी समय तक वहाँ से नही हटाया जा सका। उसकी देशभक्ति अनन्य थी, इसीलिये अँग्रेज़ों के पक्षधर भारतीयों को वह कड़े से कड़ा दण्ड देने में संकोच नही करता था।

अपने अभियानों के अन्त में उसने रुहेलखण्ड तथा अवध की सीमा पर पोवाइन के एक किले पर आक्रमण किया। वह अँग्रेज़ों के समर्थक वहाँ के राजा को दण्ड देना चाहता था। राजा ने क़िले के दरवाज़े बन्द करा दिये थे और बहुत आतंकित हो गया। मौलवी हाथी पर सवार था। उसने दरवाज़े के टक्कर लगाने के लिये हाथी को उकसाया। दरवाज़ा चरमरा कर गिरने ही वाला था कि दुर्भाग्यवश दुर्ग की ओर से आई एक गोली मौलवी के सिर में लगी और वह गिर कर वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके निधन से भारत माता की गोद से उसका एक विलक्षण पराक्रमी तथा गौरवशाली पुत्र सदा के लिये उठ गया।

मौलवी की मृत्यु का दुःखद समाचार जब बेगम के शिविर में पहुँचा तो भारी मातम छा गया। बेगम और नाना को ऐसा लगा जैसे उनका दाहिना हाथ ही काट दिया गया हो !

48

बेगम और नाना के नेतृत्व में घमासान युद्ध चल रहे थे। उन्हीं दिनों पहिली नवम्बर 1858 को अंग्रेजों ने इलाहाबाद में एक विशाल दरबार का आयोजन किया। दरबार मे महारानी विक्टोरिया की घोषणा पढ़ी गई जिसमें हिन्दुस्तान का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी से अंग्रेजी सरकार को हस्तान्तरित किए जाने का ऐलान किया गया। घोषणा मे अंग्रेजी सरकार द्वारा भारतीय राजाओं तथा नवाबों के अधिकार तथा प्रतिष्ठा आदि यथावत रखने का आश्वासन दिया गया तथा विश्वास दिलाया गया कि 'गदर' के दौरान किये गए अपराधों के प्रति उदारता बरती जायेगी किन्तु हत्यारो तथा हत्याओ मे सहायता देने वालों को कड़ी से कड़ी सज़ायें दी जायेंगी।

बेगम ने अपने पुत्र शाहज़ादा बिरजिस क़ादर की ओर से इस घोषणा के विरुद्ध दूसरी घोषणा निकलवाई, जिसमे जनसाधारण को अंग्रेजों की सदाशयता में विश्वास नही करने को कहा गया। घोषणा में बताया गया कि यद्यपि महारानी की घोषणा बाह्य रूप से आकर्षक लगती है लेकिन उसका मतलब स्पष्ट न हो कर, किसी भी व्यक्ति के पक्ष अथवा विपक्ष में निकाला जा सकता है। बेगम ने अपने पुत्र की ओर से महारानी विक्टोरिया की घोषणा के प्रत्येक वाक्य की समीक्षा करते हुए अंग्रेजो के पूर्व आचरण के उदाहरण देकर बताया कि उन्होंने अपने सन्धिपत्रो, इकरारनामों आदि की अनेक बार अवहेलना कर मनमानी की है, अत: घोषणा के अनुसार किए गए वायदे कोई महत्त्व नही रखते। अन्त मे जन साधारण का आह्वान करते हुए कहा गया कि जो लोग धोखे में आकर अथवा भोलेपन के कारण अंग्रेजों के समक्ष उपस्थित हुए हैं, एक जनवरी 1859 तक शाहज़ादे के दरबार में उपस्थित हो जायें।

अंग्रेजो का अनुमान था कि इंगलैंड की महारानी की घोषणा से उनके विरुद्ध चलाया जा रहा अनवरत युद्ध समाप्त हो जायेगा किन्तु युद्ध फिर भी जारी रहा।

बेगम के आह्वान पर अनेक उत्साही योद्धा उसके झंडे तले आकर मातृभूमि पर प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हो गए। प्रधान सेनापति कैम्पवेल, जनरल होप ग्रान्ट, ब्रिगेडियर ईवले, ब्रिगेडियर रोक्राफ्ट आदि कतिपय अनुभवी सेनानायक कई मास तक अवध के विभिन्न मोर्चों पर युद्ध-रत रहे किन्तु वेणी माधव, अमर सिंह, रामबख्श सिंह तथा शाहज़ादा फीरोज़ शाह आदि सेनानियों ने उन्हें कई जगह परास्त किया। यह बेगम हज़रत महल की प्रेरणा तथा संगठन-चातुर्य के कारण ही था कि अँग्रेज़ों की विशाल शक्तिशाली सेनाओं को भी काफी समय तक इनके सामने मुंह की खानी पड़ी।

कैम्पवेल चाहता था कि विद्रोही नेता या तो युद्ध में मारे जायें या आत्म-समर्पण कर दें। कुछ लोगों ने आत्मसमर्पण किया भी किन्तु महत्वपूर्ण स्वतन्त्रता सेनानी अँग्रेजों के हाथ नही आये।

शाहज़ादा फीरोज़ शाह के साहस तथा नेतृत्व-क्षमता के सामने अँग्रेजों की एक नही चली। जब उसकी सेना का व्यापक विनाश हो गया तो भी वह आत्म-समर्पण को तैयार नही हुआ। उसने अपने हज़ार डेढ़ हज़ार सैनिकों के साथ गगा पार कर ली तथा इटावा होता हुआ तात्या टोपे की सेना से जा मिला और राजस्थान तथा मध्य भारत में लम्बे समय तक अँग्रेजो से लोहा लेता रहा। वेणी माधव ने भी अन्त तक आत्म समर्पण नही किया।

बेगम ने अँग्रेज़ों के विरुद्ध कभी खत्म होने वाली लडाई का ऐलान किया था। अनेक भारतीय योद्धा इसकी अनुपालना में अँग्रेज़ी सेना का विध्वस कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार अथक् प्रयासों के बावजूद न तो बेगम को परास्त कर सकी और न उससे हथियार ही डलवा सकी। उसका गौरवशाली अत्यन्त सक्रिय अस्तित्व साधन-सम्पन्न सशक्त ब्रिटिश-राज के लिए भी एक चुनौती बन गया था। जब कोई विकल्प नही रहा तो गवर्नर जनरल लॉर्ड केनिंग ने उसे लालच दे कर अँग्रेज़ी नियन्त्रण में लाना चाहा। बेगम को प्रस्ताव भेजा गया कि यदि वह आत्म समर्पण कर दे तो उसे अवध के शासक को दी जाने वाली पेन्शन के अलावा अतिरिक्त उदार पेन्शन दी जायेगी और उसके पदानुकूल गरिमा तथा प्रतिष्ठा यथावत रहेगी। स्वाभिमानी बेगम ने अँग्रेजों की गुलामी में उनकी दया-पात्र बन कर जीने के बजाय समर भूमि में ही देश पर प्राण-न्योछावर करना बेहतर समझा और स्पष्ट शब्दो में अँग्रेजी सरकार को उत्तर दिया, "हम तुम्हारे रहम के मुहताज़ नही, हमने तुम्हारे खिलाफ़ जो कभी न खत्म होने वाली जंग छेड़ी है, वह हमेशा ज़ारी रहेगी—जब तक कि हमारा वतन आज़ाद नही हो जायेगा!"

49

दागे फ़िराक़े सुहबते शब की जली हुई।
इक शमा रह गई है सो वो भी खमोश है।।

मध्य दिसम्बर में गुप्तचरों ने प्रधान सेनापति कैम्पबेल को सूचना दी कि बेगम हज़रत महल और नानासाहब वग़ैरह बहराइच मे ठहरे हुए हैं। कैम्पबेल तत्काल बहराइच पहुँचा किन्तु बेगम तथा नाना से वह इतना आतंकित था कि वह उन पर एकदम आक्रमण नही कर सका। उसने पहिले उनकी गतिविधियों की जानकारी करने का प्रयत्न किया तथा फिर बेगम के एक विश्वस्त अमीर महबूब खाँ को अपनी ओर मिलाकर बेगम को आत्मसमर्पण के लिए विवश करने का प्रयत्न किया। बेगम के साथ ही परम साहसी वीर वेणी माधव भी ठहरा हुआ था। उसका एक निकट सम्बन्धी हनुमन्त सिंह कैम्पबेल के प्रोत्साहन पर वेणी माधव को हथियार डाल देने के लिए उकसाने का प्रयत्न कर रहा था। इस कूटनीतिक चाल की सफलता के लिए कैम्पबेल पाँच दिनों तक प्रतीक्षा करता रहा किन्तु इन महान देशभक्त वीरों पर कोई रंग नही चढ़ सका। जब कैम्पबेल ने निराश हो आक्रमण का आदेश दिया तो सभी स्वतन्त्रता सेनानी अँग्रेजी सेनाओ द्वारा सतर्कता पूर्ण घिरे बहराइच से पलायन कर चुके थे। वे सब सुरक्षित रूप से नानपारा पहुँच गए तथा जैसे ही अँग्रेजी सेनाएँ पीछा करती हुई वहाँ पहुँची वे चर्दा नामक स्थान पर पहुँच गए। प्रधान सेनापति ने तत्परता से अभियान किए किन्तु उसे सफलता नही मिली।

अब चारो ओर अँग्रेजी सेनाएँ जाल बिछाये बैठी थी तथा कतिपय ब्रिटिश-जनरल उनका नेतृत्व कर रहे थे। अतः बेगम, नाना और उनके अनुयायियो ने यह समझ लिया कि अधिक दिनों तक उनके साधन व शस्त्र विहीन सैनिक फिरंगियो मे मुकाबिला नहीं कर सकेंगे। बेगम का विचार था कि समीवर्ती नेपाल राज्य में जाकर कुछ प्रभावी योजना बनाई जाए जिससे ब्रिटिश-साम्राज्य के विरुद्ध अनवरत युद्ध जारी रह सके। अन्य नेता भी बेगम के विचारो से पूर्णतः सहमत थे। अतः चर्दा में बेगम ने एक बैठक आयोजित की तथा इस आपातकालीन बैठक में उसने बताया कि अँग्रेज़ो के विरुद्ध खुले रूप से युद्ध जारी रखना तो अब सम्भव नही रहा किन्तु उनकी सत्ता को समूल नष्ट करने के लिए सतत क्रान्ति का आयोजन करना अत्यन्त आवश्यक है। इस क्रान्ति को सफल बनाने के लिए नवयुवक व नवयुवतियों की सेवाएँ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगी।

"जी मलका-ए-आलिया, आज्ञा दें, हम उसका पूरी तौर से पालन करेंगे!" कुछ नवयुवतियों ने कहा।

"जी बेगम-आलिया, आप हुक्म फरमायें और हमे रास्ता दिखायें।" अनीस

अहमद और अमजद अली एक साथ बोले।

बेगम भाव विह्वल हो गई, "मेरे अजीज साथियों, रास्ता एक नहीं होगा, कई होंगे और तुम्हें खुद ही बनाने होंगे। हम सिर्फ चाहते यह हैं कि कुछ लोग बंगाल पहुँच कर इंग्रेज़ी हुकूमत के खिलाफ इन्क़लाब का माहौल तैयार करें। जैसा तुम्हें मालूम है कि हमें पूरी कोशिशों के बावजूद आज़ादी हासिल नही हुई है। फिर हथियारों, गोला बारूद, कारतूसों के बग़ैर फिरंगियों की ताक़तवर फौजों से लड़ना बेमानी है—लगता है अभी इंग्रेज़ों का सितारा बुलंदी पर है। मगर फिर भी हमे पस्त हिम्मत नही होना चाहिये और मुल्क मे जगह-जगह लोगों मे जागरूकता पैदा करके इन फिरंगियों को चैन की नींद नही सोने देना चाहिए। यह काम बंगाल से ही शुरू करना ठीक रहेगा क्योंकि वहाँ पढ़े-लिखे लोग ज्यादा हैं और इंग्रेज़ी-ज़ुल्मों के काफ़ी अर्से से शिकार रहे हैं। तो बंगाल कौन-कौन जाना चाहेंगे?"

सभी लगभग एक साथ बोले, "आलीमुकाम यह तो आप ही तय कर दीजिए तो ठीक रहेगा। हमें तो बस हुक्म चाहिए।"

बेगम बहुत प्रसन्न होकर बोली, "वाह मेरे बहादुर साथियो, हमें तुमसे यही उम्मीद थी। मदनसिंह, ब्रह्मानंद सिंह, संयुक्ता और अनुराधा हमारे साथ नेपाल में ही रहेंगे—वहाँ हम हथियारों का एक बड़ा कारखाना खोलने की कोशिश करेंगे ताकि अपनी फ़ौजें फिर से तैयार करके, इंग्रेज़ों पर हमला कर, हिन्द को आज़ाद करायें—साथ ही हम ये भी चाहते हैं कि खुफ़िया तौर पर बंगाल में इन्कलाबियों को भी हथियार मुहैया करा सकें। लिहाज़ा ये चारो उस कारखाने की देखभाल के लिए हमारे साथ रहेंगे और बाकी सब बंगाल जाएँगे। बहिन सुनन्दा कारखाने की मुन्तज़िम रहेंगी।"

"जी बेगम-आलिया, हुक्म की तामील होगी।" लगभग सभी एक साथ बोले। उन्हें प्रसन्नता थी कि देश सेवा का एक और अमूल्य अवसर उन्हें मिल रहा था।

अब बेगम रहस्योद्‌घाटन की मुद्रा मे बोली, "एक और बहुत ही अहम् मामला है जिसे हम अभी तक मुल्तवी करते आ रहे हैं, लेकिन अब वक्त आ गया है कि वह भी आज ही तय कर दिया जाये।" सभी बड़े कौतूहल से बेगम की ओर देख रहे थे।

बेगम ने कहा, "हम चाहते हैं कि साहबज़ादा अनीस और ज़ेबुन्निसा, कुमार उद्‌गम और कनक सुन्दरी, और साहबज़ादा अमजद अली और लुत्फ़ुन्निसा की शादियों की रस्म पूरी कर दी जाए। अगर किसी को कोई ऐतराज़ हो तो फ़ौरन बता दें।"

सभी युवक-युवतियों ने लज्जा व संकोच से आँखें झुका ली। सुखद-आश्चर्य

से उनके चेहरे खिल गए थे। युवतियों के कपोल रक्ताभ हो गए। सभी मन ही मन सोच रहे थे, "वाह, बेगम आलिया आप निज़ामे-सल्तनत व फने जंग मे तो माहिर हैं ही मगर हम लोगों के दिलों मे भी झांक कर देख लेती होंगी, यह तो हम सोच भी नही सकते थे।"

कितने सही जोड़े चुन लिए थे बेगम ने, फिर भला ऐतराज किसे होता! तीनों जोड़ो के हाथ में हाथ देकर बेगम ने विवाह की रस्म पूरी की और एक-एक हार उपहार स्वरूप दे आशीर्वाद दिया। सभी उपस्थित लोगो ने यथा-सामर्थ्य उन्हें उपहारो के साथ बधाइयां दी। मिठाइयां बांटी गई और रात्रि को विवाह-भोज हुआ।

यद्यपि इन प्रेमियों ने कही भी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नही की थी तथापि बेगम की अनुभवी दृष्टि से उनके सम्बन्ध छिपे नही रह सके। जब से बेगम को पता चला था कि इनके महल-किलो आदि का फिरंगियो ने विध्वंस कर डाला है तभी से वह इनके विवाह के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा में थी तथा आज अन्तिम अनुकूल अवसर देख उसने यह काम भी सम्पन्न करा दिया।

अगले दिन ही आदित्य, अरविन्द, अदम्य तथा तीनो विवाहित जोड़ो ने बेगम तथा अन्य अमीरो व मित्रो से विदा ली। बेगम तथा सभी उपस्थित लोगो ने रुंधे हुए कंठ से उनसे कहा, "खुदा हाफ़िज़!"

उन्होने एक साथ कहा, "खुदा हाफ़िज़!" और बगाल के लिए रवाना हो गए। सभी के नेत्र अश्रुपूरित थे।

बगाल पहुंच कर उन सबने बड़ी निष्ठा और लग्न से अपना कर्त्तव्य निभाया तथा बंगाल और बिहार मे असंख्य क्रान्तिकारी तैयार कर लिए जिन्होंने विदेशी-शासन के विरुद्ध कभी समाप्त न होने वाली लड़ाई जारी रखी।

अंग्रेज़ी सेना ने चर्दा पर भी आक्रमण किया किन्तु सौभाग्यवश ये स्वाधीनता के दीवाने बांकी की ओर पहिले ही चले गए थे। कैम्पबेल ने बांकी पर भी आक्रमण किया तथा बेगम की सेना को परास्त कर दिया। उसकी सेना को काफ़ी क्षति भी हुई लेकिन फिर भी बेगम व नाना को गिरफ़्तार नही किया जा सका। अन्त मे विवश होकर बेगम और नाना तथा वेणी माधव, सुनन्दा, मेहदी हुसैन, अहमद हुसैन, देवी बख्श, ब्रह्मानन्द व मदनसिंह, आदि अनेक वीर योद्धा नेपाल की ओर रवाना हो गए।

नेपाल-नरेश अंग्रेज़ों से मित्रता के कारण प्रत्यक्ष रूप से बेगम, नाना व उनके अनुयायियो को नेपालमे रहने की अनुमति नही दे सका किन्तु अपनी हिन्दू-परपरा के अनुसार नरेश ने उन्हें शरण दी तथा गुप्त रूप से सहायता भी। उन्हें देश के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र से दूर जगलो मे चितवान तथा बुटवाल के आसपास रहने की सलाह दी गई।

बेगम और सुनन्दा ने नेपाल के प्रधानमन्त्री चन्द्र शमशेर जंग के सहयोग से एक हथियारों का कारखाना लगाना शुरू किया जिसमे जर्मनी की क्रुप्स कम्पनी का तकनीकी सहयोग किया गया। एक-दो साल में ही इसमे अच्छे हथियार— बन्दूकें, रिवाल्वर, सभी प्रकार के कारतूस आदि बनने लगे। ये चुपके-चुपके बंगाल तथा भारत के अन्य भागो में क्रान्तिकारियों को भेजे जाने लगे। यह कारखान टाइलों के कारखाने के नाम से जाना जाता था तथा कभी पकड़ा नही गया बेगम लगभग 20 वर्ष तक और जीवित रही और सदैव आजादी के लिए कई तरह की योजनाएँ बनाती रही। सुनन्दा वहाँ 40 वर्ष तक रही तथा जब यह ज्ञात हो गया कि अब क्रान्तिकारियों ने बंगाल में ही अनेक छोटे-छोटे कारखाने खोल लिए हैं तो वह कारखाना बन्द करके बंगाल चली आई। कलकत्ते में उसने महाकाली पाठशाला खोली जहाँ छात्रों को देश-भक्ति तथा अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति की शिक्षा दी जाने लगी।

बेगम का नेपाल मे ही निधन हो गया था। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में उसका नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखा जाने के योग्य है। शत्रुओ ने भी उसके अदम्य साहस तथा देश-प्रेम की भूरि-भूरि प्रशसा की है। वह विलक्षण संगठन-क्षमता, असीम साहस तथा अनन्य देशभक्ति की प्रतीक एक स्वाभिमानिनी महान वीरागना थी। जिसने अंग्रेज़ों की दया पर जीवन यापन के बजाय नेपाल के मलेरिया-ग्रस्त जंगलो मे ही अनेक आपदाओं के बीच रहकर भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्रान्ति का आह्वान जारी रखा। नेपाल आने के बीस वर्ष बाद वह अपनी मृत्यु-शैय्या पर पड़ी थी। सुनन्दा, संयुक्ता और अनुराधा उसकी सुश्रुषा मे व्यस्त थीं। बेगम को मलेरिया ज्वर था। शरीर तवे की तरह जल रहा था। कई दवाइयों के बावजूद बुखार उतर नही रहा था। वह कमज़ोरी में बड़बडा रही थी, "नही, हिन्दोस्तान गुलाम नही रह सकता, वह ज़रूर आज़ाद होगा!" सुनन्दा ने उसका सिर दबाना शुरू किया। बेगम कहने लगी, "हमारा वतन एक दिन ज़रूर आजाद होगा। बहिन सुनन्दा! मुझे तसल्ली है कि मेरी मौत के बाद भी जंगे आजादी जारी रहेगी!"

सुनन्दा एकदम रो पड़ी, "ये क्या फरमाती हैं बेगम-आलिया—आपका बुखार जल्द उतर जाएगा। मुल्क को अभी तो आपकी बहुत ज़रूरत है!"

बेगम कठिनाई से साँसें ले पा रही थी, "नही सुनन्दा, एक हम नहीं तो क्या हुआ, आजादी के अनगिनत दीवाने वतन पर अपना सब कुछ कुरबान करने को तैयार हो चुके हैं उनकी कारगुज़ारियाँ जारी हैं···।"

बेगम फिर कुछ कहना चाहती थी। वह बोलने में असमर्थ इधर-उधर कुछ देख रही थी। सुनन्दा ने पूछा, "क्या चाहिए बेगम आलिया?"

"मुल्क···की···आ···ज़ा" दी, सु-नं-दा।" बड़ी कठिनाई से बेगम कह

पाई। देखते-ही-देखते बेगम ने कई उखड़ी साँसों के बाद एक गहरी साँस ली और उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

सुनन्दा, संयुक्ता, आराधना, तथा कुमार मदन में ब्रह्मानन्द आदि सभी बालकों की भाँति बिलख रहे थे।

भारतीय स्वातन्त्र्य-संग्राम-अन्तरिक्ष का यह अनुपम ज्योतिर्मय तेजस्वी नक्षत्र सदैव के लिए अनन्त व विलीन हो गया।

हथियारों के कारखाने से मशीनों की आवाज़ें आ रही थी, "खट-खट-खड़ड़ड-खननन-खट'''।" मानो रात्रि की निस्तब्धता में बेगम का यश-गान कर रही हो!

O O